बिखरे मोती

पाँचवा भाग

लेखक

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

ख़ल्फ़ुर्रशीद

हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी
रह्मतुल्लाहि अलैहि

बिखरे मोती

(जिल्द-5)

इंतिख़ाब व तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी

हिन्दी रस्मुल-ख़त व तसहीह

एस० ख़ालिद निज़ामी

विषय-सूची

तहरीर

हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ज़ेरे मुजद्दिहम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्लि अला रसूलिहिल करीम० अम्मा बअद!

"बिखरे मोती' मेरी पसन्दीदा बातों का मज्मूआ है, इसके चार हिस्से नज़रसानी के बाद प्रकाशित हो चुके हैं। पाँचवाँ हिस्सा नज़रसानी और मुफ़ीद इज़ाफ़ों के बाद प्रकाशित करने की इजाज़त हाजी नासिर ख़ान, फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली को दे रहा हूँ।

फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली से जो ऐडीशन प्रकाशित हो रहा है, उसमें इग़लात की तस्हीह का पूरा एहतिमाम किया गया है, और मुफ़ीद इज़ाफ़े भी किए गए हैं। इसलिए नाशिर कुतुबे-साबिक़ा को प्रकाशित करने की सई न फ़रमाएं, वस्सलाम।

अल्लाह की रज़ा का तालिब

मुहम्मद यूनुस पालनपुरी

अरज़े नाशिर

इस किताब (बिखरे मोती) के सभी तसहीह शुदा हिस्से उर्दू में फ़रीद बुक डिपो, नई दिल्ली से शाया हो चुके हैं। हिन्दुस्तान के कई नाशिराने कुतुब ने पाकिस्तानी ऐडीशन को जूं का तूं प्रकाशित किया है। उन ऐडीशनों में बहुत ज़्यादा इग़लात हैं, नीज़ अक्सर अरबी इबारतों पर आराब भी नहीं हैं, और बाज़ जगह सिर्फ़ अरबी इबारत है, उसका तर्जुमा नहीं है। मगर किसी नाशिर ने उसकी इस्लाह की तरफ़ तवज्जोह नहीं की।

बिल आख़िर साहिबे किताब हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम ने नाशिर से राब्ता किया और इग़लात की तस्हीह, अरबी इबारतों पर आराब लगाने और उनके तर्जुमे करने की फ़रमाइश की। इसी फ़रमाइश का नतीजा है कि बिखरे मोती (उर्दू) के सभी हिस्से और हिन्दी के चार हिस्से शाया हो चुके हैं। पाँचवाँ हिस्सा आपके हाथ में है।

अलग़र्ज़ किताब को आसान और उमदा बनाने की पूरी कोशिश की गई है, यह महज़ अल्लाह जल्ले शानुहू का फ़ज़्ल व करम और हज़रत मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम की दुआओं की बरकत है। अल्लाह तआला इस किताब को मौलाना और उनके अहले ख़ाना के लिए सदक़-ए-जारियह और क़ारईन के लिए रुश्द व हिदायत का ज़रिआ बनाए। आमीन या रब्बल आलमीन!

मुहम्मद नासिर ख़ान
फ़रीद बुक डिपो,
नई दिल्ली-2

तक़रीज़

मुफ़स्सिरे क़ुरआन, मुहद्दिसे कबीर, फ़क़ीहुन्नफ़्स हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यद अहमद साहब पालनपुरी दामत बरकातुहुम

(उस्ताद-हदीस, दारुल उलूम देवबन्द और शारह हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा)

अलहम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन, वल आक़िबतु लिल्मुत्तक़ीन, वस्सलातु वस्सलामु अला सय्यिादल मुर्सलीन, व अला आलिही व सहबिही अज-मअीन, अम्मा बअ्द :

'बिखरे मोती' में जनाब मुकर्रम मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी ने गुलहाए रंग-रंग चुनकर हसीन गुलदस्ता तैयार किया है। यह किताब मौलाना का कश्कूल है, जिसमें आपने क़ीमती मोतिमों को इकट्ठा किया हैं। एक हसीन दस्तर्ख़्वान है जिस पर अनवाअ व अक़साम के लज़ीज़ खाने चुने गए हैं। इस किताब में जहां तफ़्सीरी फ़वाइद व नुकात हैं, हदीसी नसीहतें व इर्शादात भी हैं। दावती और तब्लीग़ी चाशनी लिए हुए सहाबा और बाद के अकाबिर के वाक़िआत भी हैं जिनसे दिल जल्द असरपज़ीर होता है। नीज़ ऐसी दुआएं भी शामिले किताब की गई हैं जो गोना अमलियात का रंग लिए हुए हैं। इस तरह किताब बहुत दिलचस्प बन गई है।

नीज़ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमीन साहब पालनपुरी उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द की नज़रसानी ने इसकी एतबारियत में इज़ाफ़ा किया है, गोया किताब में चार चांद लगाए हैं। इसलिए उम्मीद है किताब लोगों के लिए बेहद मुफ़ीद साबित होगी।

अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाएँ और मुसन्निफ़ के लिए ज़ख़ीर-ए-आख़िरत बनाए और उम्मत को उससे फ़ैज़याब करे। वस्सलाम।

कुतबा

सय्यद अहमद अफ़ल्लाहु अन्हु पालनपुरी

(ख़ादिम दारुल उलूम देवबन्द)

तआरुफ़ व तबसिरा

अज़ हज़रत मौलाना शम्सुल हक़ साहब नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी, दावत व तब्लीग़ के नामवर ख़तीब व वाइज़ मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी (जिन्होंने अपनी पूरी उम्र दावत व तब्लीग़ के लिए वक़्फ़ फ़रमा दी थी, जो हज़रत जी मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह० के ख़ास तर्बियतयाफ़्ता थे, और हज़रत जी की वफ़ात के बाद तो बड़े इज्तिमाआत को उमूमन मौलाना ही ख़िताब फ़रमाते थे। मौलाना की तक़रीर बड़ी मुअस्सिर और आम फ़हम होती थी। दुआ भी तवील फ़रमाते थे। मौलाना यूनुस साहब इन्हीं) के फ़रजन्द अर्जमन्द हैं और मौलाना की वफ़ात के बाद अपने वक़्त का बड़ा हिस्सा मर्कज़ निज़ामुद्दीन में गुज़ारते हैं। मौलाना को मुफ़क्किरे इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी रहमतुल्लाहि अलैहि० से बैअत व ख़िलाफ़त का शर्फ़ भी हासिल है जिसकी वजह से हज़रत की तस्नीफ़ात का भी ज़ौक़ व शौक़ के साथ मुतालआ फ़रमाते हैं। बड़े इज्तिमाआत में शिर्कत का पूरा एहतिमाम रहता है। जिस वक़्त यह सतरें लिखीं जा रही हैं दो अहम इज्तिमाआत में शिर्कत के बाद उस वक़्त यानी 9 ज़िल हिज्जा को इश्क़ व सरमस्ती के आलम में अरफ़ात में होंगे। अल्लाह तआला हज्ज मबरूर नसीब फ़रमाए, यह एक दौर इफ़्तादा की दुआ है।

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्न-क अंतस समीउल अलीम०

मौलाना अपनी तक़ारीर में अहादीस शरीफ़ा और तक़ारीर और बुज़ुर्गों के तज़्किरों में मज़्कूर मुवस्सिर वाक़िआत व हिकायात और नसायह व हुक्म को बयान करते, और सामईन के दिलों को गर्माते, और दीनी ग़ैरत व हमीयत को जगाते हैं। मौलाना अर्से से ऐसे मुवस्सिर वाक़िआत, तालीमात और बाज़ ज़रूरी मसाइल व फ़तावा की बयाज़ भी तैयार करते जाते हैं, जो वाक़ई बिखरे मोतियों का बड़ा दिलकश हार है, जो पढ़ने वाले के दिल को खींचता है और रूह को बालीदगी अता करता है, ख़ुसूसन रमज़ानुल मुबारक में मौलाना

मौसूफ़ का तरावीह के बाद बम्बई में दो जगह वअज़ और तफ़्सीर क़ुरआन पाक बयान करने का मामूल है, जिसका सिलसिला बारह बजे रात तक जारी रहता है और इख़्तिताम गुलूगीर आवाज़ में तवील दुआ पर होता है। लोगों ने दूर-दूर कनेक्शन ले रखे हैं जिससे घरों में मस्तूरात भी शौक़ के साथ मौलाना के मुवस्सिर वअज़ को सुनती हैं, उन तक़रीरों और बयान में मौलाना के उन्हीं बिखरे मोतियों को मौक़ा व मुनासिबत से ज़ीनते बयान व तक़रीर बनाते जाते हैं; जो अब किताबी शक्ल में आ गए हैं, उन बिखरे मोतियों का मुताला बड़ा मुफ़ीद और दिल को गर्माने वाला है, ज़बान व बयान असान व रवाँ है। अल्लाह तआला से दुआ है कि इससे ज़्यादा-से-ज़्यादा फ़ायदा पहुँचाए।

(तामीरे हयात, 25 जनवरी, 2005, पृ० 26)

तक़रीज़

मौलाना मुफ़्ती अमीन साहब पालनपुरी दावत बरकातहु
उस्ताद हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलहम्दुलिल्लाहि वहदहू, वस्सलातु वस्सलामु अला मन ला नबिय-य बअदहू, अम्मा बअद :

मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब पालनपुरी; हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स-सिर्रहू के बड़े साहबज़ादे हैं। मौसूफ़ ने सन् 1393 हि० मुताबिक़ सन् 1973 ई० में मज़ाहिर उलूम सहारनपुर से उलूमे मुतदावला से फ़राग़त हासिल की है। तालिबे इल्मी के ज़माने से आपका महबूब मश्ग़ला अस्लाफ़ व अकाबिर की किताबों का मुताला और पसन्दीदा बातों को कापी में महफ़ूज़ करना है।

उलूम मुतदावला से फ़राग़त के बाद एक तवील अर्से तक वालिद मुहतरम के ज़ेरे साया दावत व तब्लीग़ के काम में शबो-रोज़ लगे रहे और वालिद मुहतरम के औसाफ़ व कमालात को जज़्ब करते रहे। जिन हज़रात ने हज़रत मौलाना मुहम्मद उमर साहब पालनपुरी क़द्द-स सिर्रहू के बयानात सुने हैं और उसको क़रीब से देखा है, वह इस बात की खुले दिल से गवाही देंगे कि मौलाना मुहम्मद यूनुस साहब अख़्लाक़ व आदात और औसाफ़ व कमालात में उमरसानी हैं।

दावत व तब्लीग़ के काम से मौलाना जो दिलचस्पी रखते हैं वह 'अज़हर मिनश्शम्सि' है, और रमज़ानुल मुबारक में तरावीह के बाद मुम्बई में मौसूफ़ के जो बयानात होते हैं उनसे आपकी उलूमे क़ुरआन के साथ मुनासिबत अयां है। हज़ारों आदमी अपने घरों में कनेक्शन सिर्फ़ मौलाना के बयानात सुनने के लिए रखते हैं। इस तरह मर्दों के साथ-साथ मस्तूरात भी आपके बयानों से ख़ूब इस्तिफ़ादा करती हैं।

दूसरी तरफ़ मौलाना उन पसन्दीदा बातों को जो आप तालिबे इल्मी के

ज़माने से अब तक मुंतख़ब व महफ़ूज़ फ़रमा रहे हैं "बिखरे मोती" के नाम से शाये फ़रमा कर पूरी उम्मते मुस्लिमा को फ़ैज़ पहुंचा रहे हैं। बिला शुब्हा यह किताब इस्मे-बामुसम्मा है, जो ख़ुशक़िस्मत उसको देखता है, ख़त्म किए बग़ैर दम नहीं लेता।

इस किताब के चार हिस्से "फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली" से शाये (प्रकाशित) हो चुके हैं, अब पाँचवाँ हिस्सा पहली बार हिन्दी में "फ़रीद बुक डिपो, दिल्ली" से प्रकाशित हो रहा है, साबिक़ा हिस्सों की तरह इस हिस्से में भी मौलाना ने इबरतआमेज़ वाक़िआत, निहायत मुफ़ीद मज़ामीन और कारआमद बातें जमा कर दी हैं। अल्लाह तआला इस किताब को उम्मत के लिए रुश्दो-हिदायत का ज़रीया बनाए और मौसूफ़ को अज्रे अज़ीम अता फ़रमाए आमीन या रब्बुल आलमीन!

मुहम्मद अमीन पालनपुरी

ख़ादिम हदीस व फ़िक़्ह दारुल उलूम देवबन्द

लम्हों ने ख़ता की थी सदियों ने सज़ा पाई

(एक आशिक़ का ख़त और उसका जवाब)

पाक दामनी की लज़्ज़त गुनाह की लज़्ज़त से ज़्यादा है।

ख़त :

मेरी.......................

ख़त तो उन्हें लिखा जाता है जो किसी मंज़िल पर हों।

तुमको ख़त की क्या ज़रूरत, तुम तो मेरे दिल में हो।

जाने क्या हवाओं ने लिख दिया दरख़्तों पर,

सारे पत्ते लगते हैं मुझको तुम्हारे ख़त जैसे।।

तुम्हारा तसव्वुर ही काफ़ी है, तुम्हारी जुदाई में।।

तुम्हारे साथ फ़िल्मों में बहुत काम किया। तुम्हारी हर फ़िल्मी अदाएँ हर वक़्त मेरे साथ रहती हैं। अब तो सब अदाएं मुझे बिल्कुल असली महसूस होती हैं और किसी करवट चैन नहीं आ रहा है। तुम्हारे बिना ज़िंदगी बेमाना-सी लगती है। किसी काम में जी नहीं लगता है। तुम्हारी हर अदा, हर चीज़ मुझे अपनी जान से प्यारी लगती है।

आगे का अहवाल ख़त में लिखना मुमकिन नहीं। अगर तुमने मेरा साथ न दिया तो मैं वादा करता हूँ कि तुम्हारे प्यार के ख़त को जेब में रखकर ख़ुदकुशी कर लूँगा और तुम्हारा नाम सारी दुनिया के अख़बारों में आएगा, जिससे तुम्हारी बदनामी होगी। मेरी मौत और तुम्हारी बदनामी से बचने का एक ही रास्ता है– "हम दोनों का मिलाप"।

फ़क़त :............................

जवाबे ख़त

इंसान बाज़ औक़ात ऐसी ग़लतियाँ कर बैठता है जो पूरी ज़िंदगी के लिए सोहाने रूह बन जाती हैं। उन ग़लतियों में से एक ग़लती यह है कि औरत किसी नामेहरम मर्द से अपने ज़ाती मामलात पर बातें करनी शुरू कर दे। उसकी इब्तदा कितने ही ख़ुलूस पर मब्नी क्यों न हो, उसकी इंतिहा हमेशा बुरी होती है। बाज़ लड़कियाँ अपने माँ-बाप से बातें करने में दुश्वारी महसूस करती हैं, न ही कोई ऐसी बहन होती है जो राज़दार बन सके। लिहाज़ा वह अपने किसी कज़िन से या सहेली के भाई से या मुहल्लेदार लड़के से या क्लासफ़ेलो से बात कर बैठती है। मर्द बड़ी फ़राख़दिली से उसकी बात सुनते हैं, उसकी मदद करते हैं मगर साथ ही साथ उस लड़की में दिलचस्पी लेना भी शुरू कर देते हैं। शुरू में दोनों फ़रीक़ैन को इस बातबीच में कोई क़बाहत नज़र नहीं आती, लेकिन वक़्त के साथ-साथ दोनों में नाजाइज़ ताल्लुक़ात की सूरत बन जाती है। आजकल के नौजवान लड़के भोली-भाली लड़कियों को जाल में फंसाने और उनको दाना डालने में महारत हासिल कर चुके हैं। उमूमन लड़कियाँ नातजुर्बेकार होती हैं जब कि लड़के मुहब्बत की पैंगें बढ़ाने का तजुर्बा हासिल कर चुके होते हैं। लिहाज़ा वह हर नई लड़की को ऐसी हिक्मते अमली से क़रीब करते हैं कि अक़्ल दंग रह जाती है। अगर लड़की उन्हें दीनी ज़ेहन की नज़र आती है तो उससे नेकी और नमाज़ की बातें करनी शुरू कर देते हैं। उस लड़की से कहते हैं कि तुम्हारी वजह से मेरो दिल में नेक बनने का शौक़ पैदा हो गया है। अगर लड़की की तबीयत में हमदर्दी नज़र आती है तो उसके समाने अपनी वालिदा की सख़्ती और तुर्शरूई या अपनी बीवी की तल्ख़-कलामी का ऐसा मंज़र पेश करते हैं कि लड़की को उस पर तरस आ जाता है, वह सोचती है कि अगर मैं इससे बात नहीं करूंगी तो यह लड़का कहीं ख़ुदकुशी न कर ले। अगर लड़की ग़रीब नज़र आती है तो उसको नौकरी दिलवाने या अपने पांव पर खड़े होने का मशविरा देते हैं, अगर लड़की नाज़-नख़रेवाली और चंचल नज़र आती है तो उसकी जूती और कपड़ों की तारीफ़ों के पुल बांध देते हैं। कलर मैचिंग की तारीफ़ करके उसको क़रीब कर लेते हैं। जो लड़की दिखने में आम-सी शक्ल व सूरत रखती हो उसको कहते हैं कि तुम्हारे चेहरे पर सादगी का नूर नज़र आता है। जो लड़की उम्र में बड़ी हो जाए उसको कहते हैं कि तुम्हारे चेहरे पर बड़ी मासूमियत है, जो लड़की

बेवक़ूफ़ नज़र आए उसकी अक़्लमंदी की ख़ूब तारीफ़ें करते हैं। जो लड़की मोटी हो उसे कहते हैं कि आपकी सेहतमंदी का राज़ क्या है? हमें भी बताएं कि आप कौन-से विटामिन इस्तेमाल करती हैं? अगर कुछ और समझ में न आए तो कहते हैं कि मेरे दिल में आपका बड़ा एहतिराम है, आपकी शराफ़त मुझे अच्छी लगी है। ग़र्ज़ कोई न कोई ऐसी बात करते हैं जो उस लड़की की दुखती रग होती है कि वह लड़की महसूस करे कि मुझे भी कोई चाहनेवाला है। साथ ही यह भी यक़ीन-दिहानी करवाते हैं कि मैं आम लड़कों की तरह नहीं हूँ, मैं तो किसी से बात ही नहीं करता, पता नहीं क्यों मेरे दिल में आपका बड़ा मक़ाम है। जब लड़की बातचीत करने लग जाती है तो फिर आहिस्ता आहिस्ता उसे शीशे में उतारते हैं। उसकी तारीख़े पैदाइश लिखकर रखते हैं ताकि उसे मुबारकबाद दी जा सके। ख़त के ज़रिए राब्ता हो तो ऐसे-ऐसे अशआर लिखते हैं कि पढ़नेवाला दिल थाम के रह जाए। कभी कहते हैं कि आप मुझे खाना खाते वक़्त याद आईं, मुझे सोते वक़्त याद आईं, आप मुझे नमाज़ पढ़ते वक़्त याद आईं, अगर लड़की में शराफ़त नज़र आए तो कहते हैं कि आपने मुझे सीधे रास्ते पर डाला है। मैं तो गन्दगी के दलदल में फंस रहा था। अगर लड़की नमाज़ी हो तो कहते हैं कि मेरे लिए दुआ करना, मुझे तुम्हारी दुआओं की क़बूलियत पर बड़ा यक़ीन है। अगर लड़की में कोई बीमारी नज़र आए तो उसके इलाज-मआलजे की बातें करते हैं।

मक़सद यह होता है कि कोई ऐसी बात की जाए जो लड़की को अच्छी लगे और वह भी कोई बात करे तो फिर बात से बात बढ़े। जब महसूस करते हैं कि लड़की ने बेझिझक बात करना शुरू कर दी है तो बातचीत के दौरान कभी-कभार कहते हैं कि आप मुझे बताएं कि आप मुझे क्यों अच्छी लगती हैं? जब देखते हैं कि उसने मुस्कुराकर देखा तो कहते हैं, प्लीज़ आप मुझे याद न आया करें, मेरी नीयत साफ़ है ऐसा न हो कि मुझे आपको भुलाना मुश्किल हो जाए। कभी-कभी बातचीत के दौरान कहते हैं, हैरानगी की बात है कि मेरी और आपकी पसन्द और नापसन्द बहुत मिलती है। कभी-कभी यह कहते हैं कि आप बहुत अक़्लमंद हैं। आपने फ़लां मशविरा बड़ा ही अच्छा दिया। कभी साफ़ लफ़्ज़ों में कह देते हैं कि मैं आपको अपनाना चाहता हूँ, मेरा मक़सद बुरा नहीं है। इन तमाम हथकंडों का लबे-लुबाब यह होता है कि लड़की हमसे बातचीत करे, हँसी मज़ाक़ करे और अपनी ज़ाती ज़िंदगी की बातें खोलना शुरू

करें। जब लड़की ने अपनी ज़ाती बातें शुरू कीं तो वे समझ लेते हैं कि यह परिन्दा अब जाल में फंस जाएगा।

दूसरे मरहले में उस लड़की को यक़ीन-दिहानी करवाते हैं कि मेरी नीयत बुरी नहीं है। मगर मुझे आपसे मुहब्बत हो गई है। ज़बान से कहते हैं 'आई लव यू' I Love You मगर दिल में कहते हैं I Need You यानी मुझे आपकी ज़रूरत है।

जब देखते हैं कि एक क़दम और आगे बढ़ाया जा सकता है तो उस लड़की को अपने फ़र्ज़ी और झूठे इश्क़ की दास्तान सुनाते हैं। अगर वह ग़ौर से सुन ले तो उसे अपने ख़्वाब सुनाते हैं कि आज रात मैंने ख़्वाब में एक लड़की से यह किया, वह किया। अगर उस पर भी अच्छा रवैया ज़ाहिर करे तो उससे फ़िल्मों, डरामों और गानों के बारे में तबादला-ख़यालात करना शुरू कर देते हैं। पूछते हैं तुम्हें कौन-सा गाना पसन्द है? मुझे तो यह पसन्द है, तुम्हें कौन-सी फ़िल्म पसन्द है? मुझे तो यह पसन्द है। ग़र्ज़ जब इस क़िस्म की नाशाइस्ता बातें खुले आम होने लगती हैं तो समझते हैं कि अब कामयाबी के इम्कान रौशन हैं।

तीसरे मरहले में उस लड़की से कहते हैं कि मेरा दिल चाहता है कि आपके पास बैठकर आमने-सामने जी भरके बातें करूं, मेरे लिए कुछ वक़्त और मौक़ा निकालो। कभी कहते हैं कि मेरा जी चाहता है कि समुन्द्र का किनारा हो और हम दोनों बातें करते-करते दूर चले जाएं। गर्मी के मौसम में कहते हैं कि मेरा जी चाहता है कि ठंडी सड़क हो और हम दोनों नंगे पांव उस पर चलते-चलते थक जाएं तो उसी पर सो जाएं, चाहे कोई हमारे ऊपर ट्रक ही गुज़ार दे। सर्दी के मौसम में कहते हैं कि मेरा जी चाहता है कि हम एक चारपाई पर बैठे बातें करते रहें और हमारे हाथ-पांव कम्बल में लिपटे हों। अगर लड़की ऐसी बातचीत को ख़ुशी-ख़ुशी सुन ले तो समझते हैं कि मंज़िल क़रीब है।

चौथे मरहले में उस लड़की से तंहाई में मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर करते हैं और थोड़ी गुफ़्तुगू के बाद कहते हैं कि थोड़ी देर गले मिल लो। एक मर्तबा अपनी आंखों का बोसा लेने दो, आइंदा मैं कभी ऐसा नहीं करूँगा। अगर इजाज़त मिल गई तो हर मुलाक़ात में खुलते-खुलते बिल आख़िर ज़िना

के मुर्तकिब हो जाते हैं। इसलिए बन्दे की राय है कि अल्लाह के अहकामात पूरा कीजिए और इस्तख़ारा और मशविरा करके क़दम उठाएँ।

अल्लाह की रज़ा का तालिब मुहम्मद यूनुस

सबसे पहले नमाजे फ़ज्र हज़रत आदम अलैहि० ने अदा की

हम जो फ़ज्र की नमाज़ अदा करते हैं और उसमें दो रकअतें फ़र्ज़ पढ़ते हैं। उसकी हिक्मत यह है कि फ़ज्र की नमाज़ सबसे पहले आदम अलैहि० ने अदा फ़रमाई। जिस वक़्त अल्लाह तआला ने उनको दुनिया में उतारा, उस वक़्त दुनिया में रात छाई हुई थी, हज़रत आदम अलैहि० जन्नत की रौशनी से निकल कर दुनिया की इस तारीक और अंधेरी रात में दुनिया में तशरीफ़ लाए। उस वक़्त हाथ को हाथ सुझाई नहीं देता था। हज़रत आदम अलैहि० को बड़ी तशवीश और परेशानी लाहिक़ हुई कि यह दुनिया इतनी तारीक है, यहाँ ज़िंदगी कैसे गुज़रेगी? न कोई चीज़ नज़र आती है, न जगह समझ में आती है कि हम कहां हैं और कहां जाएं? हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा है। चुनांचे ख़ौफ़ महसूस होने लगा, उसके बाद आहिस्ता-आहिस्ता रौशनी होने लगी और सुबह का नूर चमकने लगा। सुबह सादिक़ ज़ाहिर हुई तो हज़रत आदम अलैहि० की जान में जान आई। उस वक़्त हज़रत आदम अलैहि० ने सूरज निकलने से पहले दो रकअतें बतौर शुक्राना अदा फ़रमाईं। एक रकअत रात की तारीकी जाने के शुक्राने में अदा फ़रमाई और एक रकअत दिन की रौशनी नमूदार होने के शुक्राने में अदा फ़रमाई। यह दो रकअतें अल्लाह तआला को इतनी पसन्द आईं कि अल्लाह तआला ने उनको हुज़ूरे अक़दस सल्ल० की उम्मत पर फ़र्ज़ फ़रमा दिया। (इनाया) इससे अंदाज़ा लगाएं कि यह फ़ज्र की नमाज़ कितनी अहम है।

सबसे पहले ज़ुहर की नमाज़ हज़रत इबराहीम अलैहि ने अदा की

इसी तरह ज़ुहर की चार रकअत जो हम अदा करते हैं। यह सबसे पहले हज़रत इबराहीम अलैहि० ने अदा फ़रमाई थीं और उस वक़्त अदा फ़रमाई थीं जिस वक़्त वह अपने बेटे हज़रत इसमाईल अलैहि० को ज़िब्ह करने के इम्तेहान में कामयाब हो गए थे। एक रकअत तो उस इम्तेहान में कामयाबी

पर शुक्राना के तौर पर अदा फ़रमाई। कहा था कि या अल्लाह आपका शुक्र है कि आपकी मदद से मैं इस मुश्किल इम्तेहान में कामयाब हो गया।' दूसरी रकअत इस बात के शुक्राने में अदा फ़रमाई थी कि अल्लाह तआला ने हज़रत इसमाईल अलैहि० के एवज़ में जन्नत से एक मेंढा उतार दिया। चूंकि यह भी अल्लाह तआला का एक ख़ुसूसी इनाम था, इसलिए उसके शुक्राने के तौर पर दूसरी रकअत अदा फ़रमाई।

तीसरी रकअत इस शुक्राने में अदा फ़रमाई कि अल्लाह तआला ने इस मौक़े पर बराहे रास्त हज़रत इबराहीम अलैहि० से ख़िताब करते हुए फ़रमाया:

"हमने आवाज़ दी : ऐ इबराहीम बिला शुबह तुमने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया, हम नेको-कारों को इसी तरह बदला दिया करते हैं।" (सूरा साफ़्फ़ात, आयत 105)

इस ख़िताब के शुक्राने में तीसरी रकअत अदा फ़रमाई। चौथी रकअत इस बात के शुक्राने में अदा फ़रमाई कि अल्लाह तआला ने ऐसा साबिर बेटा अता फ़रमाया जो इस सख़्त इम्तेहान के अंदर भी निहायत साबिर और मुतहम्मिल रहा और सब्र का पहाड़ बन गया। अगर वह मुतज़लज़िल हो जाता तो मेरे लिए अल्लाह का हुक्म पूरा करना दुशवार हो जाता। चुनांचे ख़्वाब देखने के बाद बेटे ही से मशविरा किया कि ऐ बेटे, मैंने यह ख़्वाब देखा है। तुम ग़ौर करो। तुम्हारा क्या इरादा है? बेटे ने जवाब दिया, "अब्बा जान, आपको जो हुक्म मिला है वह कर गुज़रिए। अंक़रीब इंशाअल्लाह आप मुझे सब्र करनेवालों में से पाएंगे।" ऐसा साबिर और मुतहम्मिल बेटा मिलने के शुक्राने में चौथी रकअत अदा फ़रमाई। इस तरह ये चार रकअतें हज़रत इबराहीम अलैहि० ने ज़ुहर के वक़्त बतौर शुक्राने के अदा फ़रमाई थीं। अल्लाह तआला को ऐसी पसन्द आई कि सरकारे दो आलम सल्ल० की उम्मत पर फ़र्ज़ फ़रमा दीं। (इनाया)

सबसे पहले अस्र की नमाज़ हज़रत यूनुस अलैहि० ने अदा फ़रमाई

नमाज़े अस्र की चार रकअतें सबसे पहले हज़रत यूनुस अलैहि० ने अदा फ़रमाईं। जिस वक़्त वह मछली के पेट में थे, वहां उन्होंने अल्लाह तआला को

पुकारा; जिसको अल्लाह तआला ने इस तरह नक़्ल फ़रमाया है :

> "चुनांचे उन्होंने हमें तारीकियों में पुकारा कि *'ला इला-ह इल्ला अन-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन'* तो हमने उनकी दुआ क़बूल कर ली, और हमने उनको उस घुटन से नजात दे दी (जो उनको मछली के पेट में हो रही थी)। इसी तरह हम ईमानवारों को नजात देते हैं।"
>
> (सूरा अंबिया, आयत 87-88)

चुनांचे जब अल्लाह तआला ने उनको मछली के पेट से बाहर निकाला तो उन्होंने शुक्राने के तौर पर चार रकअत नमाज़ अदा की, और चार रकअतें इसलिए अदा फ़रमाईं कि अल्लाह तआला ने उनको चार तारीकियों से नजात अता फ़रमाई थी। एक मछली के पेट की तारीकी से, दूसरे पानी की तारीकी से, तीसरे बादल की तारीकी से और चौथे रात की तारीकी से। इन चारों तारीकियों से नजात के शुक्राने में अस्र के वक़्त हज़रत यूनुस अलैहि० ने चार रकअत [illegible]ज़ अदा फ़रमाई। अल्लाह तआला को ये चार रकअतें इतनी पसन्द आई कि हज़ूर अक़दस सल्ल० की उम्मत पर उनको फ़र्ज़ फ़रमा दिया।

सबसे पहले मग़रिब की नमाज़ हज़रत दाऊद अलैहि० ने अदा की

मग़रिब की तीन रकअतें सबसे पहले हज़रत दाऊद अलैहि० ने अदा फ़रमाईं, अगरचे अंबिया अलैहि० से गुनाह सरज़द नहीं होते। वह गुनाहों से मासूम होते हैं। लेकिन बाज़ औक़ात कोई नामुनासिब काम या कोई लग़ज़िश, या कोई ख़िलाफ़े अदब काम भी उनसे ज़र्रा बराबर सरज़द हो जाए तो उस पर भी उन्हें तंबीह की जाती है, और उनको तवज्जोह दिलाई जाती है और उनकी इस्लाह की जाती है। बहरहाल हज़रत दाऊद की किसी लग़ज़िश के बाद जब अल्लाह तआला ने उनकी बख़्शिश का एलान फ़रमाया कि "फ़-ग़फ़रना लहू ज़ालि-क" यानी हमने उनकी मग़फ़िरत कर दी, तो उस वक़्त हज़रत दाऊद अलैहि० ने उस बख़्शिश के शुक्राने में मग़रिब के वक़्त चार रकअत की नीयत बांधी। जब तीन रकअत अदा फ़रमा लीं तो उसके बाद आप पर अपनी लग़ज़िश के एहसास का ऐसा ग़लबा हुआ कि आप पर

बेसाख़्ता गिरया तारी हो गया। और ऐसा गिरया तारी हुआ कि उसकी शिद्दत की वजह से चौथी रकअत न पढ़ सके। चुनांचे तीन रकअत ही पर आपने इक्तफ़ा फ़रमाया (बज़लुल मज्हूद) और चौथी रकअत पढ़ने की हिम्मत न रही। ये तीन रकअत अल्लाह तआला को इतनी पसन्द आई कि हुज़ूर अक़दस सल्ल० की उम्मत पर उनको मग़रिब के वक़्त फ़र्ज़ फ़रमा दिया।

नमाज़े इशा की फ़र्ज़ियत

इशा के वक़्त जो चार रकअत हम अदा करते हैं उसके बारे में दो क़ौल हैं। एक क़ौल यह है कि सबसे पहले हज़रत मूसा अलैहि० ने यह नमाज़ अदा की। जिस वक़्त आप हज़रत शुऐब अलैहि० के पास दस साल क़याम करने के बाद अपने अहलो-अयाल के साथ मिस्र वापस तशरीफ़ ला रहे थे, आपके घर में से उम्मीद से थीं। विलादत का वक़्त क़रीब था और सफ़र भी ख़ासा तवील था। इस वजह से आपको बड़ी फ़िक्र लाहिक़ थी कि यह इतना लम्बा सफ़र कैसे पूरा होगा? दूसरे अपने भाई हज़रत हारून अलैहि० की फ़िक्र थी, तीसरे फ़िरऔन जो आपका जानी दुश्मन था, उसका ख़ौफ़ और उसकी तरफ़ से फ़िक्र लाहिक़ थी। और चौथे होनेवाली औलाद की फ़िक्र लाहिक़ थी। इन चार परेशानियों के साथ आप सफ़र कर रहे थे। फिर सफ़र के दौरान सही रास्ते से भी हट गए जिसकी वजह से परेशानी में और इज़ाफ़ा हो गया इसी परेशानी के आलम में चलते-चलते आप कोहे तूर के क़रीब उसके मग़रिबी और दाहनी जानिब पहुंच गए। रात अंधेरी, ठंडी और बरफ़ानी थी। अहलिया मोहतरमा को विलादत की तकलीफ़ शुरू हो गई, चक़माक़ पत्थर से आग न निकली इसी हैरानी व परेशानी के आलम में देखा कि कोहे तूर पर आग जल रही है। आपने अपने घरवालों से कहा कि आप यहां ठहरें, मैं कोहे तूर से आग का कोई शोला लेकर आता हूं। जब कोहे तूर पर पहुंचे तो अल्लाह तआला से हमकलामी का शर्फ़ हासिल हुआ। आपको बतौर ख़ास हमकलामी की नेमत से नवाज़ा गया। अल्लाह तआला ने फ़रमाया :

> "फिर जब वह आग के पास पहुंचे तो उनको मिन जानिबिल्लाह आवाज़ दी गई कि ऐ मूसा मैं तुम्हारा रब हूं, आप अपने जूते उतार दें। इसलिए कि आप मुक़द्दस वादी

तुवा में हैं। और मैंने आपको अपनी रिसालत के लिए मुंतख़ब कर लिया है। लिहाज़ा जो वह्य आपकी तरफ़ भेजी जा रही है। उसको ग़ौर से सुनें।" (क़ुरआन, 9/11-13)

बहरहाल, जब अल्लाह तआला की जानिब से यह इनाम हासिल हुआ तो आपकी चार परेशानियों का ख़ात्मा हो गया। किसी ने बड़ा अच्छा शेर कहा है :

तू मिले तो कोई मर्ज़ नहीं
न मिले तो कोई दवा नहीं

इस मौक़े पर इशा के वक़्त हज़रत मूसा अलैहि० ने इन चार परेशानियों से नजात के शुक्राने में चार रकअत नमाज़ अदा फ़रमाई। यह चार रकअत अल्लाह तआला को इतनी पसन्द आई कि हुज़ूर अक़दस सल्ल० की उम्मत पर उनको फ़र्ज़ कर दिया। (इनाया)

दूसरी रिवायत यह है कि इशा की नमाज़ सबसे पहले जनाब मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्ल० ने अदा फ़रमाई (बज़लुल मज्हूद,) इसलिए यह नमाज़ बहुत अहम अमल है। (नमाज़ की बाज़ कोताहियां, अज़ मौलाना मुफ़्ती अब्दुर्रऊफ़ सखरवी)

एक मछेरे का दर्द भरा क़िस्सा—जैसी करनी वैसी भरनी ज़ुल्म से बचिए

अल्लामा इब्ने हजर रह० ने अपनी किताब अज़-ज़वाजिर में लिखा है कि एक शख़्स ने कहा कि मैंने एक शख़्स को देखा जिसका हाथ कांधे से कटा हुआ था और वह चीख़-चीख़ कर कह रहा था : मुझे देखकर इबरत हासिल करो, और किसी पर हरगिज़ ज़ुल्म न करो। मैंने आगे बढ़कर उससे पूछा कि मेरे भाई तेरा क्या क़िस्सा है? उस शख़्स ने जवाब दिया कि भाई मेरा क़िस्सा अजीब व ग़रीब है। दरअस्ल मैं ज़ुल्म करनेवालों का साथ दिया करता था। एक दिन का ज़िक्र है कि मैंने एक मछेरे को देखा जिसने काफ़ी बड़ी मछली पकड़ रखी थी। मछली मुझे पसन्द आई। मैं उसके पास पहुंचा और कहा कि मुझे यह मछली दे दो। उसने जवाब दिया मैं यह मछली तुम्हें नहीं दूंगा; क्योंकि इसे फ़रोख़्त करके उसकी क़ीमत से मुझे अपने बाल-बच्चों का पेट

पालना है। मैंने उसे मारा-पीटा और उससे ज़बरदस्ती मछली छीन ली और अपनी राह ली। जिस वक़्त मैं मछली को उठाए जा रहा था, अचानक मछली ने मेरे अंगूठे में ज़ोर से काट लिया। मैं मछली लेकर घर आया और उसे एक तरफ़ डाल दिया। अब मेरे अंगूठे में टीस और दर्द उठा और इतनी तकलीफ़ होने लगी कि उसकी शिद्दत से मेरी नींद उड़ गई। फिर मेरा पूरा हाथ सूज गया। जब सुबह हुई तो मैं तबीब के पास आया और उससे दर्द की शिकायत की। तबीब ने कहा कि यह अंगूठा सड़ना शुरू हो गया है लिहाज़ा बेहतर है कि इसको कटवा दो, वरना पूरा हाथ सड़ जाएगा। मैंने अंगूठा कटवा कर निकलवा दिया, लेकिन उसके बाद सड़ांद हाथ में शुरू हुई और दर्द की शिद्दत से मैं सख़्त बेचैन हो गया और सो न सका। लोगों ने मुझसे कहा कि हथेली काटकर निकलवा दो। मैंने ऐसा ही किया। अब दर्द बढ़कर पहुंचों तक पहुंच गया। मेरा चैन और नींद सब उड़ गई और मैं दर्द की शिद्दत से रोने और फ़रियाद करने लगा। एक शख़्स ने मशविरा दिया कि कोहनी से हाथ अलग कर दो। मैंने ऐसा ही किया लेकिन अब दर्द मोंढे तक पहुंच गया और सड़ांद वहां तक पहुंच गई। लोगों ने कहा कि अब तो पूरा हाथ मोंढे से कटवा देना होगा वरना तकलीफ़ पूरे बदन में फैल जाएगी। अब लोग मुझसे पूछने लगे कि आख़िर यह तकलीफ़ तुम्हें क्योंकर शुरू हुई। मैंने मछली का क़िस्सा उन्हें सुनाया। उन्होंने कहा, अगर तुम इब्तदा में मछली वाले के पास जाकर उससे माफ़ी मांगते, उसे कह-सुनकर राज़ी कर लेते और किसी सूरत में मछली को अपने लिए हलाल कर लेते तो तुम्हारा हाथ यूँ काटा न जाता। इसलिए अब भी जाओ और उसको ढूंढ़कर उससे ख़ुश करो, वरना तकलीफ़ पूरे बदन में फैल जाएगी। उस शख़्स ने कहा कि मैंने यह सुना तो मछलीवाले को पूरे शहर में ढूंढने लगा। आख़िर कार एक जगह उसको पा ही लिया। मैं उसके पैरों पर गिर पड़ा और उन्हें चूमकर रो-रोकर कहा कि मेरे आक़ा तुम्हें अल्लाह का वास्ता मुझे माफ़ कर दो। उसने मुझसे पूछा तुम कौन हो? मैंने बताया कि मैं वह शख़्स हूं जिसने तुमसे मछली छीन ली थी। फिर मैंने उससे अपनी कहानी बयान की और उसे अपना हाथ दिखाया। वह देखकर रो पड़ा और कहा, मेरे भाई। मैंने इस मछली को तुम्हारे लिए हलाल किया, क्योंकि तुम्हारा हश्र मैंने देख लिया। मैंने उससे कहा, मेरे आक़ा। ख़ुदा का वास्ता देकर मैं तुमसे पूछता हूं कि जब मैंने तुम्हारी मछली छीनी तो तुमने मुझे कोई बद्दुआ

दी थी। उस शख़्स ने कहा, हां, मैंने उस वक़्त यह दुआ मांगी कि ऐ अल्लाह! यह अपनी क़ुव्वत और ज़ोर के घमंड में मुझ पर ग़ालिब आया और तूने जो रिज़्क़ दिया उसने मुझसे छीन लिया और मुझ पर ज़ुल्म किया, इसलिए तू मेरे सामने इस पर ज़ोर का करिश्मा दिखा। मैंने उसे कहा मेरे अल्लाह ने अपना ज़ोर तुम्हें दिखा दिया। अब मैं अल्लाह के सामने तौबा करता हूं और वादा करता हूं कि किसी ज़ालिम की मदद हरगिज़ नहीं करूंगा, न कभी ख़ुद ज़ुल्म करूंगा। न उनके दरवाज़े पर कभी जाऊंगा और इंशाअल्लाह जब तक ज़िंदा रहूंगा, अपने वादे पर क़ायम रहूंगा।

किसी शायर ने क्या ख़ूब कहा है :

> जब तुम्हें इक़्तदार हासिल है, किसी पर हरगिज़ ज़ुल्म न करो क्योंकि ज़ुल्म का अंजाम नदामत और शर्मिंदगी है।
>
> तेरी दोनों आंखें सोती हैं और मज़्लूम जागता है और तुझे बद्दुआएं देता है और अल्लाह की आंख कभी नहीं सोती।

एक दूसरे शायर ने कहा :

> जब ज़ालिम सवार होकर धरती का सीना रोंदता है और हर करतूत में हद से गुज़र जाता है,
>
> तब तुम उसे ज़माने की गर्दिश के हवाले कर दो, क्योंकि ज़माना उसके सामने वह चीज़ ख़ोल कर रख देगा जो उसके वहम व गुमान में भी न होगी।

(मुआशिरे की मुहलिक बीमारियां, पेज 376)

अल्लाह के हुक्म से मोमिनीन के दिलों से तमाम ग़मों को निकाल देने वाला अजीब फ़रिश्ता

हज़रत उरवा बिन रुवैम रह० कहते हैं कि हज़रत अरबाज़ बिन सारिया रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से थे, बहुत बूढ़े हो गए थे और चाहते थे कि उन्हें मौत आ जाए, इसलिए यह दुआ किया करते थे, "ऐ अल्लाह! मेरी उम्र बड़ी हो गई और मेरी हड्डियां पतली और कमज़ोर हो गईं लिहाज़ा मुझे अपने पास उठा ले।" हज़रत अरबाज़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन मैं दमिश्क़ की मस्जिद में था, वहां मुझे एक नवजवान नज़र आया जो बहुत

हसीन व जमील था। उसने सब्ज़ जोड़ा पहन रखा हुआ था। उसने कहा आप यह क्या दुआ करते हैं? मैंने उससे कहा ऐ मेरे भतीजे! फिर मैं क्या दुआ करूं? उसने कहा कि यह दुआ करें "ऐ अल्लाह अमल अच्छे कर दे और मुझे मौत तक पहुंचा दे।" मैंने कहा कि अल्लाह तुम पर रहम करे! तुम कौन हो? उसने कहा कि मैं रिबाईल (वह फ़रिश्ता) हूँ जो मोमिनीन के दिलों से तमाम ग़म निकालता हूँ। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 608)

बाज़ वहशी जानवरों का आंहज़रत सल्ल० की इज़्ज़त करना

हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० के घर में एक जंगली जानवर था। जब आप सल्ल० बाहर चले जाते तो इधर-उधर दौड़ता और खिलाड़ियां करता और जहां आप सल्ल० की तशरीफ़ आवरी की आहट महसूस करता बस फ़ौरन एक गोशे में दुबक कर बैठ जाता और ज़रा आवाज़ न निकालता इस ख़्याल से कि मुबादा आप सल्ल० को तकलीफ़ हो।

(मुस्नद अहमद, अबू याला, अलबिदाया वन्निहाया, तर्जुमान अस-सुन्नह जिल्द 4, पेज 150)

फ़ायदा : जहां तक अल्फ़ाज़ रिवायत से मालूम होता है कि यह वहशी जानवर हिरण था जिसमें तर्बियत का असर बहुत कम होता है। हां, बाज़ और हैवानात ऐसे हैं जिनमें तदरीब व तर्बियत से कुछ न कुछ तहज़ीब की हरकात पैदा हो जाती हैं, मगर यह ज़ाहिर है कि उस वक़्त अरब में बिल उमूम हिरण की तर्बियत व तहज़ीब करने की आदत न थी, बिल ख़ुसूस बैते नुबूवत में हैवानात की तर्बियत का क्या तसव्वुर किया जा सकता है पर जो जानवर घरों में घुल-मिल जाते हैं वह आम तौर पर अपने मालिक को देखकर ख़ुशी में कूदने-उछलने लगते हैं, मगर यहां सूरत उसके विपरीत थी, यानी जब आप सल्ल० बाहर तशरीफ़ ले जाते तो वह कूदता-उछलता और जब वह आप सल्ल० को देख लेता, बस फ़ौरन ख़ामोश होकर एक गोशे में जा बैठता।

(तर्जुमानु-सुन्नह, जिल्द 4, पेज 150)

हाकिम के शर से बचने का मुजर्रब नुस्ख़ा

अगर किसी शख़्स को किसी हाकिम, बादशाह या किसी से भी शर का ख़तरा हो या यह समझे कि अगर मैं उसके पास जाऊंगा तो मेरी जान ख़तरे में पड़ जाएगी तो ऐसे शख़्स को चाहिए कि वह डर और शर से बचने के लिए यह अमल करे। अमल यह है कि ऐसे शख़्स के पास जाने से पहले यह कलिमात पढ़े "काफ़-हा-या-ऐन-साद० हा-मीम० ऐन-सीन-क़ाफ़०" फिर इन तीनों कलिमात के दस हुरफ़ों को इस तरह शुमार करे कि दाएं हाथ के अंगूठे से शुरू करे और बाएं हाथ के अंगूठे पर ख़त्म करे। जब इस तर्कीब से शुमार कर ले तो दोनों हाथ की मुट्ठियां बन्द कर ले और दिल में सूरह फ़ील पढ़े। जब "तरमीहिम" पर पहुंचे तो इस लफ़्ज़ "तरमीहिम" को दस मर्तबा पढ़े और हर मर्तबा एक उंगली खोलता जाए। ऐसा करने से इंशाअल्लाह मामून रहेगा।

(लू हैवान, जिल्द 3, पेज 280)

दिल रो रहा है मेरा; मगर आंख तर नहीं

इस राज़ की किसी को भी मुतलक़ ख़बर नहीं
दिल रो रहा है मेरा मगर आंख तर नहीं

ग़ैरों पे तेरी जाती है किस वास्ते नज़र
वल्लाह उनके हाथ में मुनफ़ा व ज़रर नहीं

जब मैं हूं उनके ज़िक्र की दौलत से मालामाल
क्यों ग़म हो जो अपने पास लालो-गौहर नहीं

तस्कीन ख़ुद वह आके मुझे दे रहे हैं आज
सद शुक्र है आह मेरी बे-असर नहीं

हम हैं मरीज़े इश्क़ न होगी हमें शिफ़ा
तद्बीर तेरे बस में कोई चारागर नहीं

सुनना है आपको तो सुनिए शौक़ से जनाब
यह दास्ताने इश्क मगर मुख़्तसर नहीं

उलफ़त में उनकी अक़्लों को जिसने भुला दिया
दोनों जहां में फिर उसे ख़ौफ़ो-व ख़तर नहीं

अहमद किसके इश्क़ में दीवाना हो गया
वह बेख़बर भी होकर मगर बेख़बर नहीं

तेरी रहमत तो हर एक पर आम है

जबसे होंटों पे या रब तेरा नाम है
तेरे बीमार को काफ़ी आराम है

तूने बख़्शा हमे नूरे इस्लाम है
हमपे तेरा हक़ीक़ी यह इनआम है

जिसको तेरी ख़ुदाई से इंकार है
बादशाहत में रहकर भी नाकाम है

रूठता है ज़माना अगर रूठ जाए
राज़ी करना तुझे बस मेरा काम है

आसमानों की दुनिया में है मुहतरम
तेरी ख़ातिर जो दुनिया में बदनाम है

अपने मुंकर को भी रिज़्क़ देता है
तेरी रहमत तो हर एक पर आम है

हां क़दम का उठाना मेरा काम है
पार बेड़ा लगाना तेरा काम है

इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन का जुमला इस उम्मत की ख़ुसूसियत है और इसके बहुत-से फ़ज़ाइल हैं

नीचे लिखी हदीसों को ग़ौर से पढ़िए :

1. हज़रत सअद बिन ज़ुबैर फ़रमाते हैं : *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ने की हिदायत सिर्फ़ इस उम्मत को की गई है। इस नेमत से पहली उम्मतें अपने नबियों के साथ महरूम थीं। देखिए हज़रत याक़ूब अलैहि० भी ऐसे मौक़े पर 'या अ-स-फ़ा अ़ला यूसु-फ़' कहते हैं। आपकी आंखें जाती रही थी, ग़म ने आपको नाबीना कर दिया था और ज़बान ख़ामोश थी; मख़्लूक़ में से किसी से शिकायत व शिकवा नहीं करते थे। ग़मगीन रहा करते थे।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द 3, पेज 10, फ़ी तफ़्सीर क़ौला तआला 'या असफ़ा अला यूसुफ़')

2. एक मर्तबा जनाब रसूलुल्लाह सल्ल० के नअल मुबारक का तस्मा टूट गया। आप सल्ल० *ने इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ा। सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्ल० यह भी मुसीबत है। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि मोमिन को जो अम्र नागवार पहुंचता है वही मुसीबत है। इस हदीस को तबरानी ने अबू उमामा से रिवायत किया है।

3. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि जब तुममें से किसी की जूती का तस्मा टूट जाया करे तो इन्ना *लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ा करो। क्योंकि यह भी मसीबत है।

(तफ़्सीर मज़हरी, जिल्द 1, पेज 266, तहत क़ौला तआला अल्लज़ी-न इज़ा असाबतहुम आख़िर तक)

4. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया है कि जिसने मुसीबत के वक़्त *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ा तो अल्लाह तआला उसकी मुसीबत की तलाफ़ी फ़रमा देंगे और उसकी आख़िरत अच्छी कर देंगे और उसे ज़ायाशुदा चीज़ के बदले अच्छी चीज़ अता फ़रमाएंगे। (दुर्रे मंसूर, बहवाला अनवारुल बयान तहत क़ौला तआला अल्लज़ी-न इज़ा असाबतहुम मुसीबह आख़िर तक),

5. मुस्नद अहम में है, हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं : मेरे ख़ाविन्द अबू सलमा रज़ि० एक दिन मेरे पास हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत से होकर आए और ख़ुशी-ख़ुशी फ़रमाने लगे, आज तो मैंने ऐसी हदीस सुनी है कि मैं बहुत ही ख़ुश हुआ हूं। वह हदीस यह है कि जिस किसी मुसलमान को कोई तकलीफ़ पहुंचे और वह कहे : *"अल्लाहुम-म अजुरनी फ़ी मुसीबती वख़्लुफ़ली ख़ैरम मिनहा"* यानी ख़ुदाया मुझे इस मुसीबत में अज्र दे और मुझे इससे बेहतर बदला अता फ़रमा। तो अल्लाह तआला उसे अज्र और बदला ज़रूर ही देता है। हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं मैंने इस दुआ को याद कर लिया। जब हज़रत अबू सलमा रज़ि० का इंतिक़ाल हुआ तो मैंने *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़कर फिर यह दुआ भी पढ़ ली लेकिन मुझे ख़्याल आया कि भला अबू सलमा रज़ि० से बेहतर शख़्स मुझे कौन मिल सकता है? जब मेरी इद्दत गुज़र चुकी तो मैं एक दिन एक खाल को दबाग़त दे रही थी तो आंहज़रत सल्ल० तशरीफ़ लाए और अंदर आने की इजाज़त चाही। मैंने अपने हाथ धो डाले, खाल रख दी और हुज़ूर सल्ल० से अंदर तशरीफ़ लाने की दरख़ास्त की और आप सल्ल० को एक गद्दी पर बिठा दिया। आप सल्ल० ने मुझसे अपना निकाह करने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। मैंने कहा हुज़ूर! यह तो मेरी ख़ुशक़िस्मती की बात है लेकिन अव्वल तो मैं बड़ी बाग़ैरत औरत हूं, ऐसा न हो कि हुज़ूर सल्ल० की तबीयत के ख़िलाफ़ कोई बात मुझसे सरज़द हो जाए और ख़ुदा के यहां अज़ाब हो, दूसरे यह कि मैं उम्र रसीदा हूं, तीसरे बाल-बच्चोंवाली हूँ। आप सल्ल० ने फ़रमाया, सुनो! ऐसी बेजा ग़ैरत अल्लाह दूर कर देगा और उम्र में मैं भी कुछ छोटी उम्र का नहीं और तुम्हारे बाल-बच्चे मेरे ही बाल-बच्चे हैं। मैंने यह सुनकर कहा, फिर हुज़ूर! मुझे कोई उज़्र नहीं। चुनांचे मेरा निकाह अल्लाह की नबी सल्ल० से हो

गया और मुझे अल्लाह तआला ने इस दुआ की बरकत से मेरे मियां से बहुत ही बेहतर यानी अपना रसूल सल्ल० अता फ़रमाया।

6. मुस्नद अहमद में हज़रत अली रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस किसी मुसलमान को कोई रंज व मुसीबत पहुंचे उसपर गो ज़्यादा वक़्त गुज़र जाए, फिर उसे याद आए और *वह इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ ले तो मुसीबत पर सब्र के वक़्त जो अज्र मिला था वही अब भी मिलेगा।

7. इब्ने माजा में है कि हज़रत अबू सनान रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने अपने एक बच्चे को दफ़न किया। अभी मैं उसकी क़ब्र में से निकला था कि अबू तलहा ख़ोलानी ने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे निकाला और कहा सुनो! मैं तुम्हें एक ख़ुशख़बरी सुनाऊं। रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया है कि अल्लाह तआला मलकुल मौत से दरयाफ़्त फ़रमाता है कि तूने मेरे बन्दे की आंखों की ठंडक और उसके कलेजे का टुकड़ा छीन लिया। बतला उसने क्या कहा? वे कहते हैं, ख़ुदाया तेरी तारीफ़ की और *इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन* पढ़ा। अल्लाह तआला फ़रमाता है कि उसके लिए जन्नत में एक घर बनाओ और उसका नाम बैतुल हम्द रखो। (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द-1, पेज-228)

औलाद से गुनाह व ख़ता हो जाए तो क़ता ताल्लुक़ के बजाए उनकी इस्लाह की फ़िक्र करना चाहिए

बिरादराने यूसुफ़ अलैहि० से जो ख़ता उससे पहले सरज़द हुई, वह बहुत-से कबीरा और शदीद गुनाहों पर मुश्तमिल थी। मसलन अव्वल झूठ बोलकर वालिद को इस पर आमादा करना कि यूसुफ़ अलैहि० को उनके साथ तफ़रीह के लिए भेज दें। दूसरे वालिद से अहद करके उसकी ख़िलाफ़वर्ज़ी, तीसरे छोटे मासूम भाई से बेरहमी और शिद्दत का बर्ताव। चौथे ज़ईफ़ वालिद की इंतिहाई दिल आज़ारी की परवाह न करना। पांचवें एक बेगुनाह इंसान को क़त्ल करने का मंसूबा बनाना। छठे एक आज़ाद इंसान को जबरन और ज़ुल्मन फ़रोख़्त करना। ये ऐसे इंतिहाई और शदीद जराइम थे कि जब याक़ूब अलैहि० पर यह वाज़ेह हो गया कि उन्होंने झूठ बोला है और दीदा दानिस्ता यूसुफ़ अलैहि० को ज़ाया किया है तो उसका मुतक़ाज़ा बज़ाहिर यह था कि वह उन

साहबज़ादों से क़ता ताल्लुक़ कर लेते या उनको निकाल देते, मगर हज़रत याक़ूब अलैहि० ने ऐसा नहीं किया बल्कि वह बदस्तूर वालिद की ख़िदमत में रहे, यहां तक कि उन्हीं को मिस्र से ग़ल्ला लाने के लिए भेजा और उस पर मज़ीद यह कि दोबारा फिर उनके छोटे भाई के मुताल्लिक़ वालिद से अर्ज़ मारूज़ करने का मौक़ा मिला और बिल आख़िर उनकी बात मानकर छोटे साहबज़ादे को भी उनके हवाले कर दिया। इससे मालूम हुआ कि अगर औलाद से कोई गुनाह व ख़ता सरज़द हो जाए तो बाप को चाहिए कि तर्बियत करके उनकी इस्लाह की फ़िक्र करे, और जब तक इस्लाह की उम्मीद हो क़ता ताल्लुक़ न करे। जैसा कि हज़रत याक़ूब अलैहि० ने ऐसा ही किया और बिल आख़िर वह सब अपनी ख़ताओं पर नादिम और गुनाहों से ताइब हुए। हां अगर इस्लाह से मायूसी हो जाए और उनके साथ ताल्लुक़ क़ायम रखने में दूसरों के दीन का ज़रर महसूस हो तो फिर क़ता ताल्लुक़ कर लेना बेहतर है। (मआरिफ़ुल क़ुरआन, जिल्द 5, पेज 104)

रात के वक़्त घर में सूरह वाक़िया पढ़ लीजिए फ़ाक़ा नहीं आएगा

हज़रत अबू ज़बीया रह० कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० मर्ज़ुल वफ़ात में मुब्तला हुए तो हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० उनकी अयादत के लिए तशरीफ़ लाए और फ़रमाया : आपको क्या शिकायत है? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने कहा : अपने गुनाहों की शिकायत है। हज़रत उसमान रज़ि० ने फ़रमाया : आप क्या चाहते हैं? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने इरशाद फ़रमाया कि मैं अपने रब की रहमत चाहता हूं। हज़रत उसमान रज़ि० ने फ़रमाया कि क्या मैं आपके लिए तबीब को न बुला लाऊं? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने कहा कि तबीब ही ने (यानी अल्लाह ही ने) तो मुझे बीमार किया है। हज़रत उसमान रज़ि० ने कहा : क्या मैं आपके लिए बैतुल माल से अतिया न मुक़र्रर कर दूं? हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने कहा : मुझे उसकी ज़रूरत नहीं। हज़रत उसमान रज़ि० ने फ़रमाया वह अतिया आपके बाद आपकी बेटियों को मिल जाएगा। हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि० ने कहा : क्या आपको मेरी बेटियों पर फ़ाक़े का डर है? मैंने

अपनी बेटियों को कह रखा है कि वह हर रात में सूरह वाक़िआ पढ़ लिया करें। मैंने हुज़ूर सल्ल० को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो आदमी हर रात सूरह वाक़िआ पढ़ेगा उस पर कभी फ़ाक़ा नहीं आएगा, (लिहाज़ा अतिये की ज़रूरत नहीं)। (हयातुस्सहाबा, जिल्द 2, पेज 772)

ख़ुदा की ख़ुसूसी क़ुदरत का मज़ाहिरा एक बच्चे का गहवारे में बोलना

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० बयान फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, गोद के बच्चों में से सिर्फ़ तीन ही बच्चे बोले हैं। एक तो हज़रत ईसा इब्ने मरयम अलैहि० और एक जरीज आबिदवाला लड़का। क़िस्सा यह हुआ कि जरीज एक आबिद शख़्स था। उसने अपनी इबादत के लिए एक कोठरी बना रखी थी। वह एक दिन उसमें इबादत कर रहा था कि उसकी मां उसके बाप आई। उसने पुकारा, ऐ जरीज! जरीज ने ख़्याल किया, क्या करूं ऐ अल्लाह! इधर ख़ुदा की नमाज़ का लिहाज़, उधर मां का लिहाज़। फिर नमाज़ ही को तर्जीह दी और उसी में लगा रहा। मां वापस चली गई। दूसरा दिन हुआ तो मां फिर उसके पास आई और वह उस वक़्त भी नमाज़ पढ़ रहा था। उसने पुकारा ऐ जरीज! उसने दिल में सोचा या अल्लाह! क्या करूं? इधर मां उध र नमाज़, फिर नमाज़ ही में लगा रहा। मां के बुलाने पर नहीं गया। फिर तीसरे दिन मां आई और उसने पुकारा, ऐ जरीज! उसने दिल में सोचा ऐ अल्लाह! इधर मां उधर नमाज़ क्या करूं? फिर भी नमाज़ ही की तरफ़ मुतवज्जह रह गया। बस मां ने झुंझलाकर बद्दुआ की कि ऐ अल्लाह! इसको उस वक़्त तक मौत न आए जब तक कि उसको पहले फ़ाहिशा औरतों से पाला न पड़े। उसके बाद बनू इसराईल में जरीज की इबादत और ज़ुहद का शहरा उड़ने लगा। एक बदकार औरत थी जिसका हुस्न व जमाल ज़र्बुल मिस्ल था। उसने बनू इसराईल से कहा, अगर तुम कहो तो मैं जाकर उसे लुभाऊं। यह कहकर वह एक दिन उसके पास आई। जरीज ने उसकी तरफ़ नज़र तक न उठाई, वह फ़ाहिशा औरत खिसिया कर जज़्ब-ए-इंतक़ाम से भर गई और एक गड़ेरिये के पास गई जो उसी इबादतख़ाने में सोया करता था और उस गड़ेरिये को अपने ऊपर क़ाबू दे दिया और उसके साथ मुंह काला किया।

उससे हमल ठहर गया। जब उसने बच्चे जना तो उसने जरीज से इंतक़ाम लेने के लिए मशहूर किया कि यह लड़का जरीज से हुआ है। बस यह सुनना था कि लोग जरीज पर टूट पड़े, उसको इबादतख़ाने से नीचे घसीट लाए। उसका इबादतख़ाना ढा दिया और लगे उसे मारने (कि आबिद बनकर हरामकारी करता है)। जरीज ने पूछा बताओ तो मुझे क्यों मार रहे हो? क्या बात है? उन्होंने कहा कि तूने उस फ़ाहिशा के साथ ज़िना किया और उसने तेरे नुत्फ़े का बच्चा जना है। जरीज ने कहा, अच्छा तो वह बच्चा कहां है? लोग वह बच्चा लेकर आए। उसने कहा, ज़रा मुझे नमाज़ पढ़ लेने दो। इजाज़त मिली। उसने नमाज़ पढ़ी फिर वह जरीज उस बच्चे की तरफ़ मुतवज्जह हुआ और उस बच्चे के पेट में उंगली चुभोकर बोला, ऐ बच्चे! तू सच-सच बता तेरा बाप कौन है? तो वह चन्द दिन का बच्चा क़ुदरते ख़ुदा से बोला कि फ़लां गड़ेरिया। यह करामत देखकर अब वही लोग जरीज के हाथ-पांव चूमने लगे और उसे तबर्रुक बनाकर छूने लगे। कहने लगे अब हम तुम्हारा इबादतख़ाना सोने का बनाए देते हैं। उसने कहा, नहीं यह सब रहने दो, जैसा वह मिट्टी का पहले था वैसा ही बना दो; तो लोगों ने वैसा ही बना दिया। (बुख़ारी व मुस्लिम, बहवाला तर्जुमाननुस्सुन्नह, जिल्द 4 पेज 355)

ख़ुदा की ख़ुसूसी क़ुदरत का मज़ाहिरा
एक और बच्चे का गहवारे में बोलना

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० से रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा एक बच्चा अपनी मां की गोद में दूध पी रहा था कि सामने से एक सवार, उम्दा घोड़े पर अच्छे लिबास और अच्छी शक्ल व सूरतवाला, गुज़रा। मां ने दुआ की कि या अल्लाह मेरे बच्चे को इसी सवार जैसा शानदार बनाना। बच्चे ने मां का पिस्तान छोड़कर उस सवार पर एक नज़र डाली और साफ़ अल्फ़ाज़ में कहा, "नहीं, ऐ अल्लाह! मुझे इस सवार जैसा मत बनाना। यह कहकर फिर पिस्तान चूसने और दूध पीने लगा। रावी कहते हैं कि यह क़िस्सा सुनाते वक़्त आंहज़रत सल्ल० ने अपनी शहादत की उंगली (सबाबा) जिस तरह अपने दहन मुबारक में डाली और बच्चे के दूध पीने को बताने के लिए जिस तरह ख़ुद उस उंगली को चूसा वह मंज़र उस वक़्त तक मेरी निगाहों के सामने है। फिर हुज़ूर सल्ल० ने बक़िया क़िस्सा सुनाया कि थोड़ी देर बाद कुछ लोग एक

लड़की को पकड़े हुए और उसे मारते हुए सामने से गुज़रे और कह रहे थे कि कमबख़्त तूने ज़िना किया और चोरी की और वह बेचारी कहे जा रही थी कि बस मेरा सहारा अल्लाह ही है और वह कैसा अच्छा काम बनानेवाला है। मां ने यह ज़िल्लत का मंज़र देखकर शफ़क़त से बच्चे के लिए दुआ की कि ऐ अल्लाह! मेरे बच्चे को इस लौंडी (लड़की) की तरह न बनाना। बच्चे ने फिर दूध छोड़कर एक नज़र उस लड़की पर डाली और साफ़-साफ़ कहा कि ऐ अल्लाह! मुझे इसी जैसा बनाइएगा। इस पर मां-बेटों में हुज्जत होने लगी। मां बोली जब एक आदमी अच्छी हालत में गुज़रा तो मैंने तेरे लिए दुआ की कि या अल्लाह! मेरे बच्चे को ऐसा शानदान बनाना तो उस पर तू यूं कहने लगा कि नहीं, या अल्लाह! मुझे ऐसा न बनाना और अब जो लोग एक लड़की को ज़िल्लत के साथ पकड़े मारते हुए जा रहे हैं और मैंने दुआ की कि या अल्लाह मेरे बच्चे को ऐसा न बनाना तो तू यूं कहने लगा कि ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा ही बनाना। यह क्या बेअक़्ली है? तब वह बच्चा फिर बोला, सुनो! बात यह है कि वह आदमी बड़ा ज़ालिम और जाबिर था तो मैंने कहा, ऐ ख़ुदा! मुझे उसकी तरह ज़ालिम और जाबिर न बनाइएगा और बेचारी यह लड़की! लोग यह कह रहे हैं कि तूने ज़िना भी किया है, तूने चोरी भी की है, मगर उस बेचारी ने न चोरी की है, न ज़िना किया है। तो मैंने कहा, ऐ अल्लाह! मुझे ऐसा ही मज़्लूम बेगुनाह बनाइएगा। (बुख़ारी व मुस्लिम, बहवाला तर्जुमानुस्सुन्नह, जिल्द 4, पेज 357)

उन्नीस अहम नसीहतें

1. मेहनत से घबरानेवाले कभी तरक़्क़ी नहीं करते।
2. वही लोग कामयाब होते हैं जो हक़ीक़त का डटकर मुक़ाबला करते हैं।
3. मेहनत-मज़दूरी करनेवाला अल्लाह का दोस्त है।
4. हक़ीक़ी कामयाबी अपनी क़ुरबानियों से हासिल होती है।
5. वतन की मुहब्बत ईमान का हिस्सा है।
6. अपने वतन को जान से अज़ीज़ रखो और हर वक़्त अपने हमवतनों की ख़िदमत में लगे रहो।
7. कोई मुल्क उस वक़्त तक ग़ुलाम नहीं हो सकता, जब तक उसके अपने

लोग ग़द्दारी न करें; क्योंकि अकेला लोहा जंगल से एक लड़की नहीं काट सकता जब तक लड़की उससे मिलकर कुल्हाड़ी न बने।

8. ज़बान एक ऐसा दरिन्दा है कि अगर उसे खुला छोड़ दिया जाए तो फाड़ खाए।
9. नेक अमल करो तुम्हारी उम्र में बरकत होगी।
10. जिस घर में तालीमयाफ़्ता नेक मां होती है वह घर तहज़ीब और इंसानियत की यूनीवर्सिटी है।
11. इंसानों में सबसे अच्छा इंसान वह है जिसके अख़्लाक़ अच्छे हों।
12. दुनिया की इज़्ज़त माल से है और आख़िरत की इज़्ज़त आमाल से है।
13. ख़ुश-कलामी एक ऐसा फूल है जो कभी नहीं मुरझाता।
14. ख़ुश रहना चाहते हो तो दूसरों को ख़ुश रखो।
15. अपना अंदाज़े गुफ़्तुगू नर्म रखो, क्योंकि लहजे का असर अल्फ़ाज़ से ज़्यादा होता है।
16. किसी से बदला लेने में जल्दी न करो और किसी से नेकी करने में ताख़ीर न करो।
17. इंसान के अच्छे आमाल ही उसे हुस्न अता करते हैं।
18. क़ियामत के दिन मीज़ाने अमल में सबसे ज़्यादा वज़नदार चीज़ जो रखी जाएगी, वह अच्छे अख़्लाक़ होंगे।
19. दिन भर रोज़ा रखने और रात भर इबादत करने से इंसान जो मर्तबा हासिल करता है वही दर्जा वह अच्छे अख़्लाक़ से हासिल कर लेता है।

गुनाहगार क़ाबिले रहम हैं, न कि क़ाबिले हिक़ारत

हुज़ूर अकरम सल्ल० का इरशादे गिरामी है कि हज़रत ईसा बिन मरयम अलैहि० फ़रमाते थे कि अल्लाह तआला के ज़िक्र के सिवा दूसरे कलाम की कसरत न करो, वरना उससे तुम्हारे दिल सख़्त हो जाएंगे और क़ल्बे क़ासी अल्लाह तआला से बहुत दूर हो जाता है, लेकिन चूंकि (यह क़ुर्ब और बुअद एक अम्र मानवी है इसलिए) तुम्हें उसका इल्म भी न होगा और लोगों के

(यानी अहले ज़ुनुब के) गुनाहों को इस तरह न देखो, गोया तुम ही ख़ुदा हो (यानी इस तरह नज़र न करो जिसका मंशा किब्र व तहक़ीर हो)। अपने गुनाहों को इस तरह देखो कि गोया तुम बन्दे ख़तावार हो (और यह) इसलिए कि लोग मुब्तला (मआसी भी) हैं और अहले आफ़ियत भी (यानी अहले ताअत व हिफ़ाज़त भी), पस तमको चाहिए कि अहले बला पर रहम करो और अपनी आफ़ियत पर अल्लाह तआला की हम्द करो।

(जमउल फ़वाइद, जिल्द 2, पेज 278)

हज़रत अलबा बिन ज़ैद रज़ि ने अपनी आबरू का अजीब सदक़ा किया

हज़रत अलबा बिन ज़ैद रज़ि० का हुज़ूर सल्ल० के साथ जाने का कोई इंतिज़ाम न हो सका तो रात को निकले और काफ़ी देर तक रात में नमाज़ पढ़ते रहे। फिर रो पड़े और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह! आपने जिहाद में जाने का हुक्म दिया है और उसकी तर्ग़ीब दी है, फिर आपने न मुझे इतना दिया कि मैं उससे जिहाद में जा सकूं और न अपने रसूल को सवारी दी जो मुझे (जिहाद में जाने के लिए) दे देते। लिहाज़ा किसी भी मुसलमान ने माल या जान या इज़्ज़त के बारे में मुझ पर ज़ुल्म किया हो वह माफ़ कर देता हूं और उस माफ़ करने का अज्र व सवाब तमाम मुसलमानों को सदक़ा कर देता हूं। और फिर वह सुबह लोगों में जा मिले। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, आज रात को सदक़ा करनेवाला कहां है? तो कोई न खड़ा हुआ। आप सल्ल० ने दोबारा फ़रमाया, सदक़ा करनेवाला कहां है? खड़ा हो जाए। चुनांचे हज़रत अलबा रज़ि० ने खड़े होकर हुज़ूर सल्ल० को अपना सारा वाक़िआ सुनाया। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हें ख़ुशख़बरी हो उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है! तुम्हारा यह सदक़ा मक़बूल ख़ैरात में लिखा गया है।

हज़रत अबू अबस बिन जबर रज़ि० कहते हैं कि हज़रत अलबा बिन ज़ैद बिन हारिसा रज़ि० हुज़ूर सल्ल० के सहाबा में से हैं। जब हुज़ूर सल्ल० ने सदक़ा करने की तर्ग़ीब दी तो हर आदमी अपने हैसियत के मुताबिक़ जो उसके पास था, वह लाने लगा। हज़रत अलबा बिन ज़ैद रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह! मेरे पास सदक़ा करने के लिए कुछ भी नहीं है। ऐ अल्लाह! तेरी

मख़्लूक़ में से जिसने भी मेरी आबरूरेज़ी की है, मैं उसे सदक़ा करता हूँ (यानी उसे माफ़ करता हूँ)। हुज़ूर सल्ल० ने एक मुनादी को हुक्म दिया जिसने यह एलान किया कि कहां है वह आदमी जिसने गुज़िश्ता रात अपनी आबरू का सदक़ा किया? उस पर हज़रत अलबा बिन ज़ैद रज़ि० खड़े हुए। हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया, तुम्हारा सदक़ा क़बूल हो गया

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 1, पेज 582)

मुसलमानों के पस्ती के असबाब

जैसे-जैसे दुनिया तरक़्क़ी करती जा रही है वैसे ही अख़्लाक़ी क़दरों का मेयार गिरता जा रहा है। जिस तरह आज का इंसान तहज़ीब व तमद्दुन की बुनियादों को खोखला कर रहा है, उससे ख़तरा यह है कि मुआशिरा तबाही व बर्बादी की गहरी खाई में गिर जाएगा। जिस तरफ़ भी निगाह दौड़ाइए तो शराफ़त व अख़्लाक़ का जनाज़ा निकला जा रहा है। फ़ैशन के नाम पर उरयानियत को फ़रोग़ दिया जा रहा है। तालीम के हुसूल को मुश्किल से मुश्किल बनाने की कोशिश की जा रही है। इशरतगाहों को आबाद किया जा रहा है। मुसलमानों पर ज़ुल्म व सितम के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं। उनकी इबादतगाहों को नज़रे आतिश किया जा रहा है। हमारी माओं और बहनों की अस्मतों को तार-तार किया जा रहा है। आख़िर क्यों? क्या मुसलमानों के अंदर ताक़त का ज़ख़ीरा ख़त्म हो गया है? क्या मुसलमान सिर्फ़ नाम का मुसलमान रह गया है? क्या मुसलमानों का ज़मीर मुर्दा हो गया है? क्या मुसलमानों के अंदर ईमानी ताक़त बिल्कुल नापैद हो गई है? क्या हम फिर से जिहालत के दौर में ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं? नहीं, हरगिज़ नहीं! इसकी वाहिद वजह यह है कि आज के इस पुरफ़ितन दौर में हमने सब कुछ इस दारेफ़ानी (दुनिया) को समझ लिया है। आज मुसलमानों के अंदर ईमान की दौलत कम और माल की दौलत बहुत ज़्यादा हो गई है। आज हमने मख़्लूक़ के मुहब्बत को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया और ख़ालिक़ को यकसर फ़रामोश कर दिया। ईमानी क़ुव्वत ही मोमिन का सबसे बड़ा हथियार है और इसी से हमें दुनिया व आख़िरत में कामयाबी मिलेगी। चन्द खनकते हुए सिक्कों और हरे नोटों के एवज़ ईमान को बेच देना मुस्लिम मुआशिरे का सबसे बड़ा अल्मिया

है। जब इन सारे कामों में मुसलमान पेश-पेश रहेंगे तो भला बताइए कि आख़िर कैसे हम दुनिया व आख़िरत में कामयाब रहेंगे? किस तरह मुस्लिम मुआशिरा उरूज तक पहुंचेगा? कैसे मुसलमान दुश्मनाने इस्लाम का ख़ात्मा कर सकेगा? किस तरह ईमान को बचाया जाएगा? मुसलमान तो ऐसा होता है कि उसकी निगाह से बातिल थरथरा उठता है। उसके क़दम जहां भी पड़ते हैं उख़ुव्वत व मुहब्बत का दरिया रवां हो जाता है। इस मुसलमान का हर किरदार ग़ैरों के लिए मशाले राह है और ऐसे ही मुसलमान के लिए किसी शायर ने क्या ख़ूब कहा है कि :

एक ऐसी शान पैदा कर कि बातिल थरथरा जाए।

नज़र तलवार बन जाए, नफ़्स झंकार हो जा ॥

इसलिए मुसलमानो! होश में आओ! अपने आपको पहचानो और ग़ैरों को अपने अख़्लाक़ व किरदार से अपनी तरफ़ राग़िब करो। मस्जिदों को आबाद करो, क़ुरआन की तालीमात को आम करो, नेक आमाल करो, बद आमालियों से परहेज़ करो। अल्लाह के मुक़द्दस रसूल सल्ल० की सुन्नतों पर ख़ुद भी अमल करो और दूसरों को भी तल्क़ीन करो। बुराइयों से बचो और दूसरों को भी बचाओ। ग़ुरबा व मसाकीन की इआनत करो, यतीमों के सर पर शफ़क़त का हाथ फेरो। अल्लाह और उसके बन्दों के हुक़ूक़ को अदा करने में तसाहिली से काम मत लो।

अगर हमने ऊपर लिखी बातों पर अमल करने की कोशिश की तो यह हमरे लिए बाइसे नजात है और हमारी दुनिया व आख़िरत के संवरने की बशारत है। वरना अगर हम अमल करने के बजाए इसी राह पर गामज़न रहे तो अपनी तबाही व बर्बादी के ज़िम्मेदार हम ख़ुद होंगे। फिर हमारा कोई पुरसाने हाल न होगा। फिर से मुसलमानों के ख़ून से ख़ुदा की ज़मीन को रंगीन किया जाएगा, मस्जिदों को नज़रे आतिश किया जाएगा, माओं-बहनों की अस्मत को पामाल किया जाएगा और हम मुसलमान सिर्फ़ तमाशाई बनकर रह जाएंगे। अल्लामा इक़बाल ने क्या ख़ूब कहा है कि :

वतन की फ़िक्र कर नादां मुसीबत आने वाली है

तेरी बर्बादियों के मशविरे हैं आसमानों में

न समझोगे तो मिट जाओगे ऐ हिन्दुँस्तावालो!

तुम्हारी दास्तान तक न होगी दास्तानों में

रसूले पाक सल्ल० ने फ़रमाया, "सबसे अच्छे इंसान वे हैं जिनके अख़्लाक़ सबसे अच्छे हैं।" यह फ़रमाते हुए आप सल्ल० ने मुसलमान होने की शर्त भी नहीं रखी। इससे पता चलता है कि अख़्लाक़ का दर्जा किस क़द्र बुलन्द है। आज अफ़रा-तफ़री के इस दौर में वालिदैन को बच्चों की तरफ़ तवज्जोह देने के लिए वक़्त नहीं है। इस ज़िम्मेदारी को वह स्कूल पर और असातज़ा पर छोड़ देते हैं जो सरासर ग़लत है।

मां की गोद बच्चे की पहली दर्सगाह है, इसी लिए अख़्लाक़ व आदाब का दर्स देना उसकी ज़िम्मेदारी है। अगर मां ख़ुश-अख़्लाक़ है तो बच्चे भी ख़ुद-बख़ुद ख़ुश-अख़्लाक़ हो जाएंगे। फिर भी कुछ बातों की आदत डालना अज़हद ज़रूरी होता है। किसी से मुलाक़ात हो तो सलाम के लिए पहल करना, बड़ों का एहतिराम और उनकी इज़्ज़त करना, छोटों से शफ़क़त और नर्मी से पेश आना, किसी ने कोई एहसान किया हो तो शुक्रगुज़ार होना। अगर किसी ने कोई चीज़ तलब की तो उसे देना। अगर आपके पास वह चीज़ मौजूद न हो तो ख़ुश-अख़्लाक़ी से माज़रत करना, चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रखना वग़ैरह। बज़ाहिर ये तमाम चीज़ें मामूली-सी लगती हैं, मगर इन तमाम छोटी छोटी बातों से इंसान ख़ुश-अख़्लाक़ बनता है और ख़ुश-अख़्लाक़ इंसान हर किसी का दिल जीत लेता है। ज़बान के ज़रिए इंसान सबसे ज़्यादा ख़ुश-अख़्लाक़ बन जाता है और उसी ज़बान से बदकलामी, ग़ीबत, चुग़ली और गाली-गलोज करके बद-अख़्लाक़ी के सबसे निचले दर्जे तक पहुँच जाता है। ज़बान इंसान को शाही तख़्त पर बिठा सकती है और ज़बान ही इंसान को गधे पर सवार करा सकती है। अकसर गुनाह कबीरा ज़बान के ज़रिए ही सरज़द होते हैं और झूठ उनमें सरे फ़हरिस्त है।

अगर बच्चा ख़ुश-अख़्लाक़ होगा तो इल्म हासिल करके ऊंचे-से-ऊंचे मदारिज तय करता चला जाएगा।

क्योंकि उसकी ज़बान इस सिलसिले में उसकी मददगार साबित होगी। कई मर्तबा दौलत से जो काम नहीं हो पाता वह ख़ुश-कलामी से हो जाता है।

ख़न्दा पेशानी से मिलनेवाला इंसान हर दिल अज़ीज़ होता है और मार्केटिंग की दुनिया में इस तरह के लोगों की काफ़ी मांग है। आज का दौर ही मार्केटिंग का दौर है और अगर कामयाबी हासिल करना है तो ख़ुश-अख़्लाक़ी को अपनाना बहुत ज़रूरी है।

ज़िंदगी के हर मरहले में ख़ुश-अख़्लाक़ी मददगार साबित हो सकती है। एक बच्चा जिसे वालिदैन ने बेहतर तर्बियत और ख़ुश-अख़्लाक़ी के जज़्बे से सरफ़राज़ किया है, वह बच्चा सुबह उठते ही बुज़ुर्गों को सलाम करेगा और बुज़ुर्ग उसे दुआएं देंगे। फिर वह ज़रूरियाते ज़िंदगी के लिए मीठी ज़बान से गुफ़्तुगू करेगा तो जो उससे छोटे हैं वह भी उसकी तक़लीद करेंगे। ख़ुश अख़्लाक़ बच्चा न कभी खिलौनों के लिए ज़िद करेगा, न दोस्तों से लड़ेगा और न बुरी आदतें अपनाएगा। स्कूल में वह उस्ताद की ख़ास तवज्जोह का मुस्तहिक़ होगा। ग़र्ज़ वह जहां-जहां और जिस किसी से मुख़्लिसाना बर्ताव करेगा और ख़ुश-अख़्लाक़ी से पेश आएगा, लोग उसके ख़ानदान और उसके वालिदैन के बारे में बेहतर राय क़ायम करेंगे।

लड़कियों में ख़ुश-अख़्लाक़ी का होना बहुत ज़रूरी है। जिन घरों की लड़कियों में ख़ुश-अख़्लाक़ी और सलीक़ामंदी होती है लोग उनकी इज़्ज़त करते हैं और उसी ख़ुश-अख़्लाक़ी की बदौलत वालिदैन के लिए उनकी लड़कियों के रिश्ते जल्द अच्छे घरानों में तय पाते हैं।

सलीक़ामंद और ख़ुश-अख़्लाक़ औरत अपने शौहर और सुसरालवालों के दिलों में ऐसा मक़ाम बना लेती है जिसकी मिसालें लोग देते हैं। ख़ुश-अख़्लाक़ और सलीक़ामंद बीवी का शौहर जब थका-मांदा घर लौटता है तो वह अपनी रफ़ीक़े हयात के मुस्कुराते हुए चेहरे को देखकर अपनी थकन भूल जाता है और उसे एक अलग तरह का सुकून और इत्मीनान नसीब होता है।

मगर अब यह तमाम बातें तो अगले वक़्त की दास्तान बनकर रह गई हैं। अज़दवाजी ज़िंदगी घरेलू नाचाकियों से पुर हैं। एक तूफ़ान बदतमीज़ी है जिसका हर घर शिकार है। कुछ बदअख़्लाक़ी हमने इस जादू के पिटारे से सीख ली है जिसे हम टी. वी. कहते हैं और कुछ बदअख़्लाक़ियां हमें भागती-दौड़ती ज़िंदगी ने सिखा दी हैं। पहले लोग जब किसी के घर जाते थे तो साथ छोटा सा तोहफ़ा भी ले जाते थे, कुछ खाने-पीने की चीज़ें या बच्चों

के लिए खिलौने वग़ैरह। इस तरह न सिर्फ़ ताल्लुक़, अपनाइयत और तालमेल परवान चढ़ता था, बल्कि बच्चे भी खिलौने या चॉकलेट पाकर ख़ुश हो जाया करते थे। आज यह अख़्लाक़ कम ही नज़र आते हैं। तोहफ़ा तो छोड़िए हम अपने चेहरे पर मुस्कुराहट के फूल भी मेज़बान को तोहफ़तन देने के रवादार नहीं हैं, जिस पर कुछ ख़र्च भी नहीं होता।

आज हमारे अख़्लाक़ इस क़द्र बिगड़ चुके हैं कि हम अपने मज़हब को अपने अख़्लाक़ की बदौलत बदनाम कर रहे हैं। लहजे में सख़्ती तो जैसे हमारी पहचान बन चुकी है।

आज अपने अख़्लाक़ ही ऐसे हैं जिनकी बदौलत हम बहुत सारी कामयाबियों से महरूम हैं। इंसान की कामयाबी और उसकी अपनी शनाख़्त का मामला उसके अख़्लाक़ पर भी मुंहसिर होता है। इसलिए हमें अपना और अपने बच्चों का नए सिरे से जाइज़ा लेना बहुत ज़रूरी है, ताकि हम और हमारे बच्चे ख़ुश-अख़्लाक़ी को अपनाकर दुनिया और आख़िरत दोनों में सुर्ख़रू हो सकें।

नाफ़रमान औलाद और वालिदैन के हुक़ूक़

इंसान पर जो हुक़ूक़ वाजिब हैं उनमें एक हुक़ूक़ुल-इबाद भी है। इसमें सबसे पहला हक़ रसूल सल्ल० का है। फिर आप सल्ल० के बाद निस्बती और ख़ूनी रिश्ते का दर्जा आता है। जिसमें मां-बाप, बेटे-बेटियां, भाई-बहन और दीगर रिश्तेदारों के हुक़ूक़ का दर्जा है। लेकिन जब हम मुआशरे का जाइज़ा लेते हैं तो यह बात साफ़ हो जाती है कि ऐसे बहुत कम लोग हैं जो वालिदैन के हुक़ूक़ का ख़ातिर ख़्वाह ख़याल रखते हैं। वालिदैन के हुक़ूक़ का ख़याल तो दरकिनार हम तो वालिदैन की नाफ़रमानी और हुक्म-उदूली में ज़र्रा बराबर भी शर्म व नदामत महसूस नहीं करते। बाज़ तो ऐसे हैं जो अपनी बीवी के सामने वालिदैन की बेइज़्ज़ती और उनसे ज़बानदराज़ी करते हैं और अफ़सोस की बात यह है कि वह उसे बहुत बड़ा कारनामा समझते हैं।

शरई नुक़्त-ए-नज़र से अगर देखा जाए तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त और उसके महबूब सरकारे दो आलम सल्ल० के बाद दुनिया में सबसे ज़्यादा अदब व एहतिराम, हुस्न व सुलूक के हक़दार वालिदैन ही हैं। क़ुरआन शरीफ़ में

अकसर मक़ामात पर अल्लाह तआला ने अपनी वहदानियत के साथ-साथ वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक, ख़ुश उस्लूबी, फ़रमांबरदारी, एहसान-शनासी और शुक्र-गुज़ारी का भी दर्स दिया है। इससे यह भी वाज़ेह हो जाता है कि अल्लाह तआला की बारगाह में वालिदैन का रुत्बा क्या है और उनका मक़ाम क्या है, बल्कि यहां तक हुक्म है कि अगर वालिदैन की किसी तकलीफ़देह बात से औलाद के दिल को ठेस पहुंचती है तो उन्हें उफ़ तक कहने से अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है।

हुज़ूर सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि अपने मां-बाप का फ़रमांबरदार और ख़िदमतगुज़ार कोई भी फ़रज़न्द, जब उनकी तरफ़ मुहब्बत से देखता है तो अल्लाह तआला उसके लिए हर निगाह के बदले एक हज का सवाब अता फ़रमाता है। इसी तरह वालिदैन की नाफ़रमानी ईज़ारसां औलाद को दुनिया व आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब की भी ख़बर दी है।

कितनी ख़ुश-नसीब है वह औलाद जिनके वालिदैन बाहयात हैं और वे अपने वालिदैन की निगहबानी और ख़िदमत में अपना वक़्त गुज़ारते हैं। जो अपने वालिदैन की मामूली-सी तकलीफ़ का ख़याल रखते हैं और उनकी छोटी बड़ी ज़रूरतों को ख़ुशी-ख़ुशी पूरा करना अपनी ख़ुश-क़िस्मती समझते हैं, ऐसी औलाद के लिए जन्नत की बशारत दी गई है।

दौरे हाज़िर में औलाद दुनियावी तालीमात हासिल करके आला ओहदे या मुलाज़िमात पाने के बाद न सिर्फ़ अपने अज़ीज़ व अक़ारिब और ख़ानदान से कटने लगें हैं बल्कि जिन वालिदैन ने शब व रोज़ मेहनत-मशक़्क़त करके लिखाया-पढ़ाया वही उन्हें अब हक़ीर लगने लगे हैं। वालिदैन की मामूली ग़लती, ग़ैर-ज़रूरी कलिमात या हरकात जो बुढ़ापे और कमज़ोरी की वजह से क़ुदरती होते हैं, अब औलाद को बरगश्ता करने लगे हैं, मां-बाप उनकी नाराज़गी का सबब बनने लगे हैं। यह और इसी तरह की दूसरी वुजूहात की बिना पर वालिदैन को अलग कर दिया जाता है। हद तो यह है कि बाज़ औलादें अपने बीवी-बच्चों तक को उनसे मिलने से मना कर देते हैं। बहुत-सी औलादें ऐसी भी हैं जो महज़ इसलिए वालिदैन से रिश्ता मुंक़ता कर देते हैं कि जाहिल और कम पढ़े लिखे मां-बाप की वजह से उनकी मॉडर्न तहज़ीब और आला तर्ज़ के रख-रखाओ में बिगाड़ व ख़लल पैदा न हो जाए। इसके

अलावा वे नहीं चाहते कि वालिदैन उनकी ज़ाती ज़िंदगी में दख़ल-अंदाज़ हों। इसलिए वे उन्हें अपने से दूर रखने को तर्जीह देते हैं।

इधर मां-बाप अपनी पोता-पोतियों की याद में परेशान होकर अपनी ज़िंदगी के आख़िरी अय्याम बड़ी कस्मपुर्सी में गुज़ारते हैं। यह एक ऐसा दर्दनाक पहलू है जिससे घबराकर दूसरी क़ौमों ने बूढ़ों का हॉस्टल बना रखा है, जहां उम्र के आख़िरी लम्हों में उन्हें वहां तनहा छोड़ दिया जाता है। वहां पहुंचकर बूढ़े बस अपनी मौत का इंतिज़ार करते नज़र आते हैं और एक दिन ऐसा आता है कि औलाद की शदीद मसरूफ़ियात की वजह से वे दूसरों के कंधों के सहारे इस दारे फ़ानी (दुनिया) से रुख़्सत होते हैं।

हमारे मुआशरे के तालीमयाफ़्ता, नई तहज़ीब के दिलदादा, फ़ैशनपरस्त नौजवानों को अपने वालिदैन बोझ नज़र आते हैं, जिसने न जाने किन-किन तकलीफ़ों, मन्नतों, अपने अरमानों और ख़्वाहिशात का गला घोंटकर औलाद को पढ़ाया-लिखाया और क़ाबिल इंसान बनाने में अपनी पूरी पूंजी और ताक़त लगा दी, लेकिन उसका बदला सिवाए हिक़ारत और नफ़रत के कुछ न मिला।

इतना कुछ होने के बाद भी मां-बाप अपनी औलाद को बुरा कहना गवारा नहीं करते, बल्कि तारीफ़ ही करते हैं, क्योंकि औलाद उनके जिगर का टुकड़ा होती है। भले ही यह टुकड़ा कितना ही फ़रेबी, एहसान फ़रामोश, ख़ुदग़र्ज़ और मफ़ादपरस्त क्यों न हो जाए। मां-बाप की नज़र में वह मासूम और बेगुनाह ही होता है। औलाद को यह भी मालूम होना चाहिए कि हर चीज़ की एक हद होती है। एक मुद्दत होती है। अगर वह उस हद से तजावुज़ कर जाए तो मां के दुखे दिल से निकली एक आह बद्दुआ बनकर हंसते खेलते, फले-फूले गुलिस्तां को तबाह व बर्बाद कर सकती है। वालिदैन चाहे किने ही ग़रीब, मुफ़्लिस, कमज़ोर, लाचार क्यों न हों, वे हमेशा अपनी मेहनत व मुशक़्क़त से अपना पेट काटकर अपने बच्चों का पेट भरते हैं। मगर आज मुआशरे का हाल यह है कि पांच बच्चे मिलकर भी अपने वालिदैन को सहारा देने में आनाकानी करते हैं। कई-कई बहानों से उन्हें अपने से अलग रखने की कोशिश करते हैं। उन पांच बच्चों के लिए उनके वालिदैन एक बहुत बड़ा मसला बल्कि बहुत बड़ा बोझ और मुसीबत होते हैं।

इस्लाम में वालिदैन का इतना बड़ा रुत्बा और मक़ाम है तो हमें चाहिए

कि हम अपने वालिदैन के साथ (वह चाहे कैसे भी हों) हुस्ने सुलूक से पेश आएं ताकि जन्नत के मुस्तहिक़ बन सकें। मां-बाप को हमेशा ख़ुश रखने की कोशिश करें और उनकी मर्ज़ी और मिज़ाज के ख़िलाफ़ कोई ऐसा काम न करें जो उनकी नाराज़गी का सबब बने। ख़ास तौर पर उस वक़्त उनका ज़्यादा ख़्याल रखें जब वे बुढ़ापे की वजह से कमज़ोर और मिज़ाज के चिड़चिड़े हो जाते हैं। उस वक़्त वालिदैन की ख़िदमत करना और उन्हें हर तरह का आराम पहुंचाना ही असल ख़िदमत होगी।

एक अहम नसीहत—मज्लिस में बैठकर दीन की बात सुनिए

दीन की मज्लिस में जो लोग दूर बैठकर यह समझ रहे हैं कि आवाज़ तो यहां भी आ रही है, यहीं से बैठकर सुन लें, वे हज़रात यह बात अच्छी तरह समझ लें कि आवाज़ को तो न फ़रिश्ते घेरते हैं और न ही आवाज़ पर मग़फ़िरत का वादा है। इसलिए वे हज़रात दूर बैठकर अपना नुक़सान न करें। मज्लिस के साथ मिलकर बैठ जाएं। हमारे दौर में दीन की ख़िदमत करने वाली पूरी दुनिया में फैली हुई बड़ी-बड़ी चार जमाअतें हैं (1) तब्लीग़ी जमाअत (2) उलमा व तलबा की जमाअत (3) मशाइख़ व अहलुल्लाह की जमाअत (4) दीनी किताबें लिखनेवाले मुसन्निफ़ों की जमाअत। इन चारों दीनी ख़िदमात के नाम ये हैं (1) तब्लीग़ (2) तदरीस (3) तज़्किया (4) तस्नीफ़ व तालीफ़। इन चारों नामों के शुरू में अरबी का हुर्फ़ 'त' है जो इन चारों में इत्तिहाद की तरफ़ इशारा करता है, दूसरा इशारा 'त' के दोनों नुक़्तों से इस तरफ़ है कि अगर इन चारों सिलसिलों में इत्तिहाद होगा तो पूरी उम्मत ऊपर आएगी, जैसे 'त' के नुक़्ते ऊपर हैं, और इत्तिहाद पैदा करने के लिए तक़वा और तआवुन की 'त' को भी अपने अंदर शामिल करना होगा जो अहले तक़वा की सोहबत ही से हासिल होगा जैसे सहाबा को जो भी मिला सोहबते नबी सल्ल० से मिला और मशाइख़े उम्मत सोहबते शैख़ ही से मशाइख़ बने, फिर उनके फ़ुयूज़ से उम्मत को ख़ूब फ़ायदा पहुंचा। अल्लाह तआला इन चारों सिलसिलों में एक दूसरे की क़द्रदानी, मुहब्बत व अज़्मत अता फ़रमा दे। बाहम तनाफ़ुर व तबाग़ुज़ (जो अदम इख़्लास की बड़ी अलामत है) उससे इन चारों सिलसिलों को बचाए। आमीन या रब्बल आलमीन !

हज़रत इबराहीम अलैहि और नमरूद का मुनाज़िरा

ज़ैद बिन असलम रह० का क़ौल है कि क़हतसाली थी। लोग नमरूद के पास जाते थे और ग़ल्ला ले आते थे। हज़रत ख़लीलुल्लाह अलैहि० भी गए। वहां यह मुनाज़िरा हो गया। बदबख़्त ने आप अलैहि० को ग़ल्ला न दिया। आप ख़ाली हाथ वापस आए। घर के क़रीब पहुंचकर आपने दोनों बोरियों में रेत भर ली कि घरवाले समझें कुछ ले आए। घर आते ही बोरियां रख कर सो गए। आपकी बीवी साहिबा हज़रत सारा अलैहि० उठीं, बोरियों को खोला तो उम्दा अनाज से दोनों पुर थीं। खाना पकाकर तैयार किया। आपकी भी आंख खुली, देखा कि खाना तैयार है। पूछा, अनाज कहां से आया? कहा दो बोरियां जो आप भरकर लाए उन्ही में से यह अनाज निकाला था। आप समझ गए कि यह ख़ुदा तआला की तरफ़ से बरकत और उसकी रहमत है। उस नाहंजार बादशाह के पास ख़ुदा तआला ने अपना एक फ़रिश्ता भेजा, उसने आकर उसे तौहीद की दावत दी लेकिन उसने क़बूल न की। दोबारा दावत दी लेकिन इंकार किया। तीसरी मर्तबा ख़ुदा तआला की तरफ़ बुलाया लेकिन फिर भी वह मुंकर ही रहा। इस बार-बार के इंकार के बाद फ़रिश्ते ने उससे कहा कि अच्छा तू अपना लश्कर तैयार कर, मैं भी अपना लश्कर लेकर आता हूं। नमरूद ने बड़ा भारी लश्कर तैयार किया और ज़बरदस्त फ़ौज को लेकर सूरज निकलने के वक़्त मैदान में आ डटा, उधर अल्लाह तआला ने मच्छरों का दरवाज़ा खोल दिया। बड़े-बड़े मच्छर इस कसरत से आए कि लोगों को सूरज भी नज़र न आता था। यह ख़ुदाई फ़ौज नमरूदियों पर गिरी और थोड़ी देर में उनका ख़ून तो क्या उनका गोश्त-पोस्त सब खा-पी गई और सारे के सारे वहीं हलाक हो गए, हड्डियों का ढांचा बाक़ी रह गया। उन्हीं मच्छरों में से एक नमरूद के नथने में घुस गया और चार सौ साल तक उसका दिमाग़ चाटता रहा। ऐसे सख़्त अज़ाब में वह रहा कि उससे मौत हज़ारों दर्जे बेहतर थी। अपना सर दीवारों और पत्थरों पर मारता-फिरता था। हथोड़ों से कुचलवाता था। यूं ही रेंग-रेंग कर बदनसीब ने हलाकत पाई। (अल्लाह हमको अपनी पनाह में रखे)। आमीन!

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 356)

पांच अहम नसीहतें

1. हक़ीर से हक़ीर काम हाथ फैलाने से बेहतर है।
2. हर अच्छा काम पहले नामुमकिन होता है।
3. नफ़्स की तमन्ना पूरी न करो, वरना बर्बाद हो जाओगे।
4. जिस नेमत की क़द्र न की जाए, वह ख़त्म हो जाती है।
5. उस रास्ते पर चलो जो बन्दे को ख़ालिक़ से मिला देता है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम का अजीब ख़्वाब और उसकी अजीब ताबीर

मुस्नद अहमद रह० की एक हदीस में है कि हज़रत क़ैस बिन उबादा रह० फ़रमाते हैं कि मैं मस्जिदे नबवी में था, एक शख़्स आया जिसका चेहरा ख़ुदातर्स था। दो हल्की रकअतें नमाज़ की उसने अदा कीं। लोग उन्हें देखकर कहने लगे यह जन्नती हैं। जब वह बाहर निकले तो मैं भी उनके पीछे हो गया, बातें करने लगा। जब वह मुतवज्जह हुए तो मैंने कहा, जब आप तशरीफ़ लाए थे तब लोगों ने आपकी निस्बत यूं कहा था। कहा सुब्हानल्लाह! किसी को वह न कहना चाहिए जिसका इल्म उसे न हो। हां, अलबत्ता इतनी बात तो है कि मैंने हुज़ूर सल्ल० की मौजूदगी में एक ख़्वाब देखा था कि गोया मैं एक लहलहाते हुए सरसब्ज़ गुलशन में हूं। उसके दर्मियान एक लोहे का सुतून है जो ज़मीन से आसमान तक चला गया है। उसकी चोटी पर एक कड़ा है। मुझसे कहा गया कि इसपर चढ़ जाओ। मैंने कहा, मैं तो नहीं चढ़ सकता। चुनांचे एक शख़्स ने मुझे थामा और मैं बआसानी चढ़ गया और उस कड़े को थाम लिया। उसने कहा, देखो मज़बूत पकड़े रहना। बस इस हालत में मेरी आंख खुल गई कि वह कड़ा मेरे हाथ में था। मैंने हुज़ूर सल्ल० से अपना यह ख़्वाब बयान किया तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, गुलशने बाग़ इस्लाम है और सुतून, सुतूने दीन है और कड़ा उरवा-ए-वुसक़ा है। तू मरते दम तक इस्लाम पर क़ायम रहेगा। यह शख़्स हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रज़ि० हैं। यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम दोनों में मरवी है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 354)

दीनार को दीनार क्यों कहते हैं (वजह तस्मिया)

इब्ने अबी हातिम में हज़रत मालिक बिन दीनार रह० का क़ौल मरवी है कि दीनार को इसलिए दीनार कहते हैं कि वह दीन यानी ईमान भी है और नार यानी आग भी है। मतलब यह है कि हक़ के साथ लो तो दीन, नाहक़ लो तो नार यानी आतिशे दोज़ख़।(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 423)

जैसी नीयत वैसा अल्लाह का मामला

(यह क़िस्सा बुख़ारी शरीफ़ में सात जगह आया है।)

मुस्नद में है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि बनी इसराईल के एक शख़्स ने दूसरे शख़्स से एक हज़ार दीनार उधार मांगा। उसने कहा, गवाह लाओ। जवाब दिया कि ख़ुदा तआला की गवाही काफ़ी है। कहा, ज़मानत लाओ। जवाब दिया कि ख़ुदा तआला की ज़मानत काफ़ी है। कहा, तूने सच कहा। अदाएगी की मीआद मुक़र्रर हो गई और उसने उसे एक हज़ार दीनार गिन दिए। उसने तरी का सफ़र किया और अपने काम से फ़ारिग़ हुआ। जब मीआद पूरी होने को आई तो यह समुन्द्र के क़रीब आया कि कोई जहाज़ या कश्ती मिले तो उसमें बैठकर जाऊं और रक़म अदा कर आऊं; लेकिन कोई जहाज़ न मिला। जब देखा कि वक़्त पर नहीं पहुंच सकता तो उसने एक लकड़ी ली और बीच में से खोखली कर ली और उसमें एक हज़ार दीनार रख दिए और एक पर्चा भी रख दिया। फिर मुंह बन्द कर दिया और ख़ुदा तआला से दुआ की।

> "ऐ परवरदिगार! तुझे ख़ूब इल्म है कि मैंने फ़लां शख़्स से एक हज़ार दीनार क़र्ज़ लिए, उसने मुझसे ज़मानत तलब की मैंने तुझे ज़ामिन बना दिया और उस पर वह ख़ुश हो गया। गवाह मांगा तो मैंने गवाह भी तुझ ही को रखा। वह इस पर भी ख़ुश हो गया। अब जबकि वक़्त मुक़र्ररा ख़त्म होने को आया तो मैंने हर चन्द कश्ती तलाश की कि जाऊं और अपना क़र्ज़ अदा कर आऊं लेकिन कोई कश्ती नहीं मिली। अब मैं इस रक़म को तुझे सौंपता हूं और समुन्द्र में डालता

हूं और दुआ करता हूं कि यह रक़म उसे पहुंचा दे।"

फिर उस लकड़ी को समुन्द्र में डाल दिया और ख़ुद चला गया। लेकिन फिर भी कश्ती की तलाश में रहा कि मिल जाए तो जाऊं। यहां तो यह हुआ, वहां जिस शख़्स ने उसे क़र्ज़ दिया जब उसने देखा कि वक़्त पूरा हुआ और आज उसे आ जाना चाहिए तो वह भी दरिया के किनारे आ खड़ा हुआ कि वह आएगा और मेरी रक़म मुझे देगा या किसी के हाथ भिजवाएगा। मगर जब शाम होने को आई और कोई कश्ती उस तरफ़ नहीं आई तो वह वापस लौटा। किनारे पर एक लकड़ी देखी तो वह यह समझ कर कि ख़ाली तो जा ही रहा हूं, आओ इस लकड़ी को ले चलूं, फाड़कर सुखा लूंगा, जलाने के काम आएगी। घर पहुंचकर जब उसे चीरा तो खनाखन बजती हुई अशरफ़ियां निकलती हैं। गिनता है तो पूरी एक हज़ार हैं। वहीं पर्चे पर नज़र पड़ती है, उसे भी उठाकर पढ़ता है। फिर एक दिन वही शख़्स आता है और एक हज़ार दीनार पेश करके कहता है कि यह लीजिए आपकी रक़म। माफ़ कीजिएगा मैंने हर चन्द कोशिश की कि वादा ख़िलाफ़ी न हो लेकिन कश्ती के न मिलने की वजह से मजबूर हो गया और देर लग गई। आज कश्ती मिली आपकी रक़म लेकर हाज़िर हुआ। उसने पूछा कि क्या मेरी रक़म आपने भिजवाई भी है? उसने कहा, मैं तो कह चुका कि मुझे कश्ती न मिली। उसने कहा अपनी रक़म वापस लेकर ख़ुश होकर चले जाओ। अपने जो रक़म लकड़ी में डालकर उसे तवक्कुल इलल्लाह दरिया में डाला था उसे ख़ुदा तआला ने मुझ तक पहुंचा दिया और मैंने अपनी पूरी रक़म वसूल कर ली। इस हदीस की सनद बिल्कुल सही है। (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 377)

ख़ियानत करनेवाले का इबरतनाक अंजाम

1. इब्ने जरीर रज़ि० की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं : मैं तुममें से उस शख़्स को पहचानता हूं जो चिल्लाती हुई बकरी को उठाए हुए क़ियामत के दिन आएगा और मेरा नाम ले लेकर मुझे पुकारेगा। मैं कह दूंगा कि मैं ख़ुदा के पास तेरे कुछ काम नहीं आ सकता, मैं तो पहुंचा चुका हूं।

2. उसे भी मैं पहचानता हूं जो ऊंट को उठाए हुए आएगा जो बोल रहा होगा। यह भी कहेगा कि ऐ मुहम्मद सल्ल०! ऐ मुहम्मद सल्ल०! मैं कहूंगा, मैं तेरे लिए ख़ुदा के पास किसी चीज़ का मालिक नहीं हूं। मैं तो तब्लीग़ कर चुका था।

3. मैं उसे भी पहचानता हूं जो इसी तरह घोड़े को लादे हुए आएगा जो हिनहिना रहा होगा, वह भी मुझे पुकारेगा और मैं कह दूंगा कि मैं तो पहुंचा चुका था, आज कुछ काम नहीं आ सकता।

4. उस शख़्स को भी मैं पहचानता हूं जो खालें लिए हुए हाज़िर होगा और कह रहा होगा या मुहम्मद सल्ल०! या मुहम्मद सल्ल०! मैं कहूंगा मैं ख़ुदा के पास किसी नफ़ा का इख़्तियार नहीं रखता, मैं तो तुझे बता चुका हूं।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 473)

अक़्लमंद लोग कौन हैं?

"आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में और रात-दिन के हेर-फेर में यक़ीनन अक़्लमंदों के लिए निशानियां हैं।"

(क़ुरआन, 3:190)

आयत का मतलब यह है कि आसमान जैसी बुलन्द और वुस्अत वाली मख़्लूक़ और ज़मीन जैसी पस्त और सख़्त लम्बी-चौड़ी मख़्लूक़ फिर आसमानों में बड़ी-बड़ी निशानियां मसलन चलने-फिरने वाले और एक जहग ठहरे रहने वाले और ज़मीन की बड़ी-बड़ी पैदावार मसलन पहाड़ और जंगल और दरख़्त और घास और खेतियां और फल और मुख़्तलिफ़ क़िस्म के जानदार और कानें और अलग-अलग ज़ाएक़े वाले और तरह-तरह की ख़ुश्बुओंवाले मेवे वग़ैरह। क्या ये सब आयाते क़ुदरत एक सोच-समझवाले इंसान की रहबरी ख़ुदा तआला की तरफ़ नहीं कर सकतीं? जो और निशानियां देखने की ज़रूरत बाक़ी रहे। फिर दिन-रात का आना-जाना और उनका कम-ज़्यादा होना फिर बराबर हो जाना ये सब उस अज़ीज़ व अलीम ख़ुदा तआला की क़ुदरते कामिला की पूरी-पूरी निशानियां हैं। इसी लिए आख़िर में फ़रमाया कि उनमें अक़्लमंदों के लिए काफ़ी निशानियां हैं जो पाक नफ़्स वाले हर चीज़ की हक़ीक़त पर नज़र डालने के आदी हैं और बेवक़ूफ़ों की तरह आंख के अंधे

और कान के बहरे नहीं। जिनकी हालत और जगह बयान हुई कि वे आसमान और ज़मीन की बहुत-सी निशानियां पैरों तले रौंदते हुए गुज़र जाते हैं और ग़ौरो फ़िक्र नहीं करते। उनमें के अक्सर बावजूद ख़ुदा को मानने के फिर भी शिर्क से नहीं छूट सकते। अब उन अक़्लमंदों की सिफ़तें बयान हो रही हैं कि—

1. वे उठते-बैठते-लेटते ख़ुदा का नाम जपा करते थे।

सहीहैन की हदीस में है कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ि० से फ़रमाया, खड़े होकर नमाज़ पढ़ा करो, अगर ताक़त न हो तो बैठकर और यह भी न हो तो लेटे-लेटे ही सही। यानी किसी हालत में ज़िक्रे ख़ुदा तआला से ग़ाफ़िल मत रहो। दिल में और पोशीदा और ज़बान से ज़िक्रे ख़ुदा करते रहा करो। ये लोग आसमान और ज़मीन की पैदाइश में नज़र दौड़ाते हैं और उनकी हिक्मतों पर ग़ौर करते हैं जो उस ख़ालिक़ यकता की अज़्मत व क़ुदरत, इल्म व हिक्मत, इख़्यार व रहमत पर दलालत करती है।

2. हज़रत शैख़ सुलैमान दारानी रह० फ़रमाते हैं कि "घर से निकलकर जिस-जिस चीज़ पर मेरी नज़र पड़ती है तो मैं देखता हूं कि उसमें ख़ुदा तआला की एक नेमत मुझ पर मौजूद है और मेरे लिए वह बाइसे इबरत है।"

3. हज़रत हसन बसरी रह० का क़ौल है कि "एक साअत ग़ौर व फ़िक्र करना रात भर के क़याम करने से अफ़ज़ल है।"

4. हज़रत फ़ुज़ैल रह० फ़रमाते हैं कि हज़रत हसन रह० का क़ौल है कि "ग़ौर व फ़िक्र और मुराक़बा एक ऐसा आइना है जो तेरे सामने तेरी बुराइयाँ-भलाइयाँ पेश कर देगा।"

5. हज़रत सुफ़ियान बिन अईना रह० फ़रमाते हैं, "ग़ौर और व फ़िक्र एक नूर है जो तेरे दिल पर अपना परतो डालेगा" और बसा औक़ात यह शेर पढ़ते :

> यानी जिस इंसान को बारीक बीनी की और सोच समझ की
> आदत पड़ गई उसे हर चीज़ में एक इबरत और आयत
> नज़र आती है।

6. हज़रत ईसा अलैहि० फ़रमाते हैं, "ख़ुशनसीब है वह शख़्स जिसका

बोलना ज़िकरुल्लाह और नसीहत हो और उसका चुप रहना ग़ौर व फ़िक्र हो और उसका देखना इबरत और तंबीह हो।"

7. लुक़मान हकीम का यह हिक्मत-आमेज़ मक़ूला भी याद रहे कि "तनहाई की गोशानशीनी जिस क़द्र ज़्यादा हो उसी क़द्र ग़ौर व फ़िक्र और अंजाम बीनी ज़्यादा होती है और जिस क़द्र यह बढ़ जाए उसी क़द्र वह रास्ते इंसान पर खुल जाते हैं जो उसे जन्नत में पहुंचा देंगे।"

8. हज़रत वहब बिन मुनब्बा रह० फ़रमाते हैं "जिस क़द्र मुराक़बा ज़्यादा होगा उसी क़द्र समझ-बूझ तेज़ होगी और जितनी समझ ज़्यादा होगी उतना इल्म नसीब होगा और जिस क़द्र इल्म नसीब होगा, नेक आमाल भी बढ़ेंगे।"

9. हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० का इरशाद है कि "अल्लाह ताआला के ज़िक्र में ज़बान का चलाना बहुत अच्छा है और ख़ुदा की नेमतों में ग़ौर व फ़िक्र करना अफ़ज़ल इबादत है।"

10. हज़रत मुग़ीस असवद रह० मज्लिस में बैठे हुए फ़रमाते कि "लोगो! क़ब्रिस्तान हर दिन जाया करो, ताकि तुम्हें अंजाम का ख़याल पैदा हो फिर अपने दिल में उस मंज़र को हाज़िर करो कि तुम ख़ुदा तआला के सामने खड़े हो, फिर एक जमाअत को जहन्नम में जाने का हुक्म होता है और एक जमाअत जन्नत में जाती है, अपने दिलों को इस हाल में जज़्ब कर दो, अपने बदन को भी वहीं हाज़िर जान लो, जहन्नम को अपने सामने देखो। उसके हथोड़ों को, उसकी आग के क़ैदख़ानों को अपने सामने लाओ।" इतना फ़रमाते ही दहाड़ें मार-मार कर रोने लगते हैं, यहां तक कि बेहोश हो जाते हैं।

11. हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह० फ़रमाते हैं, "एक शख़्स ने एक राहिब से एक क़ब्रिस्तान और एक कूड़ा डालने की जगह पर मुलाक़ात की और उससे कहा, "ऐ राहिब! तेरे पास इस वक़्त दो ख़ज़ाने हैं। एक ख़ज़ाना लोगों का यानी क़ब्रिस्तान, एक ख़ज़ाना माल का यानी कूड़ा-करकट, पाख़ाना-पेशाब, डालने की जगह।"

12. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० खंडरात पर जाते और किसी

टूट-फूटे दरवाज़े पर खड़े रहकर निहायत हसरत व अफ़सोस के साथ आवाज़ निकालते और फ़रमाते, "ऐ उजड़े हुए घरो! तुम्हारे रहनेवाले कहां हैं?" फिर ख़ुद फ़रमाते, "सब ज़ेरे ज़मीन हो गए, सब फ़ना का जाम पी चुके, सिर्फ़ ज़ाते ख़ुदा को हमेशगीवाली- बक़ा है।"

13. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० का इरशाद है कि "दो रकअतें जो दिल-बस्तगी के साथ अदा की जाएं उन तमाम नमाज़ों से अफ़ज़ल हैं जिनमें सारी रात गुज़ार दी लेकिन दिलचस्पी न थी।"

14. ख़्वाजा हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं, "ऐ इब्ने आदम! अपने पेट के तीसरे हिस्से में खा, तीसरे हिस्से में पानी पी और तीसरा हिस्सा उन सांसों के लिए छोड़ जिसमें तू आख़िरत की बातों पर, अपने अंजाम पर और अपने आमाल पर ग़ौर व फ़िक्र कर सके।" बाज़ हकीमों का क़ौल है कि "जो शख़्स दुनिया की चीज़ों पर बग़ैर इबरत हासिल किए नज़र डालता है, उस ग़फ़लत के अंदाज़ से उसकी दिल की आंखें कमज़ोर पड़ जाती हैं।"

15. हज़रत बशर इब्ने हारिस हाफ़ी रह० का फ़रमान है कि "अगर लोग ख़ुदा तआला की अज़्मत का ख़्याल करते तो हरगिज़ उनसे नाफ़रमानियाँ न होतीं।"

16. हज़रत आमिर बिन अब्दे क़ैस रह० फ़रमाते हैं कि "मैंने बहुत-से सहाबा रज़ि० से सुना है कि ईमान की रौशनी ग़ौर व फ़िक्र और मुराक़बा है।"

17. मसीह इब्ने मरयम सय्यदना हज़रत ईसा अलैहि० का फ़रमान है कि "इब्ने आदम! ऐ ज़ईफ़ इंसान! जहां कहीं तू हो अल्लाह तआला से डरता रह, दुनिया में आजिज़ी और मिस्कीनी के साथ रह, अपना घर मस्जिदों को बना ले, अपनी आंखों को रोना सिखा, अपने जिस्म को सब्र की आदत सिखा, अपने दिल को ग़ौर व फ़िक्र करनेवाला बना, कल की रोज़ी की फ़िक्र आज न कर।"

18. अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० एक मर्तबा मज्लिस में बैठे हुए रो दिए। लोगों ने वजह पूछी तो आपने फ़रमाया, "मैंने दुनिया में और उसकी लज़्ज़तों में और उसकी ख़्वाहिशों में ग़ौर व फ़िक्र किया और इबरत हासिल की। जब नतीजे पर पहुंचा तो मेरी उमंगें ख़त्म हो

गईं। हक़ीक़त यह है कि हर शख़्स के लिए इसमें इबरत व नसीहत है और वाज़ व पिंद है।" (तफ़्सीर इब्ने कसीर जिल्द 1, पेज 492-493)

हुज़ूर सल्ल० के मोज़े में सांप का क़िस्सा

कपड़े पहनने से पहले ज़रूर झाड़ लीजिए। हो सकता है कि इसमें कोई मूज़ी जानवर हो और ख़ुदा-न-ख़ास्ता कोई ईज़ा पहुंचाए। नबी करीम सल्ल० एक बार एक जंगल में अपने मोज़े पहन रहे थे। पहला मोज़ा पहनने के बाद जब आप सल्ल० ने दूसरा मोज़ा पहनने का इरादा फ़रमाया तो एक कौआ झपटा और वह मोज़ा उठाकर उड़ गया और काफ़ी ऊपर ले जाकर उसे छोड़ दिया। मोज़ा जब ऊंचाई से नीचे गिरा तो गिरने की चोट से उसमें एक सांप दूर जा पड़ा। यह देखकर आप सल्ल० ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और फ़रमाया, "हर मुसलमान के लिए ज़रूरी है कि जब मोज़ा पहनने का इरादा करे तो उसको झाड़ लिया करे।" (तबरानी, आदाबे ज़िंदगी, पेज 29-30)

जन्नत की चादर ओढ़ने का नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० का बयान है कि नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाय, "जिस शख़्स ने किसी ऐसी औरत की ताज़ियत की जिसका बच्चा मर गया हो तो उसको जन्नत में दाख़िल किया जाएगा और जन्नत की चादर ओढ़ाई जाएगी।" (तिर्मिज़ी, आदाबे ज़िंदगी, पेज 62)

मशविरे में अमानत का रंग होना चाहिए, सियासत व चालाकी का नहीं, हुज़ूर सल्ल का अंदाज़े मशवरा

तिर्मिज़ी की एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्ल० फ़रमाते हैं, "लोगों की आव-भगत, ख़ैर-ख़्वाही और चश्मपोशी का मुझे ख़ुदा की जानिब से इसी तरह हुक्म किया गया है, जिस तरह फ़राइज़ की पाबन्दी का। चुनांचे इस आयत में भी फ़रमान है, तू उनसे दरगुज़र कर, उनके लिए इस्तग़फ़ार कर, और कामों का मशवरा उनसे लिया कर।" इसी लिए हुज़ूर सल्ल० की आदते मुबारका थी कि लोगों को ख़ुश करने के लिए अपने कामों में उनसे मशवरा किया करते थे जैसे :

1. बद्रवाले दिन क़ाफ़िले की तरफ़ बढ़ने के लिए मशवरा लिया और सहाबा रज़ि० ने कहा कि अगर आप समुन्द्र के किनारे पर खड़े करके हमें फ़रमाएंगे कि इसमें कूद पड़ो और उस पार निकलो तो भी हम सरताबी न करेंगे और अगर हमें बरकुल ग़माद तक ले जाना चाहें तो भी हम आपके साथ हैं, हम वह नहीं कि मूसा अलैहि० के सहाबियों की तरह कह दें कि तू और तेरा रब लड़े हम तो यहां बैठे हैं, बल्कि हम तो आपके दाएं-बाएं सफ़ें बांधकर जमकर दुश्मनों का मुक़ाबला करेंगे। इसी तरह आप सल्ल० ने इस बात का मशवरा भी लिया कि मंज़िल कहां हो? और मुंज़िर बिन अम्र रज़ि० ने मशवरा दिया कि उन लोगों से आगे बढ़कर उनके सामने हो।

2. इसी तरह उहुद के मौक़े पर भी आप सल्ल० ने मशवरा किया कि आया मदीना में रहकर लड़ें या बाहर निकलें? और जमहूर की राय यही हुई कि बाहर मैदान में जाकर लड़ना चाहिए। चुनांचे आप सल्ल० ने यही किया।

3. और आप सल्ल० ने जंगे अहज़ाब के मौक़े पर भी अपने असहाब से मशवरा किया कि मदीना के फलों की पैदावार का तिहाई हिस्सा देने का वादा करके मुख़ालिफ़ीन से मसालिहत कर ली जाए तो हज़रत सअद बिन उबादा रज़ि० और हज़रत सअद बिन मुआज़ रज़ि० ने उसका इंकार किया और आप सल्ल० ने भी उस मशवरे को क़बूल कर लिया और मसालिहत छोड़ दी।

4. इसी तरह आप सल्ल० ने हुदैबिया वाले दिन इस अम्र का मशवरा किया कि आया मुशरिकीन के घरों पर धावा बोल दें? तो हज़रत सिद्दीक़ रज़ि० ने फ़रमाया कि हम किसी से लड़ने नहीं आए, हमारा इरादा सिर्फ़ उमरे का है। चुनांचे इसे भी आप सल्ल० ने मंज़ूर फ़रमा लिया।

5. इसी तरह जब मुनाफ़िक़ीन ने आप सल्ल० की बीवी साहिबा उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० पर तोहमत लगाई तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, ऐ मुसलमानो! मुझे मशवरा दो कि इन लोगों का मैं क्या करूं जो मेरे घरवालों को बदनाम कर रहे हैं। ख़ुदा की क़सम मेरे इल्म में तो मेरे घर वालों में कोई बुराई नहीं और जिस शख़्स के साथ तोहमत लगा रहे हैं वल्लाह मेरे नज़दीक तो वह भी भलाई वाला ही है। और आप सल्ल० ने हज़रत आइशा रज़ि० की जुदाई के लिए हज़रत अली रज़ि० और हज़रत उसामा रज़ि० से मशवरा लिया।

ग़र्ज़ लड़ाई के कामों में भी और दीगर उमूर में भी हुज़ूर सल्ल० सहाबा किराम रज़ि० से मशवरा किया करते थे। और रिवायत में है कि जब तुममें से कोई अपने भाई से मशवरा ले तो उसे चाहिए कि भली बात का मशवरा दे। (इब्ने माजा) (तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 1, पेज 473)

हवाएँ भी आपस में बातें करती हैं

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि ग़ज़व-ए-ख़ंदक़ की एक रात को मशरिक़ी हवा, शुमाली हवा के पास आई और कहने लगी, चल और हुज़ूर सल्ल० की मदद कर। शुमाली हवा ने कहा, आज़ाद और शरीफ़ औरत रात को नहीं चला करती (इसलिए मैं नहीं चलूंगी), चुनांचे जिस हवा के ज़रिए हुज़ूर सल्ल० की मदद की गई वह पुरवा यानी मशरिक़ी हवा थी।

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 622)

लुक़मान अलैहि० की अपने बेटे को नसीहत

बैहक़ी की "शोबुल ईमान" ही में हज़रत हसन रज़ि० से मंक़ूल है कि हज़रत लुक़मान अलैहि० ने अपने बेटे से कहा, "ऐ प्यारे बेटे! मैंने चट्टान, लोहे और हर भारी चीज़ को उठाया लेकिन मैंने पड़ोसी से ज़्यादा सक़ील किसी चीज़ को नहीं पाया और मैंने तमाम कड़वी और तल्ख़ चीज़ों का ज़ाइक़ा चख लिया, लेकिन फ़क़र व तंदरुस्ती से तल्ख़ कोई चीज़ नहीं पाई। ऐ बेटे! जाहिल शख़्स को हरगिज़ अपने क़ासिद और नुमाइंदा मत बना और अगर नुमाइंदगी के लिए कोई क़ाबिल और अक़्लमंद शख़्स न मिले तो ख़ुद अपना क़ासिद बन जा।"

"बेटे! झूठ से ख़ुद को महफ़ूज़ रख, क्योंकि यह चिड़िया के गोश्त के मानिन्द निहायत मरग़ूब है। थोड़ा-सा झूठ भी इंसान को जला देता है। ऐ बेटे! जनाज़ों में शिरकत किया कर और शादी की तक़रीबात में शिरकत से परहेज़ कर, क्योंकि जनाज़ों की शिरकत तुझे आख़िरत की याद दिलाएगी और शादियों में शिरकत दुनिया की ख़्वाहिशात को जन्म देगी। आसूदा शिकम होते हुए दोबारा शिकम सैर होकर मत खा क्योंकि इस सूरत में कुत्तों को डाल देना खाने से बेहतर है। बेटे न इतना शीरीं बन कि लोग तुझे निगल जाएं और न इतना कड़वा कि थूक दिया जाए।" (हयातुल हैवान, जिल्द 3, पेज 153)

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० का दर्द भरा ख़त हारून रशीद हर नमाज़ के बाद पढ़ते थे और रोते थे

इमाम इब्ने बलयान व ग़ज़ाली (रह०) वग़ैरह ने ज़िक्र किया है कि जब हारून रशीद ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन बने तो तमाम उलमा किराम उनको मुबारकबाद देने के लिए उनके पास गए, लेकिन हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० नहीं गए हालांकि हारून रशीद और सुफ़ियान सौरी एक-दूसरे के साथी और दोस्त थे। चुनांचे हज़रत सुफ़ियान के न आने से हारून रशीद को बड़ी तकलीफ़ हुई और उसने हज़रत सुफ़ियान के नाम एक ख़त लिखा जिसका मतन यह है :

"शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और रहमवाला है।"

अब्दुल्लाह हारून अमीरुल मोमिनीन की तरफ़ से अपने भाई सुफ़ियान सौरी की तरफ़।

बाद सलाम मसनून! आप जानते हैं कि अल्लाह तआला ने मोमिनीन के दर्मियान ऐसी भाईचारगी और मुहब्बत वदीअत की है कि जिसमें कोई ग़र्ज़ नहीं। चुनांचे मैंने भी अपसे ऐसी ही मुहब्बत और भाईचारगी की है कि अब न मैं उसको तोड़ सकता हूं और न उससे जुदा हो सकता हूं। यह ख़िलाफ़त का जो तौक़ अल्लाह तआला ने मेरे पर डाल दिया है, अगर यह मेरे गले में न होता तो मैं ज़रूर आपकी मुहब्बत की बिना पर आपके पास ख़ुद आता। यहां तक कि अगर मैं चलने में माज़ूर होता तो घिसट कर आता। चुनांचे अब जबकि मैं ख़लीफ़ा हुआ तो मेरे तमाम दोस्त व अहबाब मुझे मुबारकबाद देने के लिए आए। मैंने उनके लिए अपने ख़ज़ानों के मुंह खोल दिए और क़ीमती से क़ीमती चीज़ों का अतिया देकर अपने दिल और उनकी आंखों को ठंडा किया। लेकिन आप तशरीफ़ नहीं लाए हालांकि मुझे आपका शदीद इंतिज़ार था। यह ख़त आपको बड़े ज़ौक़-शौक़ और मुहब्बत की बिना पर लिख रहा हूं। ऐ अबू अब्दुल्लाह! आप अच्छी तरह से जानते हैं कि मोमिन की ज़ियारत और मुवासिलत की फ़ज़ीलत है। इसलिए आपसे दरख़ास्त है कि जैसे ही मेरा यह ख़त आपको मिले तो जितनी भी जल्दी मुमकिन हो तशरीफ़ लाइए।"

हारून रशीद ने यह ख़त उबाद तालक़ानी नामी एक शख़्स को दिया और कहा कि यह ख़त सुफ़ियान सौरी को पहुंचाओ और ख़ास तौर से यह हिदायत की कि ख़त सुफ़ियान के हाथ में ही देना और वह जो जवाब दें उसको ग़ौर से सुनना और उनके तमाम अहवाल अच्छी तरह मालूम करना। उबाद कहते हैं कि मैं उस ख़त को लेकर कूफ़ा के लिए रवाना हुआ और वहां जाकर हज़रत सुफ़ियान को उनकी मस्जिद में पाया। हज़रत सुफ़ियान ने मुझको दूर से देखा तो देखते ही खड़े हो गए और कहने लगे : "मैं मर्दूद शैतान से अल्लाह समीअ व अलीम की पनाह चाहता हुं, उस शख़्स से जो रात में आता है या यह कि वह कोई ख़ैर मेरे पास लेकर आए।"

उबाद फ़रमाते हैं कि जब मैं मस्जिद के दरवाज़े पर अपने घोड़े से उतरा तो सुफ़ियान नमाज़ के लिए खड़े हो गए, हालांकि यह किसी नमाज़ का वक़्त नहीं था। चुनांचे मैं फिर उनकी मज्लिस में हाज़िर हुआ और वहां पर मौजूद लोगों को सलाम किया। मगर किसी ने भी मेरे सलाम का जवाब न दिया और न मुझे बैठने को कहा, यहां तक कि किसी ने मेरी तरफ़ नज़र उठाकर देखने की ज़हमत भी न की। उस माहौल में मुझ पर कपकपी तारी हो गई और बदहवासी में मैंने वह ख़त हज़रत सुफ़ियान की तरफ़ फेंक दिया। हज़रत सुफ़ियान की नज़र जैसी ही ख़त पर पड़ी तो वह डर गए और ख़त से दूर हट गए; गोया वह कोई सांप है। फिर कुछ देर बाद सुफ़ियान ने अपनी आस्तीन के कपड़े से उस ख़त को उठाया और अपने पीछे बैठे हुए एक शख़्स की तरफ़ फेंका और कहा कि तुममें से कोई शख़्स इसको पढ़े, क्योंकि मैं अल्लाह से पनाह मांगता हूं किसी ऐसी चीज़ के छूने से जिसको किसी ज़ालिम ने छू रखा हो।

चुनांचे उनमें से एक शख़्स ने उस ख़त को खोला इस हाल में कि उसके हाथ भी कांप रहे थे। फिर उसने उसको पढ़ा। ख़त का मज़मून सुनकर सुफ़ियान किसी मुताज्जुब शख़्स की तरह मुस्कुराए और कहा कि इस ख़त को पलट कर उसकी पुश्त पर जवाब लिख दो। अहले मज्लिस में से किसी ने हज़रत सुफ़ियान से अर्ज़ किया कि हज़रत वह ख़लीफ़ा हैं, लिहाज़ा अगर किसी कोरे साफ़ काग़ज़ पर जवाब लिखवाते तो अच्छा था। हज़रत सुफ़ियान ने फ़रमाया कि नहीं इसी ख़त की पुश्त पर जवाब लिखो इसलिए कि अगर

उसने यह काग़ज़ हलाल कमाई का इस्तेमाल किया है तो उसको इसका बदला दिया जाएगा और अगर यह काग़ज़ हराम कमाई का इस्तेमाल किया है तो अंक़रीब उसको अज़ाब दिया जाएगा। इसके अलावा हमारे पास कोई ऐसी चीज़ न रहनी चाहिए जिसे किसी ज़ालिम ने छुआ हो, क्योंकि यह चीज़ दीन में ख़राबी का बाइस होगी।

फिर उसके बाद सुफ़ियान सौरी ने कहा कि लिखो :

"शुरू करता हूं अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला और बड़ा मेहरबान है।"

सुफ़ियान की जानिब से उस शख़्स की तरफ़ जिससे ईमान की मिठास और क़िराअते क़ुरआन की दौलत को छीन ली गई।

बाद सलाम मसनून!

यह ख़त तुमको इसलिए लिख रहा हूं ताकि तुमको मालूम हो जाए कि मैंने तुमसे अपना दीनी रिश्ता यानी भाई-चारगी और मुहब्बत को मुंक़ता कर लिया है और यह बात याद रखना कि तुमने अपने ख़त में इस बात का इक़रार किया है कि तुमने अपने दोस्त व अहबाब को शाही ख़ज़ाने से माला-माल कर दिया है। लिहाज़ा अब मैं इस बात का गवाह हूं कि तुमने मुसलमानों के बैतुल-माल का ग़लत इस्तेमाल किया है और मुसलमानों के बग़ैर इजाज़त के अपने निसाब पर ख़र्च किया और इस पर तुरह यह कि तुमने मुझसे भी इस आरज़ू का इज़्हार किया कि मैं तुम्हारे पास आऊं। लेकिन याद रखो मैं इसके लिए कभी राज़ी न होऊँगा। मैं और मेरे अहले मज्लिस जिसने भी तुम्हारे ख़त को सुना वह सब तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देने के लिए इंशाअल्लाह कल क़ियामत के दिन ख़ुदावंद क़ुद्दूस की अदालत में हाज़िर होंगे कि तुमने मुसलमानों के माल को ग़ैर-मुस्तहिक़ लोगों पर ख़र्च किया।

ऐ हारून! ज़रा मालूम करो कि तुम्हारे इस फ़ेअ्ल पर अहले इल्म, ख़ादिमे क़ुरआन, यतीम, बेवा औरतें, मुजाहिदीन, आलिमीन सब राज़ी थे या नहीं? क्योंकि मेरे नज़दीक मुस्तहिक़ और ग़ैर-मुस्तहिक़ दोनों की इजाज़त लेनी ज़रूरी थी। इसलिए ऐ हारून! अब तुम इन सवालात के जवाबात देने के लिए अपनी कमर मज़बूत कर लो। क्योंकि अंक़रीब तुमको अल्लाह जल्ल शानुहू के

सामने जो आदिल व बाहिकमत है हाज़िर होना है। लिहाज़ा अपने नफ़्स को अल्लाह से डराओ जिसने क़ुरआन की तिलावत और इल्म की मज्लिसों को छोड़कर ज़ालिम और ज़ालिमों का इमाम बनना क़बूल कर लिया।

ऐ हारून! अब तुम सरीर पर बैठने लगे और हरीर तुम्हारा लिबास हो गया और ऐसे लोगों का लश्कर जमा कर लिया जो रिआया पर ज़ुल्म करते हैं, मगर तुम इंसाफ़ नहीं करते। तुम्हारे ये लोग शराब पीते हैं, मगर तुम कोड़े दूसरों पर लगाते हो। तुम्हारे यही लश्कर (अफ़सरान) चोरी करते हैं मगर तुम हाथ काटते हो बेक़ुसूर लोगों के। तुम्हारे यह कारिन्दे क़त्ले आम करते हैं, मगर तुम ख़ामोश तमाशाई बने हो। ऐ हारून! कल मैदाने हश्र कैसा होगा जब अल्लाह तआला की तरफ़ से पुकारने वाला पुकारेगा कि "ज़ालिमों को और उनके साथियों को हाज़िर करो।" तो तुम उस वक़्त आगे बढ़ोगे इस हाल में कि तुम्हारे दोनों हाथ तुम्हारी गर्दन से बंधे होंगे और तुम्हारे इर्द-गिर्द तुम्हारे ज़ालिम मददगार होंगे और अंजामकार तुम उन ज़ालिमों के इमाम बनकर दोज़ख़ की तरफ़ जाओगे। उस दिन तुम अपने हसनात तलाश करोगे तो वह दूसरों की मीज़ान में होंगे और तुम्हारी मीज़ान में बुराइयां ही बुराइयां नज़र आएंगी और फिर तुमको कुछ नज़र नहीं आएगा। हर तरफ़ अंधेरा ही अंधेरा होगा। लिहाज़ा अब भी वक़्त है कि तुम अपनी रिआया के साथ इंसाफ़ करो और यह भी याद रखो कि यह बादशाहत तुम्हारे पास हमेशा नहीं रहेगी। यह यक़ीनन दूसरों के पास चली जाएगी। चुनांचे यह अम्र ऐसा है कि बाज़ इससे दुनिया व आख़िरत संवार लेते हैं और बाज़ दुनिया व आख़िरत दोनों बर्बाद कर लेते हैं।

और अब ख़त के आख़िर में यह बात ग़ौर से सुनो कि आइंदा कभी मुझको ख़त मत लिखना और अगर तुमने ख़त लिखा तो भी याद रखना अब कभी मुझसे किसी जवाब की उम्मीद मत रखना। वस्सलाम।"

ख़त मुकम्मल कराके हज़रत सुफ़ियान ने उसको क़ासिद की तरफ़ फेंकवा दिया। उस पर न अपनी मुहर लगाई और न उसको छुआ। क़ासिद (उबाद) कहते हैं कि ख़त के मज़मून को सुनकर मेरी हालत ग़ैर हो गई और दुनिया से एक दम इल्तिफ़ात जाता रहा। चुनांचे मैं ख़त लेकर कूफ़ा के बाज़ार में आया और आवाज़ लगाई कि है कोई ख़रीदार जो उस शख़्स को ख़रीद सके

जो अल्लाह तआला की तरफ़ जा रहा हो। चुनांचे लोग मेरे पास दिरहम और दीनार लेकर आए। मैंने उनसे कहा कि मुझे माल की ज़रूरत नहीं, मुझे तो सिर्फ़ एक जुब्बा और क़तवानी उबा चाहिए। चुनांचे लोगों ने ये चीज़ें मुझे मुहैया कर दीं। चुनांचे मैंने अपना वह क़ीमती लिबास उतार दिया जिसे मैं दरबार में हारून के पास जाते वक़्त पहनता था और फिर मैंने घोड़े को भी हंका दिया। उसके बाद मैं नंगे सर पैदल चलता हुआ हारून रशीद के महल के दरवाज़े पर पहुंचा। महल के दरवाज़े पर लोगों ने मेरी हालत को देखकर मेरा मज़ाक़ उड़ाया और फिर अंदर जाकर हारून से मेरी हाज़िरी की इजाज़त ली। चुनांचे मैं अंदर गया। हारून रशीद ने जैसे ही मुझको देखा, खड़ा हो गया और अपने सर पर हाथ मारते हुए कहने लगा "हाय बर्बादी, वाय ख़राबी, क़ासिद आबाद हो गया और भेजने वाला बर्बाद हो गया, अब उसे दुनिया की क्या ज़रूरत है। इसके बाद हारून ने बड़ी तेज़ी से मुझसे जवाब तलब किया। चुनांचे जिस तरह सुफ़ियान सौरी ने वह ख़त मेरी तरफ़ फेंकवाया था उसी तरह मैंने वह ख़त हारून रशीद की तरफ़ उछाल दिया। हारून रशीद ने फ़ौरन झुक कर अदब से उस ख़त को उठा लिया और खोलकर पढ़ना शुरू किया। पढ़ते-पढ़ते हारून रशीद के रुख़्सार आंसुओं से तर हो गए यहां तक कि हिचकी बंध गई।

हारून रशीद की यह हालत देखकर अहले दरबार में से किसी ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन सुफ़ियान की यह जुर्रत कि वह आपको ऐसा लिखे, अगर आप हुक्म दें तो हम अभी सुफ़ियान को पकड़कर क़ैद कर लाएं ताकि उसको एक इबरत-अंगेज़ सज़ा मिल सके। हारून ने जवाब दिया कि "ऐ मग़रूर! दुनिया के गुलाम! सुफ़ियान को कुछ मत कहो। उनको उनकी हालत पर रहने दो। बख़ुदा दुनिया ने हमको धोखा दिया और यह बदबख़्त बना दिया। तुम्हारे लिए मेरा यह मशवरा है कि तुम सुफ़ियान की मज्लिस में जाकर बैठो क्योंकि इस वक़्त सुफ़ियान ही हुज़ूर सल्ल० के हक़ीक़ी उम्मती हैं।"

क़ासिद उबाद कहते हैं कि उसके बाद हारून रशीद की यह हालत थी कि सुफ़ियान के उस ख़त को हर वक़्त अपने पास रखते और हर नमाज़ के बाद उसको पढ़ते और ख़ूब रोते यहां तक कि हारून का इंतक़ाल हो गया।

(हयातुल हैवान, जिल्द 3, पेज 266-269)

हर बच्चा फ़ितरते इस्लाम पर पैदा होता है

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० कहते हैं कि आंहज़रत सल्ल० ने फ़रमाया : हर बच्चा अपनी फ़ितरत (यानी इस्लाम) पर पैदा होता है, फिर उसके वालिदैन उसे यहूदी या मजूसी या नसरानी बना देते हैं।" (सहीह बुख़ारी)

फ़ितरत से मुराद अल्लाह पाक की तौहीद और इस्लाम के बुलन्द मर्तबा, उसूल व मुबादी हैं, क्योंकि यह दीन फ़ितरते इंसानी और अक़्ले सलीम के ऐन मुताबिक़ है। इस हदीस से मालूम हुआ कि हर बच्चा अक़ाइद व आमाल का ज़ेहन लेकर दुनिया में आता है, अगर वालिदैन उसकी अच्छी तर्बियत और ज़ेहन-साज़ी करें तो यह बुलन्द पाया औसाफ़ परवान चढ़ते हैं और यह इंसान एक बेहतरीन मुसलमान बनकर मुआशरे का मुफ़ीद फ़र्द बन जाता है, लेकिन अगर सूरते हाल इसके विपरीत हुई तो वालिदैन की ग़लत तर्बियत और माहौल के बद-असरात से उसके अफ़्कार व आमाल भी बिगड़ते जाते हैं। जैसे हम अमली तौर पर देखते हैं कि मुसलमान घरानों के बच्चे ईसाइयों के मिश्नरी स्कूलों या दीगर ग़ैर-मुस्लिमों के मज़हबी तालीमी इदारों में दाख़िल करा दिए जाते हैं और फिर वह उनके रंग में रंग जाते हैं, और इस्लाम के फ़ितरी और अक़्ली नज़रियात और आमाल से बेगाना हो जाते हैं। बच्चे की इस रूहानी और अख़्लाक़ी तबाही व बर्बादी में वालिदैन बराबर के शरीक होते हैं। लिहाज़ा हमें चाहिए कि अपनी औलाद को दीने इस्लाम के मुताबिक़ तालीम व तर्बियत दें ताकि वह आला मुफ़ीद और मिसाली मुसलमान बन सकें।

बच्चे के कान में अज़ान और इक़ामत की मस्नूनियत

बच्चे की पैदाइश के बाद एक सुन्नत अमल यह है कि उसके दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कही जाए, इस सिलसिले में जो अहादीस मरवी हैं वे ये हैं :

1. हज़रत हसन बिन अली रज़ि० रसूले करीम सल्ल० से रिवायत करते हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया, "जिसके यहां बच्चा पैदा हो और वह उसके दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कहे तो वह बच्चा उम्मुस्सबयान (सोकड़ा की बीमारी) से महफ़ूज़ रहेगा।" (सुनन बैहक़ी)

2. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल० ने हज़रत हसन बिन अली रज़ि० के (दाएं) कान में जिस दिन वह पैदा हुए अज़ान दी और बाएं कान में इक़ामत कही। (बैहेक़ी)

3. हज़रत अबू राफ़ेअ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ल० को देखा कि हज़रत हसन बिन अली रज़ि० जब हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के यहां पैदा हुए तो आप सल्ल० ने उनके कान में अज़ान दी।

(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी शरीफ़)

अल्लाम इब्ने क़य्यिम रह० ने लिखा है कि इस अज़ान और इक़ामत की हिक्मत यह है कि इस तरह से नौमौलूद बच्चे के कान में सबसे पहले जो आवाज़ पहुंचती है, वह ख़ुदाए बुज़ुर्ग व बरतर की बड़ाई और अज़्मत वाले कलिमात और उस शहादत के अल्फ़ाज़ होते हैं जिसके ज़रिए इंसान इस्लाम में दाख़िल होता है। गोया उसे दुनिया में आते ही इस्लाम और ख़ुदा-ए-वाहिद की बड़ाई की तल्क़ीन की जाती है, जिसके असरात ज़रूर बच्चे के दिल व दिमाग़ पर पड़ते हैं। अगरचे वह उन असरात को अभी समझ नहीं पाता।

इसकी एक हिक्मत यह बयान की गई है कि अज़ान से चूंकि शैतान भागता है, जोकि इंसान का अज़ली दुश्मन है इसलिए अज़ान कही जाती है कि दुनिया में क़दम रखते ही बच्चे पर पहले पहल शैतान का क़ब्ज़ा न हो, और उसका दुश्मन इब्तदा ही में भाग कर पसपा हो जाए।

यह हिक्मत भी बयान की गई कि बच्चे के कान में पैदाइश के बाद अज़ान दी जाती है और दुनिया से रुख़्सत होने के बाद नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाती है, गोया जैसे आम नमाज़ों के लिए अज़ान दी जाती है और तैयारी के कुछ वक़्फ़े के बाद नमाज़ पढ़ी जाती है। इस तरह तमाम इंसानों को यह समझाना मक़्सूद होता है कि पैदा होने के बाद अज़ान दी गई है और उस अज़ान के बाद तुम्हारी नमाज़ (नमाज़े जनाज़ा) जल्द होनेवाली है, लिहाज़ा दर्मियान के मुख़्तसर अर्से में आख़िरत की तैयारी करो, ताकि मरने के बाद पछताना न पड़े। किसी ने ख़ूब कहा है :

आए हुई अज़ान, गए हुई नमाज़
बस इतनी देर का झगड़ा है ज़िंदगी क्या है

तहनीक की सुन्नत :

तहनीक का मतलब यह है कि खजूर या छुहारा मुंह में चबाया जाए और उसका थोड़ा-सा हिस्सा उंगली पर लेकर नौमौलूद के मुंह में दाख़िल किया जाए। फिर उंगली को आहिस्तगी के साथ दाएं-बाएं हरकत दी जाए, ताकि चबाई हुई चीज़ पूरे मुंह में पहुंच जाए। यह सुन्नत अमल है जिसका सुबूत नीचे लिखी अहादीस से मिलता है।

4. हज़रत असमा बिन्ते अबू बक्र रज़ि० से मरवी है, जब अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० उनके शिकम में थे तो फ़रमाती हैं कि मेरे हमल के दिन पूरे हो चुके थे। मैं (हिजरत करके) मदीना आई और क़ुबा में क़याम किया। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर वहीं पैदा हुए, मैं उन्हें हुज़ूर सल्ल० के पास ले गई और उन्हें आप सल्ल० की गोद में रख दिया। आप सल्ल० ने एक छुहारा मंगवाया और उसे चबाकर अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० के मुंह में डाल दिया, इस तरह सबसे पहली चीज़ जो उनके शिकम में गई वह रसूलुल्लाह सल्ल० का आबे दहन था, फिर उनके मुंह में छुहारा डालने के बाद आप सल्ल० ने उनके लिए बरकत की दुआ फ़रमाई। इस्लाम में (हिजरत के बाद) यह बच्चे की पहली पैदाइश थी। (बुख़ारी, पेज 2, पेज 575)

5. हज़रत अबू मूसा रज़ि० बयान करते हैं कि मेरे यहां एक लड़का पैदा हुआ, मैं उसे नबी सल्ल० की ख़िदमत में ले गया। आप सल्ल० ने उसका नाम इबराहीम रखा और खजूर चबाकर उसके तालू में लगाई। आप सल्ल० ने उसके लिए बरकत की दुआ फ़रमाई और उसे मुझे दे दिया।

(बुख़ारी, जिल्द 2, पेज 699)

तहनीक की हिक्मत हदीस नं० 4 की इबारत से वाज़ेह हो गई कि इससे मुराद हुसूले बरकत है, जैसे हज़रत असमा रज़ि० ने फ़रमाया कि सबसे पहली चीज़ जो हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० के शिकम में पहुंची वह आप सल्ल० का आबे दहन मुबारक था।

यह रुत्बा बुलन्द मिला जिसको मिल गया

आज हमारे दर्मियान हुज़ूर अक़दस सल्ल० की ज़ाते पाक मौजूद नहीं है,

मगर आप सल्ल० की सुन्नत मौजूद है। लिहाज़ा किसी नेक आदमी से तहनीक की सुन्नत अदा करानी चाहिए। तिब्बी एतिबार से भी तहनीक एक फ़ायदेमंद अमल है। क्योंकि बच्चा जब इस दुनिया में नया-नया आता है तो उसका मुंह पैदाइशी बन्द होने की वजह से अभी खुलने का आदी नहीं होता। तहनीक के अमल से जबड़े खुल जाते हैं और मुंह मां के दूध को लेने के लिए तैयार हो जाता है। इसके अलावा खजूर का रस बदन के लिए क़ुव्वतबख़्श भी है।

बच्चे का सर मूँड़ना

इस्लाम में नौमौलूद बच्चे के बारे में जो अहकाम वारिद हुए हैं, उनमें से एक यह है कि सातवें दिन बच्चे के सर के बाल मूंड़े जाएं और उन बालों के वज़न के बराबर चांदी फ़क़ीरों और मिस्कीनों में तक़्सीम कर दी जाए। इस सुन्नत की नीचे लिखी अहादीस मुबारक से होती है।

6. हज़रत अनस बिन मालिकरज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने हज़रत हसन रज़ि० और हज़रत हुसैन रज़ि० की पैदाइश के सातवें दिन हुक्म दिया कि उनके सर के बाल मूंड़े जाएं। चुनांचे उनके बाल मुँड़वाए गए और उन बालों के वज़न के बराबर चांदी सदक़ा की गई।

(तोहफ़तुल मौदूद बा अहकामुल मौलूद, पेज 58)

7. मुहम्मद बिन अली बिन हुसैन रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हज़रत हुसैन रज़ि० की तरफ़ से अक़ीक़ा में एक बकरी ज़िब्ह की और फ़रमाया, ऐ फ़ातिमा! इसके सर के बाल मूंड ले और उनके बराबर चांदी ख़ैरात कर दे। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने वज़न किया तो उनका वज़न एक दिरहम या उससे कुछ कम था।

8. हज़रत समरा बिन जुंदुब रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, "हर बच्चा अक़ीक़े तक बंधा होता है, उसकी तरफ़ से सातवें दिन (बकरा या बकरी) ज़िब्ह की जाए और सर के बाल मूंढे जाएं और उसका नाम रखा जाए। (अबू दाऊद, तिर्मिज़ी, नसाई, इब्ने माजा)

मसला की रू से बच्चा और बच्ची दोनों के सर के बाल मूंडे जाने चाहिएं और हर एक के सर के बालों के बराबर चांदी ख़ैरात करनी चाहिए। क्योंकि

बच्चा और बच्ची दोनों ख़ुदा की नेमत हैं और सर के बाल मूंडने की हिक्मतें दोनों से मुताल्लिक़ हैं, बाल मूंडने में यह ख़्याल रखना चाहिए कि सारे सर के बाल मूंडे जाएं, क्योंकि बाल मूंडने का एक ग़लत तरीक़ा यह है कि सर के कुछ बाल मूंडे जाएं और कुछ छोड़ दिए जाएं, इसको अरबी में क़ज़अ कहते हैं, जिसको मना किया गया है। चुनांचे इरशाद है :

9. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम सल्ल० ने क़ज़अ से मना फ़रमाया है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सर मुंडवाने की सुन्नत से जो हिक्मत मालूम होती है वह यह है कि बच्चे के पैदाइशी बाल मादरे शिकम में आलाइश वग़ैरह के साथ गन्दे हो चुके होते हैं, उन गन्दे बालों को दूर करके सफ़ाई-सुथराई हासिल होती है। दूसरे यह कि पैदाइशी बाल इंतिहाई कमज़ोर होते हैं जिसके दूर करने से निस्बतन ताक़तवर बाल उग आते हैं। तीसरे यह कि पैदाइशी बालों को दूर करने से सर के मसाम खुल जाते हैं, जिसका सेहत पर अच्छे असरात पड़ते हैं, नीज़ सर के बाल कटवाने से देखने, सुनने, सूंघने और सोचने की क़ुव्वत ज़्यादा होती है। इस सुन्नत का दूसरा जुज़ बालों के बराबर चांदी का ख़ैरात करना है, जिसकी हिक्मत ज़ाहिर है कि बच्चे की पैदाइश पर जो ख़ुशी होती है, उसमें फ़ुक़रा और मसाकीन को भी शरीक कर लिया जाता है। यूं यह ख़ुशी सिर्फ़ एक घर तक महदूद नहीं रहती बल्कि आस-पास के ग़रीब लोग भी उसमें शरीक हो जाते हैं। नीज़ ख़ुदा की तरफ़ से औलाद के अता होने पर यह सदक़ा ख़ुशी और तशक्कुर का इज़्हार भी है।

(माहनामा महमूद, फ़रवरी, 2006 ई०, पेज 23)

नज़र बस आप (सल्ल०) ही पर है शफ़ीउल मज़नबीं मेरी

दवाओं से तबीयत रू-ब-सेहत है नहीं मेरी
तबीयत मुज़्तरिब है अब नहीं लगती कहीं मेरी

नहीं समझा कोई इस दौर को यह दौर कैसा है
दवाओं से शिफ़ा हरगिज़ नहीं हरगिज़ नहीं मेरी

इलाज इसका फ़क़त यह है कि तैबा हो निगाहों में
दियारे कुद्स में अश्कों से तर हो आसतीं मेरी

दियारे पाक होता और होती यह जबीं मेरी
ख़ुदा की रहमतों से ज़िंदगी होती हसीं मेरी

गुज़र जाए यह बाक़ी उम्र उनके आस्ताने पर
जहां हैं सरवरे आलम बने तुरबत वहीं मेरी

मताअे दर्दे दिल जो मिल गई मुश्किल से मिलती है
ख़ुदा का फ़ज़्ल है हालत तो ऐसी थी नहीं मेरी

न दिन में चैन मिलता है न शब में नींद आती है
सुकू बाक़ी नहीं है, ख़ातिर अंदूहगीं मेरी

हुआ पैदा इसी ग़म के लिए राहत का तालिब हूँ
तलब करता हूं ऐसी शय जो क़िस्मत में नहीं मेरी

वह नक़्शा जम गया है अब तो दिल में ज़ाते अक़दस का
तसव्वुर में वो रहते हैं निगाहें हों कहीं मेरी

हुआ दीवाना जब से आप का ख़िल्वत में रहता हूं
किसी से बात करने की कोई ख़्वाहिश नहीं मेरी

यह दुनिया दारे फ़ानी है फ़क़त इक ख़्वाब है शब का
जो देखा ग़ौर से मैंने तो आंखें खुल गई मेरी

किसी लाइक़ नहीं साक़िब मगर बख़्शिश का तालिब हूं
नज़र बस आप सल्ल० पर ही है शफ़ीउल मज़नबीं मेरी

वली होकर नबी का काम करो

हज़रत सलमान बिन यसार रह० मशहूर मुहद्दिस हैं। एक मर्तबा हज के सफ़र पर रवाना हुए तो जंगल में एक जगह पड़ाव डाला। उनके साथी किसी काम के लिए शहर गए तो वह अपने ख़ेमे में अकेले थे। इतने में एक ख़ूबसूरत औरत उनके ख़ेमे में आई और कुछ मांगने का इशारा किया। उन्होंने कुछ खाना उसको देना चाहा तो उस औरत ने बरमला कहा कि मैं आपसे वह कुछ चाहती हूं जो एक औरत मर्द से चाहती है। देखो, तुम नौजवान हो, मैं ख़ूबसूरत हूं, हम दोनों के तलबअंदोज़ होने के लिए तंहाई का मौक़ा भी है। हज़रत सलमान बिन यसार रह० ने सुना तो समझ गए कि शैतान ने मेरी उम्र भर की मेहनत ज़ाया करने के लिए इस औरत को भेजा है। वह ख़ौफ़े ख़ुदा से ज़ारो-क़तार रोने लगे। इतना रोए, इतना रोए कि वह औरत शर्मिन्दा होकर वापस चली गई। हज़रत सलमान बिन यसार रह० ने अल्लाह का शुक्र अदा किया कि मुसीबत से जान छूटी। रात को सोए तो हज़रत यूसुफ़ अलैहि० की ख़्वाब में ज़ियारत हुई। हज़रत यूसुफ़ अलैहि० ने फ़रमाया, मुबारकबाद हो, तुमने वली होकर वह काम कर दिखाया जो एक नबी ने किया था।

हज़रत जुनैद बग़दादी रह० के दौर में एक अमीर शख़्स था जिसकी बीवी रश्के क़मर और परी चेहरा थी। उस औरत को अपने हुस्न पर बड़ा नाज़ था। एक मर्तबा बनाव-सिंगार करते हुए उसने नाज़-नख़रे से अपने शौहर से कहा कि कोई शख़्स ऐसा नहीं जो मुझे देखे और मेरी तमन्ना न करे। ख़ाविन्द ने कहा मुझे उम्मीद है कि जुनैद बग़दादी रह० को तेरी परवाह भी नहीं होगी। बीवी ने कहा, मुझे इजाज़त हो तो जुनैद बग़दादी रह० को आज़मा लेती हूं। यह कौन-सा मुश्किल काम है। यही घोड़ा और यही घोड़े का मैदान। देख लेती हूं। जुनैद बग़दादी कितने पानी में हैं। ख़ाविन्द ने इजाज़त दे दी।

वह औरत बन-संवर कर जुनैद बग़दादी रह० के पास आई और एक मसला पूछने के बहाने चेहरे से नक़ाब खोल दिया। जुनैद बग़दादी रह० की नज़र पड़ी तो उन्होंने ज़ोर से अल्लाह के नाम की ज़र्ब लगाई। उस औरत के दिल में यह नाम पेवस्त हो गया। उसके दिल की हालत बदल गई, वह अपने घर वापस आई और सब नाज़-नख़रे छोड़ दिए। ज़िंदगी की सुबह व शाम बदल गई। सारा दिन क़ुरआन मजीद की तिलावत करती और सारी रात

मुसल्ले पर खड़े होकर गुज़ार देती। ख़शियते इलाही और मुहब्बते इलाही की वजह से आंसुओं की लड़ियां उसके रुख़्सारों पर बहती रहतीं। उस औरत का ख़ाविन्द कहा करता था कि मैंने जुनैद बग़दादी का क्या बिगाड़ा था कि उसने मेरी बीवी को राहिबा बना दिया और मेरे काम का न छोड़ा।

बद-नज़री से तौफ़ीक़े अमल छिन जाती है

हज़रत शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया रह० फ़रमाते थे :

"बद-नज़री निहायत ही मुहलिक मर्ज़ है। एक तजुर्बा तो मेरा भी अपने बहुत-से अहबाब पर है कि ज़िक्रे शग़ल की इब्तदा में लज़्ज़त व जोश की कैफ़ियत होती है मगर बद-नज़री की वजह से इबादत की हलावत और लज़्ज़त फ़ना हो जाती है और उसके बाद रफ़्ता-रफ़्ता इबादात के छुटने का ज़रिया भी बन जाता है।" (आप बीती 6/418)

मिसाल के तौर पर अगर सेहतमंद नवजवान शख़्स को बुख़ार हो जाए और उतरने का नाम ही न ले तो लाग़री और कमज़ोरी की वजह से उसके लिए चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है। कोई काम करने को दिल नहीं चाहता। बिस्तर पर पड़े रहने को जी चाहता है। इसी तरह जिस शख़्स को बद-नज़री की बीमारी लग जाए वह बातिनी तौर पर कमज़ोर हो जाता है। नेक अमल करना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। दूसरे लफ़्ज़ों में उससे अमल की तौफ़ीक़ छीन ली जाती है। नेक काम करने की नीयत भी करता है तो बद-नज़री की वजह से नीयत में फ़ुतूर आ जाता है। बक़ौल शाएर :

तैयार थे नमाज़ को हम सुनके ज़िक्रे हूर
जलवा बुतों का देखकर नीयत बदल गई

बद-नज़री से क़ुव्वते हाफ़िज़ा कमज़ोर होती है

हज़रत मौलाना ख़लील अहमद सहारनपुरी रह० फ़रमाया करते थे कि ग़ैर-महरम औरतों की तरफ़ या नव उम्र लड़कों की तरफ़ शहवत की नज़र डालने से क़ुव्वते हाफ़िज़ा कमज़ोर हो जाती है। इसकी तस्दीक़ के लिए यह सुबूत काफ़ी है कि बद नज़री करनेवाले हुफ़्फ़ाज़ को मंज़िल याद नहीं रहती और जो तलबा हिफ़्ज़ कर रहे हों उनके लिए सबक़ याद करना मुसीबत होता

है। इमाम शाफ़ई रह० ने अपने उस्ताद इमाम वकीअ रह० से क़ुव्वते हाफ़िज़ा में कमी की शिकायत की तो उन्होंने मासियत से बचने की वसीयत की। इमाम शाफ़ई रह० ने इस गुफ़्तुगू को शेर का जामा पहनाते हुए फ़रमाया :

> यानी मैंने इमाम शाफ़ई रह० से अपने हाफ़िज़े की कमी की शिकायत की। उन्होंने वसीयत की कि ऐ तालिबे इल्म गुनाहों से बच जाओ; क्योंकि इल्म अल्लाह तआला का नूर है और अल्लाह तआला का नूर किसी गुनाहगार को अता नहीं किया जाता।

दिल व दिमाग़ को चोट पहुंचानेवाला क़िस्सा

कहते हैं कि औरंगज़ेब आलमगीर रह० के पास एक बहरूपिया आता था, वह मुख़्तलिफ़ रूप बदलकर आता था। औरंगज़ेब एक फ़रज़ाना व तजुर्बेकार शख़्स थे जो उस तवील व अरीज़ मुल्क पर हुकूमत कर रहे थे, उसको पहचान लेते। वह फ़ौरन कह देते कि तू फ़लां है, मैं जानता हूं। वह नाकाम रहता, फिर दूसरा भैस बदल कर आता फिर वह ताड़ जाते और कहते कि मैंने पहचान लिया, तू फ़लां का भैस बदल कर आया है तू तो फ़लां है, बहरूपिया आजिज़ आ गया, आख़िर में कुछ दिनों तक ख़ामोशी रही, एक अर्से तक वह बादशाह के सामने नहीं आया, साल दो साल के बाद शहर में यह अफ़वाह गर्म हुई कि कोई बुज़ुर्ग आए हुए हैं, और वह फ़लां पहाड़ की चोटी पर ख़िल्वतनशीन हैं। चिल्ला खींचे हुए हैं। बहुत मुश्किल से लोगों से मिलते हैं। कोई बड़ा ख़ुशक़िस्मत होता है, जिसका वह सलाम या नज़र क़बूल करते हैं और उसको बारयाबी का शर्फ़ बख़्शते हैं। बिल्कुल यकसू और दुनिया से गोशागीर हैं। बादशाह हज़रत मुजद्दिद अल्फ़ी सानी रह० की तहरीक के मकतब के परवरदा थे और उनको इत्तिबा-ए-सुन्नत का ख़ास एहतिमाम था। वह इतनी जल्दी किसी के मोतक़िद होनेवाले नहीं थे। उन्होंने उसका कोई नोटिस नहीं लिया। उनके अराकीन दरबार ने कई बार अर्ज़ किया कि कभी जहां पनाह भी तशरीफ़ ले चलें और बुज़ुर्ग की ज़ियारत करें और उनकी दुआ लें, उन्होंने टाल दिया। दो-चार मर्तबा कहने के बाद बादशाह ने फ़रमाया कि अच्छा भई चलो! क्या हर्ज है, अगर ख़ुदा का कोई मुख़्लिस बन्दा है और ख़िल्वतगुज़ी है तो उसकी ज़ियारत से फ़ायदा ही होगा। बादशाह तशरीफ़ ले गए और मुअद्दब होकर बैठ गए और दुआ की दरख़्वास्त की और हदिया पेश

किया, दुर्वेश ने लेने से माज़रत की। बादशाह वहां से रुख़्सत हुए तो दुर्वेश खड़े हो गए और आदाब बजा लाए। फ़रशी सलाम किया और कहा कि जहांपनाह! मुझे नहीं पहचान सके, मैं वही बहरूपिया हूं जो कई बार आया और सरकार पर मेरी क़लई खुल गई। बादशाह ने इक़रार किया। कहा कि भाई बात ठीक है, मैं अब कि नहीं पहचान सका लेकिन यह बताओ कि मैंने जब तुम्हें इतनी बड़ी रक़म पेश की जिसके लिए तुम यह सब कमालात दिखाते थे, तो तुमने क्यों नहीं क़बूल किया? उसने कहा सरकार मैंने जिनका भेस बदला था उनका यह शैवा नहीं, जब मैं उनके नाम पर बैठा और मैंने उनका किरदार अदा करने का बेड़ा उठाया तो फिर मुझे शर्म आई कि मैं जिनकी नक़्ल कर रहा हूं, उनका यह तर्ज़ नहीं कि वह बादशाह की रक़म क़बूल करें, इसलिए मैंने नहीं क़बूल किया। इस वाक़िए से दिल व दिमाग़ को एक चोट लगती है कि एक बहरूपिया यह कह सकता है तो फिर संजीदा लोग साहिबे दावते अंबिया अलैहि० की दावत क़बूल करके उनका मिज़ाज इख़्तियार न करें, यह बड़े सितम की बात है। मैंने यह लतीफ़ तफ़रीह तबा के लिए नहीं, बल्कि एक हक़ीक़त को ज़रा आसान तरीक़े पर ज़ेहन-नशीन करने के लिए सुनाया। हम दाओ व मुबल्लिग़ हों, या दीन के तर्जुमान या शारेह, हमें यह बात पेशे-नज़र रखनी चाहिए कि यह दीन और दावत हमने अंबिया अलैहि० से अख़्ज़ की है, अगर अंबिया अलैहि० यह दावत लेकर न आते तो हमको इसकी हवा भी न लगती।

औरत अज़ान क्यों नहीं दे सकती?

औरत की आवाज़ अगरचे सतर नहीं है। बवक़्ते ज़रूरत वह ग़ैर-महरम मर्द से गुफ़्तुगू कर सकती है या फ़ोन सुन सकती है, मगर यह भी हक़ीक़त है कि उसकी आवाज़ में कशिश होती है। इसी लिए फ़ुक़हा ने औरत को अज़ान देने से मना किया। चूंकि अज़ान ख़ुश इल्हानी के साथ दी जाती है। इससे फ़ितना पैदा होने का ख़तरा होता है। इसका सुबूत इस बात से मिलता है कि एक रेडियो अनाउंसर के कई नादीदा आशिक़ होते हैं। आवाज़ का जादू भी अपना असर दिखाता है, इसलिए ग़ैर-मेहरम से बातचीत के दौरान मुनासिब लहजे में बातचीत करने का हुक्म दिया गया है। जो औरतें मजबूरी की वजह से ख़रीद व फ़रोख़्त और लेन-देन का काम ख़ुद करती हैं वह बहुत

ख़तरे में होती हैं। दुकानदार, दर्ज़ी, जुवेलर्ज़, मंयारीवाला, रंगरेज़, डॉक्टर और हकीम से बहुत मोहतात अंदाज़ में बात करनी चाहिए। मर्द लोग तो पहले ही औरत को शीशे में उतारने के लिए तैयार होते हैं, अगर कोई औरत ज़रा-सा ढीलापन दिखाए तो बात बहुत दूर निकल जाती है।

जुवेलर्ज़ का काम तो वैसे ही ज़ेब व ज़ीनत के मुताल्लिक़ होता है। कई औरतें अंगूठी और चूड़ियां ख़रीद कर मर्द से कहती हैं कि पहना दें। जब हाथ ही हाथ में दे दिया तो पीछे क्या रहा।

मुझे सहल हो गईं मंज़िलें तो ख़िज़ां के दिन भी बदल गए।
तिरा हाथ हाथ में आ गया तो चिराग़ रह के जल गए ॥

डॉक्टर या हकीम को बीमारी के मुताल्लिक़ कैफ़ियात बतानी हों तो निहायत एहतियात बरती जाए। ऐसा न हो कि जिस्म का इलाज करवाते करवाते दिल का रोग लगा बैठें। कई डॉक्टर हज़रात मरीज़ा का इलाज करते हुए ख़ुद मरीज़े इश्क़ बन जाते हैं।

बाज़ लोग अपनी नौजवान बच्चियों को मर्द उस्ताद के पास ट्यूशन पढ़ने भेजते हैं या उन्हें ट्यूशन पढ़ाने अपने घर बुलाते हैं। दोनों सूरत में नताइज बुरे होते हैं। शरअ शरीफ़ से ग़फ़लत बरतने का अंजाम हमेशा बुरा होता है। शागिर्द को उस्ताद के पास बैठकर बातें करने का मौक़ा मिलता है तो शैतान मशवरा देता है कि किताबें पढ़ने के साथ-साथ एक दूसरे की शख़्सियात के बारे में भी मालूमात हासिल करो। जब पर्सनल लाइफ़ की बातें शुरू हो जाती हैं तो हरामकारी के दरवाज़े खुल जाते हैं। ट्यूशन पढ़नी था टेंशन पल्ले पड़ गई। मर्दों को भी औरतों से गुफ़्तुगू करते वक़्त एहतियात करनी चाहिए। अल्लामा जज़री रह० ने लिखा है कि :

> "नबी अकरम सल्ल० ने इस बात से मना किया है कि मर्द अपनी बीवी के सिवा किसी दूसरी औरत के सामने नर्मी से बातचीत करे, जिससे औरत को मर्द में दिलचस्पी पैदा हो जाए।" (अननिहाया)

बाज़ लड़कियां हालात की मजबूरी का बहाना बनाकर दफ़्तरों या कारख़ानों में मर्द हज़रात के शाना-ब-शाना काम करती हैं। शैतान के लिए उन

लड़कियों को ज़िना में फंसाना बाएं हाथ का खेल होता है। अक्सर औक़ात तो अफ़सर ही इज़्ज़त का सत्यानास कर देता है। वरना साथ मिलकर काम करनेवाले लड़के ही मेल-मिलाप की राहें ढूंढ़ लेते हैं। मर्द हज़रात ऐसी सूरते हाल पैदा कर देते हैं कि लड़कियों को गुनाह में मुलव्विस होना पड़ता है। एक सख़्ती करता है कि तुम अच्छा काम नहीं करती, तुम्हारी छुट्टी करवा देनी चाहिए। लड़की डर जाती है, घबरा जाती है। दूसरा नजात धंधा बन जाता है कि मैं तुम्हारी मदद करूंगा। कुछ नहीं होने दूंगा। कुछ अर्से के बाद पता चलता है कि लड़की नजाते धंधा के फंदे में फंस चुकी होती है। दफ़्तर में काम करनेवाली लड़कियों को कम या ज़्यादा ऐसे नापसन्दीदा वाक़िआत पेश आते रहते हैं। पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं, वह नौकरी पेशा ख़्वातीन जो कम गो होती हैं, किसी मर्द पर एतिबार नहीं करतीं न ही किसी से अपनी ज़िंदगी के बारे में तबादला ख़यालात करती हैं। बस काम से काम रखती हैं। जो मर्द उनसे Lopse Talk यानी आज़ाद गुफ़्तुगू करने लगे उसे डांट पिला देती हैं। अगरचे वह दफ़्तर में सड़यल मशहूर हो जाएं मगर कम से कम अपनी इज़्ज़त बचा लेती हैं।

ग़ैर-महरम से बातें करना भी ज़िना के असबाब में से एक बड़ा सबब है। इसी लिए क़ुरआन मजीद ने हुक्म दिया है औरतों को कि अगर उन्हें किसी वक़्त ग़ैर-महरम मर्द से गुफ़्तुगू करने की ज़रूरत पेश आ जाए तो अपनी आवाज़ में लोच और नर्मी पैदा न होने दें। न ही पुरतकल्लुफ़ अंदाज़ से चबा-चबाकर और अल्फ़ाज़ को बना-संवार कर बातें करें। इरशादे बारी तआला है :

> "और न ही चबाकर बातें करो कि जिसके दिल में रोग हो वह तमन्ना करने लगे, और तुम माक़ूल बात करो।"
>
> (सूरा अहज़ाब, आयत-32)

औरत अगर पर्दे की ओट में भी बात करे तो आवाज़ में शीरीनी और जाज़बियत पैदा न होने दे, बल्कि लब व लहजा ख़ुश्क ही रखे। ऐसे लगी लिपटी बातें जिनको सुनकर मर्द की शहवत भड़के उनसे औरत को इज्तिनाब करना ज़रूरी है। ग़ैर-महरम मर्द से गुफ़्तुगू नर्मी और अदा के साथ न की जाए, बल्कि साफ़ खुली और धुली बात हो। मुख़्तसर हो, जो बात दो फ़िक़रों

में कही जाती है उसको एक में ही कहे तो बेहतर है, मर्द को भी ख़ामख़ाह एक से दूसरी बात करने की हिम्मत न हो सके।

जब ग़ैर-महरम मर्द और औरत के दर्मियान बेझिझक बात करने की आदत पड़ जाती है तो मामला एक क़दम आगे और बढ़ता है। यानी एक दूसरे को देखने को दिल चाहता है। इसकी दलील कुरआन मजीद से मिलती है कि अंबियाए किराम तो एक लाख चौबीस हज़ार के लगभग आए, मगर उनमें से किसी ने दुनिया में अल्लाह तआला को देखने की ख़्वाहिश ज़ाहिर नहीं की, सिर्फ़ हज़रत मूसा अलैहि० ने कहा :

"ऐ मेरे परवरदिगार ! मुझे अपना दीदार करा दीजिए।"

(आराफ़, 143)

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि चूंकि हज़रत मूसा अलैहि० कोहे तूर पर रब्बे करीम से हम कलामी के लिए जाया करते थे। लिहाज़ा कलीमुल्लाह होने की वजह से उनके दिल में महबूबे हक़ीक़ी को देखने का शौक़ पैदा हुआ। इससे साबित हुआ कि बात से बात बढ़ती है। पहले बात करने का मरहला तय होता है फिर देखने की नौबत आती है। जब देख लिया जाए तो मुलाक़ात का शौक़ पैदा होता है। दिल कहता है कि :

न तू ख़ुदा है न मेरा इश्क़ फ़रिश्तों जैसा
दोनों इंसान हैं तो क्यों इतने हिजाबों में मिलें

जब हिजाब उतर जाता है तो मेल-मिलाप का सिलसिला शुरू हो जाता है, जिसका नतीजा ज़िल्लत व रुसवाई के सिवा कुछ नहीं।

बदनज़री के तीन बड़े नुक़सानात

बदनज़री से इंसान के अंदर नफ़्सानी ख़्वाहिशात का तूफ़ान उठ खड़ा होता है और इंसान उस सैलाब की रौ में बह जाता है। इसमें तीन बड़े नुक़सानात वुजूद में आते हैं :

1. बदनज़री की वजह से इंसान के दिल में ख़्याली महबूब का तसव्वुर पैदा हो जाता है। हसीन चेहरे उसके दिल व दिमाग़ पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। वह शख़्स चाहता है कि मैं उन हसीन शक्लों तक रसाई हासिल नहीं कर

सकता, मगर इसके बावजूद तंहाइयों में उनके तसव्वुर से लुत्फ़अंदोज़ होता है। बाज़ मर्तबा तो घंटों उनके साथ ख़्याल की दुनिया में बातें करता है; मामला इस हद तक बढ़ जाता है कि :

तुम मेरे पास होते हो गोया
जब कोई दूसरा नहीं होता

बदनज़री के साथ ही शैतान इंसान के दिल व दिमाग़ पर सवार हो जाता है और उस शख़्स से शैतानी हरकतें करवाने में जल्दी करता है। जिस तरह वीरान और ख़ाली जगह पर तुंद व तेज़ आंधी अपने असरात छोड़ती है उसी तरह शैतान भी उस शख़्स के दिल पर अपने असरात छोड़ता है, ताकि उस देखी हुई सूरत को ख़ूब आरास्ता व मुज़य्यन करके उसके सामने पेश करे और उसके सामने एक ख़ूबसूरत बुत बना दे। ऐसे शख़्स का दिल रात-दिन उसी बुत की पूजा में लगा रहता है, वह ख़ाम आरज़ुओं और तमन्नाओं में उलझा रहता है। इसी का नाम शहवतपरस्ती, ख़्वाहिशपरस्ती, नफ़्सपरस्ती है। इरशादे बारी तआला है :

"और उसका कहना न मान जिसका दिल हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया और वह अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करता है और उसका काम हद से बढ़ गया है।"

(अल-कहफ़ : 28)

उन ख़्याली माबूदों से जान छुड़ाए बग़ैर न तो ईमान की हलावत नसीब होती है, न क़ुर्बे इलाही की हवा लगती है। बक़ौल शाएर

बुतों को तोड़ तख़य्युल के हों कि पत्थर के

2. बद-नज़री का दूसरा नुक़सान यह है कि इंसान का दिल व दिमाग़ मुतफ़र्रिक़ चीज़ों में बंट जाता है। यहां तक कि वह अपने मसालेह व मुनाफ़े को भूल जाता है। घर में हसीन व जमील नेकोकार और वफ़ादार बीवी मौजूद होती है, मगर उस शख़्स का दिल बीवी की तरफ़ माइल ही नहीं होता। बीवी अच्छी नहीं लगती। ज़रा-ज़रा-सी बात पर उससे उलझता है, घर की फ़िज़ा में बेसुकूनी पैदा हो जाती है, जबकि यही शख़्स बेपर्दा घूमनेवाली औरतों को इस तरह ललचाई नज़रों से देखता है जिस तरह शिकारी कुत्ता अपने शिकार को

देखता है। बसा औक़ात तो उस शख़्स का दिल काम-काज में भी नहीं लगता। अगर तालिबे इल्म है तो पढ़ाई के सिवा हर चीज़ अच्छी लगती है। अगर ताजिर है तो कारोबार से दिल उकता जाता है। कई घंटे सोता है मगर पुरसुकून नींद से महरूम रहता है। देखनेवाले समझते हैं कि सोया हुआ है जबकि वह ख़याली महबूब के तसव्वुर में खोया हुआ होता है।

3. बद-नज़री का तीसरा बड़ा नुक़सान यह है कि दिल हक़ व बातिल और सुन्नत व बिदअत में तमीज़ करने से आरी हो जाता है। क़ुव्वते बसीरत छिन जाती है। दीन के उलूम व मआरिफ़ से महरूमी होने लगती है। गुनाह का काम उसको गुनाह नज़र नहीं आता। फिर ऐसी सूरते हाल में दीन के मुताल्लिक़ शैतान उनको शुकूक व शुब्हात में मुब्तला कर देता है। उसे दीनी नेक लोगों से बदगुमानियां पैदा होती हैं, यहां तक कि उसे दीनी शक्ल व सूरत वाले लोगों से ही नफ़रत हो जाती है। वह बातिल पर होते हुए भी अपने आपको हक़ पर समझता है और बिल आख़िर ईमान से महरूम होकर दुनिया से जहन्नम रसीद हो जाता है। अल्लाह हम सबकी हिफ़ाज़त फ़रमाए। आमीन!

बद-नज़री से परहेज़ का ख़ास इनाम

जो शख़्स अपनी निगाहों की हिफ़ाज़त कर ले उसे आख़िरत में दो इनामात मिलेंगे— (1) हर निगाह की हिफ़ाज़त पर उसे अल्लाह तआला का दीदार नसीब होगा (2) ऐसी आंखें क़ियामत के दिन रोने से महफ़ूज़ रहेंगी। हदीस पाक में है :

नबी करीम सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि हर आंख क़ियामत के दिन रोएगी सिवाए उस आंख के जो ख़ुदा की हराम करदा चीज़ों को देखने से बन्द रहे। और वह आंख जो ख़ुदा की राह में जागी रहे और वह आंख जो ख़ुदा के ख़ौफ़ से रोए, गो उसमें से मक्खी के सर के बराबर आंसू निकले।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० की अजीब सवानेह उमरी

हज़रत अब्दुल्लाह रह० के वालिद का क़िस्सा

बहुत दिनों की बात है। शहर हर्रान में एक तुर्की ताजिर रहता था। यह

बहुत बड़ा मालदार था। उसके पास अंगूर, अनार और सेब के बड़े-बड़े बाग़ थे, शानदार कोठियां थीं, दौलत की रेल-पेल थी, ऐश व आराम की कौन-सी चीज़ थी जो उसके पास न थी। लोग उसे देखकर उसकी ज़िंदगी पर रश्क करते थे। लेकिन एक फ़िक्र थी जो उसे अंदर ही अंदर खा रही थी। दिन-रात वह उसी फ़िक्र में घुलता। अपने दोस्तों और अज़ीज़ों से मशवरा करता लेकिन उसकी समझ में कोई बात न आती और कोई फ़ैसला न कर पाता।

बात यह थी कि उसकी एक नौजवान लड़की थी, बड़ी ही ख़ूबसूरत, नेक और सलीक़ा वाली, अदब, तहज़ीब, इल्म, हुनर, नेकी और दीनदारी सब ही ख़ूबियां अल्लाह ने उसे दे रखी थीं। घर-घर से उसके पैग़ाम आ रहे थे। चूंकि यह तुर्की ताजिर एक ऊंचे शरीफ़ ख़ानदान का आदमी था और फिर अल्लाह तआला ने माल व दौलत भी दे रखी थी। तबीयत में नेकी और भलाई भी थी। इसलिए हर एक चाहता था, कि वह उसकी लड़की को ब्याह कर लाए लेकिन तुर्की ताजिर का दिल किसी भी लड़के के लिए न टिकता था। बड़े-बड़े घरानों के पैग़ाम आए लेकिन बाप ने हर जगह इंकार ही किया। वह जिस क़िस्म के लड़के से अपनी प्यारी बेटी की शादी करना चाहता था, अभी तक उसे ऐसा कोई लड़का न मिल सका था।

हज़रत मुबारक की नेकी

उस ताजिर के एक बाग़ की देख-भाल जो साहब करते थे उनका नाम मुबारक था। थे भी वह वाक़ई बड़े मुबारक। बड़े ही नेक और दीनदार आदमी। ताजिर के दिल में भी उनकी बड़ी इज़्ज़त थी और हर काम में वह उन पर भरोसा करता था।

एक दिन इत्तिफ़ाक़ से यह तुर्की ताजिर अपने बाग़ में गया। मुबारक वहां अपने काम में लगे हुए थे। मालिक को देखकर झट आए, सलाम किया और बातचीत होने लगी। थोड़ी देर बाद मालिक ने कहा, "मियां मुबारक! जाओ एक मीठा-सा अनार तो तोड़ लाओ।" मुबारक बाग़ में गए और एक ख़ूबसूरत बड़ा-सा अनार तोड़ लाए। मालिक ने तोड़ा और चन्द दाने मुंह में डाले। "अरे यह तो बहुत खट्टा है, तुम कैसा अनार तोड़कर लाए?" मालिक ने ख़फ़ा होकर कहा।

"हुज़ूर! और तोड़ लाऊं?" मुबारक ने कहा।

मालिक ने कहा, "हां, जाओ ज़रा मीठा-सा तोड़कर लाओ। इतने दिन हो गए अभी तक तुम्हें यह न मालूम हुआ कि किस पेड़ के अनार मीठे हैं?"

"हुज़ूर! मुझे कैसे मालूम होता? मुझे आपने खट्टे-मीठे अनार चखने के लिए तो नहीं मुक़र्रर किया है। मेरा काम तो सिर्फ़ यह है कि बाग़ की देख भाल करूं, मुझे इससे क्या मतलब कि किस पेड़ के अनार मीठे हैं और किस के खट्टे।"

मुबारक की यह बात सुनकर मालिक बहुत ख़ुश हुआ, दिल ही दिल में कहने लगा, मुबारक कैसे दयानतदार आदमी हैं, यह तो आदमी नहीं, फ़रिश्ता लगता है, भला ऐसे लोगों का काम क्या बाग़ की हिफ़ाज़त है? यह शख़्स तो लायक़ है कि हर वक़्त मेरे साथ रहे, हर काम में मैं उससे मशवरा लूं और उसकी सोहबत में रहकर भलाई और नेकी सीखूं।

यह सोचकर उसने मुबारक से कहा, "भाई तुम मेरे साथ कोठी पर चलो, आज से तुम वहीं कोठी में मेरे साथ रहना, बाग़ की हिफ़ाज़त के लिए किसी और आदमी को मुक़र्रर कर दिया जाएगा।" मुबारक ख़ुशी-ख़ुशी अपने मालिक के साथ कोठी पर पहुंचे और आराम से रहने लगे। मालिक भी अक्सर आकर मुबारक की अच्छी सोहबत में बैठता, दीन व ईमान की बातें सुनता, ख़ुदा रसूल का ज़िक्र सुनता और ख़ुश होता।

एक दिन मुबारक ने देखा कि मालिक कुछ सोच रहा है। जैसा उसे कोई बहुत बड़ी फ़िक्र हो। पूछा "क्या बात है? आज आप बड़े फ़िक्रमंद नज़र आ रहे हैं?" मालिक जैसे उस सवाल का इंतिज़ार ही कर रहा था। उसने अपनी सारी परेशानी की कहानी सुना डाली।

मालिक ने कहा, "मुबारक! यह तबाओ, मैं अब क्या करूं? बेशुमार पैग़ाम हैं, किसे इक़रार करूं, और किसे इंकार करूं? इसी फ़िक्र में दिन रात घुलता रहता हूं और कोई फ़ैसला नहीं कर पाता।"

मुबारक ने कहा, "बेशक यह फ़िक्र की बात है। जवान लड़की जब घर में बैठी हो तो मां-बाप को फ़िक्र होती है। अगर मुनासिब रिश्ता मिल जाए तो ज़िंदगी भर सुख और चैन है और किसी बुरे से ख़ुदा-न-ख़ास्ता पाला पड़

जाए तो ज़िंदगी भर का रोना है।"

"फिर तुम ही कोई हल बताओ।" मालिक ने कहा।

"हुज़ूर! मेरे नज़दीक तो यह कोई ऐसी बात नहीं है जिसके लिए आप दिन-रात घुलें और अपनी सेहत ख़राब करें। हम और आप ख़ुदा का शुक्र है मुसलमान हैं, ज़िंदगी के हर मामले में प्यारे रसूल सल्ल० की पाक ज़िंदगी हमारे लिए बेहतरीन उसवा है। उस उसवा पर जब भी हम अमल करेंगे, इंशाअल्लाह अच्छाई ही हमारे सामने आएगी।" मुबारक ने पूरे इत्मीनान से कहा।

"अच्छा तो फिर बताओ कि प्यारे रसूल सल्ल० के उसवा की रौशनी में मुझे क्या करना चाहिए? यह तो हक़ीक़त है कि जब भी कोई मुसलमान इस बेहतरीन उसवा से मुंह मोड़ेगा ज़लील होगा।" मालिक ने कहा।

"देखिए जहां तक इस्लाम से पहले के लोगों का ताल्लुक़ है, ये लोग इज़्ज़त, शोहरत और ख़ानदानी बड़ाई ढूंढ़ते थे। यहूदी लोग माल पर जान छिड़कते थे, और ईसाई ख़ूबसूरती और हुस्न तलाश करते थे। लेकिन मुसलमानों को प्यारे रसूल ने ताकीद की है तुम रिश्ता करते वक़्त हमेशा नेकी और दीनदारी को देखना।" मालिक यह सुनकर ख़ुशी से उछल पड़ा और कहा, "मुबारक! ख़ुदा की क़सम तुमने मेरा सारा ग़म धो दिया। जैसे अब मुझे कोई फ़िक्र ही नहीं है।"

मुबारक की शादी

वह ख़ुश-ख़ुश घर पहुंचा। बीवी को सारा क़िस्सा सुनाया। वह भी ख़ुश हुई और मुबारक की नेकी और सूझ-बूझ की तारीफ़ करने लगी। तुर्की ताजिर ने मौक़ा मुनासिब पाकर बीवी से कहा, "फिर हम क्यों न अपनी प्यारी बेटी का निकाह मुबारक से कर दें।"

"हायं क्या कहा? घर के नौकर से! ग़ुलाम से! दुनिया क्या कहेगी?" बीवी चिल्लाई।

"क्या हर्ज है अगर नौकर है? प्यारे रसूल सल्ल० ने फ़रमाया है कि तुम नेकी और दीनदारी को देखो। ख़ुदा की क़सम मुझे तो उस कसौटी के लिहाज़

से पूरे शहर हर्रान में मुबारक से ज़्यादा नेक और दीनदार नज़र नहीं आता। बड़ा ही समझदार और दयानतदार आदमी है। अगर प्यारे रसूल सल्ल० सच्चे हैं, और उनका कहा मानने में भलाई है, तो हमें दुनिया से बेफ़िक्र होकर अपने जिगर के गोशे को मुबारक के हवाले कर देना चाहिए और अगर हमने ऐसा न किया तो गोया हम ख़ुद ही अपने अमल से प्यारे रसूल सल्ल० की बात को झुठलाएंगे।" तुर्की ताजिर ने इत्मीनान और यक़ीन से कहा।

शौहर का यह अज़्म देखकर और सीधी-सच्ची बात सुनकर बीवी भी दिल से राज़ी हो गई। और हर्रान के रईस की उस चांद-सी लड़की की शादी एक ऐसे ग़रीब से रचाई गई जिसके पास न रुपया-पैसा था, न कोई घर और न ही किसी ऊंचे घराने से उसका ताल्लुक़ था। उसके पास अगर कोई दौलत थी तो ईमान व इस्लाम की, नेकी और तक़वा की। यह वही लड़की थी जिसके लिए हर्रान के बड़े-बड़े रईसों ने पैग़ाम भेजे, ऊंचे-ऊंचे ख़ानदानी लड़कों ने पैग़ाम भेजे। लेकिन मुबारक की नेकी और तक़वा के मुक़ाबले में हर एक ने शिकस्त खाई।

हज़रत अब्दुल्लाह की पैदाइश

मुबारक की शादी हो गई और दोनों मियां-बीवी ख़ुशी-ख़ुशी रहने लगे। मुबारक जैसे ख़ुद नेक थे वैसे ही उनकी बीवी भी हज़ारों लाखों में एक थी। थोड़े दिनों के बाद अल्लाह ने उनको एक चांद-सा बेटा दिया। मां-बाप की ख़ुशी की कोई इंतिहा न थी। बेटे का नाम अब्दुल्लाह रखा और वह वाक़ई अब्दुल्लाह ही साबित हुए। यह वह अब्दुल्लाह हैं जिनके इल्म व तक़वा की पूरी दुनिया में धूम हुई। जो मश्रिक़ व मग़रिब के आलिम कहलाए। जो इस्लाम का चलता-फिरता नमूना थे। और अब्दुर्रहमान बिन मेहदी रह० और अहमद बिन हंबल रह० जैसे बुज़ुर्ग उनके शागिर्द थे।

थोड़े दिन के बाद उस तुर्की ताजिर का इंतक़ाल हो गया और उसके माल व दौलत का एक बड़ा हिस्सा हज़रत अब्दुल्लाह के वालिद हज़रत मुबारक को मिला। यह सारी दौलत हज़रत अब्दुल्लाह के काम आई। नेक बाप ने बेटे की तालीम पर सारी दौलत बहा दी, और ख़ुदा का करना कि हज़रत अब्दुल्लाह रह० हदीस के इमाम कहलाए।

वतन

हज़रत अब्दुल्लाह का असली वतन मर्व है। इसी वजह से उनको मर्वज़ी कहते हैं। मर्व ख़ुरासान में मुसलमानों का बहुत पुराना शहर है। यहां कभी इस्लामी तालीम और दीनदारी का दौर-दौरा था। हर तरफ़ दीन व ईमान के चर्चे थे। बड़े-बड़े आलिम और बुज़ुर्ग यहां पैदा हुए जिन्होंने अल्लाह के दीन और रसूल पाक सल्ल० की अहादीस की ख़ूब ख़िदमत की।

इब्तिदाई ज़िंदगी

नेक मां-बाप ने हज़रत अब्दुल्लाह की तालीम व तर्बियत में कोई कसर न उठा रखी। शुरू ही से इंतिहाई शफ़क़त व मुहब्बत से उनकी परवरिश की। दीन व अख़्लाक़ की बातें सिखाईं। नेकी और भलाई की तालीम दी। क़ुरआन शरीफ़ समझ-समझ कर पढ़ाया, प्यारे रसूल सल्ल० की हदीसें पढ़ाईं और हर तरह एक भला इंसान बनाने की कोशिश की। मां-बाप ख़ुद नेक थे और उनकी यह दिली तमन्ना थी कि उनका बेटा भी दुनिया में नेक बनकर चमके।

लेकिन शुरू में उनकी तमाम कोशिशें बेकार गईं। अब्दुल्लाह दिन-रात खेल-कूद में मस्त रहते, हर काम में लापरवाही बरतते, हर वक़्त बुराइयों में फंसते रहते, गाना-बजाना और ऐश उड़ाना ही उनका दिन-रात का महबूब मशग़ला था, और जवानी में तो यार-दोस्तों के साथ पीना-पिलाना भी शुरू हो गया। रात-रात भर दोस्तों की महफ़िलें जमी रहतीं, सितार बजते, गाना होता और शराब का दौर चलता।

अल्लाह की रहमत ने अब्दुल्लाह का हाथ पकड़ा

हज़रत अब्दुल्लाह की यह घिनौनी ज़िंदगी देखकर मां-बाप की बुरी हालत थी। न खाना अच्छा लगता, न पीना। अंदर ही अंदर कुढ़ते और रोते। बेटे की तर्बियत के लिए उन्होंने क्या कुछ न किया था लेकिन इंसान के बस में क्या है। दिलों का फेरना तो अल्लाह के इख़्तियार में है। अब भी जो उनसे बन आता करते रहते। नज़रें मानते, सदक़े देते, अल्लाह से रो-रोकर दुआएं करते।

एक रात अब्दुल्लाह के सारे यार-दोस्त जमा थे। गाने-बजाने की

महफ़िल ख़ूब गर्म थी। शराब के दौर पर दौर चल रहे थे और हर एक नशे में मस्त था। इत्तिफ़ाक़ से हज़रत अब्दुल्लाह की आंख लग गई और उन्होंने एक अजीब व ग़रीब ख़्वाब देखा। क्या देखते हैं कि एक लम्बा-चौड़ा ख़ूबसूरत बाग़ है और एक टहनी पर एक प्यारी चिड़िया बैठी हुई है, और अपनी सुरीली मीठी आवाज़ में क़ुरआन शरीफ़ की यह आयत पढ़ रही है :

> "क्या अभी तक वह घड़ी नहीं आई कि अल्लाह का ज़िक्र सुनकर मोमिनों के दिल लरज़ जाएं। और नर्म पड़ जाएं।"
>
> (सूरह हदीद, 16)

हज़रत अब्दुल्लाह घबराए हुए उठे। उनकी ज़बान पर यह बोल जारी थे, "अल्लाह तआला वह घड़ी आ गई।" उठे, शराब की बोतलें पटक दीं, चंग व सितार चूर कर दिए, रंगीन कपड़े फाड़ डाले और ग़ुस्ल करके सच्चे दिल से तौबा की, अल्लाह से पक्का अहद किया कि अब कभी तेरी नाफ़रमानी न होगी। फिर कभी किसी बुराई के क़रीब न फ़टके और गुनाहों से ऐसे पाक हो गए कि गोया कभी कोई गुनाह किया ही न था। सच है तौबा है ही ऐसी चीज़। अगर आदमी सच्चे दिल से अल्लाह से अहद कर ले और बुराइयों से बचने का पक्का इरादा कर ले तो फिर अल्लाह तआला ऐसे आदमी की मदद फ़रमाता है और नेकी की राह सुझाता है, फिर नेकी की राह पर चलना उसके लिए आसान हो जाता है। और बुराई की राह पर जाना इतना मुश्किल हो जाता है जितना दहकती हुई आग में कूद पड़ना। आदमी को कभी भी अल्लाह की ज़ात से मायूस न होना चाहिए। एक वह ज़माना था कि अब्दुल्लाह रात रात भर गुनाहों में लतपत रहते, ख़ुदा और रसूल की नाफ़रमानी करते और हर एक को उनकी ज़िंदगी से घिन आती। लेकिन जब उन्होंने सच्चे दिल से तौबा की, अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा हुए और अपने अल्लाह से पुख़्ता अहद किया कि अब जीते जी कभी बुराई के क़रीब भी न फटकेंगे तो अल्लाह की रहमत ने उनका हाथ पकड़ा, नेकी की राह पर लगाया और ऐसे नेकों के नेक बने कि अपने ज़माने के तमाम उलमा ने उनको अपना सरदार माना। हदीस के इमाम कहलाए। और आज तक दुनिया उनकी नेकी और इल्म से फ़ायदा उठाती है।

हज़रत अब्दुल्लाह का ज़माना

हज़रत अब्दुल्लाह 118 हि० में पैदा हुए और 181 हि० में इंतक़ाल हुआ। यह वह ज़माना था कि जब न तो इतने उलूम मुरत्तब हुए थे, न साइंस की यह तहक़ीक़ात सामने आई थी, न इतने फ़ुनून ईजाद हुए थे, न बाक़ायदा स्कूल और कॉलिज थे, न बड़ी-बड़ी यूनीवर्सिटियां थीं। बस जगह-जगह दीन के कुछ उलमा थे जो क़ुरआन व हदीस के माहिर थे। दीन का गहरा इल्म रखते थे और बग़ैर कुछ फ़ीस लिए लोगों को अल्लाह का दीन सिखाते थे। दूर-दूर से तालिबे इल्म सफ़र करके उनके पास पहुंचते, उनकी सोहबत में रहते और उनसे इल्म हासिल करते। उस ज़माने का इल्म न तो दौलत कमाने के लिए था और न मुलाज़िमतें हासिल करने के लिए। लोग अपने शौक़ से पढ़ते, अपनी दौलत लुटाकर इल्म सीखते और फिर पूरी बेनियाज़ी के साथ बग़ैर किसी तलब के दूसरों को सिखाते। दूसरों तक दीन पहुंचाना और दीन की बातें सिखाना अपना दीनी फ़र्ज़ समझते थे।

वे लोग ख़ूब जानते थे कि दीन का इल्म हासिल करना और फैलाना मुसलमानों का फ़र्ज़ है और ख़ुदा के नज़दीक सबसे अच्छा और पसन्दीदा काम यही है कि आदमी इल्म की रौशनी हासिल करे, जिहालत के अंधेरों से निकले। ख़ुद इल्म की रौशनी में चले और दूसरों को चलाए। अल्लाह का दीन सीखकर लोगों को सिखाए, लेकिन लोगों से कुछ बदला न चाहे, सिर्फ़ अल्लाह से बदला चाहे। इसी पाक नीयत से ये लोग ख़ुद इल्म हासिल करते और इसी नीयत से दूसरों को सिखाते।

उस ज़माने में लोग क़ुरआन, हदीस, फ़िक़ह, अदब, शेर, नह्व, सब ही कुछ पढ़ते और सीखते थे। लेकिन ख़ास तौर पर हदीस का बड़ा चर्चा था। प्यारे रसूल सल्ल० की हदीसें मालूम करना, उनको जमा करना, समझना और याद रखना। इसी पर लोगों की सारी तवज्जोह रहती थी। इसी को सबसे बड़ा काम समझते थे और हक़ीक़त भी यह है कि यह बहुत बड़ा इल्मी और दीनी काम था जो इन बुज़ुर्गों ने अंजाम दिया।

हदीस

प्यारे रसूल सल्ल० ने अपनी मुबारक ज़िंदगी में जो कुछ किया और फ़रमाया, प्यारे सहाबा रज़ि० ने उसको देखा, सुना, याद रखा और उस पर अमल किया। इसी का नाम हदीस है। सहाबा रज़ि० चूंकि दीन की तब्लीग़ के लिए मुख़्तलिफ़ शहरों में फैल गए थे और अल्लाह की राह में जिहाद करने के लिए मुल्कों-मुल्कों में घूमते थे इसलिए हदीस का शौक़ रखनेवाले उनके पते मालूम करके दूर-दूर से सफ़र करके उनके पास पहुंचते, उनसे हदीसें सुनते, लिखते और याद करते। सहाबा किराम रज़ि० को देखनेवाले उन बुज़ुर्गों को ताबईन कहते हैं। फिर रसूल पाक सल्ल० के प्यारे सहाबा रज़ि० जब दुनिया से रुख़सत हो गए तो ताबईन का ज़माना आया। ये वे लोग हैं जिन्होंने सहाबा रज़ि० से ख़ुद हदीसें सुनी थीं, समझी थीं और ख़ुद अपनी आंखों से उन नेक सहाबा रज़ि० का दीदार किया था जिनकी ज़िंदगी हदीसे रसूल सल्ल० की सच्ची तसवीर थी। ये लोग मुख़्तलिफ़ मुल्कों और शहरों में फैले हुए थे, जगह-जगह उनके इल्म की शमा रौशन थीं और हदीसे रसूल सल्ल० के परवाने दूर दूर से सफ़र की सख़्तियां झेलते हुए उनके पास पहुंचते, उनके दीदार से आंखें ठंडी करते, प्यारे रसूल सल्ल० की प्यारी बातें सुनते और इसी रौशनी को घर घर पहुंचाने का अज़्म लेकर वापस लौटे। ईन लोगों को तबेअ-ताबईन रह० कहते हैं।

फ़िक़्ह

ताबईन और तबे ताबईन ने क़ुरआन व हदीस को समझने में अपनी पूरी पूरी उम्रें खपाईं, क़ुरआन व हदीस की बारीकियों को ख़ूब-ख़ूब समझा। उनका गहरा इल्म हासिल किया और उनकी तह तक पहुंचने के लिए अपनी ज़िंदगियां गुज़ारीं। लेकिन क़ुरआन व हदीस में यह तो है नहीं कि इंसान की ज़रूरत के सारे छोटे-बड़े मसले बयान कर दिए गए हों, उनमें तो मोटी-मोटी उसूली बातें बयान की गई हैं। इसलिए उन बुज़ुर्गों का एक कारनामा यह भी है कि उन्होंने ऐसा नया इल्म ईजाद किया और क़ुरआन व हदीस पर अमल करने की राह आसान की।

हमारी ज़िंदगी की बेशुमार ज़रूरतें हैं, क़दम-क़दम पर हमें यह मालूम

करने की ज़रूरत पड़ती है कि ख़ुदा और रसूल सल्ल० का हुक्म क्या है? शरीअत का मसला क्या है? किस राह पर चलना इस्लाम के मुताबिक़ है और किस राह पर चलना इस्लाम के ख़िलाफ़ है? उन बुज़ुर्गों ने हमारी एक-एक ज़रूरत को सामने रखकर क़ुरआन व हदीस से शरीअत के मसले और अहकाम समझने के उसूल बनाए और तफ़्सील के साथ वह मसले और अहकाम किताबों में जमा किए। इसी इल्म का नाम "फ़िक़ह" है। फ़िक़ह के मानी हैं "सूझ-बूझ"। इस इल्म को फ़िक़ह इसलिए कहते हैं कि क़ुरआन व हदीस से ज़िंदगी के हर मामले के लिए हुक्म निकालना, और क़ुरआन व हदीस की मंशा को समझना बड़ा सूझ-बूझ का काम है। इसके लिए दीन के गहरे इल्म और इंतिहाई सूझबूझ की ज़रूरत है। फ़िक़ह जाननेवालों और क़ुरआन व हदीस से अहकाम मालूम करनेवालों को फ़क़ीह कहते हैं।

इन बुज़ुर्गों का हम पर बहुत बड़ा एहसान है। इन्हीं की मेहनत और कोशिश का नतीजा है कि हम ज़िंदगी के हर मामले में इंतिहाई आसान और इत्मीनान के साथ दीन पर अमल कर सकते हैं। ख़ुदा और रसूल सल्ल० की मर्ज़ी पर चल सकते हैं और दीन व दुनिया के लिहाज़ से एक कामयाब ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं। रहती ज़िंदगी तक मुसलमान उनकी मेहनतों और कोशिशों से फ़ायदा उठाते रहेंगे, उनकी क़द्र करेंगे, उनके एहसानमंद रहेंगे और उनके इस कारनामे पर फ़ख़्र करते रहेंगे।

मुबारक की आंखों में ख़ुशी के आंसू तैरने लगे

हज़रत अब्दुल्लाह का वतन मर्व ख़ुरासान का एक मशहूर इल्मी शहर है जहां बड़े-बड़े आलिम मौजूद थे। हर तरफ़ इल्म का चर्चा था। फिर उनके वालिदैन की इंतिहाई ख़्वाहिश भी यह थी कि उनका प्यारा बेटा इल्म के आसमान पर सूरज बनकर चमके। उसके लिए शुरू ही से हज़रत की तालीम व तर्बियत पर ख़ुसूसी तवज्जोह दी गई और ज़माने के रिवाज के मुताबिक़ उनकी पढ़ाने-लिखाने की पूरी-पूरी कोशिश की गई। दरअस्ल इल्म का शौक़ उनको जवानी में हुआ। कितनी मुबारक थी वह घड़ी जब हज़रत अब्दुल्लाह रह० को अल्लाह तआला ने तौबा की तौफ़ीक़ बख़्शी और उनकी ज़िंदगी में एक पाकीज़ा इंक़लाब आया और हर तरफ़ से मुंह फेरकर वह पूरी यकसूई के

साथ दीन का इल्म हासिल करने में लग गए और फिर तो उनके शौक़ का यह हाल हुआ कि अपना सब कुछ इल्म की राह में लुटा दिया।

एक मर्तबा उनके वालिद ने कारोबार के लिए उनको पचास हज़ार दिरहम दिए। हज़रत ने वह रक़म ली और सफ़र पर चल दिए। दूर-दूर मुल्कों के सफ़र किए। बड़े-बड़े आलिमों की ख़िदमत में पहुंचे, उनसे फ़ैज़ हासिल किया और हदीसे रसूल सल्ल० के दफ़्तर-के-दफ़्तर जमा करके घर वापस आए।

हज़रत मुबारक रह० बेटे की आमद की ख़बर सुनकर इस्तक़बाल के लिए गए। पूछा, "कहो बेटे तिजारती सफ़र कैसा रहा? क्या कुछ कमाया?" हज़रत अब्दुल्लाह रह० ने निहायत इत्मीनान और संजीदगी से जवाब दिया, "अब्बा जान! ख़ुदा का शुक्र है, मैंने बहुत कुछ कमाया। लोग तो ऐसी तिजारतों में रक़म लगाते हैं जिनका नफ़ा बस इस दुनिया की ज़िंदगी ही में मिलता है। लेकिन मैंने अपनी रक़म एक ऐसी तिजारत में लगाई है जिसका फ़ायदा दोनों जहां में मिलेगा।" हज़रत मुबारक रह० बेटे की यह बात सुनकर बहुत ख़ुश हुए। पूछा, "वह कौन-सी तिजारत है जिसका नफ़ा तुम्हें दोनों जहां में मिलेगा? बताओ तो सही क्या कमाकर लाए हो?" हज़रत अब्दुल्लाह ने हदीस के दफ़्तरों की तरफ़ इशारा करते हुए कहा, "यह है वह दोनों जहां में नफ़ा देनेवाला माल, प्यारे रसूल सल्ल० के इल्म का ख़ज़ाना। मैंने इसी ख़ज़ाने को हासिल करने में अपनी सारी दौलत लगा दी।" हज़रत मुबारक का चेहरा ख़ुशी से चमक उठा। आंखों में ख़ुशी के आंसू तैरने लगे। उठे बेटे को गले लगाया। दुआएं दीं, अल्लाह का शुक्र अदा किया। बेटे को घर ले गए और तीस हज़ार की और रक़म देकर कहा, "बेटे! यह लो, और अगर तुम्हारी कामयाब तिजारत में कोई कमी रह गई हो तो उसको पूरा कर लो। अल्लाह तआला तुम्हारी तिजारत में बरकत दे और उसके नफ़े से दोनों जहान में तुम्हें मालामाल करे।" (आमीन !)

इल्म के लिए सफ़र

हज़रत अब्दुल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्ल० की हदीसें जमा करने के लिए बहुत दूर-दूर के सफ़र किए। शहर-शहर घूमते, मुल्क-मुल्क की ख़ाक छानते,

जहां किसी बड़े आलिम का ज़िक्र सुनते, बस वहीं पहुंचने की ठान लेते और हदीसे रसूल सल्ल० के मोतियों से अपने दामन को भरने की कोशिश करते। शाम, मिस्र, कूफ़ा, बसरा, यमन, हिजाज़ कौन-सा मुल्क था जहां हज़रत अब्दुल्लाह रह० इल्म के शौक़ में न पहुंचे हों। इल्म के लिए आपने मुसीबतें झेलीं। क्योंकि उस ज़माने का सफ़र आजकल का-सा तो था नहीं कि तेज़ रफ़्तार सवारियों में बैठकर चन्द घंटों में आदमी कहीं से कहीं पहुंच जाए। उस ज़माने में या तो लोग पैदल चलते या फिर ऊंटों और ख़च्चरों पर सफ़र करते। और एक शहर से दूसरे शहर तक पहुंचने में महीनों लग जाते। लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह रह० हदीस के शौक़ में उन तकलीफ़ों से हरगिज़ न घबराते। रास्ते की दुश्वारियों ने कभी उनके क़दम न रोके। वह अपने ज़माने के तमाम बड़े और मुमताज़ आलिमों के पास पहुंचे और हदीसे रसूल सल्ल० के उन ज़िंदा चश्मों से इल्म की प्यास बुझाई। हज़रत के मशहूर शागिर्द इमाम अहमद बिन हंबल रह० फ़रमाते हैं, "दीन का इल्म हासिल करने के लिए हज़रत अब्दुल्लाह रह० से ज़्यादा सफ़र करनेवाला उनके ज़माने में कोई और न था।"

हज़रत अब्दुल्लाह रह० का ख़ुद अपना बयान है कि "मैंने चार हज़ार उस्तादों से इल्म हासिल किया।" ज़ाहिर है कि यह चार हज़ार उस्ताद किसी एक शहर में तो होंगे नहीं। उन सबके पास पहुंचने के लिए आपने तूल-तवील सफ़र किए होंगे और सालों मुशक़्क़तें बरदाश्त की होंगी। एक मर्तबा किसी ने उनसे पूछा, आप कब तक इल्म हासिल करते रहेंगे? फ़रमाया, "मौत तक, हो सकता है कि वह बात मुझे अब तक मालूम न हुई हो जो मेरे काम की हो।"

मशहूर असातज़ा

हज़रत के बाज़ उस्ताद बहुत मशहूर हैं, और सच्ची बात यह है कि उनके बनाने में उन मुख़्लिस असातज़ा की पाक नीयत, मेहनत और सोहबत को बड़ा दख़ल है। अपने तमाम असातज़ा में उनको सबसे ज़्यादा मुहब्बत इमाम अबू हनीफ़ा रह० से थी। और हक़ीक़त यह है कि इमाम साहब से उन्होंने बहुत कुछ हासिल किया। फ़िक़ह इमाम साहब का ख़ास मज़मून था। हज़रत अब्दुल्लाह रह० ने इमाम साहब रह० की सोहबत में रहकर फ़िक़ह में

बहुत कुछ महारत पैदा कर ली थी। इमाम मालिक रह० तो उनको "ख़ुरासान का फ़क़ीह" कहा करते थे। उनके एक उस्ताद हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० थे, उनकी सोहबत से भी हज़रत ने बहुत कुछ फ़ायदा उठाया था। ख़ुद फ़रमाया करते थे :

> "अगर इमाम अबू हनीफ़ा रह० और हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० से फ़ायदा उठाने का मौक़ा अल्लाह तआला न बख़्शता तो सच्ची बात यह है कि मैं भी आम लोगों की तरह होता।"

फिर जब हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० का इंतिक़ाल हो गया तो वह मदीना मुनव्वरा पहुंचे और इमाम मालिक रह० की ख़िदमत में रहने लगे। इमाम मालिक रह० उनको बहुत मानते थे और वह भी इमाम मालिक रह० का बड़ा एहतिराम करते थे। उन लोगों के अलावा भी उनके बहुत-से मशहूर उस्ताद हैं जिनसे उन्होंने फ़ैज़ हासिल किया।

हदीस का शौक़

यूं तो हज़रत अब्दुल्लाह रह० तमाम ही उलूम में माने हुए थे, लेकिन इल्मे हदीस से उनको ख़ास लगाव था। हदीसें जानने, याद करने और जमा करने का उनको इंतिहाई शौक़ था और इसी शौक़ की बरकत थी कि यह हदीस के इमाम कहलाए। हज, जिहाद और इबादत से जो वक़्त बचता उसको इल्मे हदीस हासिल करने में लगाते। कभी-कभी तो ऐसा होता कि घर से निकलते ही नहीं। एक बार किसी ने पूछा, आप अकेले घर में पड़े रहते हैं, तबीयत नहीं घबराती? इस सवाल पर उनको बहुत ताज्जुब हुआ। फ़रमाने लगे "ताज्जुब है घर में जब हर वक़्त मुझे प्यारे रसूल सल्ल० और प्यारे सहाबा रज़ि० की सोहबत हासिल है तो घबराना कैसा?" कभी-कभी तो ऐसा होता कि रात में अगर हदीसे रसूल सल्ल० का ज़िक्र छिड़ जाता तो पूरी-पूरी रात जागने में कट जाती। अली इब्ने हसन रह० उनके ज़माने के एक मशहूर आलिम हैं। एक दिन का क़िस्सा सुनाते हैं कि इशा की नमाज़ पढ़कर ये दोनों बुज़ुर्ग दरवाज़े से निकल रहे थे। मस्जिद के दरवाज़े पर अली इब्ने हसन रह० ने किसी हदीस के बारे में पूछ लिया, फिर क्या था। हज़रत अब्दुल्लाह रह०

ने अपने इल्म के दरिया बहाने शुरू कर दिए। रात भर यही आलम रहा। जब मुअज़्ज़िन ने सुबह की अज़ान दी तो उन्हें महसूस हुआ कि सुबह हो गई। मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े-खड़े सारी रात गुज़ार दी।

हज़रत की ज़िंदगी मुजाहिदाना थी। कभी हज में हैं तो कभी जिहाद के मैदान में, कभी मिस्र में हैं तो कभी हिजाज़ में, कभी बग़दाद में हैं तो कभी रिक़्क़ा में। ग़र्ज़ एक जगह जमकर कभी नहीं बैठे। लेकिन जहां पहुंचते यही शौक़ लिए हुए पहुंचते और हज़ारों इल्म के प्यासे इस रवां-दवां चश्मे से सैराब होने के लिए जमा हो जाते। यही वजह है कि उनसे फ़ायदा उठानेवालों की तादाद इतनी ज़्यादा है कि शुमार में नहीं आ सकती।

शोहरत

दूर-दूर के लोग उनसे फ़ैज़याब हुए। हर जगह उनके इल्म व फ़ज़्ल के चर्चे होने लगे। बड़े-बड़े उलमा को उनके देखने का शौक़ था, उनसे मिलने की तमन्ना थी। हर जगह उनकी बुज़ुर्गी और कमाल के तज़्किरे थे। उनके इल्म व फ़ज़्ल की क़द्र थी। हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० अगरचे उनके उस्ताद थे और ख़ुद हज़रत अब्दुल्लाह रह० भी उनको बहुत मानते थे लेकिन वह भी हज़रत के इल्म व कमाल से बहुत मुतास्सिर थे। एक बार ख़ुरासान के रहने वाले किसी शख़्स ने हज़रत सुफ़ियान रह० से कोई मसला पूछा तो फ़रमाया, भाई मुझसे क्या पूछते हो? तुम्हारे यहां तो ख़ुद मश्रिक़ व मग़रिब के सबसे बड़े आलिम मौजूद हैं, उनसे पूछो। उनके होते हुए हमसे पूछने की क्या ज़रूरत है? उन्हीं सुफ़ियान रह० का वाक़िआ है कि एक बार किसी ने हज़रत अब्दुल्लाह को "मश्रिक़ का आलिम" कह दिया तो बहुत ख़फ़ा हुए और डांट कर कहा, अब्दुल्लाह को "मश्रिक़ व मग़रिब का आलिम" कहा करो।

आपकी शोहरत दूर-दूर फैल चुकी थी। बेदेखे लोगों को आपसे अक़ीदत थी। एक बार हज़रत हम्माद बिन ज़ैद रह० की ख़िदमत में पहुंचे। ये उस वक़्त के बहुत बड़े मुहद्दिस थे। इराक़ के शैख़ माने जाते थे। जब हज़रत अब्दुल्लाह रह० उनके पास पहुंचे तो पूछा, आप कहां से आए हैं? हज़रत ने फ़रमाया, ख़ुरासान से। शैख़ इराक़ रह० ने कहा, ख़ुरासान तो बहुत बड़ा मुल्क है, ख़ुरासान के किस शहर से आए हो? हज़रत ने बताया कि 'मर्व' से। मरो

का नाम सुनते ही शैख़े इराक़ रह० ने पूछा कि तब तो आप हज़रत अब्दुल्लाह को जानते होंगे? हज़रत ने फ़रमाया, वह तो आपकी ख़िदमत में मौजूद है। शैख़े इराक़ हज़रत हम्माद बिन ज़ैद रह० की निगाहें अक़ीदत से झुक गईं। उठकर हज़रत अब्दुल्लाह रह० को गले से लगाया और निहायत इज़्ज़त व एहतिराम से पेश आए।

मक़्बूलियत

शोहरत के साथ-साथ अल्लाह तआला ने उनको मक़्बूलियत भी ऐसी बख़्शी थी कि जहां जाते लोग हाथों हाथ लेते। अक़ीदत व मुहब्बत से आपकी राह में आंखें बिछाते और आपसे मिलकर ईमान में ताज़गी महसूस करते। कोई ऐसी बस्ती न थी जहां के लोग आपको दिल से न चाहते हों और आपसे मुहब्बत न करते हों।

एक मर्तबा आप शहर रिक़्क़ा तशरीफ़ ले गए। ख़लीफ़ा हारून रशीद भी वहां मौजूद थे। शहर में हर तरफ़ आपके आने की चर्चा थी, इस्तक़बाल की तैयारियां थीं और लोग जूक़ दर जूक़ आपको देखने और आपके दीदार से आंखों को रौशन करने के लिए चले आ रहे थे। हर तरफ़ ख़ुशी और मसर्रत से लोगों के चेहरे दमक रहे थे और हर एक बेइख़्तियार खिंचा चला आ रहा था।

शाही बालाख़ाने पर हारून रशीद की एक लौंडी बैठी हुई यह मंज़र देख रही थी, बहुत हैरान हुई कि आख़िर ऐसा कौन-सा शख़्स है जिसको देखने और जिससे मिलने के लिए ये लोग इतने बेताब हैं और दौड़े चले आ रहे हैं। मालूम किया तो लोगों ने बताया कि मश्रिक़ व मग़रिब के आलिम हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह० तशरीफ़ ला रहे हैं। उनको देखने के लिए यह मख़्लूक़ दौड़ी चली जा रही है। सच्ची बादशाही तो हज़रत अब्दुल्लाह ही को हासिल है कि लोग अपने जज़्बे और शौक़ से खिंचे चले आ रहे हैं। भला हारून की भी कोई बादशाही है कि लोग फ़ौज और डंडे के ज़ोर से लाए जाते हैं और सज़ा के डर से जमा होते हैं।

जब मौसिल के क़रीब क़स्बा हैअत में उनकी वफ़ात हुई तो लोगों की इतनी भीड़ थी कि हैअत का हाकिम हैरान था, बहुत मुतास्सिर हुआ और फ़ौरन अपनी दारुल सल्तनत बग़दाद में उसकी इत्तिला भिजवाई।

इमाम मालिक रह० ने अपनी मस्नद पर इब्ने मुबारक को बिठाया

एक मर्तबा आप मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गए और वहां इमाम मालिक रह० से मिलने के लिए पहुंचे। इमाम मालिक रह० अपनी शाहाना शान के थ तलबा को हदीस पढ़ाने में मशग़ूल थे, ज्यों ही आपको देखा फ़ौरन अपनी जगह से उठे, आपसे गले मिले और निहायत इज़्ज़त के साथ आपको अपनी मस्नद पर बिठाया। इससे पहले इमाम मालिक रह० किसी के लिए मज्लिस से नहीं उठते थे और न ही किसी को इस इज़्ज़त के साथ अपने क़रीब मस्नद पर बिठाया था। तलबा को इस वाक़िए पर बड़ी हैरत थी। इमाम मालिक रह० ने भी तलबा की इस हैरत को भांप लिया। समझाते हुए फ़रमाया, "अज़ीज़ो! यह ख़ुरासान के फ़क़ीह हैं।"

सोचने की बात

सोचने की बात यह है कि क्यों लोग हज़रत अब्दुल्लाह रह० को दिल व जान से चाहते थे? और क्यों आप पर जान छिड़कते थे?

अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया है :

> "जो लोग (सच्चे दिल से) ईमान लाए और (फिर) भले काम किए अल्लाह तआला लोगों के दिलों में उनकी मुहब्बत भर देगा।"

हज़रत अब्दुल्लाह रह० की मुबारक ज़िंदगी इस आयत की सच्ची तसवीर थी। हक़ीक़त यह है कि अगर आदमी सच्चे दिल से ईमान लाकर भले कामों से अपनी ज़िंदगी संवार ले तो वाक़ई इस लायक़ है कि दोनों जहांन में उसकी क़द्र हो। हज़रत की ज़िंदगी के हालात जब हम पढ़ते हैं तो मालूम होता है कि वह ईमान और अमले सालेह की जीती-जागती तसवीर थे। नेकी और भलाई का नमूना थे। इस्लाम का एक निशान थे कि हमेशा के लिए लोग उनसे रहनुमाई हासिल करें। यूं तो आपकी ज़िंदगी सर-ता-पैर भलाई और नेकी ही थी लेकिन चन्द ख़ूबियां ऐसी उभरी हुई थीं कि हज़रत का नाम सुनते ही उन ख़ूबियों की तसवीर आंखों में फिर जाती है–

(1) ख़ुदा का ख़ौफ़, (2) दीन की सही समझ, (3) इबादत, (4) हदीसे रसूल सल्ल० से मुहब्बत, (5) अमीरों से बेनियाज़ी, (6) आजिज़ी और तवाज़ो, (7) मख़्लूक़ के साथ सुलूक, (8) दीन की इशाअत, (9) जिहाद का शौक़।

ख़ुदा का ख़ौफ़

ख़ुदा का ख़ौफ़ तमाम भलाइयों की जड़ है। उस आदमी से भलाई की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती जिसमें ख़ुदा का ख़ौफ़ न हो। बुरी बातों से रुकना, अच्छे कामों की तरफ़ बढ़ना, लोगों के हुक़ूक़ का ख़्याल, ज़िम्मेदारी का एहसास, ग़रीबों के साथ सुलूक, लेन-देन और मामलात में सच्चाई और दयानत, ग़र्ज़ हर नेकी की जड़ ख़ुदा का ख़ौफ़ है।

क़ियामत के दिन ख़ुदा के सामने पेशी होगी। वह हमसे पल-पल का हिसाब लेगा। एक-एक काम की पूछ-गच्छ होगी। यह यक़ीन नेकी की ज़मानत है, यह यक़ीन रखनेवाला शख़्स कभी किसी को धोखा न देगा, किसी बुराई के क़रीब न फटकेगा, किसी ग़ैर-ज़िम्मेदारी की हरकत न करेगा। कभी किसी का हक़ न मारेगा, कभी किसी का दिल न दुखाएगा। हर आदमी को उससे भलाई की उम्मीद होगी और हर हाल में वह सच्चाई पर क़ायम रहेगा। ख़ुदा से डरनेवाला बड़े-से-बड़े ख़तरे से नहीं डर सकता। उस शख़्स के दिल में ईमान ही नहीं है जो ख़ुदा से नहीं डरता।

मदीना के मशहूर आलिम हज़रत क़ासिम इब्ने अहमद रह० अक्सर सफ़र में हज़रत अब्दुल्लाह रह० के साथ रहते थे। एक बार फ़रमाने लगे, "मैं कभी-कभी यह सोचता था कि आख़िर हज़रत अब्दुल्लाह रह० में वह कौन-सी ख़ूबी है जिसकी वजह से उनकी इतनी क़द्र है और हर जगह पूछ है। नमाज़ वह भी पढ़ते हैं, हम भी पढ़ते हैं, रोज़ा वह रखते हैं, हम भी रखते हैं, वह हज को जाते हैं तो हम भी जाते हैं, वह ख़ुदा की राह में जिहाद करते हैं तो हम भी जिहाद में शरीक होते हैं। किसी बात में हम उनसे पीछे नहीं हैं, लेकिन फिर भी जहां देखिए लोगों की ज़बान पर उन्हीं का नाम है और उन्हीं की क़द्र है।

एक मर्तबा ऐसा हुआ कि हम लोग शाम के सफ़र पर जा रहे थे। रास्ते में रात हो गई, एक जगह ठहर गए। खाने के लिए जब सब लोग दस्तरख़ान पर बैठे तो इत्तिफ़ाक़ की बात कि यकायक चिराग़ बुझ गया। ख़ैर एक आदमी

उठा और उसने चिराग़ जलाया। जब चिराग़ की रौशनी हुई तो क्या देखता हूं कि हज़रत अब्दुल्लाह रह० की दाढ़ी आंसुओं से तर है। चिराग़ बुझने से घबराए तो हम सब ही थे, लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह रह० तो किसी और ही दुनिया में पहुंच गए, उन्हें क़ब्र की अंधेरियां याद आ गईं और उनका दिल भर आया। मुझे यक़ीन हो गया कि यह ख़ुदा का ख़ौफ़ और उसके सामने हाज़िरी का डर है जिसने हज़रत को इस ऊंचे मक़ाम पर पहुंचा दिया है, और यह हक़ीक़त है कि इस बात में हम उनसे पीछे हैं।

हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह० फ़रमाया करते थे कि "हज़रत अब्दुल्लाह रह० को यह ऊंचा मर्तबा इसी लिए मिला कि वह ख़ुदा से बहुत ज़्यादा डरते थे।"

ज़िम्मेदारी का एहसास इतना था कि एक मर्तबा शाम में किसी से लिखने के लिए क़लम ले लिया और देना याद नहीं रहा। जब अपने वतन मर्व वापस आ गए तो याद आया। घबरा गए। फ़ौरन सफ़र का इरादा किया। शाम मर्व से सैकड़ों मील दूर है। सफ़र की तकलीफ़ें उठाते हुए शाम पहुंचे और जब उस शख़्स को क़लम दिया तो इत्मीनान का सांस लिया। फ़रमाया करते थे, "अगर शुबहा में तुम्हारे पास किसी का एक दिरहम रह जाए तो उसका वापस करना लाख रुपये सदक़ा करने से ज़्यादा अच्छा है।" उन्हीं का एक शेर है जिसका मानी हैं:

"जो ख़ुदा से डरता है वह किसी बुराई के क़रीब नहीं फटकता।"

दुनिया से बेरग़बती और ज़ुह्द पर आपने एक किताब भी लिखी है जिसका नाम "किताबुज़्ज़ुह्द" है। जब शागिर्दों को यह किताब पढ़ाते तो उनका दिल भर आता, आंखों में आंसू आ जाते और आवाज़ घुटने लगती।

दीन की सही समझ

नबी सल्ल० का इरशाद है, "ख़ुदा जिसको भलाई से नवाज़ना चाहता है, उसको दीन की गहरी समझ अता फ़रमा देता है।" हक़ीक़त यह है कि दीन की सही समझ ख़ुदा की बहुत बड़ी नेमत है। अगर दीन की समझ से आदमी महरूम हो तो कभी दीन पर सही अमल नहीं कर सकता। ज़िंदगी के बहुत-से मामलात में दीन का तक़ाज़ा कुछ होगा और वह कुछ अमल करेगा

और इस तरह उसकी ज़ात से दीन को फ़ायदा पहुंचने के बजाए नुक़सान पहुंचेगा। बहुत-सी बातों को वह दीनदारी समझकर इख़्तियार करेगा, हालांकि वे बातें दीन के ख़िलाफ़ होंगी।

ख़ुदा का दीन एक फ़ितरी दीन है। वह इंसानी ज़रूरतों का लिहाज़ करता है। इंसान के जज़्बात का लिहाज़ करता है और हर बात में अतिदाल और मयानारवी को बड़ी अहमियत देता है। वह बन्दों को ख़ुदा के हुक़ूक़ भी बताता है और बन्दों के हुक़ूक़ भी, और ऐसी जामे हिदायत देता है कि अगर आदमी उन हिदायात को ठीक-ठीक समझकर उनकी पैरवी करे तो वह दुनिया के लिए रहमत का साया बन जाता है। वह दुनिया के मामलात को रौशनी में देखता है और कभी किसी का हक़ नहीं मारता। मसलन आप सोचिए कि एक शख़्स क़ुरआन पाक की तिलावत करते हुए एक जंगल का सफ़र कर रहा है, उसके साथ उसका साथी भी सफ़र कर रहा है। यह शख़्स बड़े जज़्बे के साथ क़ुरआन की तिलावत में मशग़ूल है। आगे एक नदी आई। नदी में पानी थोड़ा मालूम हो रहा है और उसका साथी पार जाने के लिए बेधड़क नदी में कूद पड़ता है। इत्तिफ़ाक़ की बात कि जहां वह कूदता है वह गहरा गढ़्ढा है, और वह डूबते-डूबते बचता है। जब वह बाहर निकल कर आता है तो अपने साथी से कहता है कि आप तो अक्सर व बेशतर इस रास्ते पर सफ़र करते हैं, आपको यह नहीं मालूम कि यहां इतना गहरा गढ़्ढा है। इतनी देर में वह क़ुरआन पाक की सूरत पूरी करके अपने ऊपर दम कर लेता है और कहता है, भाई मुझे तो ख़ूब मालूम था कि यहां गहरा गढ़्ढा है और ख़ुदा ने ख़ैर कर दी कि तुम बच गए, मगर मैं तुम्हें कैसे बताता; मैं तो क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहा था और सूरह पूरी नहीं हुई थी।

आप ही सोचिए उस शख़्स का यह अमल कैसा है? बेशक क़ुरआन शरीफ़ की तिलावत एक बहुत बड़ी नेमत है। लेकिन जब उस शख़्स की जान जा रही हो तो क्या उसके लिए यह जाइज़ है कि वह क़ुरआन पढ़ता रहे, और रुक कर उसको यह न बताए कि आगे जान का ख़तरा है। दरअस्ल यह दीन की सही समझ से महरूमी का नतीजा है। यह दीनदारी की ग़लत मिसाल है।

और सोचिए, एक शख़्स हर वक़्त ख़ुदा की इबादत में लगा रहता है। जब देखो नफ़्ल पढ़ रहा है, तस्बीह पढ़ रहा है, क़ुरआन की तिलावत कर रहा

है और लोगों को दीन की बातें भी समझा रहा है। लेकिन उसके बच्चे अक्सर फ़ाक़े से रहते हैं, उनके बदन पर कपड़े नहीं हैं, वह भूख से बेताब होकर पास पड़ोस से मांगने के लिए पहुंच जाते हैं और जब उस शख़्स से कहा जाता है कि भाई तुम दिन-रात वज़ीफ़े पढ़ने और तिलावत करने में मशग़ूल रहते हो, आख़िर कुछ मेहनत-मज़दूरी क्यों नहीं करते? तुम्हारे बच्चों का यह हाल है। वह बड़े फ़ख़्र से कहता है, ख़ुदा के दरबार से फ़ुरसत ही नहीं मिलती। अल्लाह की बड़ी मेहरबानी है कि बहुत-सा वक़्त उसकी इबादत में गुज़र जाता है। कमाना और दुनिया जमा करना तो दुनियादारों का काम है। मोमिन को तो ख़ुदा ने इबादत के लिए पैदा किया है। तो बताइए उस शख़्स का यह अमल दीन की हिदायत के लिहाज़ से कितना ग़लत है? लेकिन वह समझता है कि मैं दीनदार हूं, और बच्चों को भूखा मारकर नफ़्ल पढ़ते रहना बहुत बड़ी दीनदारी है।

हक़ीक़त यह है कि आदमी अगर दीन की सही समझ से महरूम हो तो वह कभी भी दीन पर सही अमल नहीं कर सकता और लोग उसको देखकर हमेशा दीन के बारे में ग़लत तसव्वुर क़ायम करेंगे। अगर आदमी दीन की सही समझ रखता हो तो वह कभी ऐसी हरकतें नहीं कर सकता। नबी सल्ल० ने एक बार फ़रमाया, "मैं नमाज़ पढ़ाने के लिए खड़ा होता हूं और सोचता हूं कि नमाज़ लम्बी पढ़ाऊं कि इतने में किसी बच्चे के रोने की आवाज़ आती है तो मैं नमाज़ को मुख़्तसर कर देता हूं। मुझे यह बात सख़्त नापसन्द है कि लम्बी नमाज़ पढ़ाकर बच्चे की मां को परेशान करूं।"

अजीबो-ग़रीब हज

हज़रत अब्दुल्लाह रह० रसूलुल्लाह सल्ल० की हदीसों के माहिर थे। नबी सल्ल० के मिज़ाज और दीन की हक़ीक़त को ख़ूब समझते थे। वह जानते थे कि सही दीनदारी क्या है?

एक बार आप हज को जा रहे थे। सफ़र में एक मक़ाम पर एक लड़की को देखा कि कूड़े पर से कुछ उठा रही है। ज़रा और क़रीब गए तो क्या देखते हैं कि बेचारी एक मरी हुई चिड़िया को जल्दी-जल्दी एक चीथड़े में लपेट रही है। हज़रत वहीं रुक गए और हैरत व मुहब्बत के साथ उस ग़रीब बच्ची से

पूछा, "बेटी! तुम इस मुर्दार चिड़िया का क्या करोगी?" और अपने फटे-पुराने मैले कपड़ों को संभालते हुए रुंधी हुई आवाज़ में बोली : "चचा मियां! हमारे अब्बा को कुछ ज़ालिमों ने क़त्ल कर दिया। हमारा सब माल छीन लिया और सारी जायदाद हथिया ली। अब मैं हूं और मेरा एक भाई है। ख़ुदा के सिवा हमारा कोई सहारा नहीं। अब हमारे पास न खाने के लिए कुछ है, और न पहनने के लिए। कई-कई वक़्त हम पर ऐसे ही गुज़र जाते हैं। इस वक़्त भी छः वक़्त के फ़ाक़े से हैं। भय्या घर में भूख से निढाल पड़ा है। मैं बाहर निकली कि शायद कुछ मिल जाए। यहां आई तो यह मुर्दार चिड़िया पड़ी मिली। हमारे लिए यह भी बड़ी नेमत है।" यह कहते हुए फ़ाक़ा की मारी बच्ची फूट-फूट कर रोने लगी।

हज़रत का दिल भर आया। बच्ची के सर पर हाथ रखा और ख़ुद भी रोने लगे। अपने ख़ज़ानची से पूछा, "इस वक़्त तुम्हारे पास कितनी रक़म है?"

"हज़रत एक हज़ार अशरफ़ियां हैं?" ख़ज़ानची ने जवाब दिया।

"मेरे ख़्याल में मर्व तक पहुंचने के लिए बीस अशरफ़ियां काफ़ी होंगी।" हज़रत ने पूछा।

"जी हां, बीस अशरफ़ियां घर तक पहुंचने के लिए बिल्कुल काफ़ी हैं।" ख़ज़ानची ने जवाब दिया।

"तो फ़िर तुम बीस अशरफ़ियां रोक लो और बाक़ी सारी रक़म इस लड़की के हवाले कर दो। हम इस साल हज को नहीं जाएंगे। यह हज काबा के हज से भी ज़्यादा बड़ा है।" हज़रत ने फ़ैसलाकुन अंदाज़ में कहा।

ख़ज़ानची ने सारी रक़म लड़की के हवाले कर दी। ग़म और फ़ाक़ा से कुम्हलाया हुआ चेहरा एक दम खिल उठा और लड़की की आंखों में ख़ुशी के आंसू तैरने लगे। और तेज़-तेज़ क़दम उठाती हुई ख़ुशी-ख़ुशी अपने घर को लौट गई।

हज़रत ने ख़ुदा का शुक्र अदा किया और ख़ज़ानची से फ़रमाया, "चलो अब यहीं से घर को वापस चलें, ख़ुदा ने यहीं हमारा हज क़बूल फ़रमा लिया।"

इबादत

इबादत का शौक़ मोमिन की पहचान है। मोमिन हर वक़्त बेचैन होता है कि उसे ख़ुदा से क़रीब होने का मौक़ा मिले। उसके दरबार में हाज़िर हो। उसकी चौखट पर सर झुकाने की इज़्ज़त मिले। इबादत ही के ज़रिए बन्दा ख़ुदा से क़रीब होता है और इबादत करके ही दुनिया में ख़ुदा से मिलने की तमन्ना पूरी करता है।

हज़रत अब्दुल्लाह रह० इबादत में प्यारे सहाबा रज़ि० का सच्चा नमूना थे। इबादत गुज़ारी और शबबेदारी में बेमिसाल थे। हज़रत सुफ़ियान इब्न अईना रह० मक्का के बहुत बड़े आलिम और मुहद्दिस थे। फ़रमाते थे कि जब मैं सहाबा किराम के हालात पढ़ता हूं और ग़ौर करता हूं तो हज़रत अब्दुल्लाह रह० को किसी चीज़ में भी उनसे कम नहीं पाता। सहाबा किराम रज़ि० की शान यह थी कि उनकी रातें नमाज़ों में गुज़रतीं और दिन मैदाने जिहाद में और यही हाल हज़रत अब्दुल्लाह रह० का है। लेकिन यहां एक चीज़ ऐसी है जो हज़रत अब्दुल्लाह रह० को हासिल नहीं है, और वह "प्यारे रसूल सल्ल० की सोहबत" है। ज़ाहिर है सहाबा रज़ि० की इस फ़ज़ीलत को कौन पा सकता है? यह तो अल्लाह का एक ऐसा इनाम है कि उसमें क़ियामत तक कोई उनकी बराबरी नहीं कर सकता और यही वजह है कि उम्मत में सहाबा किराम रज़ि० के मर्तबे को कोई नहीं पहुँच सकता।

हज़रत की इबादत-गुज़ारी और बुज़ुर्गी का किसी क़द्र अंदाज़ा इससे होता है कि उनके ज़माने के बड़े-बड़े ज़ाहिद और आबिद व बुज़ुर्ग उनको अपना सरदार मानते थे और उनसे इसलिए मुहब्बत करते थे कि ख़ुदा का क़ुर्ब हासिल करें।

हज़रत ज़हबी रह० एक मशहूर मुहद्दिस और बहुत बड़े ज़ाहिद व आबिद गुज़रे हैं। फ़रमाया करते थे, "हज़रत अब्दुल्लाह में कौन-सी ख़ूबी नहीं है। ख़ुदातरसी, इबादत, ख़ुलूस, जिहाद, ज़बरदस्त इल्म, दीन में मज़बूती, हुस्ने सुलूक, बहादुरी। ख़ुदा की क़सम मुझे उनसे मुहब्बत है और उनकी मुहब्बत से मुझे भलाई की उम्मीद है।

हज के शौक़ का यह हाल था कि साल को तीन हिस्सों में तक़्सीम कर

दिया था। चार महीने हदीस पढ़ने-पढ़ाने में गुज़ारते, चार महीने जिहाद में रहते और चार महीने हज के सफ़र में रहते।

हज़रत सुफ़ियान सौरी रह० कहा करते थे, "मैंने बहुत कोशिश की कि कम-से-कम एक साल ही हज़रत अब्दुल्लाह रह० की तरह ज़िंदगी गुज़ार लूं। लेकिन कभी कामयाब न हुआ।" कभी-कभी फ़रमाते, "काश! मेरी पूरी ज़िंदगी हज़रत अब्दुल्लाह रह० के तीन दिन के बराबर होती।"

हदीसे रसूल सल्ल० से मुहब्बत

वह शख़्स मोमिन ही नहीं है जिसके दिल में ख़ुदा के रसूल सल्ल० की मुहब्बत न हो। आज हममें प्यारे रसूल सल्ल० ख़ुद तो मौजूद नहीं हैं, लेकिन आप सल्ल० की प्यारी ज़िंदगी की हू-ब-हू तसवीर हदीस में मौजूद है। आप सल्ल० का उठना-बैठना, चलना-फिरना, रहना-सहना, नमाज़, रोज़ा, वाज़ और नसीहत सब ही कुछ हदीस में मौजूद है। आप सल्ल० से मुहब्बत करनेवाला भला कौन होगा जो हदीसे रसूल सल्ल० पढ़ने-पढ़ाने को अपनी सबसे बड़ी ख़ुशक़िस्मती न समझता हो और दिन रात उस आइने में अपने प्यारे रसूल सल्ल० की सूरत देखने का ख़्वाहिशमंद न हो।

हज़रत अब्दुल्लाह रह० का हाल तो यह था कि घर से निकलते ही न थे। हर वक़्त घर में तनहा बैठे हदीसे रसूल सल्ल० में मशग़ूल रहते। लोगों ने पूछा, हज़रत! तनहा घर में बैठे बैठे आपकी तबीयत नहीं घबराती? फ़रमाया "ख़ूब! मैं तो हर वक़्त प्यारे रसूल सल्ल० और सहाबा रज़ि० की मज्लिस में होता हूं, उनके दीदार से आंखें ठंडी करता हूं और उनसे बातचीत में मशग़ूल होता हूं, फिर घबराना कैसा?" यही वजह है हदीस की मशहूर किताबों में आपकी बयान की हुई हदीसें इक्कीस हज़ार के लगभग हैं। और हदीस के उलमा उनको इल्मे हदीस में अमीरुल मोमिनीन और इमामुल मुस्लिमीन कहा करते थे।

हज़रत फ़ुज़ाला रह० फ़रमाते हैं, "जब कभी किसी हदीस के बारे में उलमा में इख़्तिलाफ़ होता तो कहते, चलो हदीस की नब्ज़ पहचानने वाले, 'तबीबे हदीस' से पूछें।" यह तबीबे हदीस हज़रत अब्दुल्लाह रह० ही थे।

जिस तरह आपको हदीस से मुहब्बत थी, ऐसा ही आप हदीस का अदब

भी करते थे। कभी अगर किसी की ज़बान से कोई बेअदबी की बात सुनते, या कोई बेअदबी करते देखते तो गुस्से से चेहरा सुर्ख़ हो जाता और बहुत ख़फ़ा होते। आम तौर पर ऐसा होता है कि रास्ता चलते लोग किसी आलिम को रोक कर मसला पूछने लगते हैं। आप उसको बहुत बुरा समझते थे। एक बार रास्ते में किसी ने हदीस के बारे में उनसे कुछ पूछा। गुस्से में चुप हो गए और यह कहते हुए आगे बढ़ गए कि "यह हदीसे रसूल सल्ल० पूछने की जगह नहीं है।" मतलब यह था कि हदीस गली-कूचों में पूछने की चीज़ नहीं है। "अगर तुम्हें हदीस जानने का शौक़ है तो किसी के पास जाकर अदब से पूछो।" सच्ची बात भी यह है कि जो शख़्स इल्म का अदब नहीं करता उसको कभी इल्म नहीं आ सकता।

अमीरों से बेनियाज़ी

हज़रत अब्दुल्लाह रह० दुनियादार हुक्मरानों और अमीरों से हमेशा दूर रहते थे। वह उनके पास जाना इल्म की नाक़द्री समझते थे। जिसको अल्लाह ने इल्म की ख़त्म न होने वाली दौलत दे रखी हो, उसकी नज़र में दुनिया की फ़ना होनेवाली दौलत की क्या क़द्र हो सकती है? मग़रूर हाकिमों की हमेशा यह कोशिश रही है कि उलमा उनकी ख़िदमत में हाज़िर हों और उनकी हां में हां मिलाएं। लेकिन दीन के सच्चे आलिमों ने कभी उनकी तरफ़ तवज्जोह नहीं की। वह हमेशा उनसे बेनियाज़ रहे। हज़ार तकलीफ़ें उठाईं लेकिन कभी उनकी चौखट पर हाज़िरी न दी।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद रज़ि० फ़रमाया करते थे, "बादशाहों की ड्योढ़ियों पर फ़ितने इस तरह जमे बैठे रहते हैं जैसे ऊंट अपनी थानों पर। ख़ुदा की क़सम उनकी ड्योढ़ी पर जाकर जितनी दुनिया कमाओगे उससे ज़्यादा वह तुम्हारा दीन तुमसे ले लेंगे।"

एक और बुज़ुर्ग हज़रत वहब इब्न मुनब्बा रह० फ़रमाया करते थे, "माल जमा करना और बादशाहों के दरबार में हाज़िरी देना दोनों बातें आदमी के दीन को इस तरह चट कर जाती हैं जिस तरह दो ख़ूंख़ार भेड़िये अगर बकरियों के बाड़े में एक रात रह जाएं।"

हज़रत क़तादा रह० फ़रमाया करते थे, "सबसे बुरे हाकिम वे हैं जो

आलिमों से दूर रहते हैं और सबसे बुरे आलिम वे हैं जो हाकिमों और मालदारों के पीछे-पीछे फिरते हैं।"

हज़रत अब्दुल्लाह रह० ख़ुद तो मालदारों और मग़रूर हाकिमों से बचते ही थे अपने दोस्तों और अज़ीज़ों को भी सख़्ती के साथ रोकते थे। हारून रशीद ने कई मर्तबा हज़रत से मिलना चाहा लेकिन आपने हमेशा टाल दिया।

इसमाईल बिन अलया रह० हज़रत के अज़ीज़ दोस्त थे, बहुत बड़े आलिम और मुहद्दिस थे। कारोबार में भी हज़रत के शरीक थे। जब उन्हें सदक़ात की वसूली का ऊंचा ओहदा मिला तो हाकिमों और अमीरों के पास आना-जाना भी शुरू हो गया। एक दिन हज़रत अब्दुल्लाह के पास मिलने आए तो हज़रत ने कोई तवज्जोह ही न दी। उनको बहुत रंज हुआ। घर गए और सदमे में एक लम्बा ख़त अपने उस्ताद हज़रत अब्दुल्लाह को लिखा। अपने रंज व ग़म का इज़्हार किया। जवाब में हज़रत ने चन्द शेर लिखकर भेजे जिनका मतलब यह था :

"तुम दीन के इल्म से दुनिया समेटने लग गए हो, दुनिया की लज़्ज़तों के पीछे पड़ गए हो, ये लज़्ज़तें तुम्हारे दीन को फूंककर रख देंगी। तुम तो ख़ुद वह हदीसें बयान करते थे जिनमें दुनियादार हाकिमों से मेल बढ़ाने से डराया गया है। देखो दुनियापरस्त पादरियों की तरह दीन से दुनिया न कमाओ।"

हज़रत इसमाईल रह० यह अशआर पढ़कर रोने लगे। उसी वक़्त अपने ओहदे से इस्तीफ़ा दे दिया और कभी किसी हाकिम की ड्योढ़ी पर नहीं गए।

आजिज़ी और तवाज़ो

हज़रत अब्दुल्लाह रह० की शान एक तरफ़ तो यह थी कि बड़े-बड़े हाकिमों को भी मुंह न लगाते थे और दूसरी तरफ़ हाल यह था कि हर वक़्त लोगों की ख़िदमत में लगे रहते। लोगों की ज़रूरतें पूरी करते, हर एक से ख़ाकसारी और तवाज़ो से पेश आते। कभी अपनी बड़ाई का इज़्हार न करते। फ़रमाया करते कि शोहरत से हमेशा बचते रहो। गुमनामी में भलाई है। लेकिन किसी पर यह भी न ज़ाहिर होने दो कि तुम गुमनामी को पसन्द करते हो, उससे भी ग़ुरूर पैदा हो सकता है।

मर्व में आपका एक बहुत बड़ा मकान था। हर वक़्त अक़ीदतमंदों और शागिर्दों की भीड़ रहती थी। कुछ दिनों तो आपने बरदाश्त किया। लेकिन जब देखा रोज़-बरोज़ ज़्यादती ही हो रही है तो कूफ़ा चले गए और वहां एक छोटी-सी अंधेरी कोठरी में रहने लगे। लोगों ने हमदर्दी करते हुए कहा कि हज़रत यहां इस अंधेरी कोठरी में तो आपकी तबीयत घबराती होगी? थोड़ी देर ख़ामोश रहे, फिर फ़रमाया : लोग अक़ीदतमंदों के हुजूम में रहना पसन्द करते हैं और मैं उससे भागता हूं, इसी लिए तो मर्व से कूफ़ा भाग कर आया हूं।

एक मर्तबा किसी सबील पर पानी पीने के लिए पहुंचे। वहां भीड़ थी। लोगों का रेला आया तो दूर जा गिरे। वापसी में अपने साथी हज़रत हसन रह० से कहने लगे, ज़िंदगी ऐसी ही हो कि न लोग हमें पहचानें और न हमें कोई बड़ी चीज़ समझें।

एक बार लोगों ने उनसे पूछा, हज़रत तवाज़ो किसे कहते हैं? फ़रमाया, तवाज़ो यह है कि तुम्हारी ख़ुद्दारी तुम्हें मालदारों से दूर रखे।

मख़्लूक़ के साथ सुलूक

किसी शख़्स की नेकी और दीनदारी का सही अंदाज़ा इस बात से होता है कि लोगों के साथ उसका सुलूक कैसा है? हज़रत अब्दुल्लाह रह० हर एक के काम आते और अपने पराए का ख़्याल किए बग़ैर हर एक के साथ अच्छा सुलूक करते। वह ग़ैरों पर अपनी दौलत इस तरह लुटाते कि कोई अपनों पर भी क्या लुटाएगा।

हज के लिए तो हर साल जाते ही थे, बहुत-से लोग आपके साथ हो लेते। सफ़र पर जाते हुए आप सिर्फ़ अपने ही खाने का इंतिज़ाम न करते, बल्कि अपने साथियों के लिए भी खाने-पीने का इंतिज़ाम करके चलते। एक साल तो लोगों ने यह देखा कि उनके साथ दो ऊंटों पर सिर्फ़ भुनी हुई मुर्गियां लदी हुई थीं। हज को रवाना होने से पहले अपने तमाम साथियों से कहते कि अपनी-अपनी रक़में मेरे पास जमा करो। सबसे रक़म लेकर अलग-अलग थैलियों में रख लेते और हर थैली पर देनेवाले का नाम और रक़म की मिक़्दार लिखते। फिर रास्ते भर अपने पास से ख़र्च करते। अच्छे से अच्छा खिलाते,

लोगों के आराम का ख़्याल रखते और हर तरह की सहूलत पहुंचाने की कोशिश करते। हज से फ़ारिग़ होकर मदीना पहुंचते तो साथियों से कहते, "अपने घरवालों के लिए ज़रूरत की जो चीज़ें लेना चाहो ले लो।" लोग इत्मीनान के साथ अपनी ज़रूरत की चीज़ें ख़रीद लेते। हज से वापस आकर अपने सारे साथियों की दावत करते और फिर हर एक को उसकी थैली रक़म के समेत वापस कर देते। एक बार लोगों ने पूछा कि रास्ते में तो आप बताते नहीं कि अपने पास से ख़र्च कर रहे हैं। फ़रमाया : अगर पहले से लोगों को बता दूं कि अपने पास से ख़र्च कर रहा हूं तो कौन आसानी से तैयार होगा कि रास्ते भर मेरे माल से खाए और घरवालों के लिए ज़रूरत का सामान ख़रीदे। इस बहाने मुझे मौक़ा मिल जाता है कि मैं अपना माल उन लोगों पर ख़र्च करने की सआदत पाता हूं जो अल्लाह के घर की ज़ियारत के लिए अपने घरों से निकलते हैं।

खाना हमेशा मेहमान के साथ खाते और हमेशा उनके दस्तरख़ान पर कोई न कोई मेहमान ज़रूर होता। फ़रमाते कि मेहमान के साथ जो खाना खाया जाता है उसका हिसाब नहीं होता। पैसे से भी हर एक की मदद करते। जहां किसी के बारे में मालूम होता कि मक़रूज़ है और क़र्ज़ मांगनेवाला उसको परेशान कर रहा है तो बेचेन हो जाते, और जिस तरह बन पड़ता उसको क़र्ज़ के भारी बोझ से छुटकारा दिलाते।

शाम के सफ़र पर अक्सर जाया करते थे। रास्ते में रिक़्क़ा के मक़ाम पर एक सराए पड़ती थी, हमेशा वहां ठहरते। सराय में एक नौजवान आदमी था, वह जी जान से आपकी ख़िदमत करता और आपसे प्यारे रसूल सल्ल० की हदीसें बड़े शौक़ से सीखता। आप भी बड़ी मुहब्बत से उसको सिखाते और ख़ुश होते।

एक बार ऐसा हुआ कि आप सराय में पहुंचे तो वह नौजवान नज़र नहीं आया। आपको फ़िक्र हुई, पूछा तो मालूम हुआ कि वह गिरफ़्तार हो गया है। आपको बहुत सदमा हुआ। वजह मालूम की तो लोगों ने बताया कि उस पर एक आदमी का क़र्ज़ा था। क़र्ज़ा बहुत ज़्यादा था। क़र्ज़वाला तक़ाज़े करता और उसके पास देने के लिए कुछ था ही नहीं। इसलिए उस आदमी ने उसको पकड़वा दिया। आप तलाश करते-करते उस शख़्स के पास पहुंचे, जिसका

क़र्ज़ा था। उससे तंहाई में फ़रमाया : तुम्हारा कितना क़र्ज़ है? तुम क़र्ज़े की सारी रक़म मुझसे ले लो और उस नौजवान को रिहा करवा दो, और उससे क़सम ले ली कि किसी को यह बात बताए नहीं। वह शख़्स ख़ुशी-ख़ुशी राज़ी हो गया। आपने उसको रक़म दी और उसी वक़्त वहां से रवाना हो गए। जब वह नौजवान छूटकर सराय में आया तो उसे मालूम हुआ कि हज़रत अब्दुल्लाह रह० आए थे और उसे पूछ रहे थे। नौजवान को न मिलने का बहुत अफ़सोस हुआ। तलाश करता-करता कई दिन के सफ़र के बाद हज़रत की ख़िदमत में पहुंचा। हज़रत बहुत ख़ुश हुए और हालात मालूम किए। नौजवान ने अपनी सारी आप बीती सुनाई, और यह भी बताया कि सराय में ख़ुदा का कोई नेक बन्दा आया था उसने चुपके से मेरी तरफ़ से रक़म अदा कर दी और मैं छूट गया। मालूम नहीं कौन था? मेरे दिल से हर वक़्त उसके लिए दुआएं निकलती हैं। हज़रत ने फ़रमाया, ख़ुदा का शुक्र है कि तुमने मुसीबत से नजात पाई।

जब हज़रत का इंतक़ाल हुआ तो उस शख़्स को यह राज़ लोगों ने बताया कि वह रक़म अदा करनेवाले हज़रत अब्दुल्लाह रह० थे।

एक आदमी पर सात सौ दिरहम का क़र्ज़ा था। बेचारा बहुत परेशान था। लोगों ने हज़रत से ज़िक्र किया। आपने उसी वक़्त अपने मैनेजर को रुक़आ लिखा कि उस शख़्स को सात हज़ार दिरहम दे दो। रुक़आ लेकर वह शख़्स मैनेजर के पास पहुंचा और ज़बानी भी मैनेजर को बताया कि मुझ पर सात सौ का क़र्ज़ा है। मैनेजर ने कहा, आप ज़रा ठहरिए, उसमें रक़म कुछ ज़्यादा लिखी गई है। मैं ज़रा मालूम करा लूं। हज़रत को पर्चा लिखकर भेजा कि उस शख़्स को सात सौ की ज़रूरत है और आपने भूले से सात हज़ार लिख दिए हैं। हज़रत ने जवाब में लिखा कि फ़ौरन उस शख़्स को चौदह हज़ार दे दो। मैनेजर ने हज़रत की ख़ैर ख़्वाही में फिर पर्चा लिख भेजा कि आप अगर इस तरह दौलत लुटाते रहे तो कुछ ही दिनों में यह सारा ख़ज़ाना ख़त्म हो जाएगा।

हज़रत को इस बात पर रंज हुआ और लिख भेजा कि दुनिया की दौलत लुटाकर आख़िरत की दौलत समेटने की फ़िक्र में हूँ। क्या तुम्हें प्यारे रसूल सल्ल० का यह क़ौल याद नहीं कि अगर कोई आदमी अपने मुसलमान भाई को किसी ऐसी बात से अचानक ख़ुश कर दे जिसकी उसे उम्मीद न हो तो

अल्लाह तआला उसको बख़्श देगा। बताओ क्या चौदह हज़ार में यह सौदा टोटे का है?

हज़रत ने दूसरी मर्तबा सात हज़ार के बजाए चौदह हज़ार इसलिए लिखे थे कि सात हज़ार की रक़म तो उसे मालूम हो गई थी। अगर उसे सात हज़ार देते तो उसकी उम्मीद तो उसे थी ही। इसलिए आपने चौदह हज़ार का हुक्म दिया कि उम्मीद के ख़िलाफ़ अचानक इतनी बड़ी रक़म देखकर वह इंतिहाई ख़ुश होगा।

दीन की इशाअत

प्यारे सहाबा रज़ि० की ज़िंदगी के हालात जब हम पढ़ते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि उनको बस एक धुन थी कि अल्लाह का दीन घर-घर पहुँच जाए और हर एक ख़ुदा के दीन पर चलने लगे। हज़रत अब्दुल्लाह रह० उनके सच्चे पैरो थे। आपकी ज़िंदगी की कोई घड़ी इस धुन से ख़ाली न थी। घर रहते तो दीन सिखाने में लगे रहते, सफ़र पर जाते तो इसी फ़िक्र पर रहते, दौलत कमाते तो इसी लिए कि अल्लाह का दीन फैलाने में ख़र्च करें।

लोगों को दीन का इल्म हासिल करते देखते तो बहुत ख़ुश होते, हर तरह उनका साथ देते, ढूंढ-ढूंढ कर ऐसे तालिबे इल्मों की मदद करते जो इल्मे दीन का शौक़ रखते हैं लेकिन ग़रीबी की वजह से परेशान होते, या जो लोग दीनी इल्म सिखाने में लगे रहते और रोज़ी के लिए दौड़ धूप का मौक़ा न निकाल पाते। हज़ारों रुपये उनके लिए भेजते और फ़रमाते, रुपये ख़र्च करने का इससे अच्छा मौक़ा और कोई नहीं।

एक बार फ़रमाया, "मैं अपना रुपया उन लोगों पर ख़र्च करता हूं जो दीन का इल्म हासिल करने में ऐसे लग गए हैं कि घर वालों के लिए रोज़ी कमाने का वक़्त नहीं निकाल पाते और अगर रोज़ी कमाने में लगें तो दीन का इल्म ख़त्म हो जाएगा। मैं उनकी मदद इसलिए करता हूं कि उनके ज़रिए दीन का इल्म फैलता है, और नुबूवत ख़त्म हो जाने के बाद नेकी का सबसे बड़ा काम यह है कि दीन का इल्म फैलाया जाए।"

इस काम के लिए शहर जाते, हर क़िस्म के लोगों से मिलते, उनके सुधारने की कोशिश करते और बड़े सलीक़े से उस काम को अंजाम देते।

फ़रमाया करते थे "जब उम्मत के बड़े ज़िम्मेदार लोग बिगड़ जाते हैं तो पूरी उम्मत में बिगाड़ आ जाता है। पांच क़िस्म के लोग ऐसे हैं कि जब उनमें बिगाड़ पैदा हो जाता है तो पूरी सोसायटी बिगड़ जाती है :

1. दीन के उलमा : यह अंबिया के वारिस हैं। अंबिया का लाया हुआ इल्म इनके पास है। अगर यही लोग दुनिया के लालच में फंस जाएं तो फिर आम लोग किससे दीन सीखें और किसको अपने लिए नमूना बनाएं?

2. ताजिर : अगर यही लोग ख़ियानत करने लगें, ईमानदारी छोड़ दें और नाहक़ लोगों की दौलत लूटने पर कमर बांध लें तो फिर लोग किस पर भरोसा करेंगे और किसको अमानतदार समझेंगे?

3. ज़ाहिद : उनकी ज़िंदगियों को देखकर लोग दीन पर अमल करते हैं। अगर यही बिगड़ जाएं तो लोग किसके पीछे चलेंगे?

4. मुजाहिद : जब उनका मक़्सद ग़नीमत का माल जमा करना हो और हुकूमत का ठाठ जमाने के लिए लड़ेंगे तो दीन कैसे फैलेगा और इस्लाम की फ़तह क्योंकर होगी?

5. हाकिम : हाकिमों की मिसाल ऐसी है जैसे भेड़ों का चरवाहा। चरवाहे का काम भेड़ों की देख-भाल और हर ख़तरे से उनकी हिफ़ाज़त करना है। लेकिन अगर चरवाहा ख़ुद भेड़िया बन जाए तो फिर भेड़ों की हिफ़ाज़त करनेवाला कौन होगा?

मतलब यह है कि उम्मत की इस्लाह उसी वक़्त हो सकती है जब बड़े और ज़िम्मेदार लोगों की इस्लाह हो जाए। उनकी ज़िंदगियां सुधर जाएं तो सबकी ज़िंदगी सुधर सकती हैं। और अगर उनका बिगाड़ दूर हो जाए तो पूरी उम्मत की ज़िंदगी में एक अच्छा और पसन्दीदा इंक़लाब आ सकता है, जिसे देखने के लिए आज हर ख़ैर-पसन्द की आंखें तरस रही हैं।

जिहाद का शौक़

कुफ़्र व शिर्क का ज़ोर तोड़ने और इस्लाम फैलाने के लिए कभी-कभी जंग के मैदान में भी उतरना पड़ता है। मुसलमान की सबसे बड़ी तमन्ना यही होती है कि उसकी जान व माल अल्लाह की राह में काम आ जाए। हज़रत

अब्दुल्लाह रह० की सबसे बड़ी तमन्ना यही थी। नेकी के हर काम में आगे आगे रहते। रातें ख़ुदा की याद में गुज़ारते, दिन हदीस पढ़ने-पढ़ाने में गुज़ारते। माल व दौलत अल्लाह की राह में ख़र्च होता और जिहाद का मौक़ा आता तो मैदाने जंग में बहादुरी के जौहर दिखाते।

यह वह ज़माना था कि मुसलमानों और रूमी काफ़िरों में ठनी हुई थी और आए दिन झड़पें होती रहती थीं। हज़रत अब्दुल्लाह रह० उनके मुक़ाबलों में अक्सर शरीक होते। एक बार मुसलमानों और काफ़िरों की फ़ौजें आमने सामने थीं और बड़ा सख़्त मुक़ाबला था। एक काफ़िर अकड़ता हुआ मैदान में उतरा और मुसलमान सिपाहियों को मुक़ाबले के लिए पुकारा। मुसलमानों में से एक मुजाहिद बिफरे हुए शेर की तरह उसपर झपटा, और एक ही वार में उसका काम तमाम कर दिया। फिर एक और काफ़िर इतराता हुआ मैदान में आया। मुजाहिद ने उसे भी एक ही वार में ढेर कर दिया। इसी तरह कई काफ़िर मुक़ाबले पर आए और उसने सबको जहन्नम रसीद किया।

उस बहादुर शेर की यह बहादुरी देखकर मुसलमान बहुत ख़ुश हुए और उसको देखने के लिए आगे बढ़े। ख़ुदा के सिपाही ने बन्दों की तारीफ़ से बेनियाज़ होकर मुंह पर कपड़ा डाल रखा था। कपड़ा हटाया गया तो देखा कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मुबारक रह० हैं।

तिजारत

माल की बेजा मुहब्बत, जमा करने की हवस और उस पर इतराना तो बेशक बहुत बड़ी बुराई है और इस्लामी ज़िंदगी से इसका कोई जोड़ नहीं है। लेकिन अच्छे कामों में ख़र्च करने के लिए माल कमाना एक पसन्दीदा काम है और इस्लाम ने इस पर उभारा है।

प्यारे रसूल सल्ल० ने एक बार हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० से फ़रमाया, "अगर तुम अपने वारिसों को ख़ुशहाल छोड़ जाओ तो यह इससे बेहतर है कि तुम उन्हें ग़रीब छोड़ जाओ और वे तुम्हारे बाद भीख मांगते फिरें।"

हज़रत क़ैस रह० अपने बेटे हज़रत हाकिम रह० से फ़रमाया करते थे, "माल जमा करो। क्योंकि माल से शरीफ़ों की इज़्ज़त होती है और वह कमीन

लोगों से बेपरवाह हो जाते हैं।"

हज़रत सईद इब्ने मुसय्यिब रह० फ़रमाया करते थे कि "ख़ुदा की क़सम वह आदमी किसी काम का नहीं है जो अपनी इज़्ज़त व आबरू बचाने के लिए माल जमा नहीं करता।"

हज़रत अबू क़लाबा रह० फ़रमाया करते थे कि "बाज़ार में जमकर कारोबार करो। तुम दीन पर मज़बूती के साथ जम सकोगे और लोगों से बेनियाज़ होगे।"

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाया करते थे, "अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना हो और मैं उसकी ज़कात अदा करता हूं तो मुझे माल से कोई ख़तरा नहीं।"

बुज़ुर्गों के इन अक़वाल से मालूम होता है कि माल कमाना कोई बुराई नहीं है जिससे घिन की जाए। बुराई तो असल में यह है कि आदमी माल व दौलत की मुहब्बत में दीन से ग़ाफ़िल हो जाए। आख़िरत को भूलकर अय्याशी में पड़ जाए।

हमारे बुज़ुर्गों ने दीन की ऊंची से ऊंची ख़िदमत की है। लेकिन हमेशा अपनी रोज़ी ख़ुद कमाते, कारोबार करते, या और कोई पेशा करते, दूसरों के सहारे पर कभी ज़िंदगी न गुज़ारते।

हज़रत अब्दुल्लाह रह० बहुत बड़े कारोबारी थे। उनकी तिजारत बहुत बड़े पैमाने पर थी। ख़ुरासान से क़ीमती सामान लाते और हिजाज़ में बेचते थे। अल्लाह ने तिजारत में ख़ूब बरकत दी थी। साल में एक लाख तो ग़रीबों और मिस्कीनों को ख़ैरात देते।

तिजारत किसलिए?

एक मर्तबा उनके मशहूर शागिर्द हज़रत फ़ुज़ैल रह० ने उनसे पूछा, "हज़रत! आप लोगों को तो नसीहत करते हैं कि दुनिया से दूर रहो और आख़िरत कमाने की फ़िक्र करो, और ख़ुद क़ीमती-क़ीमती सामानों की तिजारत करते हैं?"

फ़रमाया, "फ़ुज़ैल! तुमने यह भी सोचा कि मैं तिजारत किस लिए

करता हूं। मैं तिजारत सिर्फ़ इसलिए करता हूं कि मुसीबतों से बच सकूं, अपनी इज़्ज़त-आबरू की हिफ़ाज़त कर सकूं, अपने-परायों के जो हुक़ूक़ मुझ पर आते हैं उन्हें अच्छी तरह अदा कर सकूं, और इत्मीनान के साथ अल्लाह की बन्दगी कर सकूँ।"

अनमोल मोती

हज़रत अब्दुल्लाह रह० की बहुत-सी अनमोल बातें किताबों में मिलती हैं। चन्द ये हैं और इस लायक़ हैं कि हम हर वक़्त उन्हें याद रखें :

1. हर काम में अदब व तहज़ीब का ख़्याल रखो। दीन के दो हिस्से अदब व तहज़ीब हैं।

2. मुत्तक़ी आदमी बादशाह से ज़्यादा मुअज़्ज़िज़ होता है। बादशाह ज़बरदस्ती लोगों को अपने पास जमा करता है और मुत्तक़ी आदमी लोगों से भागता है लेकिन लोग उसका पीछा नहीं छोड़ते।

3. हक़ पर जमे रहना सबसे बड़ा जिहाद है।

4. गुरूर व तकब्बुर यह है कि आदमी दूसरों को ज़लील समझे और यह ख़्याल करे कि जो कुछ मेरे पास है वह दूसरों के पास नहीं।

5. वह शख़्स हरगिज़ आलिम नहीं है जिसके दिल में ख़ुदा का ख़ौफ़ न हो और जो दुनिया के लालच में फंसा हुआ हो।

6. दुनिया के माल पर कभी गुरूर न करना चाहिए।

7. ऐसा दोस्त मिलना इंतिहाई मुश्किल है जो सिर्फ़ अल्लाह के लिए मुहब्बत करे।

8. ऐसी चीज़ों से पेट भरो जिसे एक मोमिन का पेट गवारा कर सके।

9. तालिबे इल्म के लिए पांच बातें ज़रूरी हैं :

(1) अच्छी नीयत (2) उस्ताद की बातों को ध्यान से सुनना (3) उस्ताद की बातों पर ग़ौर व फ़िक्र करना (4) उस्ताद की बातों को याद रखना (5) उस्ताद की बातों को अच्छे लोगों में फैलाना।

10. हुस्ने अख़्लाक़ यह है कि आप लोगों से हंसते हुए चेहरे से मिलें और

ख़ुदा के मोहताज बन्दों पर अपना माल ख़र्च करें और अपनी ज़ात से किसी को भी तकलीफ़ न पहुंचने दें।

चन्द शेर :

हज़रत अब्दुल्लाह रह० शायर भी थे। आप अक्सर एक शेर गुनगुनाया करते थे जिसके मानी हैं :

दीन की बातों में तो लोग थोड़े ही को बहुत समझ लेते हैं

लेकिन दुनिया के साज़ो सामान में थोड़े पर राज़ी रहनेवाला कोई नज़र नहीं आता।

जो दुनिया में "कमी" को रो रहे हैं

"ज़रा से दैन" पर ख़ुश हो रहे हैं

(सीन, नवेद)

हज़रत की शान में बहुत-से लोगों ने क़सीदे लिखे। एक क़सीदे के यह दो शेर बहुत मशहूर हैं जिसके मानी हैं:

जब एक रात अब्दुल्लाह मर्व से चले

तो मर्व की सारी रौशनी और रौनक़ जाती रही

जब किसी शहर में नेक आलिमों के तज़्किरे होते हैं तो ऐसा मालूम होता है कि :

वह सब तारे हैं और आप उनमें चांद की तरह चमकते हैं।

एक निराला सूरज ग़ुरूब हुआ तो उसकी रौशनी कुछ और फैल गई

जिहाद के लिए तो हज़रत हर साल ही जाते। 181 हि० में जिहाद से वापस आ रहे थे। मौसिल के क़रीब हैअत नामी बस्ती में पहुंचे तो तबीयत बिगड़ गई। आप समझ गए कि अब आख़िरी वक़्त है। फ़रमाया :

"मुझे फ़र्श से उठाकर ज़मीन पर डाल दो।"

नज़र रह० ने आपको ज़मीन पर डाल तो दिया, लेकिन मेहरबान आक़ा

की यह हालत देखकर बेइख़्तियार रोने लगे। हज़रत ने पूछा, रोते क्यों हो? नज़र रह० ने कहा, "हज़रत! एक वह ज़माना था कि दौलत की रेल-पेल थी, शान व शौकत थी और जाह व जलाल की ज़िंदगी थी। और एक यह वक़्त है कि आप मुसाफ़िरत में हैं। अज़ीज़ व अक़ारिब दूर हैं, ग़रीबी की ज़िंदगी है। बेबसी है, और फिर आप ख़ाक पर पड़े हुए हैं, यह सब देखकर मेरा दिल भर आया और बेइख़्तियार मेरी आंखों से आंसू जारी हो गए।"

हज़रत अब्दुल्लाह ने फ़रमाया : "नज़र! रंज की कोई बात नहीं। मैंने हमेशा ख़ुदा से यही दुआ की कि ख़ुदाया! मेरी ज़िंदगी मालदारों की-सी हो कि किसी के सामने हाथ न फैलाऊं और तेरी राह में खुले दिल से दौलत लुटाऊं और मेरी मौत ग़रीबों और ख़ाकसारों की-सी हो कि तेरी ख़िदमत में ग़रीब और बेबस बनकर पहुंचूं कि तुझे रहम आए। ख़ुदा का शुक्र है कि मेरी दुआ क़बूल हुई।"

रमज़ान का मुबारक महीना था कि इब्ने मुबारक रह० ईमान व अमल का तोहफ़ा लिए अपने रब के हुज़ूर पहुंचे और वह सूरज हमेशा के लिए ग़ुरूब हो गया जिसने 63 साल तक मिस्र, शाम, कूफ़ा, बसरा, यमन और हिजाज़ को अपनी इल्मी रौशनी से चगमगाया। मगर यह एक निराला ही सूरज था। ग़ुरूब हुआ तो उसकी रौशनी कुछ और फैल गई। आज तक सारी दुनिया उसकी रौशनी से जगमगा रही है। और जब तक ख़ुदा चाहेगा जगमगाती रहेगी। अल्लाह की हज़ार-हज़ार नेमतें उन पर। ख़ुदा तौफ़ीक़ दे कि हम भी उनकी फैलाई हुई रौशनी में चलें।

एक अंग्रेज़ जज ने फ़ैसला किया कि मुसलमान हार गए इस्लाम जीत गया

कांधला में एक मर्तबा एक ज़मीन का टुकड़ा था, उस पर झगड़ा चल पड़ा। मुसलमान कहते थे कि यह हमारा है, हिन्दू कहते थे कि यह हमारा है, चुनांचे यह मुक़द्दमा बन गया। अंग्रेज़ की अदालत में पहुंचा। जब मुक़द्दमा आगे बढ़ा तो मुसलमान ने एलान कर दिया कि यह ज़मीन का टुकड़ा अगर मुझे मिला तो मैं मस्जिद बनाऊंगा, हिन्दुओं ने जब सुना तो उन्होंने ज़िद में कह दिया कि यह टुकड़ा अगर हमें मिला तो हम इस पर मन्दिर बनाएंगे। अब

बात तो दो इंसानों की इंफ़िरादी थी, लेकिन इसमें रंग इज्तिमाई बन गया, यहां तक कि इधर मुसलमान जमा हो गए और उधर हिन्दू इकट्ठा हो गए और मुक़द्दमा एक ख़ास नौइयत का बन गया। अब सारे शहर में क़त्ल व ग़ारत हो सकती थी, ख़ून ख़राबा हो सकता था, तो लोग भी बड़े हैरान थे कि नतीजा क्या निकलेगा? अंग्रेज़ जज था वह भी परेशान था कि इसमें कोई सुलह व सफ़ाई का पहलू निकाले, ऐसा न हो कि यह आग अगर जल गई तो इसका बुझाना मुश्किल हो जाए। जज ने मुक़द्दमा सुनने के बजाए एक तज्वीज़ पेश की कि क्या कोई ऐसी सूरत है कि आप लोग आपस में बातचीत के ज़रिए मसले का हल निकाल लें? तो हिन्दुओं ने एक तज्वीज़ पेश की कि हम आपको एक मुसलमान का नाम तंहाई में बताएंगे, आप अगली पेशी पर उनको बुला लीजिए और उनसे पूछ लीजिए। अगर वह कहें कि यह मुसलमानों की ज़मीन है तो उनको दे दीजिए और अगर वह कहें कि यह मुसलमानों की ज़मीन नहीं, हिन्दुओं की है तो हमें दे दीजिए। जब जज ने दोनों फ़रीक़ों से पूछा तो दोनों फ़रीक़ उस पर राज़ी हो गए। मुसलमानों के दिल में यह थी कि मुसलमान हुआ तो वह मस्जिद बनाने के लिए बात करेगा। चुनांचे अंग्रेज़ ने फ़ैसला दे दिया और महीने या चन्द दिनों की तारीख़ दे दी कि भई उस दिन आना और मैं उस बुड्ढे को भी बुलवा लूंगा। अब जब मुसलमान बाहर निकले तो बड़ी ख़ुशियां मना रहे थे, सब कूद रहे थे, नारे लगा रहे थे। हिन्दुओं ने अपने लोगों से पूछा कि तुमने क्या कहा? उन्होंने कहा कि हमने एक मुसलमान आलिम को हकम बना लिया है कि वह अगली पेशी पर जो कहेगा उसी पर फ़ैसला होगा, अब हिन्दुओं के दिल मुरझा गए और मुसलमान ख़ुशियों से फूले नहीं समाते थे। लेकिन इंतिज़ार में थे कि अगली पेशी में क्या होता है। चुनांचे हिन्दुओं ने मुफ़्ती इलाही बख़्श कांधलवी रह० का नाम बताया जो शाह अब्दुल अज़ीज़ रह० के शागिर्दों में से थे और अल्लाह ने उनको सच्ची-सच्ची ज़िंदगी अता फ़रमाई थी। मुसलमान ने देखा कि मुफ़्ती साहब तशरीफ़ लाए हैं तो वे सोचने लगे कि मुफ़्ती साहब तो मस्जिद की ज़रूर बात करेंगे। चुनांचे जब अंग्रेज़ ने पूछा कि बताइए मुफ़्ती साहब यह ज़मीन का टुकड़ा किसकी मिल्कियत है? उनको चूंकि हक़ीक़ते हाल का पता था, उन्होंने जवाब दिया कि यह ज़मीन का टुकड़ा तो हिन्दुओं का है। अब जब उन्होंने यह कहा कि यह हिन्दू का है तो अंग्रेज़ ने अगली बात पूछी कि

क्या अब हिन्दू लोग इसके ऊपर मन्दिर तामीर कर सकते हैं? मुफ़्ती साहब ने फ़रमाया, जब मिल्कियत उनकी है तो वे जो चाहें करें; चाहे घर बनाएं या मन्दिर बनाएं, यह उनका इख़्तियार है। चुनांचे फ़ैसला दे दिया गया कि यह ज़मीन हिन्दुओं की है, मगर अंग्रेज़ ने फ़ैसले में एक अजीब बात लिखी, फ़ैसला करने के बाद लिखा कि "आज इस मुक़द्दमे में मुसलमान हार गए मगर इस्लाम जीत गया।" जब अंग्रेज़ ने यह बात कही तो उस वक़्त हिन्दुओं ने कहा कि "आपने तो फ़ैसला दे दिया। हमारी बात भी सुन लीजिए, हम इसी वक़्त कलिमा पढ़कर मुसलमान होते हैं और आज यह एलान करते हैं कि अब हम अपने हाथों से यहां मस्जिद बनाएंगे।" तो अक़्ल कह रही थी कि झूठ बोलो कि मस्जिद बनेगी मगर हज़रत मुफ़्ती साहब ने सच बोला और सच का बोल बाला करके सच्चे परवरदिगार ने उस जगह मस्जिद बनवा कर दिखा दी। कई मर्तबा नज़र आता है कि झूठ बोलना आसान रास्ता है; लेकिन झूठ बोलना आसान रास्ता नहीं है। यह कांटों भरा रास्ता हुआ करता है, झूठे से अल्लाह तआला नफ़रत करते हैं, इंसान नफ़रत करते हैं, इंसान एतिमाद खो बैठता है। एक झूठ को बोलने के लिए कई झूठ बोलने पड़ते हैं, लिहाज़ा झूठी ज़िंदगी गुज़ारने के बजाए सच्ची ज़िंदगी को आप इख़्तियार कीजिए, उस पर परवरदिगार आपकी मदद फ़रमाएगा।

अपनी बीवी का दिल प्यार से जीतिए, तलवार से नहीं

जो ख़ाविन्द अपनी बीवी का दिल प्यार से नहीं जीत सका, वह अपनी बीवी का दिल तलवार से हरगिज़ नहीं जीत सकता। दूसरे अल्फ़ाज़ में जो औरत अपने ख़ाविन्द को प्यार से अपना न बना सकी वह तलवार से भी अपने ख़ाविन्द को अपना नहीं बना सकेगी। कई मर्तबा औरतें सोचती हैं कि मैं अपने भाई को कहूंगी। वह मेरे ख़ाविन्द को डांटेगा, मैं अपने अब्बू को बताऊंगी तो वह मेरे ख़ाविन्द को सीधा कर देंगे। ऐसी औरतें इंतिहाई बेवक़ूफ़ होती हैं बल्कि परले दरजे की बेवक़ूफ़ होती हैं। यह कैसे हो सकता है कि आपके भाई और आपके बाप डांटेंगे और आपका ख़ाविन्द ठीक हो जाएगा। यह तीसरे बन्दे के दर्मियान में आने से हमेशा फ़ासले बढ़ जाते हैं। जब आपने अपने और ख़ाविन्द के मामले में अपने मां-बाप को डाल दिया तो आपने तो

तीसरे बन्दे को दर्मियान में डाल कर ख़ुद फ़ैसला कर लिया जब आप ख़ुद अपने और अपने मियां के दर्मियान फ़ासला कर चुके तो अब यह क़ुर्ब कैसे होगा? इसलिए अपने घर की बातें अपने घर में समेटी जाती हैं, लिहाज़ा याद रखिए :

अपना घोंसला अपना, कच्चा हो या पक्का

ख़ाविन्द के घर में अगर आप फ़ाक़ा से भी वक़्त गुज़ारेंगी तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहाँ दर्जे और रुबते पाएंगी। अपने वालिद के घर की आसानियों और नाज़ व नेमत को याद न करना। हमेशा ऐसा नहीं होता कि बेटियां मां-बाप ही के घर में रहती रहें, बिलआख़िरी उनको अपना घर बसाना होता ही है। अल्लाह की तरफ़ से जो ज़िंदगी की तर्तीब है उसी को अपनाना होता है। इसलिए अगर ख़ाविन्द के घर में रिज़्क़ की तंगी है या ख़ाविन्द की आदतों में से कोई आदत ख़राब है तो सब्र व तहम्मुल के साथ उसकी इस्लाह के बारे में फ़िक्रमंद रहें, सोच-समझ कर बातें करें, ख़िदमत के ज़रिए ख़ाविन्द का दिल जीत लें, तब आप जो भी कहेंगी ख़ाविन्द मान लेगा।

घर में आफ़ियत और सलामती का मुजर्रब नुस्ख़ा

एक अमल की इजाज़त सब मस्तूरात को दी जाती है, वह पढ़ना शुरू कर दें। जितनी औरतें शादीशुदा हैं, वे तो ज़रूर ही पढ़ें, लेकिन जो बड़ी उम्र की बच्चियां हैं, समझदार हैं, वे भी पढ़ें। जब अल्लाह तआला अपने वक़्त पर उनके घर को आबाद करेंगे तो इंशा-अल्लाह उनको ख़ुशियां नसीब होंगी।

अमल यह है कि आप जब भी कोई नमाज़ पढ़ें, फ़र्ज़ हो, वाजिब हो, नफ़्ल हो, उसकी आख़िरी अत्तहिय्यात में (यानी दो रकअत की तो एक ही अत्तहिय्यात होती है लेकिन चार रकअत में तो दो मर्तबा अत्तहिय्यात में बैठते हैं) तो आख़िरी अत्तहिय्यात जिसमें आपको सलाम फेरना होता है उसमें जब आप "रब्बना आतिना" आख़िर तक या "अल्लाहुम-म इन्नही ज़लमतु नफ़्सी" आख़िर तक या कोई भी दुआ पढ़ती हैं और सलाम फेरने लगती हैं उस वक़्त सलाम फेरने से पहले आप यह दुआ भी पढ़ा करें : (क़ुरआन, 31.74)

इस दुआ के पढ़ने से अल्लाह तआला आपके घर के सारे अफ़राद को आपकी आंखों की ठंडक बना देंगे, अल्लाह तआला बरकतें अता करे और घरों में सुख व सुकून की ज़िंदगी नसीब हो।

ज़बान की लग़्ज़िश पांव की लग़्ज़िश से भी ज़्यादा ख़तरनाक होती है

ख़ामोश रहना तदब्बुर की अलामत होती है, अक़्लमंदी की अलामत होती है और इंसान के समझदार होने की अलामत होती है, जबकि हर वक़्त टर-टर करते रहना यह इंसान की बेवक़ूफ़ी की अलामत होती है। याद रखिएगा कि "ज़बान की लग़्ज़िश पांव की लग़्ज़िश से भी ज़्यादा ख़तरनाक होती है।" पांव फिसल गया तो बन्दा फिर उठ सकता है लेकिन अगर ज़बान फिसल गई तो वह लफ़्ज़ फिर वापस नहीं आ सकता, इसलिए जिस बन्दे की ज़बान बेक़ाबू हो तो उस बन्दे की मौत का फ़ैसला वही करती है—

कह रहा है शोरे दरिया से समुन्द्र का सुकूत
जिसका जितना ज़र्फ़ है उतना ही वह ख़मोश है

नेक बीवियां अपने ख़ाविन्दों से नेकी का काम करवाया करती हैं

एक ख़ातून गुज़री हैं जिनको हातिम ताई की बीवी कहा जाता था। नेक, दीनदार और मालदार ख़ाविन्द की बीवी थीं। उनका घर जिस बस्ती में था उसके क़रीब से एक आम सड़क गुज़र रही थी। देहातों के लोग अपनी बस्तियों से चलकर उस सड़क तक आते और बसों के ज़रिए फिर शहरों में जाते। कई मर्तबा ऐसा भी होता कि वह जब पहुंचते तो बस का आख़िरी वक़्त ख़त्म हो चुका होता, रात गहरी हो चुकी होती। अब उन मुसाफ़िरों को बस न मिलने की वजह से इंतिज़ार में बैठना पड़ता और बैठने के लिए कोई ख़ास जगह भी बनी हुई नहीं थी। उस नेक औरत ने जिसका शौहर ख़ुशहाल था अपने ख़ाविन्द को यह तज्वीज़ पेश की कि क्यों न हम मुसाफ़िरों के लिए एक छोटा-सा मुसाफ़िरख़ाना बना दें ताकि वक़्त बे-वक़्त लोग अगर आएं और उनको सवारी न मिले तो वे लोग एक कोने में बैठकर वक़्त गुज़ार लें। ख़ाविन्द ने मुसाफ़िर-ख़ाना बनवा दिया। लोगों के लिए बड़ी आसानी हो गई, जब भी लोग आते तो उस कमरे में बैठकर थोड़ी देर इंतिज़ार कर लेते। फिर उस नेक औरत को ख़्याल आया कि क्यों न उन मुसाफ़िरों के लिए चाय-पानी का

थोड़ा-सा निज़ाम ही हो जाए, चुनांचे उसको जो जेब ख़र्च मिलता था उसने उसमें से मुसाफ़िरों के लिए चाय-पानी का नज़्म कर दिया। अब मुसाफ़िर और ख़ुश हो गए और उस औरत को और ज़्यादा दुआएं देने लगे। वक़्त के साथ-साथ लोगों में यह बात बहुत पसन्द की जाने लगी कि अल्लाह की नेक बन्दी ने लोगों की तकलीफ़ को दूर कर दिया, यहां तक कि उसको और चाहत हुई। उसने अपने ख़ाविन्द से कहा कि अल्लाह ने हमें बहुत कुछ दिया हुआ है, हम अगर खाने के वक़्त में उन मुसाफ़िरों को खाना भी खिला दिया करें तो उसमें कौन-सी बड़ी बात है, अल्लाह के दिए हुए में से हम ख़र्च करेंगे। चुनांचे ख़ाविन्द मान गया। नेक बीवियां अपने ख़ाविन्दों से नेकी के काम करवाया करती हैं। यह नहीं होता कि कोई तो ताज महल बनवाए और कोई गुलशन आरा का बाग़ बनवाए। यह तो बेवक़ूफ़ी की बातें हैं कि दुनिया की चीज़ें बनवा लें, यह क्या यादगार हुई। यादगार तो वह थी जो ज़ुबैदा ख़ातून ने छोड़ी कि जिनकी नहर से लाखों इंसानों ने पानी पिया और अपने नामाए आमाल में उसका अज्र लिखा गया। तो नेक बीवियां अपने ख़ाविन्दो से हमेशा नेक कामों में ख़र्च करवाती हैं। चुनांचे शौहर ने मुसाफ़िरों के लिए खाने का इंतिज़ाम भी कर दिया। लिहाज़ा जब मुसाफ़िरों को खाना भी मिलने लगा तो बहुत-से मुसाफ़िर रात में वहां ठहर जाते, और अगले दिन बस पकड़कर अपनी मंज़िल की तरफ़ रवाना हो जाते यहां तक कि वहां पर सौ पचास मुसाफ़िर रहने लग गए। खाना पकता लोग खाते और उसके लिए दुआएं करते। अब कुछ लोग ज़रूरत से ज़्यादा ख़ैरख़्वाह भी होते हैं, जो ख़ैरख़्वाही के रंग में बदख़्वाही कर रहे होते हैं, दोस्ती के रंग में दुश्मनी कर रहे होते हैं। चुनांचे ऐसे आदमियों में से एक-दो ने उसके ख़ाविन्द से बात की कि तुम्हारी बीवी तो फ़ुज़ूल ख़र्च करती है, सौ पचास बन्दों का खाना रोज़ पक रहा है, यह फ़ारिग़ क़िस्म के लोग, निखट्टू और नालायक़ क़िस्म के लोग आकर यहां पड़े रहते हैं, खाते रहते हैं। तुम्हें अपने माल का बिल्कुल एहसास नहीं, यह तो तुम्हें डुबोकर रख देगी। उन्होंने ऐसी बातें कहीं कि ख़ाविन्द ने कहा कि अच्छा हम उनको चाय-पानी तो देंगे अलबत्ता खाना देना बन्द कर देते हैं। चुनांचे खाना बन्द कर दिया गया। जब औरत को पता चला तो उस औरत के दिल पर तो बहुत सदमा गुज़रा, मगर औरत समझदार थी। वह जानती थी कि मौक़े पर कही हुई बात सोने की डलियों की मानिन्द होती है, इसलिए मुझे

अपने ख़ाविन्द से उलझना नहीं चाहिए, मौक़े पर बात करनी है ताकि में अपने ख़ाविन्द से बात कहूं और मेरे ख़ाविन्द को बात समझ में आ जाए। चुनांचे दो-चार दिन वह ख़ामोश रही। एक दिन वह ख़ामोश बैठी थी। ख़ाविन्द ने पूछा कि क्या मामला है? ख़ामोश क्यों बैठी हो? कहने लगी कि बहुत दिन हो गए घर में बैठे हुए सोचती हूं कि हम ज़रा अपनी ज़मीनों पर चलें, जहां कुंआ है, ट्यूबवेल है, बाग़ है। कहने लगा, बहुत अच्छा! मैं तुम्हें ले चलता हूं। चुनांचे ख़ाविन्द अपनी बीवी को लेकर अपनी ज़मीनों पर आ गया जहां बाग़ था, फल फूल थे, वहां ट्यूबवेल लगा हुआ था। चुनांचे वह औरत पहले तो थोड़ी देर फूलों में, बाग़ में, घूमती रही और फूल तोड़ती रही फिर आख़िर में आकर वह कुंए के क़रीब बैठ गई और कुंए के अंदर देखना शुरू कर दिया। ख़ाविन्द समझा कि वैसे ही कुंए की आवाज़ सुन रही है पानी निकलता हुआ देख रही है। काफ़ी देर जब हो गई तो ख़ाविन्द ने कहा कि नेकबख़्त चलो घर चलते हैं। कहने लगी कि हां बस अभी चलते हैं और फिर बैठी रही। तीसरी मर्तबा उसने फिर कहा कि हमें देर हो रही है मुझे बहुत-से काम समेटने हैं चलो घर चलते हैं। कहने लगी कि जी हां चलते हैं और कुंए में ही देखती रही, उस पर ख़ाविन्द क़रीब आया और कहा कि क्या बात है? तुम कुंए में क्या देख रही हो? तब उस औरत ने कहा कि मैं देख रही हूं कि जितने डोल कुंए में जा रहे हैं सबके सब कुंए से भरकर वापस आ रहे हैं लेकिन पानी जैसा था वैसा ही है, ख़त्म नहीं हो रहा। इस पर ख़ाविन्द मुस्कुराया और कहने लगा कि अल्लाह की बन्दी भला कुंए का पानी भी कभी कम हुआ है यह तो सारा दिन और सारी रात भी अगर निकलता रहे और डोल भर-भरकर आते रहें तब भी कम नहीं होगा। अल्लाह तआला नीचे से और भेजते रहते हैं। जब उस मर्द ने यह बात कही तब वह समझदार ख़ातून कहने लगी अच्छा यह इसी तरह डोल भर-भरकर आते रहते हैं और पानी वैसा ही रहता है, नीचे से और आता रहता है? ख़ाविन्द ने कहा कि तुम्हें नहीं पता! बीवी ने कहा कि मेरे दिल में एक बात आ रही है कि अल्लाह ने नेकियों का एक कुंआ हमारे यहां भी जारी किया था, मुसाफ़िरख़ाना की शक्ल में। लोग आते थे और डोल भर-भरकर ले जाते थे तो क्या आपको ख़तरा हो गया था कि उसका पानी ख़त्म हो जाएगा। अल्लाह तआला और नहीं भेजेगा? अब जब उसने मौक़े पर यह बात कही तो ख़ाविन्द के दिल पर जाकर लगी। कहने लगा कि वाक़ई

तुमने मुझे क़ायल कर लिया। चुनांचे शौहर वापस आया और उसने दोबारा मुसाफ़िरख़ाने में खाना शुरू करवा दिया और जब तक यह मियां-बीवी ज़िंदा रहे मुसाफ़िरख़ाना के मुसाफ़िरों को खाना खिलाते रहे। तो यहां से यह मालूम हुआ कि नेक बीवियां फ़ौरन तुर्की-ब-तुर्की जवाब नहीं दिया करतीं बल्कि बात को सुनकर ख़ामोश रहती हैं, सोचती रहती हैं, फिर सोच कर बात करती हैं, अंजाम को सामने रखकर बात करती हैं, मौक़े पर बात करती हैं और कई मर्तबा यह देखा गया कि मर्द अगर ग़ुस्से में कोई बात कर भी जाए तो दूसरे मौक़े पर वह ख़ुद माज़रत कर लेगा और कहेगा कि मुझसे ग़लती हुई। लिहाज़ा अगर एक मौक़े पर आपने कोई बात कही, उस पर मर्द ने कहा कि मैं हरगिज़ नहीं करूंगा, आप ख़ामोश हो जाइए, दूसरे मौक़े पर वह ख़ुशी से बात मान लेगा। यह ग़लती हरगिज़ न करें कि हर बात का जवाब देना अपने ऊपर लाज़िम कर लें। इस ग़लती की वजह से बात कभी छोटी होती है, मगर बात का बतंगड़ बन जाता है और तफ़र्रुक़ा पैदा हो जाता है और मियां-बीवी के अंदर जुदाइयां वाक़ेअ हो जाती हैं। इसलिए अक़्लमंद औरत "पहले तौलेगी और फिर बोलेगी", इसलिए कि उसे पता है अगर मैं मौक़े पर बात कहूंगी तो इस बात का नतीजा अच्छा निकलेगा।

बीवी अच्छी हो या बुरी फ़ायदा ही फ़ायदा है

सवाल : मुहतरमुल मक़ाम अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम, गुज़ारिश है कि मैं नौजवान हूं। शादी का तक़ाज़ा होने के बावजूद दिल गवारा नहीं करता कि शादी करूं। पता नहीं बद-अख़्लाक़ बीवी या ख़ुश-अख़्लाक़ बीवी से पाला पड़ता है। तसल्लीबख़्श जवाब मरहमत फ़रमाइए, ऐन नवाज़िश होगी। फ़क़त वस्सलाम

जवाब : आप बहरसूरत शादी कर लीजिए। एक नौजवान शादी से कतरा रहा था। सुक़रात ने उसे नसीहत करते हुए कहा, "तुम हर हाल में शादी कर लो। अगर तुम्हारी बीवी नेक रही तो ख़ुश व ख़ुर्रम रहोगे और अगर तुम्हारे नसीब में बद-अख़्लाक़ बीवी लिखी होगी तब भी तुम्हारे अंदर हिक्मत और दानाई आ जाएगी और ये दोनों चीज़ें इंसान के लिए सूदमंद हैं।"

मल्लाह बोला मैंने तो अपनी आधी उम्र खोई मगर तुमने तो अपनी पूरी उम्र डुबोई

एक बार चन्द तलबा तफ़रीह के लिए एक कश्ती पर सवार हुए। तबीयत मौज पर थी, वक़्त सुहाना था। हवा निशात-अंगेज़ और कैफ़-आवर थी और काम कुछ न था। यह नौ उम्र तलबा ख़ामोश कैसे बैठ सकते थे। जाहिल मल्लाह दिलचस्पी का अच्छा ज़रिया और फ़िक़रेबाज़ी, मज़ाक़ व तफ़रीह तबा के लिए बेहद मौज़ूं था। चुनांचे एक तेज़ तर्रार साहबज़ादे ने उससे मुख़ातिब होकर कहा :

"चचा मियां! आपने कौन-से उलूम पढ़े हैं।"

मल्लाह ने जवाब दिया, "मियां मैं कुछ पढ़ा-लिखा नहीं हूँ।"

साहबज़ादे ने ठंडी सांस भरकर कहा, "अरे आपने साइंस नहीं पढ़ी?"

मल्लाह ने कहा, "मैंने तो उसका नाम भी नहीं सुना।"

दूसरे साहबज़ादे बोले, "ज्योमेट्री और अलजेबरा तो आप ज़रूर जानते होंगे?"

अब तीसरे साहबज़ादे ने शोशा छोड़ा, "मगर आपने जोग़राफ़िया और हिस्ट्री तो पढ़ी ही होगी?" मल्लाह ने जवाब दिया, "सरकार यह शहर के नाम हैं या आदमी के?" मल्लाह के इस जवाब पर लड़के अपने हंसी न ज़ब्त कर सके और उन्होंने क़हक़हा लगाया। फिर उन्होंने पूछा, "चचा मियां तुम्हारी उम्र क्या होगी?" मल्लाह ने बताया "यही कोई चालीस साल।" लड़कों ने कहा "आपने अपनी आधी उम्र बर्बाद की और कुछ पढ़ा-लिखा नहीं।"

मल्लाह बेचारा ख़फ़ीफ़ होकर रह गया और चुप साध ली। क़ुदरत का तमाशा देखिए कि कश्ती कुछ ही दूर गई थी कि दरिया में तूफ़ान आ गया। मौजें मुंह फैलाए हुए बढ़ रही थीं और कश्ती हिचकोले ले रही थी। मालूम होता था कि अब डूबी तब डूबी। दरिया के सफ़र का लड़कों को पहला तजुर्बा था। उनके औसान ख़ता हो गए, चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं, अब जाहिल मल्लाह की बारी आई, उसने बड़ी संजीदगी से मुंह बनाकर पूछा, "भय्या तुमने कौन-कौन-से इल्म पढ़े हैं?" लड़के उस भोले-भाले मल्लाह का मक़्सद न समझ

सके और कॉलिज या मदरसे में पढ़े हुए उलूम की लम्बी फ़हरिस्त गिनवानी शुरू कर दी, और जब वे ये भारी भरकम मरऊबकुन नाम गिना चुके तो उसने मुस्कुराते हुए पूछा, "ठीक है, यह सब तो पढ़ा लेकिन क्या तैराकी भी सीखी है? अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता कश्ती उलट जाए तो किनारे कैसे पहुंच सकोगे?"

लड़कों में कोई भी तैरना नहीं जानता था। उन्होंने बहुत अफ़सोस के साथ जवाब दिया, "चचा जान! यही एक इल्म हमसे रह गया है, हम इसे नहीं सीख सके।"

लड़कों का जवाब सुनकर मल्लाह ज़ोर से हंसा और कहा, "मियां मैंने तो अपनी आधी उम्र खोई मगर तुमने तो आज पूरी उम्र डुबोई, इसलिए कि इस तूफ़ान में तुम्हारा पढ़ा-लिखा होना काम न आएगा, आज तैराकी तुम्हारी जान बचा सकती है और वह तुम जानते ही नहीं।"

आज भी दुनिया के बड़े-बड़े तरक़्क़ीयाफ़्ता मुल्कों में जो बज़ाहिर दुनिया की क़िस्मत के मालिक बने हुए हैं, सूरतेहाल यही है कि ज़िंदगी का सफ़ीना गरदाब में है, दरिया की मौजें ख़ूंख़ार नहंगों की तरह मुंह फैलाए हुए बढ़ रही हैं। साहिल दूर है और ख़तरा क़रीब लेकिन कश्ती के मुअज़्ज़िज़ और लायक़ सवारों को सब कुछ आता है मगर मल्लाही का फ़न और तैराकी का इल्म नहीं आता दूसरे अल्फ़ाज़ में उन्होंने सब कुछ सीखा है, लेकिन भले, शरीफ़, ख़ुदाशनासी और इंसानियत-दोस्त इंसानों की तरह ज़िंदगी गुज़ारने का फ़न नहीं सीखा। इक़बाल ने अपने अशआर में इस नाज़ुक सूरते हाल और इस अजीब व ग़रीब तज़ाद की तसवीर खींची है, जिसका इस बीसवीं सदी का मज़हब और तालीमयाफ़्ता फ़र्द बल्कि मुआशिरा का मुआशिरा शिकार है :

ढूंढ़ने वाला सितारों की गुज़रगाहों का
अपने अफ़कार की दुनिया में सफ़र कर न सका
अपनी हिक्मत के ख़मो पेच में उलझा ऐसा
आज तक फ़ैसलए नफ़ा व ज़रर कर न सका
जिसने सूरज की शुआओं को गिरफ़्तार किया
ज़िंदगी की शबे तारीक सहर कर न सका

तोहफ़ए कश्मीर, पेज 101

दुनिया की अजीब मिसाल

इमाम ग़ज़ाली रह० ने यह बात बड़े अच्छे अंदाज़ में समझाई। वह फ़रमाते हैं कि एक आदमी जा रहा था। एक शेर उसके पीछे भागा। उसके क़रीब कोई भी दरख़्त नहीं था कि जिस पर वह चढ़ जाता। उसे एक कुआँ नज़र आया, उसने सोचा कि मैं कुए में छलांग लगा देता हूं, जब शेर चला जाएगा तो मैं भी कुए से बाहर निकल आऊंगा। जब उसने नीचे छलांग लगाने के लिए देखा तो कुए में पानी के ऊपर एक काला नाग तैरता हुआ नज़र आया। अब पीछे शेर था और नीचे कुंऐ में काला नाग था। वह और ज़्यादा परेशान होकर सोचने लगा कि अब मैं क्या करूं। उसे कुंऐ की दीवार पर कुछ घास उगी हुई नज़र आई। उसने सोचा कि मैं इस घास को पकड़ कर लटक जाता हूं, न ऊपर रहूं कि शेर खा जाए और न नीचे जाऊं कि सांप डसे, मैं दर्मियान में लटक जाता हूं। जब शेर चला जाएगा तो मैं भी बाहर निकल आऊंगा। थोड़ी देर के बाद उसने देखा कि एक काला और एक सफ़ेद चूहा दोनों उसी घास को काट रहे हैं जिस घास को पकड़ कर वह लटक रहा था। अब उसे और ज़्यादा परेशानी हुई। इस परेशानी के आलम में जब उसने इधर-उधर देख तो उसे क़रीब ही शहद की मक्खियों का एक छत्ता नज़र आया। उस पर मक्खियां तो नहीं थीं मगर वह शहद से भरा हुआ था। यह छत्ता देखकर उसे ख़्याल आया कि ज़रा देखूं तो सही इसमें कैसा शहद है। चुनांचे उसने एक हाथ से घास को पकड़ा और दूसरे हाथ की उंगली पर जब शहद लगा कर चखा तो उसे बड़ा मज़ा आया। अब वह उसे चाटने में मशग़ूल हो गया। न उसे शेर याद रहा, न नाग याद रहा और न ही उसे चूहे याद रहे, अब आप सोचें कि उसका अंजाम क्या होगा।

यह मिसाल देने के बाद इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं :

"ऐ दोस्त! तेरी मिसाल इसी इंसान की-सी है।

मलकुल मौत शेर की मानिन्द तेरे पीछे लगा हुआ है,

क़ब्र का अज़ाब उस सांप की सूरत में तेरे इंतिज़ार में है,

काला और सफ़ेद चूहा, यह तेरी ज़िंदगी के दिन और रात हैं,

घास तेरी ज़िंदगी है जिसे चूहे काट रहे हैं,

और यह शहद का छत्ता दुनिया की लज़्ज़तें हैं जिनसे लुत्फ़अंदोज़ होने में तू लगा हुआ है। तुझे कुछ याद नहीं। सोच कि तेरा अंजाम क्या होगा।"

वाक़ई बात यही है कि इंसान दुनिया की लज़्ज़तों में फंसकर अपने रब को नाराज़ कर लेता है। कोई खाने, पीने की लज़्ज़तों में फंसा हुआ है और कोई अच्छे ओहदे और शोहरत की लज़्ज़त में फंसा हुआ है, यही लज़्ज़तें इंसान को आख़िरत से ग़ाफ़िल कर देती हैं। इसलिए जहां तर्क दुनिया का लफ़्ज़ आएगा, उससे मुराद तर्के दुनियवी लज़्ज़तें होंगी।

सांप के बच्चे वफ़ादार नहीं हो सकते

बुरे दोस्त के साथ दोस्ती न करें और अपने नसब को धब्बा न लगाएं, कड़वे कुएं कभी मीठे नहीं हो सकते चाहे तुम उसमें लाखों मन गुड़ डाल दो, कव्वे के बच्चे कभी हंस नहीं बना करते चाहे तुम उनको मोतियों की ग़िज़ा खिलाते रहो, सांप के बच्चे वफ़ादार नहीं हो सकते चाहे चुल्लू में दूध लेकर उनको क्यों न पिला दें। हंज़ल कभी तरबूज़ नहीं बनता है चाहे उस फल को तुम मक्का ही क्यों न लेकर चले जाओ।

बीवी का प्यार वाला नाम रखना सुन्नत है... मगर ऐसा-वैसा नाम न रखना

नबी करीम सल्ल० अपने अहले ख़ाना के साथ बहुत ही मुहब्बत के साथ पेश आते थे। चुनांचे आप सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया : "मैं तुममें से अपने अहले ख़ाना के लिए सबसे बेहतर हूं।"

एक मर्तबा आप सल्ल० अपने घर तशरीफ़ लाए। उस वक़्त सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० प्याले में पानी पी रही थीं। आप सल्ल० ने दूर से फ़रमाया, "हुमैरा! मेरे लिए भी कुछ पानी बचा देना।" उनका नाम तो आइशा था लेकिन नबी करीम सल्ल० उनको मुहब्बत की वजह से हुमैरा फ़रमाते थे। इस हदीस मुबारका से पता चलता है कि हर ख़ाविन्द को चाहिए कि वह अपनी बीवी का मुहब्बत में कोई ऐसा नाम रखे जो इसे भी पसन्द हो और उसे भी पसन्द हो। ऐसा नाम मुहब्बत की अलामत होता है और जब उस नाम से बन्दा अपनी बीवी को पुकारता है तो बीवी क़ुर्ब महसूस करती है, यह सुन्नत है।

नबी करीम सल्ल० ने जब फ़रमाया कि हुमैरा! मेरे लिए भी कुछ पानी बचा देना। तो सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० ने कुछ पानी पिया और कुछ पानी बचा दिया। नबी सल्ल० उनके पास तशरीफ़ ले गए और उन्होंने प्याला हाज़िरे ख़िदमत कर दिया। हदीस पाक में आया है कि जब नबी सल्ल० ने वह प्याला हाथ में लिया और आप सल्ल० पानी पीने लगे तो आप रुक गए और सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से पूछा, "हुमैरा! तूने कहां से लब लगाकर पानी पिया था? किस जगह से मुंह लगाकर पानी पिया था?" उन्होंने निशानदेही की कि मैंने यहां से पानी पिया था। हदीस पाक में आया है कि नबी सल्ल० ने प्याले के रुख़ को फेरा और अपने मुबारक लब उसी जगह पर लगाकर पानी नोश फ़रमाया। ख़ाविन्द अपनी बीवी को ऐसी मुहब्बत देगा तो वह क्योंकर घर आबाद नहीं करेगी।

अब सोचिए कि रहमतु लिल आलमीन तो आप सल्ल० की ज़ाते मुबारक है। आप सय्यदुल अव्वलीन वल आख़िरीन हैं। इसके बावजूद आप सल्ल० ने अपनी अहलिया का बचा हुआ पानी पिया। होना तो यह चाहिए था कि आप सल्ल० का बचा हुआ पानी वह पीतीं। मगर यह सब कुछ मुहब्बत की वजह से था।

बीवी से मुहब्बत की बातें सुनिए

एक मर्तबा नबी करीम सल्ल० घर में तशरीफ़ फ़रमा थे। आप सल्ल० ने सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० से फ़रमाया "हुमैरा! तुम मुझे मक्खन और छुहारे मिलाकर खाने से ज़्यादा महबूब हो।" वह मुस्कुराकर कहने लगीं, "ऐ अल्लाह के नबी करीम सल्ल०! मुझे आप मक्खन और शहद मिलाकर खाने से ज़्यादा महबूब हैं।" नबी करीम सल्ल० ने मुस्कुराकर फ़रमाया, "हुमैरा! तेरा जवाब मेरे जवाब से ज़्यादा बेहतर है।"

नबी करीम सल्ल० के दिल में जितनी ख़शीयते इलाही थी उसका तो हम अंदाज़ा भी नहीं लगा सकते, मगर आप सल्ल० का अपने अहले ख़ाना की मवानिसत, प्यार और मुहब्बत का ताल्लुक़ था। यह चीज़ ऐन मतलूब है और अल्लाह तआला भी इस चीज़ को पसन्द करते हैं।

सय्यदा आइशा सिद्दीक़ा रज़ि० फ़रमाती हैं कि नबी करीम सल्ल० जब भी घर तशरीफ़ लाते थे तो हमेशा मुस्कुराते चेहरे के साथ तशरीफ़ लाते थे।

इस हदीस पाक के आइने में ज़रा हम अपने चेहरे को देखें कि जब हम अपने घर आते है तो त्योरियां चढ़ी होती हैं।

नफ़्स की हर ख़्वाहिश पूरी नहीं हो सकती

एक बादशाह के यहां बेटा नहीं था। उन्होंने अपने वज़ीर से कहा, "भाई! कभी अपने बेटे को ले आना।" अगले दिन वज़ीर अपने बेटे को लेकर आया। बादशाह ने उसे देखा और प्यार करने लगा। बादशाह ने कहा, "अच्छा, इस बच्चे को आज के बाद रोने न देना।" उसने कहा, "बादशाह सलामत! इसकी हर बात कैसे पूरी की जाए।" बादशाह ने कहा, "इसमें कौन-सी बात है, मैं सबसे कह देता हूं कि बच्चे को जिस चीज़ की ज़रूरत हो उसे पूरा कर दिया जाए और उसे रोने न दिया जाए।" वज़ीर ने कहा, "ठीक है, अब आप इस बच्चे से पूछें क्या चाहता है?" चुनांचे बादशाह ने बच्चे से पूछा, तुम क्या चाहते हो? उसने कहा, हाथी। बादशाह ने कहा कि यह तो बड़ी आसान फ़रमाइश है। चुनांचे उसने एक आदमी को हुक्म दिया कि एक हाथी लाकर बच्चे को दिखा दो। वह हाथी लेकर आया। बच्चा थोड़ी देर तो खेलता रहा लेकिन बाद में फिर रोना शुरू कर दिया। बादशाह ने पूछा, अब क्यों रो रहे हो? उसने कहा, एक सूई चाहिए। बादशाह ने कहा यह तो कोई ऐसी बात नहीं। चुनांचे एक सूई मंगवाई गई। उसने सूई के साथ खेलना शुरू कर दिया। थोड़ी देर के बाद उस बच्चे ने फिर रोना शुरू कर दिया। बादशाह ने कहा, अरे अब तू क्यों रो रहा है? वह कहने लगा, इस हाथी को सूई के सुराख़ में से गुज़ारें। यह बिलकुल नामुमकिन था। लिहाजा बच्चे की यह ख़्वाहिश पूरी नहीं की जा सकती। इसी तरह नफ़्स की भी हर ख़्वाहिश पूरी नहीं की जा सकती। लिहाज़ा सवाल पैदा होता है कि उसका कोई इलाज होना चाहिए। उसका इलाज यह है कि उसकी इस्लाह हो जाए।

एक लालची का क़िस्सा

मुफ़्ती तक़ी उसमानी दामत बरकातुहुम ने अपनी किताब 'तराशे' में 'अशअब तामा' नामी शख़्स के बारे में लिखा है कि वह हज़रत अब्दुलाह बिन ज़ुबैर रज़ि० का ग़ुलाम था। उसके अंदर तमा (लालच) बहुत ज़्यादा था, वह अपने ज़माने का नामी गिरामी लालची था यहां तक कि उसकी यह हालत थी

कि उसके सामने अगर कोई आदमी अपना जिस्म खुजाता तो वह सोच में पड़ जाता था कि शायद यह कहीं से कुछ दीनार निकाल कर मुझे हदिया कर देगा। वह ख़ुद कहता था कि जब मैं दो बन्दों को सरगोशी करते देखता तो मैं हमेशा यह सोचा करता था कि इनमें से शायद कोई यह वसीयत कर रहा हो कि मेरे मरने के बाद मेरी विरासत अशअब को दे देना।

जब वह बाज़ार में से गुज़रता और मिठाई बनानेवालों को देखता तो उनसे कहता कि बड़े-बड़े लड्डू-पेड़े बनाओ। वे कहते कि हम बड़े लड्डू क्यों बनाएं? यह कहता कि क्या पता कोई ख़रीद कर मुझे हदिये में ही दे दे।

एक मर्तबा लड़कों ने उसको घेर लिया। यहां तक कि उसके लिए जान छुड़ाना मुश्किल हो गया। बिल आख़िर उसको एक तर्कीब सूझी। वह लड़कों से कहने लगा, क्या तुम्हें पता नहीं कि सालिम बिन अब्दुल्लाह कुछ बांट रहे हैं, तुम भी उधर जाओ शायद कुछ मिल जाए। लड़के सालिम बिन अब्दुल्लाह की तरफ़ भागे तो पीछे से उसने भी भागना शुरू कर दिया। जब सालिम बिन अब्दुल्लाह के पास पहुंचे तो वह तो कुछ भी नहीं बांट रहे थे। लड़कों ने अशअब से कहा कि आपने तो हमें ऐसे ही ग़लत बात बता दी। वह कहने लगा कि मैंने तो जान छुड़ाने की कोशिश की थी। लड़कों ने कहा कि फिर तुम ख़ुद हमारे पीछे-पीछे क्यों आ गए? कहने लगा कि मुझे ख़्याल आया कि शायद वह कुछ बांट ही रहे हों।

हज़रत उसमान रज़ि० की हिक्मत यहूदी के साथ

सय्यदना हज़रत उसमान ग़नी रज़ि० को अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने ख़ूब माल दिया था। लेकिन उनके दिल में माल की मुहब्बत नहीं थी। वह अपना माल अल्लाह की राह में ख़र्च करने से कभी दरेग़ नहीं करते थे। बेरे रूमा एक कुंआ था जो एक यहूदी की मिल्कियत में था। उस वक़्त मुसलमानों को पानी हासिल करने में काफ़ी मुश्किल का सामना था। वह उस यहूदी से पानी ख़रीदते थे। जब सय्यदना उसमान ग़नी रज़ि० ने देखा कि मुसलमानों को पानी हासिल करने में काफ़ी दुशवारी का सामना है तो वह यहूदी के पास गए और फ़रमाया कि यह कुंआ फ़रोख़्त कर दो। उसने कहा, मेरी तो बड़ी कमाई होनी है मैं तो नहीं बेचूंगा। यहूदी का जवाब सुनकार सय्यदना उसमान ग़नी

रज़ि० नें फ़रमाया कि आप आधा बेच दें और क़ीमत पूरी ले लें। वह यहूदी न समझ सका। अल्लाह वालों के पास फ़िरासत होती है। यहूदी ने कहा, हां ठीक है, आधा हक़ दूंगा और क़ीमत पूरी लूंगा। चुनांचे उसने क़ीमत पूरी ले ली और आधा हक़ दे दिया और कहा कि एक दिन आप पानी निकालें और दूसरे दिन हम पानी निकालेंगे।

जब सय्यदना उसमान ग़नी रज़ि० ने उसे पैसे दे दिए तो आपने एलान करवा दिया कि मेरी बारी के दिन मुसलमान और काफ़िर सब बग़ैर क़ीमत के अल्लाह के लिए पानी इस्तेमाल करें। जब लोगों को एक दिन मुफ़्त पानी मिलने लगा तो दूसरे दिन ख़रीदने वाला कौन होता था। चुनांचे वह यहूदी चन्द महीनों के बाद आया और कहने लगा, आप मुझसे बाक़ी आधा भी ख़रीद लें। आपने बाक़ी आधा भी ख़रीद कर अल्लाह के लिए वक़्फ़ कर दिया। (ख़ुतबाते फ़क़ीर, जिल्द 9, पेज 37)

मुसीबत में तक़दीर का सहारा लेना हज़रत आदम अलैहि की सुन्नत है

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया कि एक मर्तबा हज़रत आदम अलैहि० और हज़रत मूसा अलैहि० के माबैन अपने परवरदिगार के सामने गुफ़्तुगू हुई, उसमें हज़रत आदम अलैहि० हज़रत मूसा अलैहि० पर ग़ालिब आ गए। मूसा अलैहि० ने अर्ज़ किया, "आप वही आदम अलैहि० तो हैं जिनको अल्लाह तआला ने अपने दस्ते मुबारक से पैदा फ़रमाया, फिर आपमें अपनी ख़ास रूह फूंकी, आपको फ़रिश्तों से सज्दा करवाया और आपको अपनी जन्नत में बसाया। आपने यह क्या किया कि अपनी एक ख़ता की बदौलत अपनी तमाम औलाद को ज़मीन पर निकलवा फेंका।" आदम अलैहि० ने फ़रमाया, "अच्छा तुम भी वही मूसा तो हो जिनको अल्लाह ने अपनी रिसालत और शर्फ़े हमकलामी के लिए मुंतख़ब किया, तौरात की तख़्तियां इनायत फ़रमाई जिसमें हर-हर बात की तफ़्सील मौजूद थी, फिर तुमको अपनी सरगोशी के लिए क़रीब बुलाया। ज़रा बताओ तो सही अल्लाह तआला ने मेरी पैदाइश से कितने साल पहले तौरात लिख दी थी?" मूसा अलैहि० ने फ़रमाया, चालीस साल पहले। आदम अलैहि० ने फ़रमाया,

"क्या तुमको उसमें यह लिखा हुआ भी मिला :

'आदम अलैहि० ने अपने रब की नाफ़रमानी की पस बहक गया।'

(सूरह ताहा, 121)

उन्होंने अर्ज़ किया, जी हां। आदम अलैहि० ने फ़रमाया, "फिर भला ऐसी बात पर मुझे क्या मलामत करते हो जिसका करना अल्लाह तआला मेरी क़िस्मत में मेरी पैदाइश से भी चालीस साल पहले लिख चुका था।" रसूलुल्लाह सल्ल० ने फ़रमाया, "बस इस बात पर आदम अलैहि० मूसा अलैहि पर ग़ालिब आ गए।" (मुस्लिम शरीफ़)

तशरीह : ख़ल्लाक़े आलम ने आलम को पैदा फ़रमाकर जहां आलम के जुमला हवादिस तय फ़रमाकर लिख दिए थे उसके साथ ही नस्ले इंसानी की सबक़ आमूज़ी के लिए तक़दीर के एक वाक़िए का ज़िक्र भी कर दिया है। वह यह है कि हमारी ही मशीयत थी कि ज़मीन में अपना एक ख़लीफ़ा बनाएं, इसलिए हमने ही आदम अलैहि० को पैदा फ़रमाया और हमने ही उनको गेहूं खाने से मना किया और फिर हमने ही उनको उसकी क़ुदरत देकर उनसे उसका इरतकाब भी कराया, उसके बाद फिर हमने ही आदम अलैहि० को मुख़ातिब करके यह सवाल किया, "ऐ आदम क्या हमने तुमको इस दरख़्त के पास फटकने से मना नहीं कर दिया था और क्या इससे भी ख़बरदार नहीं कर दिया था कि देखो शैतान तुम्हारा बड़ा पक्का दुश्मन है उसके कहे में न आना, फिर तुम उन सब बातों को फ़रामोश करके क्यों गेहूं खा बैठे?"

अब नस्ले इंसानी को ख़ूब सुन लेना चाहिए कि उसके जवाब में हज़रत आदम अलैहि० ने जो जवाब दिया वह सिर्फ़ गिरया व ज़ारी था, उसके सिवा एक हर्फ़ तक मुंह से नहीं निकला और कलिमाते इस्तिग़फ़ार भी उस वक़्त कहने की जुर्रत की जबकि परवरदिगार ही की तरफ़ से उनका इल्क़ा किया गया। इस वाक़िए में भी बड़ा सबक़ था कि जो ख़ालिक़ और मालिक हो उससे सवाल करने का हक़ किसी को नहीं पहुंचता। यह हक़ सिर्फ़ उसी का है कि वह अपनी मख़्लूक़ से बाज़पुर्स करे। यहां मुमकिन था कि किसी के दिल में वस्वसा गुज़र जाता कि शायद हज़रत आदम अलैहि० के दिल में उस वक़्त जवाब न आ सका होगा, इसलिए आलिमुल ग़ैब में इस अक़ीदे के हल के लिए भी एक महफ़िल मुकालिमा मुरत्तब फ़रमाई गई और आलिमुल ग़ैब में कश्फ़

इसरार के लिए यह भी एक तरीक़ा है और गुफ़्ता आय दर हदीसे दीगरां, की सूरत से मामले की हक़ीक़त वाज़ेह कर दी गई। यहां अबुल बशर से मुकालिमा के लिए मशीयते इलाही ने उनकी औलाद में से ऐसे फ़रज़न्द को मुंतख़ब फ़रमाया जो फ़ितरतन तेज़ मिज़ाज और नाज़-परवरदा थे ताकि उनसे गुफ़्तुगू की इब्तिदा कर सकें और उनके सामने सवाल व जवाब के लिए यही मौज़ू रख दिया और ज़िमन में यह वाज़ेह कर दिया कि अबुल बशर के पास जवाब तो था और ऐसा था कि हज़रत मूसा अलैहि० जैसा ऊलुल अज़्म पैग़म्बर भी उसके जवाब से आजिज़ हो गया। यहां मामला मख़्लूक़ का मख़्लूक़ के सामने था, लेकिन जब यही मामला ख़ालिक़ के सामने पेश आया था तो आदम अलैहि० ऐसे लाजवाब थे कि गिरिया व ज़ारी के सिवा उनके पास कोई और जवाब ही न था।

यह वाज़ेह रहना चाहिए कि जो सवाल हज़रत मूसा अलैहि० की जानिब से यहां हज़रत आदम अलैहि० के सामने पेश किया गया है, वह यह नहीं है कि आपने गेहूं खाया क्यों? बल्कि यह है कि आपने हमको इस दारे तकलीफ़ में रहने की मुसीबत में क्यों डाल दिया? मगर चूंकि यहां आना गेहूं खाने के नतीजे में हुआ था, इसलिए इसका ज़िक्र भी ज़िमनन आ गया है। उलमा ने लिखा है कि अपनी मुसीबत के लिए तक़दीर का उज़्र करना किसी के लिए भी जाइज़ नहीं है, चेजाय कि नबी के लिए वरना तो फिर तमाम बिसाते शरीअत ही दरहम-बरहम हो जाती है और दुनिया अपने तमाम मआसी के लिए तक़दीर का उज़्र पेश करके अपना पीछा छुड़ा सकती है। पस आदम अलैहि० ने तक़दीर का उज़्र अपनी मुसीबत के लिए नहीं किया बल्कि दुनिया में आने की जो मुसीबत उनकी औलाद को पेश आ गई है उसकी तसल्ली व तशफ़्फ़ी के लिए किया था। मतलब यह था कि यह मुसीबत तुम्हारे लिए पहले से मुक़द्दर हो चुकी थी, फिर जो बात पहले से मुक़द्दर हो चुकी थी उसका बाइसे गो मैं ही हुआ लेकिन इस पर मुझे मलामत करना दुरुस्त नहीं। वह तो शुदनी अम्र था, होकर रहा। मुसीबत में तक़दीर का ज़िक्र करना रिज़ा-ब-क़ज़ा की अलामत है और गुनाह पर तक़दीर की आड़ लेना इंतिहाई जसारत है। आज भी दुनिया इस क़िस्म के मौक़े में तक़दीर ही का तज़्किरा करके अपने दिल की तसल्ली का सामान किया करती है। मसलन अगर कोई शख़्स तिजारत का एक शोबा छोड़कर दूसरा शोबा इख़्तियार कर ले और उसमें

उसको काफ़ी नुक़सान हो जाए तो अगर लोग उस तब्दीली पर उसको मलामत करें तो उनसे पीछा छुड़ाने और अपने नफ़्स को तसल्ली देने के लिए वह तक़दीर का ही पहलू इख़्तियार करता है और कहता है कि मेरे मुक़द्दर की बात थी इसलिए नुक़सान होना था, हो गया। हाफ़िज़ इब्ने तैमिया रह० ने अपनी मुख़्तलिफ़ तसानीफ़ में इस वाक़िये की भी तौजीह फ़रमाई है और यही सबसे मुस्तहसिन और बेतकल्लुफ़ भी है, मगर इसकी पूरी वज़ाहत हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० ने फ़रमाई है, उसके अलावा भी और जवाबात दिए गए हैं। मगर वह सब तकल्लुफ़ मालूम होते हैं। हाफ़िज़ इब्ने क़य्यिम रह० ने उनकी तर्दीद भी फ़रमाई है। (देखो शिफ़ाउल अलील, पेज 18, व शरह अक़ीदतुल तहाविया, पेज 79, अलबिदाया वन्निहाया, जिल्द 1, पेज 85, तर्जुमान सुन्नह, जिल्द 3, पेज 69, हदीस नं० 914)

एक ज़माना आएगा कि क़ब्र की ज़मीन भी मँहगी हो जाएगी

अबूज़र रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह सल्ल० गधे पर सवार हुए और मुझे अपने पीछे बिठा लिया। फिर फ़रमाया (1) "अगर किसी ज़माने में लोग भूख की शिद्दत में मुब्तला हों, ऐसी भूख कि उसकी वजह से तुम अपने बिस्तर से उठकर नमाज़ की जगह भी न आ सको तो बताओ उस वक़्त तुम क्या करोगे।" उन्होंने अर्ज़ किया कि यह तो ख़ुदा तआला और उसका रसूल सल्ल० ही ज़्यादा जान सकते हैं। फ़रमाया, "देखो उस वक़्त भी किसी से सवाल न करना।" (2) अच्छा अबू ज़र बताओ अगर लोगों में मौत की एक गर्म-बाज़ारी हो जाए कि एक क़ब्र की क़ीमत एक ग़ुलाम के बराबर जा पहुंचे, भला ऐसे ज़माने में तुम क्या करोगे?" वह बोले कि इसको तो अल्लाह तआला और उसका रसूल सल्ल० ही ज़्यादा जानते हैं। फ़रमाया, "देखो, सब्र करना।" उसके बाद आप सल्ल० ने फ़रमाया (3) "अगर लोगों में ऐसा क़त्ल व क़िताल हो कि ख़ून हिजारज़ैत तक बह जाए, भला उस वक़्त तुम क्या करोगे?" उन्होंने अर्ज़ किया यह बात तो अल्लाह तआला और उसका रसूल सल्ल० ही ज़्यादा जानते हैं। फ़रमाया, "बस अपने घर में घुसे रहना और अंदर से अपना दरवाज़ा बन्द कर लेना।" उन्होंने अर्ज़ किया, अगर इस पर छूट न सकूं। फ़रमाया कि "फिर जिस क़बीले में के हों, वहां चले जाना।" उन्होंने अर्ज़ किया। अगर मैं भी अपने हथियार संभाल लूं? फ़रमाया,

"तो तुम भी फ़ितने में उनके शरीक समझे जाओगे। इसलिए शिरकत हरगिज़ न करना और अगर तुमको डर हो कि तलवार की चमक तुमको ख़ौफ़ज़दा कर देगी तो अपनी चादर का पल्ला अपने मुंह पर डाल लेना और क़त्ल होना गवारा कर लेना, तुम्हारे और क़ातिल के गुनाह सब के सब क़ातिल ही के सर पड़ जाएंगे।" (इब्ने हिब्बान, तर्जुमानुस्सुन्नह, जिल्द 4, पेज 274)

तहज्जुद के वक़्त नीचे लिखे कलिमात दस-दस मर्तबा पढ़ें

अल्लाहु अकबर	दस बार
अलहम्दुलिल्लाह	दस बार
सुब्हानल्लाहि व बि-हम्दिही	दस बार
सुब्हानल मलिकिल क़ुद्दूस	दस बार
अस्तग़फ़िरुल्लाह	दस बार
ला इला-ह इल्ललाह	दस बार
अल्लाहुम-म इन्नी अऊज़ु-बि-क मिन ज़ीक़िद्-दुनया व ज़ीक़ि यौमिल क़ियामत	दस बार

(बहवाला अबू दाऊद शरीफ़, जिल्द 2, पेज 694, इब्ने सुन्नी, पेज 761)

दिल की बीमारियां दूर करने का मुजर्रब नुस्ख़ा

"या क़विय्युल क़ादिरुल मुक़-त-दिरु क़व्विनी व क़लबी" 7 मर्तबा हर नमाज़ के बाद दाहिना हाथ क़ल्ब पर रखकर पढ़े। अगर दूसरा पढ़े तो कहे—

"या क़विय्युल क़ादिरुल मुक़-त-दिरु क़व्विहि व क़ल-बहू"

तमाम ज़रूरतों को पूरा किए जाने का मुजर्रब नुसख़ा।

"या अल्लाहु, या रहमानु या रहीम।"

कसरत से पढ़ा जाए, अनगिनत।

अयादत के वक़्त बीमार की शिफ़ायाबी की दुआ

"अस-अलुल्लाहल अज़ी-म रब्बल अरशिल-अज़ीमि अयं-यशफ़ि-य-क" 7 मर्तबा पढ़ने से मरीज़ को शिफ़ा होती है। (मिश्कात शरीफ़, 135)

रिज़्क़ में बरकत और ज़ाहिरी व बातिनी ग़िना का मुजर्रब नुस्ख़ा

"या मुग़नी" 1111 (ग्यारह सौ ग्यारह) मर्तबा किसी वक़्त क़ब्ल व बाद दुरूद शरीफ़ 11-11 मर्तबा पाबन्दी से पढ़ें।

अमल सूरह फ़लक़ हासिद के हसद से बचने का मुजर्रब नुस्ख़ा है

सूरह फ़लक़ 360 मर्तबा पढ़कर पानी पर दम करके पिलाएं और दुकान व मकान में छिड़कें। अगर इस क़द्र न हो सके तो 240 मर्तबा पढ़ें, यह भी न हो सके तो 120 मर्तबा पढ़ें। मुतअद्दिद लोग मिलकर पढ़ सकते हैं, तीन क़िस्तों में भी पढ़ सकते हैं।

दुश्मन के शर से हिफ़ाज़त का मुजर्रब नुस्ख़ा

सूरह इख़्लास, सूरह फ़लक़, सूरह नास, तीन-तीन मर्तबा बाद फ़ज्र और बाद मग़रिब पढ़ना बहुत फ़ायदेमन्द है।

बीमारी से सेहत पाने का मुजर्रब नुस्ख़ा

"या सलामु" 142 मर्तबा रोज़ाना सुबह व शाम पढ़ें। अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ तीन-तीन मर्तबा, मुतफ़र्रिक़ औक़ात में जिस क़द्र पढ़ सकें, पढ़ लिया करें।

मुख़ालिफ़ीन के शर से हिफ़ाज़त का मुजर्रब नुस्ख़ा

"अल्लाहुम-मकफ़िनाहु बिमा शिअ्-त अल्लाहुम-म इन्नी अज-अ़-लु-क फ़ी नुहूरिहिम व अऊज़ु-बि-क मिन शुरूरिहिम"

हर नमाज़ के बाद 11 मर्तबा पढ़ा करें।

ख़ारजी असरात को हटाने और फ़ितनों के शर से हिफ़ाज़त का मुजर्रब नुस्ख़ा

दुरूद शरीफ़ तीन बार, सूरह फ़ातिहा तीन बार, आयतुल कुर्सी तीन बार,

सूरह इख़्लास तीन बार, सूरह फ़लक़ तीन बार, सूरह नास तीन बार पढ़कर दम करना और जो पढ़ न सके उन पर दूसरा दम करे और पानी पर दम करके पिलाना, हर नमाज़ के बाद वरना सुबह व शाम रोज़ाना 11 मर्तबा पढ़ना बेहतर है।

बराय तसहील व ताजील निकाह व रिश्ता मुनासिब

1. वालिदैन या सरपरस्त में से कोई पढ़े *"या लतीफ़ु या वदूदु"*। तादाद ग्यारह सौ ग्यारह मर्तबा बाद इशा अव्वल व आख़िर दुरूद ग्यारह-ग्यारह मर्तबा।

2. लड़का या लड़की पढ़े *"या जामिउ"*। ग्यारह सौ ग्यारह मर्तबा अव्वल व आख़िर दुरूद शरीफ़ ग्यारह-ग्यारह मर्तबा।

हर बीमारी से शिफ़ा के लिए

"अलहम्दु शरीफ़" ग्यारह बार रोज़ाना पानी पर दम करके पिलाते रहें, बराबर सिलसिला रखा जाए। सूरह फ़लक़, सूरह नास तीन-तीन बार पढ़ लें तो बहुत अच्छा है।

दुश्मनों के शर से हिफ़ाज़त और ग़लबे के लिए

"इन्ना कफ़ैनाकल मुस्तहज़िई-न" (पारा 14, रुकूअ 6) एक हज़ार मर्तबा बाद नमाज़ इशा, 11 यौम फिर 100 मर्तबा यौमिया। अहम मामला में 11 यौम से ज़्यादा पढ़ना बेहतर है।

काम की तक्मील और आसानी के वास्ते

"या सुब्बूहु या क़ुद्दूसु या ग़फ़ूरु या वदूदु" हाकिम के सामने या जिससे काम हो या जो परेशान करता हो उसके सामने जाने पर उससे बातचीत पर चुपके-चुपके पढ़ें, बिला क़ैद तादाद पढ़ें।

ख़ास विर्द

अव्वल-आख़िर दुरूद शरीफ़ ग्यारह-ग्यारह मर्तबा

हस्बुनल्लाहु व निअ्मल वकील

1. हिफ़ाज़त अज़ शुरूरो फ़ितन 341 मर्तबा
2. बराए वुसअत रिज़्क़ व अदाए क़र्ज़ 308 मर्तबा
3. बराए तक्मील ख़ास काम 111 मर्तबा
4. बराए किफ़ालत अज़ मसाइब व परेशानी 140 मर्तबा

बनीयत इस्लाहे हाल व अदाए हुक़ूक़

"या मुक़ल्लिबल क़ुलूबि वल् अबसारि या ख़ालिक़ल्लैलि वन्नारि या अज़ीज़ु या लतीफ़ु या ग़फ़्फ़ार"

200 मर्तबा चालीस दिन तक किसी वक़्त, फिर उसके बाद रोज़ाना 21-21 मर्तबा अव्वल व आख़िर, 11-11 मर्तबा दुरूद शरीफ़।

शैतान की कहानी उसकी ज़बानी—
आग़ाज़ तो अच्छा है अंजाम ख़ुदा जाने

शैतान के मक्र व फ़रेब के बारे में हदीस पाक में बहुत ही अजीब वाक़िआ आया है। इब्ने आमिर ने उबैद बिन यसार से लेकर नबी अलैहि० तक इस वाक़िये की सनद पहुंचाई है। यह वाक़िआ तल्बीसे इब्लीस में भी नक़ल किया गया है।

बनी इसराईल में बरसीसा नामी एक राहिब था। उस वक़्त बनी इसराईल में उस जैसा कोई इबादत गुज़ार नहीं था। उसने एक इबादतख़ाना बनाया हुआ था। वह उसी में इबादत में मस्त रहता था। उसे लोगों से कोई ग़र्ज़ नहीं थीं। न तो वह किसी से मिलता था और न ही किसी के पास आता जाता था। शैतान ने उसे गुमराह करने का इरादा किया।

बरसीसा अपने कमरे से बाहर निकलता ही नहीं था। वह ऐसा इबादत गुज़ार था कि अपना वक़्त हरगिज़ ज़ाया नहीं करता था। शैतान ने देखा कि जब दिन में कुछ वक़्त यह थकते हैं तो कभी-कभी अपनी खिड़की से बाहर झांक कर देख लेते हैं। उधर कोई आबादी नहीं थी। उसका अकेला सोमआ था। उसके इर्द-गिर्द खेत और बाग़ थे। जब उसने देखा कि वह दिन में एक या दो मर्तबा खिड़की से देखते हैं तो उस मर्दूद ने इंसानी शक्ल में आकर उस खिड़की के सामने नमाज़ की नीयत बांध ली....उसको नमाज़ क्या पढ़नी थी,

फ़क़त शक्ल बनाकर खड़ा था....अब देखो कि जिसकी जो लाइन होती है उसको गुमराह करने के लिए उसके मुताबिक़ (दिलकश) बहरूप बनाता है—

चुनांचे जब उसने खिड़की में से बाहर झांका तो एक आदमी को क़याम की हालत में देखा। वह बड़ा हैरान हुआ। जब दिन के दूसरे हिस्से में उसने दोबारा इरादतन बाहर देखा तो वह रुकूअ में था। बड़ा लम्बा रुकूअ किया। फिर तीसरी मर्तबा सज्दे की हालत में देखा। कई दिन इसी तरह होता रहा। आहिस्ता-आहिस्ता बरसीसा के दिल में यह बात आने लगी कि यह तो कोई बड़ा ही बुज़ुर्ग इंसान है जो दिन-रात इतनी इबादतें कर रहा है। वह कई महीनों तक इसी तरह शक्ल बनाकर क़याम, रुकूअ और सज्दे करता रहा, यहां तक कि बरसीसा के दिल में यह बात आने लगी कि मैं उससे पूछूं तो सही कि यह कौन है?

जब बरसीसा के दिल में यह बात आने लगी तो शैतान ने खिड़की के क़रीब मुसल्ला बिछाना शुरू कर दिया। जब मुसल्ला खिड़की के क़रीब आ गया और बरसीसा ने बाहर झांका तो उसने शैतान से पूछा, तुम कौन हो? वह कहने लगा, आपको मुझसे क्या ग़र्ज़ है, मैं अपने काम में लगा हुआ हूं, मुझे डिस्टर्ब न करें। वह सोचने लगा कि अजीब बात है कि किसी की कोई बात सुनना गवारा ही नहीं करता। दूसरे दिन बरसीसा ने पूछा कि आप अपना तआरुफ़ तो करवाएं। यह कहने लगा, मुझे अपना काम करने दो।

अल्लाह की शान कि एक दिन बारिश होने लगी। वह बारिश में भी नमाज़ की शक्ल बनाकर खड़ा हो गया। बरसीसा के दिल में बात आई कि जब यह इतना इबादत गुज़ार है कि उसने बारिश की भी कोई परवाह नहीं की, क्यों न मैं ही अच्छे अख़्लाक़ का मुज़ाहिरा करूं और इससे कहूं कि मियां! अंदर आ जाओ। चुनांचे उसने शैतान को पेशकश की कि बाहर बारिश हो रही है, तुम अंदर आ जाओ। वह जवाब में कहने लगा कि ठीक है, मोमिन को मोमिन की दावत क़बूल कर लेनी चाहिए, लिहाज़ा मैं आपकी दावत क़बूल कर लेता हूं। वह तो चाहता ही यही था। चुनांचे उसने कमरे में आकर नमाज़ की नीयत बांध ली। वह कई महीनों तक उसके कमरे में इबादत की शक्ल में बना रहा। वह दरअस्ल इबादत नहीं कर रहा था, फ़क़त नमाज़ की शक्ल बना रहा था, लेकिन दूसरा यही समझ रहा था कि वह नमाज़ पढ़ रहा है।

उसको नमाज़ से क्या ग़र्ज़ थी, वह तो अपने मिशन पर था।

जब कई महीने गुज़र गए तो बरसीसा ने उसे वाक़ई बहुत बड़ा बुज़ुर्ग समझना शुरू कर दिया और उसके दिल में उसकी अक़ीदत पैदा होना शुरू हो गई। इतने अर्से के बाद शैतान बरसीसा से कहने लगा कि अब मेरा साल पूरा हो चुका है लिहाज़ा मैं अब यहां से जाता हूं। मेरा मक़ाम कहीं और है। रवाना होते वक़्त वैसे ही दिल नर्म हो चुका होता है लिहाज़ा वह बरसीसा से कहने लगा, अच्छा मैं आपको जाते-जाते एक ऐसा तोहफ़ा दे जाता हूं जो मुझे अपने बड़ों से मिला था। वह तोहफ़ा यह है कि अगर तुम्हारे पास कोई भी बीमार आए तो उस पर यह पढ़कर दम कर दिया करना, वह ठीक हो जाया करेगा। तुम भी क्या याद करोगे कि कोई आया था और तोहफ़ा दे गया था। बरसीसा ने कहा, मुझे इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। वह कहने लगा कि हमें यह नेमत तवील मुद्दत की मेहनत के बाद मिली है, मैं वह नेमत तुम्हें तोहफ़े में दे रहा हूं और तुम इंकार कर रहे हो, तुम तो बड़े नालायक़ इंसान हो। यह सुनकर बरसीसा कहने लगा, अच्छा जी, मुझे भी सिखा ही दें। चुनांचे शैतान ने उसे एक दम सिखा दिया और यह कहते हुए रुख़्सत हो गया कि अच्छा फिर मिलेंगे।

वह वहां से सीधे बादशाह के घर गया। बादशाह के तीन बेटे और एक बेटी थी। शैतान ने जाकर उसकी बेटी पर असर डाला और वह मजनूना-सी बन गई। वह ख़ूबसूरत और पढ़ी-लिखी लड़की थी, लेकिन शैतान के असर से उसे दौरे पड़ना शुरू हो गए। बादशाह ने उसके इलाज के लिए हकीम और डॉक्टर बुलवाए। कई दिनों तक वह उसका इलाज करते रहे, लेकिन कोई फ़ायदा न हुआ।

जब कई दिनों के इलाज के बाद भी कुछ इफ़ाक़ा न हुआ तो शैतान ने बादशाह के दिल में यह बात डाली कि बड़े हकीमों और डॉक्टरों से इलाज तो करवा लिया है, अब किसी दम वाले ही से दम करवा कर देख लो। यह ख़्याल आते ही उसने सोचा कि हां, किसी दम वाले को तलाश करना चाहिए। चुनांचे उसने अपने सरकारी नुमाइंदे भेजे ताकि वह पता करके आएं कि इस वक़्त सबसे ज़्यादा नेक बन्दा कौन है? सबने कहा कि इस वक़्त सबसे ज़्यादा नेक आदमी तो बरसीसा है और वह तो किसी से मिलता ही नहीं है। बादशाह

ने कहा कि अगर वह किसी से नहीं मिलता तो उनके पास जाकर मेरी तरफ़ से दरख़्वास्त करो कि हम आपके पास आ जाते हैं।

कुछ आदमी बरसीसा के पास गए। उसने उन्हें देखकर कहा आप मुझे डिस्टर्ब करने क्यों आए हैं? उन्होंने कहा कि बादशाह की बेटी बीमार है। हकीमों और डॉक्टरों से बड़ा इलाज करवाया, लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ। बादशाह चाहते हैं कि आप बेशक यहां न आएं कि आपकी इबादत में ख़लल न आए, हम आपके पास बच्ची को लेकर आ जाते हैं। आप यहीं उस बच्ची को दम कर देना, हमें उम्मीद है कि आपके दम करने से वह ठीक हो जाएगी। उसके दिल में ख़्याल आया कि हां, मैंने एक दम सीखा तो था, उस दम को आज़माने का यह अच्छा मौक़ा है। चलो, यह तो पता चल जाएगा कि वह दम ठीक भी है या नहीं। चुनांचे उसने उन लोगों को बादशाह की बेटी को लाने की इजाज़त दे दी।

बादशाह अपनी बेटी को बरसीसा के पास लेकर आ गया। उसने जैसे ही दम किया वह फ़ौरन ठीक हो गई। मर्ज़ भी शैतान ने लगाया था और दम भी उसी ने बताया था। लिहाज़ा दम करते ही शैतान उसको छोड़कर चला गया और वह बिल्कुल ठीक हो गई। बादशाह को पक्का यक़ीन हो गया कि मेरी बेटी उसके दम से ठीक हुई है।

एक-डेढ़ माह के बाद उसने फिर उसी तरह बच्ची पर हमला किया और वह उसे फिर बरसीसा के पास ले आए। उसने दम किया तो वह फिर उसे छोड़कर चला गया यहां तक कि दो-चार दिन के बाद बादशाह को पक्का यक़ीन हो गया कि मेरी बेटी का इलाज उसके दम में है। अब बरसीसा की बड़ी शोहरत हुई कि उसके दम से बादशाह की बेटी ठीक हो जाती है।

कुछ अर्से के बाद उस बादशाह के मुल्क पर किसी ने हमला किया। वह अपने शहज़ादों के हमराह दुश्मन का मुक़ाबला करने के लिए तैयारी करने लगा। अब बादशाह सोच में पड़ गया कि अगर जंग में जाएं तो बेटी को किसके पास छोड़कर जाएं। किसी ने मशवरा दिया कि किसी वज़ीर के पास छोड़ जाएं और किसी ने कोई मशवरा दिया। बादशाह कहने लगा कि अगर इसको दोबारा बीमारी लग गई तो फिर क्या बनेगा? बरसीसा तो किसी की बात भी नहीं सुनेगा। चुनांचे बादशाह ने कहा कि मैं ख़ुद बरसीसा के पास

अपनी बेटी को छोड़ जाता हूं....देखो शैतान कैसे जोड़ मिला रहा है....बादशाह अपने तीनों बेटों और बेटी को लेकर बरसीसा के पास पहुंच गया और कहने लगा कि हम जंग पर जा रहे हैं, ज़िंदगी और मौत का पता नहीं है। मुझे इस वक़्त सबसे ज़्यादा एतिमाद तुम्हीं पर है और मेरी बेटी का इलाज भी तुम्हारे ही पास है लिहाज़ा मैं चाहता हूं कि यह बच्ची तुम्हारे पास ही ठहर जाए। बरसीसा कहले लगा, तौबा-तौबा! मैं यह काम कैसे कर सकता हूं कि यह अकेली मेरे पस ठहरे। बादशाह ने कहा नहीं ऐसी कोई बात नहीं है, बस आप इजाज़त दे दें, मैं इसके रहने के लिए आपके इबादतख़ाने के सामने एक घर बनवा देता हूं और यह उसी घर में ठहरेगी। बरसीसा ने यह सुनकर कहा, चलो ठीक है। जब उसने इजाज़त दी तो बादशाह ने उसके इबादतख़ाने के सामने घर बनवा दिया और बच्ची को वहां छोड़कर जंग पर रवाना हो गए।

अब बरसीसा के दिल में बात आई कि मैं अपने लिए तो खाना बनाता ही हूं, अगर बच्ची का खाना भी मैं ही बना दिया करूं तो इसमें क्या हर्ज है। क्यों कि वह अकेली है पता नहीं कि अपने लिए खाना पकाएगी भी या नहीं पकाएगी। चुनांचे वह खाना बनाता और आधा ख़ुद खाकर बाक़ी आधा खाना अपने इबादतख़ाने के दरवाज़े के बाहर रख देता और अपना दरवाज़ा खटखटा देता। यह उस लड़की के लिए इशारा होता था कि अपना खाना उठा लो। इस तरह वह लड़की खाना उठाकर ले जाती और खा लेती। कई महीनों तक यही मामूल रहा।

उसके बाद शैतान ने उसके दिल में यह बात डाली कि देखो, वह लड़की अकेली रहती है, तुम खाना पकाकर अपने दरवाज़े के बाहर रख देते हो और लड़की को वह खाना उठाने के लिए गली में निकलना पड़ता है। अगर कभी किसी मर्द ने देख लिया तो वह तो उसकी इज़्ज़त ख़राब कर देगा। इसलिए बेहतर यह है कि खाना बनाकर उसके दरवाज़े के अंदर रख दिया करो ताकि उसको बाहर न निकलना पड़े। चुनांचे बरसीसा ने खाना बनाकर उसके दरवाज़े के अंदर रखना शुरू कर दिया। वह खाना रखकर कुंडी खटखटा देता और वह खाना उठा लेती। यही सिलसिला चलता रहा।

जब कुछ और महीने भी गुज़र गए तो शैतान ने उसके दिल में डाला कि तुम ख़ुद तो इबादत में लगे रहते हो। यह लड़की अकेली है, ऐसा न हो कि

तनहाई की वजह से और ज़्यादा बीमार हो जाए, इसलिए बेहतर है कि उसको कुछ नसीहत करो दिया करो ताकि यह भी इबादत गुज़ार बन जाए और उसका वक़्त ज़ाया न हो। यह ख़्याल दिल में आते ही उसने कहा कि हां, यह बात तो बहुत अच्छी है, लेकिन इस काम की क्या तर्तीब होनी चाहिए। शैतान ने इस बात का जवाब भी उसके दिल में डाला कि उसको कह दो कि वह अपने घर की छत पर आ जाया करे और तुम भी अपने घर की छत पर बैठ जाया करो और उसे वाज़ व नसीहत किया करो। चुनांचे उसने इसी तर्तीब से वाज़ व नसीहत करना शुरू कर दी। उसके वाज़ का उस लड़की पर बड़ा असर हुआ। उसने नमाज़ें और वज़ीफ़े शुरू कर दिए। अब शैतान ने उसके दिल में यह बात डाली कि देख, तेरी नसीहत का इस पर कितना असर हुआ। ऐसी नसीहत तो हर रोज़ होनी चाहिए। चुनांचे उसने रोज़ाना नसीहत करनी शुरू कर दी।

इसी तरह करते-करते जब कुछ वक़्त गुज़र गया तो शैतान ने फिर उसके दिल में यह बात डाली कि तुम अपने घर की छत पर बैठते हो और वह अपने घर की छत पर बैठती है, रास्ते में से गुज़रनेवाले क्या बातें सोचेंगे कि यह कौन बातें कर रहे हैं? इस तरह तो बहुत ही ग़लत तास्सुर पैदा हो जाएगा, इसलिए बेहतर यह है कि छत पर बैठकर ऊंची आवाज़ से बात करने की बजाए तुम दरवाज़े से बाहर खड़े होकर तक़रीर करो और वह दरवाज़े के अंदर खड़ी होकर सुन ले। पर्दा तो होगा ही सही। चुनांचे अब तर्तीब से वाज़ व नसीहत शुरू हो गई। कुछ अर्से तक इसी तरह मामूल रहा।

उसके बाद शैतान ने फिर बरसीसा के दिल में ख़्याल डाला कि तुम बाहर खड़े रहकर तक़रीर करते हो, देखने वाले क्या कहेंगे कि पागलों की तरह ऐसे ही बातें कर रहा है, इसलिए अगर तक़रीर करनी ही है तो चलो किवाड़ के अंदर खड़े होकर कर लिया करो। वह दूर खड़ी होकर सुन लिया करेगी। चुनांचे अब उसने दरवाज़े के अंदर खड़े होकर तक़रीर करनी शुरू कर दी। जब उसने अंदर खड़े होकर तक़रीर करनी शुरू की तो लड़की ने उसको बताया कि इतनी नमाज़ें पढ़ती हूं और इतनी इबादत करती हूं। यह सुनकर उसे बड़ी ख़ुशी हुई कि मेरी बातों का इस पर बड़ा असर हो रहा है। अब मैं अकेला ही इबादत नहीं कर रहा हूं बल्कि यह भी इबादत कर रही है। कई दिन तक

यही सिलसिला चलता रहा।

बिल-आख़िर शैतान ने लड़की के दिल में बरसीसा की मुहब्बत डाली और बरसीसा के दिल में लड़की की मुहब्बत डाली। चुनांचे लड़की ने कहा कि आप जो खड़े-खड़े बयान करते हैं, मैं आपके लिए चारपाई डाल दिया करूंगी, आप उस पर बैठकर बयान कर दिया करना और मैं दूर बैठकर सुन लिया करूंगी। उसने कहा, बहुत अच्छा। लड़की ने दरवाज़े के क़रीब चारपाई डाल दी। बरसीसा उस पर बैठकर नसीहत करता रहा और लड़की दूर बैठकर बात सुनती रही। इसी दौरान शैतान ने बरसीसा के दिल में लड़की के लिए बड़ी शफ़क़त व हमदर्दी पैदा कर दी। कुछ दिन गुज़रे तो शैतान ने आबिद के दिल में बात डाली कि नसीहत सुनानी तो लड़की को होती है, दूर बैठने की वजह से ऊंचा बोलना पड़ता है। गली से गुज़रने वाले लोग भी सुनते हैं, कितना अच्छा हो कि यह चारपाई ज़रा आगे करके रख लिया करें और पस्त आवाज़ में गुफ़्तुगू कर लिया करें। चुनांचे बरसीसा की चारपाई लड़की की चारपाई के क़रीबतर हो गई और वाज़ व नसीहत का सिलसिला जारी रहा।

कुछ अर्सा इसी तरह गुज़रा तो शैतान ने लड़की को मुज़य्यन करके बरसीसा के सामने पेश करना शुरू कर दिया और वह यूं उस लड़की के हुस्न व जमाल का गर्वीदा होता गया। अब शैतान ने बरसीसा के दिल में जवानी के ख़्यालात डालने शुरू कर दिए, यहां तक कि बरसीसा का दिल इबादतख़ाने से उचाट हो गया और उसका ज़्यादा वक़्त लड़की से बातें करने में गुज़र जाता। साल गुज़र चुका था। एक दफ़ा शहज़ादों ने आकर शहज़ादी की ख़बरगीरी की तो शहज़ादी को ख़ुश-ख़ुर्रम पाया और राहिब के गुन गाते देखा। शहज़ादों को लड़ाई के लिए दोबारा सफ़र पर जाना था, इसलिए वह मुत्मइन होकर चले गए। अब शहज़ादों के लिए जाने के बाद शैतान ने अपनी कोशिशें तेज़तर कर दीं। चुनांचे उसने बरसीसा के दिल में लड़की का इश्क़ पैदा कर दिया और लड़की के दिल में बरसीसा का इश्क़ भर दिया। यहां तक कि दोनों तरफ़ बराबर की आग सुलग उठी।

अब जिस वक़्त आबिद नसीहत करता तो सारा वक़्त उसकी निगाहें शहज़ादी के चेहरे पर जमी रहतीं। शैतान लड़की को नाज़ो-अंदाज़ सिखाता और वह सरापा नाज़नीं रश्क क़मर अपने अंदाज़ व अतवार से बरसीसा का

दिल लुभाती। यहां तक कि आबिद ने अलेहदा चारपाई पर बैठने की बजाए लड़की के साथ एक ही चारपाई पर बैठना शुरू कर दिया। अब उसकी निगाहें जब शहज़ादी के चेहरे पर पड़ीं तो उसने उसे सरापा हुस्न व जमाल और जाज़िबे नज़र पाया। चुनांचे आबिद अपने शहवानी जज़्बात पर क़ाबू न रख सका और उस शहज़ादी की तरफ़ हाथ बढ़ाया। शहज़ादी ने मुस्कुराकर उसकी हौसला-अफ़ज़ाई की। यहां तक कि बरसीसा ज़िना का मुरतकिब हो गया। जब दोनों के दर्मियान से हया की दीवार हट गई और ज़िना के मुरतकिब हुए तो वह आपस में मियां-बीवी की तरह रहने लग गए। इस दौरान शहज़ादी हामिला हो ग़ई।

अब बरसीसा को फ़िक्र लाहिक़ हुई कि अगर किसी को पता चल गया तो क्या बनेगा, मगर शैतान ने उसके दिल में ख़्याल डाला कि कोई फ़िक्र की बात नहीं, जब वज़ा हमल होगा तो नौमालूद को ज़िंदा दरगोर कर देना और लड़की को समझा देना, वह अपना भी ऐब छुपाएगी और तुम्हारा ऐब भी छुपाएगी। इस ख़्याल के आते ही डर और ख़ौफ़ के तमाम हिजाब दूर हो गए और बरसीसा बेख़ौफ़ो ख़तर हवसपरस्ती और नफ़्सपरस्ती में मशग़ूल रहा।

एक वह दिन भी आया जब उस शहज़ादी ने बच्चे को जन्म दिया। जब बच्चे को वह दूध पिलाने लगी तो शैतान ने बरसीसा के दिल में डाला कि अब तो डेढ़-दो साल गुज़र गए हैं और बादशाह और दीगर लोग जंग से वापस आने वाले हैं। शहज़ादी उनको सारा माजरा सुना देगी। इसलिए तुम इसका बेटा किसी बहाने से क़त्ल कर दो ताकि गुनाह का सुबूत न रहे।

चुनांचे एक दफ़ा शहज़ादी सोई हुई थी। उसने बच्चे को उठाया और क़त्ल करके घर के सेहन में दबा दिया। अब मां तो मां ही होती है। जब वह उठी तो उसने कहा, मेरा बेटा किधर है? उसने कहा, मुझे तो कोई ख़बर नहीं है। मां ने इधर-उधर देखा तो बेटे का कहीं सुराग़ न मिला। चुनांचे वह उससे ख़फ़ा होने लगी। जब वह ख़फ़ा होने लगी तो शैतान ने बरसीसा के दिल में बात डाली कि देखो, यह मां है, यह अपने बच्चे को हरगिज़ नहीं भूलेगी। पहले तो न मालूम यह बताती या न बताती। अब तो यह ज़रूर बता देगी लिहाज़ा अब एक ही इलाज बाक़ी है। लड़की को भी क़त्ल कर दो, ताकि न रहे बांस न बजे बांसुरी। जब बादशाह आकर पूछेगा तो बता देना कि वह

बीमार हुई थी और मर गई थी। जैसे ही उसके दिल में यह बात आई कहने लगा कि बिल्कुल ठीक है। चुनांचे उसने लड़की को भी क़त्ल कर दिया और लड़के के साथ ही सेहन में दफ़न कर दिया। उसके बाद वह अपनी इबादत में लग गया।

कुछ महीनों के बाद बादशाह सलामत वापस आ गए। उसने बेटों को भेजा कि जाओ अपनी बहन को ले आओ। वह बरसीसा के पास आए और कहने लगे, जी हमारी बहन आपके पास थी, हम उसे लेने आए हैं। बरसीसा उनकी बात सुनकर रो पड़ा और कहने लगा कि आपकी बहन बहुत अच्छी थी, बड़ी नेक थी और ऐसी-ऐसी इबादत करती थी, लेकिन वह अल्लाह को प्यारी हो गई। यह सेहन में उसकी क़ब्र है। भाइयों ने जब सुना तो वे रो-धोकर वापस चले गए।

घर जाकर जब वह रात को सोए तो शैतान ख़्वाब में बड़े भाई के पास गया और उससे पूछने लगा, बताओ तुम्हारी बहन का क्या बना? वह कहने लगा, हम जंग के लिए गए हुए थे, उसे बरसीसा के पास छोड़कर गए थे, वह अब फ़ौत हो चुकी है। शैतान कहने लगा, वह तो फ़ौत नहीं हुई। उसने पूछा कि अगर फ़ौत नहीं हुई तो फिर क्या हुआ? वह कहने लगा बरसीसा ने ख़ुद यह करतूत किया है और उसने ख़ुद उसे क़त्ल किया है और फ़लां जगह उसे दफ़न किया और बच्चे को उसने उसी के साथ दफ़न किया है। उसके बाद वह ख़्वाब में ही उसके दर्मियाने भाई के पास गया और उसको भी यही कुछ कहा और फिर उसके छोटे भाई के पास जाकर भी यही कुछ कहा।

तीनों भाई जब सुबह उठे तो एक ने कहा, मैंने एक ख़्वाब देखा है। ख़्वाब सुनकर दूसरे ने कहा कि मैंने भी यही ख़्वाब देखा और तीसरे ने कहा कि मैंने भी यही ख़्वाब देखा है। वे आपस में कहने लगे कि यह अजीब इत्तिफ़ाक़ है कि सबको एक जैसा ख़्वाब आया है। सबसे छोटे भाई ने कहा, यह इत्तिफ़ाक़ की बात नहीं है बल्कि मैं तो जाकर तहक़ीक़ करूंगा। दूसरे ने कहा, छोड़ो भाई यह कौन-सी बात है, जाने दो। वह कहने लगा, नहीं मैं तो ज़रूर तफ़्तीश करूंगा। चुनांचे छोटा भाई ग़ुस्से में आकर चल पड़ा। उसे देखकर बाक़ी भाई भी उसके साथ हो लिए। उन्होंने जब जाकर ज़मीन की खुदाई की तो उन्हें उसमें बहन की हड्डियां भी मिल गईं और साथ ही छोटे

से बच्चे की हड्डियों का ढांचा भी मिल गया।

जब सुबूत मिल गया तो उन्होंने बरसीसा को गिरफ़्तार कर लिया। उसे जब क़ाज़ी के पास ले जाया गया तो उसने क़ाज़ी के रूबरू अपने इस घिनौने और मकरूह फ़ेल (काम) का इक़रार कर लिया और क़ाज़ी ने बरसीसा को फांसी देने का हुक्म दे दिया।

जब बरसीसा को फांसी के तख़्ते पर लाया गया और उसके गले में फंदा डाला गया और फिर फंदा खींचने का वक़्त आया तो फंदा खींचने से ऐन दो चार लम्हे पहले शैतान उसके पास वही इबादतगुज़ार की शक्ल में आया। वह उससे कहने लगा, "क्या मुझे पहचानते हो कि मैं कौन हूं?" बरसीसा ने कहा, "हां, मैं तुम्हें पहचानता हूं, तुम वही इबादतगुज़ार हो जिसने मुझे वह दम बताया था। शैतान ने कहा, वह दम भी आपको मैंने बताया था। लड़की को भी मैंने अपना असर डालकर बीमार किया था, उसे क़त्ल भी मैंने तुझसे करवाया था और अगर अब तू बचना चाहे तो मैं ही तुझे बचा सकता हूं। बरसीसा ने कहा, अब तुम मुझे कैसे बचा सकते हो? वह कहने लगा कि तुम मेरी एक बात मान लो तो मैं तुम्हारा यह काम कर देता हूं। उसने पूछा कि मैं आपकी कौन-सी बात मान लूं? उस शैतान ने कहा कि बस यह कह दो कि ख़ुदा नहीं है। बरसीसा के तो हवास बाख़्ता हो चुके थे। उसने सोचा कि चलो मैं एक दफ़ा यह कह देता हूं, फिर फांसी से बचने के बाद दोबारा इक़रार कर लूंगा। चुनांचे उसने कह दिया कि ख़ुदा मौजूद नहीं है। ऐन उस लम्हे में खींचनेवाले ने फंदा खींच दिया और यूं उस इबादतगुज़ार की कुफ़्र पर मौत आ गई।

इससे अंदाज़ा लगाइए कि यह कितनी लॉंग टर्न प्लानिंग करके इंसान को गुनाह के क़रीब करता चला जाता है, उससे इंसान नहीं बच सकता, अल्लाह ही उससे बचा सकता है। लिहाज़ा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के हुज़ूर यूं दुआ मांगनी चाहिए।

"अल्लाहुम-मह फ़ज़ना मिनश-शैतानिर्रजीम। रब्बि अऊज़ुबि-क मिन ह-म-ज़ातिश-शैतानि व अऊज़ुबि-क रब्बि अंय यहज़ुरून।"

(ऐ अल्लाह! हमें शैतान मर्दूद के शर से महफ़ूज़ फ़रमा। ऐ

परवरदिगार! मैं आपकी पनाह मांगता हूं इससे कि शैतान मेरे पास आए।)

वसाविस से दीन का ज़रर बिल्कुल नहीं होता इत्मीनान रखिए

सवाल : मुकर्रम व मुहतरम जनाब मौलाना साहब

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम गुज़ारिश है कि आजकल मैं वसवसों का मरीज़ बन चुका हूं। दिन-ब-दिन वसाविस बढ़ते जा रहे हैं जिससे दिल में शदीद बेक़रारी होती है। बराए करम कोई मुनासिब इलाज मेरे लिए तज्वीज़ फ़रमाइए।

जवाब : नीचे लिखी बातों का एहतिमाम कीजिए—

1. वसाविस से दीन का ज़रर बिल्कुल नहीं होता, इत्मीनान रखिए।
2. किसी दीनी या दुनियावी काम में मशग़ूल हो जाइए।
3. वसाविस को दूर करने की फ़िक्र मत कीजिए, इससे और लिपटते हैं।
4. वसाविस की मिसाल ऐसी है कि जैसे कुत्ता भोंकता है। उसके भगाने की फ़िक्र न की जाए।
5. वसाविस आते ही *'आमनतु बिल्लहि व रसूलिही'* पढ़ लेना काफ़ी है, यानी ईमान लाया मैं अल्लाह और उसके रसूल सल्ल० पर।

(हिस्ने हसीन, पेज 225)

6. *'ला हौ-ल वला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीमि'* का विर्द रखिए।
7. सुबह व शाम इस दुआ का एहतिमाम कीजिए

अल्लाहुम-म फ़-त-रस्समावाति वल अरज़ि आलिमल ग़ैबि वश्शहा-द-त रब-ब कुल्लि शैइंव व मली-कहू अश-हदू अल्लाइ-ला-ह इल्ला अन-त अऊज़ुबि-क मिन शर्रि नफ़्सी व मिन शर्रिश्शैता-न व शिर्केही व अन अक़्तरि-फ़ अला नफ़्सी सूअन औ अजुर्रहू इला मुस्लिम।

(अबू दाऊद, सहीह तिर्मिज़ी, जिल्द 3, पेज 142)

8. *अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम* पढ़िए। दस मर्तबा सुबह।

(हिस्ने हसीन, पेज 225)

9. अल्लाहु अहद, अल्लाहुस्समद, लम यलिद व लम यूलद, व लम यकुल्लहू कुफ़ुवन अहद। (अल्लाह एक है, बेनियाज़ है, न उससे कोई पैदा हुआ न वह किसी से पैदा हुआ, और न कोई उसका हमसर है) पढ़िए।

(हिस्ने हसीन, पेज 225)

वस्सलाम

अल्लाह की रज़ा का तालिब : **मुहम्मद यूनुस पालनपुरी**

मालदार या माल के चौकीदार

यह बात ज़ेहन में बिठा लें कि कुछ लोग मालदार होते हैं और कुछ लोग माल के चौकीदार होते हैं। मालदार तो वे होते हैं जिनके पास माल हो और अल्लाह के रास्ते में ख़ूब लगा रहे हों और माल के चौकीदार वे होते हैं जो रोज़ाना बैंक बैलेन्स चेक करते हैं। वे गिनते रहते हैं कि अब इतने हो गए अब इतने हो गए। वे बेचारे चौकीदारी कर रहे होते हैं। ख़ुद तो चले जाएंगे और उनकी औलादें अय्याशियाँ करेंगी।

दुनियवी ज़िंदगी की मिसाल क़ुरआन ने पानी से क्यों दी है?

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाते हैं :

"और उनको बता दें कि दुनिया की ज़िंदगी की मिसाल ऐसी है जैसे हमने उतारा पानी आसमान से।" (क़ुरआन, 18:45)

इस आयत में अल्लाह तआला ने ज़िंदगी की मिसाल पानी से दी है। दुनिया और पानी में आपको कई चीज़ें मुश्तरका नज़र आएंगी। इस सिलसिले में चन्द मिसालें पेशे ख़िदमत हैं :

1. पानी की सिफ़त है कि वह एक जगह पर कभी नहीं ठहरता। उसे जहां बहने का मौक़ा मिले बहता है। जिस तरह पानी एक जगह पर कभी नहीं ठहरता, उसी तरह दुनिया भी एक जगह नहीं ठहरती। जहां मौक़ा मिलता है दुनिया हाथ से निकल जाती है। जो बन्दा यह समझता है कि मेरे पास दुनिया है, उसके पास से दुनिया रोज़ाना खिसक रही होती है। याद रखें कि यह आहिस्ता-आहिस्ता खिसकती है। किसी के पास से पचास साल में खिसकती

है, किसी के पास से सत्तर साल में खिसकती है और किसी के पास से सौ साल में खिसकती है। मगर बन्दे को पता नहीं चलता। यह हर बन्दे के पास जाती है। मगर यह किसी के पास ठहरती नहीं है। इसने कई लोगों से निकाह किए और उन सबको रंडवा किया। एक बुज़ुर्ग ने एक मर्तबा ख़्वाब में दुनिया को एक कुँवारी लड़की की मानिन्द देखा। उन्होंने पूछा कि तूने लाखों निकाह किए इसके बावजूद कुँवारी ही रही? कहने लगी कि जिन्होंने मुझसे निकाह किए वे मर्द नहीं थे और जो मर्द थे वे मुझसे निकाह करने पर आमादा नहीं हुए।

इसलिए अल्लाहवाले दुनिया की तरफ़ मुहब्बत की नज़र से नहीं देखते। उनकी नज़र में मत्लूबे हक़ीक़ी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ज़ात होती है। लिहाज़ा उनकी तवज्जोह उसी की तरफ़ होती है। वह आख़िरत की लज़्ज़तों के ख़्वाहिशमंद होते हैं। बल्कि जब उनको दुनिया की लज़्ज़तें मिलती हैं तो वे इस बात से घबराते हैं कि ऐसा न हो कि नेक आमाल का अज्र आख़िरत के बजाए कहीं हमें दुनिया ही में न दे दिया जाए।

2. दूसरी सिफ़त यह है कि जो आदमी भी पानी में दाख़िल होता है वह तर हुए बग़ैर नहीं रहता। इसी तरह दुनिया भी ऐसी है कि जो आदमी भी इसमें घुसेगा वह मुतास्सिर हुए बग़ैर नहीं रहता।

3. तीसरी सिफ़त यह है कि पानी जब ज़रूरत के मुताबिक़ हो फ़ायदेमंद होता है और जब ज़रूरत से बढ़ जाए तो नुक़सानदेह होता है। इसी तरह दुनिया भी अगर ज़रूरत के मुताबिक़ हो तो बन्दे के लिए फ़ायदेमंद होती है और जब ज़रूरत से बढ़ जाए तो फिर यह नुक़सान पहुंचाना शुरू कर देती है। पानी का सैलाब जब आता है तो बन्द भी तोड़ देता है क्योंकि वह ज़रूरत से ज़्यादा होता है। इसी तरह जिन लोगों के पास भी ज़रूरत से ज़्यादा माल होता है वे अय्याशियां करते हैं और शरीअत की हुदूद को तोड़ देते हैं। जो लोग जुए की बाज़ियां लगाते हैं और एक-एक रात में लाखों गंवाते हैं वे उनकी ज़रूरत का पैसा नहीं होता है। उन्हें तो इसकी बिल्कुल परवाह ही नहीं होती।

दुनिया इस्तिग़ना से आती है

हमारे अकाबिरीन पर ऐसे-ऐसे वाक़िआत पेश आए कि उन्हें वक़्त के

बादशाहों ने बड़ी-बड़ी जागीरें पेश कीं, मगर उन्होंने अपनी ज़ात के लिए कभी क़बूल न कीं। हज़रत उमर इब्ने ख़त्ताब रज़ि० के पोते हज़रत सालिम रह० एक मर्तबा हरमे मक्का में तशरीफ़ लाए। मताफ़ में आपकी मुलाक़ात वक़्त के बादशाह हिशाम बिन अब्दुल मलिक से हुई। हिशाम ने सलाम के बाद अर्ज़ किया, हज़रत! कोई ज़रूरत हो तो हुक्म फ़रमाएं ताकि मैं आपकी कोई ख़िदमत कर सकूं। आपने फ़रमाया कि हिशाम! मुझे बैतुल्लाह के सामने खड़े होकर ग़ैरुल्लाह के सामने हाजत बयान करते हुए शर्म आती है, क्योंकि अदबे इलाही का तक़ाज़ा है कि यहां फ़क़त उसी के सामने हाथ फैलाया जाए। हिशाम लाजवाब हो गया। क़ुदरतन जब आप हरम शरीफ़ से बाहर निकले तो हिशाम भी ऐन उसी वक़्त बाहर निकला। आपको देखकर वह फिर क़रीब आया और कहने लगा कि हज़रत! अब फ़रमाइए कि मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूं? आपने फ़रमाया कि हिशाम! बताओ मैं तुमसे क्या मांगूं-दीन या दुनिया? हिशाम जानता था कि दीन के मैदान में तो आपका शुमार वक़्त की बुज़ुर्गतरीन हस्तियों में होता है। लिहाज़ा कहने लगा, हज़रत! आप मुझसे दुनिया मांगें। आपने फ़ौरन जवाब दिया कि "दुनिया तो मैंने कभी दुनिया के बनाने वाले से भी नहीं मांगी, भला तुमसे क्या मांगूंगा।" यह सुनते ही हिशाम का चेहरा लटक गया और वह अपना-सा मुंह लेकर रह गया।

शैतान रिश्वत नहीं लेता है

इमाम ग़ज़ाली रह० फ़रमाते हैं कि शैतान हमारा ऐसा दुश्मन है जो भी रिश्वत क़बूल नहीं करता, बाक़ी दुश्मन ऐसे होते हैं कि अगर कोई हदिये, तोहफ़े और रिश्वत दे दे तो वे नर्म पड़ जाएंगे और मुख़ालिफ़त छोड़ देंगे और अगर ख़ुशामद की जाए तो उसे भी व मान जाएंगे मगर शैतान वह दुश्मन है जो न तो रिश्वत क़बूल करता है और न ख़ुशामद क़बूल करता है। यह कोई नहीं कह सकता कि हम एक दिन बैठकर उसकी ख़ुशामद कर लेंगे और यह हमारी जान छोड़ जाए। यह हरगिज़ नहीं छोड़ेगा, इसलिए कि यह ईमान का डाकू है और इसकी हर वक़्त इस बात पर नज़र है कि मैं किस तरह इंसान को ईमान से महरूम कर दूं।

वुज़ू की तर्तीब में सुन्नत को फ़र्ज़ पर मुक़द्दम क्यों किया?

मुकर्रम व मुहतरम,

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

सवाल : बाद सलाम, गुज़ारिश है कि मुझे एक तालिब इल्माना सवाल होता है कि वुज़ू में चेहरे का धोना फ़र्ज़ की रू से ज़रूरी है जबकि इस फ़र्ज़ियत की अदाएगी से पहले हाथ भी धोते हैं, कुल्ली भी करते हैं और नाक में भी पानी डालते हैं जबकि ये सब चीज़ें सुन्नत की क़बील से हैं तो वुज़ू की तर्तीब में हक़ यह बनता है कि फ़र्ज़ पहले हो और सुन्नतें बाद में हों, लिहाज़ा सुन्नत को फ़र्ज़ पर मुक़द्दम क्यों किया?

जवाब : फ़ुक़हा ने इसका यही जवाब दिया है कि जब कोई आदमी पानी से वुज़ू करने लगेगा और वह अपने हाथ में पानी लेगा तो उसे आंखों से देखकर पानी के रंग का पता चलेगा, जब मुंह में डालेगा तो ज़ायक़े का पता चलेगा और जब नाक में डालेगा तो उसे बू का पता चल जाएगा। इसी तरीक़े से जब उसे तसल्ली हो जाएगी कि पानी का रंग भी ठीक है, उसका ज़ायक़ा भी ठीक है और उसकी बू भी ठीक है तो वह शरीअत का हुक्म पूरा करने के लिए चेहरे को धोएगा।

मुकर्रम व मुहतरम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

सवाल : बाद सलाम, गुज़ारिश है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में दुनिया को खेल-तमाशा क्यों फ़रमाया?

जवाब : क़ुरआन में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया :

> "और यह दुनिया की ज़िंदगी नहीं मगर खेल-तमाशा है, और आख़िरत की ज़िंदगी तो हमेशा रहनेवाली है। काश यह जान लेते!" (क़ुरआन, 29:64)

जवाब (1) : दुनिया में सबसे जल्दी ख़त्म होने वाली चीज़ खेल-तमाशा है। जितने भी खेल-तमाशे हैं वे चन्द घड़ियों के होते हैं। स्क्रीन पर तमाशा देखें तो भी चन्द घड़ियों का होता है। सरकस का तमाशा भी चन्द घड़ियों

का होता है, रीछ-बन्दर का तमाशा भी चन्द घड़ियों का होता है। अल्लाह तआला ने भी दुनिया को खेल-तमाशे से तशबीह दी है, ताकि लोगों को पता चल जाए कि दुनिया घड़ी-दो-घड़ी का मामला है। यही वजह है कि क़यामत के दिन कहेंगे :

"वे नहीं ठहरे मगर एक घड़ी।" (अर-रूम : 55)

हत्ताकि कुछ तो यहां तक कहेंगे :

"वे दुनिया में नहीं रहे मगर थोड़ा-सा वक़्त या शाम का थोड़ा-सा वक़्त।"

सौ साल की ज़िन्दगी भी थोड़ी-सी नज़र आएगी गोया :

"ख़्वाब था जो कुछ देखा, जो सुना अफ़साना था।"

जवाब 2. दुनिया को खेल-तमाशे से तशबीह देने में दूसरी बात यह थी कि आम तौ पर खेल तमाशा देखने के बाद बन्दे को अफ़सोस ही होता है और वह कहता है कि बस पैसे भी ज़ाया किए और वक़्त भी ज़ाया किया। अक्सर देखने में आता है कि जो लोग खेल-तमाशा देखते हैं वे बाद में कहते हैं कि बस हम ऐसे ही चले गए, हमारे कई ज़रूरी काम रह गए हैं। दुन्यादार का भी बिल्कुल यही हाल होता है कि अपनी मौत के वक़्त अफ़सोस करता है कि मैंने तो अपनी ज़िन्दगी ज़ाया कर दी।

जवाब 3. एक वजह यह भी है कि आजकल के खेल-तमाशे आम तौर पर साए की मानिन्द होते हैं। स्क्रीन पर तो नज़र आता है कि बन्दे चल रहे हैं मगर हक़ीक़त में उनका साया चल रहा होता है और जो उनके पीछे भागते हैं वे साए के पीछे भाग रहे होते हैं। दुनिया का मामला भी ऐसा ही है, जो उसके पीछे भागता है वह भी साए के पीछे भाग रहा होता है, उससे कुछ हासिल नहीं होता।

बेहतरीन माल वह है जो जेब में हो दिल में न हो
बदतरीन माल वह है जो जेब में न हो दिल में हो

माल की मिसाल पानी की-सी है। कश्ती के बचने के लिए पानी ज़रूरी

है। मगर कश्ती तब चलती है जब पानी कश्ती के नीचे होता है और अगर नीचे की बजाए पानी कश्ती के अंदर आ जाए तो यही पानी उसके डूबने का सबब बन जाएगा। यहां से मालूम हुआ कि ऐ मोमिन! तेरा माल पानी की तरह है और तू कश्ती की मानिन्द है, अगर यह माल तेरे नीचे रहा तो तेरे तैरने का ज़रिया बनेगा और अगर यहां से निकल कर तेरे दिल में आ गया तो फिर यह तेरे डूबने का सबब बन जाएगा। इसलिए साबित हुआ कि अगर माल जेब में हो तो वह बेहतरीन ख़ादिम है और अगर दिल में हो तो बदतरीन आक़ा है। (मल्फ़ूज़ात वालिद साहब)

मियाँ-बीवी को शैतान जल्दी लड़ा देता है

शैतान ख़ुशगवार इज़्दवाजी ज़िन्दगी को क़तअन नापसन्द करता है। वह चाहता है कि मियां-बीवी में रंजिश पैदा हो और इज़्दवाजी ताल्लुक़ात में ख़राबी पैदा हो। वह ख़ास तौर पर ख़ाविन्दों के दिमाग़ में फ़ुतूर डालता है। लिहाज़ा ख़ाविन्द बाहर दोस्तों के अंदर गुलाब का फूल बना रहता है और घर के अंदर करेला नीम चढ़ा बन जाता है। नौजवान आकर कहते हैं, हज़रत! पता नहीं क्या वजह है कि घर में आते ही दिमाग़ गरम हो जाता है। असल में शैतान गरम कर रहा होता है। वह मियां-बीवी के दर्मियान उल्झनें पैदा करना चाहता है।

शैतान पहले मियां बीवी के दर्मियान झगड़ा करवा कर ख़ाविन्द के मुंह से तलाक़ के अल्फ़ाज़ कहलवाता है। जब उसकी अक़्ल ठिकाने आती है तो वह कहता है मैंने तो गुस्से में तलाक़ के अल्फ़ाज़ कह दिए थे। चुनांचे वे बग़ैर किसी को बताए मियां-बीवी के तौर पर आपस में रहना शुरू कर देंगे। वह जितना अर्सा इसी हाल में एक-दूसरे से मिलते रहेंगे तब तक उन्हें ज़िना का गुनाह मिलता रहेगा। अब देखें कि कितना बड़ा गुनाह करवा दिया, यह ऐसे कलीदी गुनाह करवाता है।

हदीस पाक में आया है कि क़ुर्बे क़यामत की अलामत में से है कि ख़ाविन्द अपनी बीवियों को तलाक़ देंगे औ फि बग़ैर निकाह और रुजूअ के उनके साथ इसी तरह अपनी ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।

शैतान की शरारत

एक मर्तबा एक आदमी ने शैतान को देखा। उसने कहा, मर्दूद! तो बड़ा ही बदमाश है, तूने क्या फ़साद मचाया हुआ है, अगर तो आराम से एक जगह बैठ जाता तो दुनिया में अम्न हो जाता। वह मर्दूद जवाब में कहने लगा, मैं तो कुछ नहीं करता, सिर्फ़ उंगली लगाता हूं। उसने पूछा, क्या मतलब? शैतान ने कहा, अभी देखना। क़रीब ही एक हलवाई की दुकान थी। वहां किसी बर्तन में शीरा पड़ा हुआ था। शैतान ने उंगली शीरे में डुबोई और दीवार पर लगा दी। मक्खी आकर शीरे पर बैठ गई। उसस मक्खी को खाने के लिए एक छिपकली आ गई। साथ ही एक आदमी काम कर रहा था। उसने छिपकली को देखा तो उसने जूता उठाकर छिपकली को मारा। वह जूता दीवार से टकरा कर हलवाई की मिठाई पर गिरा। जैसे ही जूता मिठाई पर गिरा तो हलवाई उठ खड़ा हुआ और गुसे में आकर कहने लगा, ओए! तूने मेरी मिठाई में जूता क्यों मारा? अब वे उलझने लग गए। इधर से उसके दोस्त आ गए और उधर से उसके दोस्त पहुंच गए। बिल आख़िर ऐसा झगड़ा मचा कि ख़ुदा की पनाह। अब शैतान उस आदमी से कहने लगा, देख! मैं नहीं कहता था कि मैं तो सिर्फ़ उंगली लगाता हूं। जब उसकी एक उंगली का यह फ़साद है तो पूरे शैतान में कितनी नहूसत होगी। (मल्फ़ूज़ात हज़रत मौलाना थानवी रह०)

हसद और हिर्स दो ख़तरनाक रूहानी बीमानियां हैं

जब हज़रत नूह अलैहि० अपने उम्मतियों को लेकर कश्ती में बैठे तो उन्हें कश्ती में एक बूढ़ा नज़र आया। उसे कोई पहचानता भी नहीं था। आप अलैहि० ने हर चीज़ का जोड़ा कश्ती में बिठाया मगर वह अकेला था। लोगों ने उसे पकड़ लिया। वह हज़रत नूह अलैहि० से पूछने लगे कि यह बूढ़ा कौन है? हज़रत नूह अलैहि० ने उससे पूछा, बताओ तुम कौन हो? वह कहने लगा, जी मैं शैतान हूं। आपने सुनकर फ़रमाया, तू इतना चालाक बदमाश है कि कश्ती में आ गया। कहने लगा, जी मुझसे ग़लती हो गई अब आप मुझे माफ़ फ़रमा दें। आपने फ़रमाया, तुम्हें हम ऐसे ही नहीं छोड़ेंगे, तू हमें अपना गुण बता जा जिससे तू लोगों को सबसे ज़्यादा नुक़सान पहुंचाता है। कहने लगा, जी मैं सच-सच बताऊंगा अलबत्ता आप वादा करें कि आप मुझे छोड़ देंगे।

आपने फ़रमाया, ठीक है हम तुम्हें छोड़ देंगे। वह कहने लगा– मैं दो बातों से इंसान को ज़्यादा नुक़्सान पहुंचाता हूं :

1. हसद 2. हिर्स

फिर वह कहने लगा कि हसद एक ऐसी चीज़ है कि मैं ख़ुद उसकी वजह से बर्बाद हुआ और हिर्स वह चीज़ है जिसकी वजह से आदम अलैहि० को जन्नत से ज़मीन पर उतार दिया गया। इसलिए मैं इन्हीं दो चीज़ों की वजह से इंसान को सबसे ज़्यादा नुक़्सान पहुंचाता हूँ।

वाक़ई ये दोनों ऐसी ख़तरनाक बीमानियां हैं जो तमाम बीमानियों की बुनियाद बनती हैं। आज के सब लड़ाई-झगड़े या तो हसद की वजह से हैं या हिर्स की वजह से। हासिद इंसान अंदर ही अंदर आग में जलता रहता है। वह किसी को अच्छी हालत में देख नहीं सकता। दूसरे इंसान पर अल्लाह तआला की नेमतें होती हैं और हासिद के अंदर मरोड़ पैदा होते हैं कि वह अच्छी हालत में क्यों है। (मल्फ़ूज़ात हज़रत जी मौलाना इनामुल हसन साहब रह०, ख़ुसूसी मज्लिस में)

शैतान की चालाकियां

एक दफ़ा शैतान की हज़रत मूसा अलैहि० से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने पूछा, तू कौन है? वह कहने लगा, मैं शैतान हूं। उन्होंने फ़रमाया, तू लोगों को गुमराह करने के लिए बड़े डोरे डालता फिरता है, तेरे तजुर्बे में कौन-सी बात आई है? वह कहने लगा, आपने तो बड़ी अजीब बात पूछी है, यह कैसे हो सकता है कि मैं आपको अपनी सारी ज़िन्दगी का तजुर्बा बता दूँ। हज़रत मूसा अलैहि० ने फ़रमाया, फिर क्या है बता दे। वह कहने लगा, तीन बातें मेरे तजुर्बात का निचोड़ हैं–

1. पहली बात तो यह है कि अगर आप सदक़ा करने की नीयत कर लें तो फ़ौरन दे देना क्योंकि मेरी कोशिश यह होती है कि नीयत करने के बाद बन्दे को भुला दूं। जब मैं किसी को भुला देता हूं तो फिर उसे याद ही नहीं होता कि मैंने नीयत की थी या नीं।
2. दूसरी बात यह है कि जब आप अल्लाह तआला से कोई वादा करें तो उसे फ़ौरन पूरा कर देना क्योंकि मेरी कोशिश यह होती है कि मैं उस

वादे को तोड़ दूं।

मसलन कोई वादा करे कि ऐ अल्लाह! मैं यह गुनाह नहीं करूंगा तो मैं ख़ास मेहनत करता हूं कि वह उस गुनाह में ज़रूर मुब्तला हो।

3. तीसरी बात यह है कि किसी ग़ैर-महरम के साथ तंहाई में न बैठना क्योंकि मैं मर्द की कशिश औरत के दिल में पैदा कर देता हूं और औरत की कशिश मर्द के दिल में पैदा कर देता हूं। मैं यह काम अपने चेलों से नहीं लेता बल्कि मैं बज़ाते खुद यह काम करता हूँ। (तल्बीसे इब्लीस)

मौत के वक़्त मरीज़ के क़रीब जाकर मत कहो कि मुझे पहचानते हो कि नहीं

अगर मरीज़ एक दफ़ा कलिमा पढ़ ले तो उसके साथ बार-बार बातें मत करो और उसका आख़िरी कलाम कलिमा ही रहने दें। ऐसा न हो कि बहन आकर कहे, मुझे पहचान रहे हो, मैं कौन हूं? उस वक़्त उससे अपनी पहचान मत करवाएं और ख़ामोश रहें हैं ताकि उसका पढ़ा हुआ कलिमा अल्लाह तआला के यहां क़बूल हो जाए। ये चीज़ें साहिबे दिल लोगों के पास बैठकर समझ में आती हैं वरना अक्सर रिश्तेदार उस पर ज़ुल्म करते हैं और उसे उस वक़्त कलिमे से महरूम कर देते हैं। अल्लाह करे कि मौत के वक़्त कोई साहिबे दिल पास हो जो बन्दे को उस वक़्त कलिमा पढ़ने की तल्क़ीन कर दे। आमीन!

शैतान दो सिम्तें भूल गया इसलिए हम बच गए

जब शैतान ने कहा कि ऐ अल्लाह! मैं औलादे आदम पर दाएं, बाएं, आगे और पीछे चारों तरफ़ से हमले करूंगा। तो फ़रिश्ते यह सुनके बड़े हैरान हुए। अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "मेरे फ़रिश्ते! इतने मुताज्जुब क्यों हो रहे हो?" फ़रिश्तों ने कहा, ऐ अल्लाह! अब तो इब्ने आदम के लिए मुश्किल बन गई है, वह तो इस मरदूद के हथकंडों से नहीं बच सकेंगे। परवरदिगारे आलम ने फ़रमाया : "तुम इतने मुतज्जुब न हो, उसने चार सिम्तों का नाम तो लिया है मगर ऊप और नीचे वाली दो सिम्तों को भूल गया है इसलिए मेरा गुनाहगार

बन्दा जब कभी नादिम और शर्मिन्दा होकर मेरे दरपे आ जाएगा और अपने हाथ मांगने के लिए उठा लेगा, तो अभी मेरे बन्दे के हाथ नीचे नहीं जाएंगे कि मैं उससे पहले उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा दूंगा। और अगर कभी मेरा बन्दा नादिम व शर्मिन्दा होकर मेरे दर पर आकर अपने सर को झुका देगा तो चूंकि सर नीचे की सिम्त को झुकाएगा और शैतान नीचे की सिम्त से असर-अंदाज़ नहीं हो सकेगा इसलिए मेरा बन्दा अभी सज्दा से सर नहीं उठाएगा कि उससे पहले मैं उसके गुनाह माफ़ फ़रमा दूंगा।

मेरे दोस्तो! ऊपर और नीचे की सिम्तें महफ़ूज़ हैं इसलिए परवरदिगारे आलम से अपने गुनाहों की माफ़ी मांग लीजिए। तंहाइयों में हाथ उठाकर माफ़ी मांगिए, सज्दे में सर डाल कर माफ़ी मांगिए। आप हज़रात अल्लाह के दर की चोखट को पकड़ कर बैठे हैं, क्या बईद है कि हम में किसी की नदामत अल्लाह को पसन्द आए और उसके इख़्लास की बरकत से अल्लाह तआला सब की तौबा को क़बूल फ़रमा ले।

रब्बे करीम! हमें आने वाली ज़िन्दगी में शैतान के हथकंडों से महफ़ूज़ फ़रमा ले और मौत के वक़्त ईमान की हिफ़ाज़त अता फ़रमा दे। (आमीन सुम-म आमीन!)

डॉक्टर मौत के वक़्त नशे का इंजक्शन न दे

जब आप देखें कि किसी की मौत का वक़्त क़रीब है तो उसे डॉक्टरों से बचाएं। अल्लाह उन डॉक्टरों को हिदायत दे कि वे मौत की अलामात ज़ाहिर होने के बाद भी उसे नशे का टीका लगा देते हैं। नशे का टीका लगने की वजह से उस बेचारे को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ ही नहीं मिलती और वह इसी तरह दुनिया से चला जाता है। इसलिए जब पता चल जाए कि अब मौत का वक़्त क़रीब है तो डॉक्टर को डांट कर कहें कि ख़बरदार इसे नशे का इंजक्शन मत लगाना, क्योंकि हम मुसलमान हैं और मोमिन मरने के लिए हर वक़्त तैयार होता है। उससे कह दें कि जनाब! आप अपनी तरफ़ से इसका इलाज कर चुके हैं, अब चूंकि मौत की अलामत ज़ाहिर हो रही हैं इसलिए इसे अल्लाह के हुज़ूर में पहुंचने के लिए तैयारी करने दें और इसे होश में रहने दें ताकि आख़िरी वक़्त में कलिमा पढ़ कर दुनिया से रुख़्सत हो।

बैतुल्लाह जाइए और यह अशआर पढ़िए

शुक्र है तेरा ख़ुदाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
तूने अपने घर बुलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
अपना दीवाना बनाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
गिर्द काबा के फिरवाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
मुद्दतों की प्यार को सैराब तूने कर दिया
जाम ज़मज़म का पिलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
डाल दी ठंडक मेरे सीने में तूने साक़िया
अपने सीने से लगा लिया, मैं तो इस क़ाबिल न था
भा गया मेरी ज़बान को ज़िक्र इल्लल्लाह का
यह सबक़ किसने पढ़ाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
ख़ास अपने दर का रखा तूने ऐ मौला मुझे
यूं नहीं दर-दर फिराया, मैं तो इस क़ाबिल न था
मेरी कोताही कि तेरी याद से ग़ाफ़िल रहा
पर नहीं तूने भुलाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
मैं कि था बेराह तूने दस्तगीरी आप की
तू ही मुझको दर पर लाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
अहद जो रोज़े अज़ल में किया था याद है
अहद वो किसने निभाया, मैं तो इस क़ाबिल न था
तेरी रहमत तेरी शफ़क़त से हुआ मुझको नसीब
गुंबदे ख़िज़रा का साया, मैं तो इस क़ाबिल न था
मैंने जो देखा सो देखा बारगाहे क़ुद्दस में
और जो पाया सो पाया, मैं तो इस क़ाबिल न था

बारगाहे सय्यदुल कौनैन सल्ल० में आकर यूनुस
सोचता हूं कैसे आया, मैं तो इस क़ाबिल न था

आठ घंटे की ड्यूटी आसान है आठ मिनट की तहज्जुद मुश्किल है

कितनी अजीब बात है कि वह दुकान और दफ़्तर जिससे इंसान को सबब के तौर पर रिज़्क़ मिलता है। वहां वह रोज़ाना आठ घंटे ड्यूटी देता है। ऐ इंसान! जिस सबब से तुझको रिज़्क़ मिलता है उस सबब पर मेहनत करने में रोज़ाना आठ घंटे लगाता है और मुसब्बिबुल असबाब जहां से बग़ैर सबब के रिज़्क़ मिलता है उसके सामने दामन फैलाने की तुझे आठ मिनट की भी फ़ुरसत नहीं है। क्या कभी किसी ने आठ मिनट तहज्जुद के वक़्त अल्लाह के सामने दामन फैलाया? वहां तो सबब के बग़ैर डायरेक्ट मिल रहा होता है। अरे! वास्ते के ज़रिए लेने पर आठ घंटे और जहां से बिला वास्ते मिलता है वहां आठ मिनट भी नहीं दिए। हमें चाहिए कि हम तंहाई में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के सामनें बैठें और अपने सब अहवाल उसी के सामने बयान करें। क्योंकि अल्लाह तआला इस बात से खुश होते हैं कि बन्दा हर चीज़ उसी से मांगे और हर वक़्त उसी से मांगे और नेमतें मिलने पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे।

आप के दिल में आ गया कि मैं अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्र अदा नहीं कर सकता गोया कि आपने शुक्र अदा कर लिया

हज़रत मूसा अलैहि० ने एक मर्तबा अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह "कै-फ़ अश्कु-रु-क" मैं आपका शुक्र कैसे अदा करूं? क्योंकि आपकी एक-एक नेमत ऐसी है कि मैं सारी ज़िन्दगी भी इबादत में लगा रहूं तो मैं सिर्फ़ एक नेमत का भी शुक्र अदा नहीं कर सकता, और आपकी तो बेइंतिहा नेमतें हैं। मैं उन सब नेमतों का शुक्र कैसे अदा कर सकता हूं? जब उन्होंने यह कहा तो अल्लाह ने उसी वक़्त उन पर वह्य नाज़िल फ़रमाई और फ़रमाया कि "ऐ मूसा! अगर आपके दिल में यह बात है कि आप सारी ज़िन्दगी शुक्र अदा करें तो भी शुक्र अदा नहीं कर सकते तो सुन लें कि "अल

आ-न शकरतनी" अब तो आपने मेरा शुक्र अदा करने का हक़ अदा कर दिया है।" सुब्हानल्लाह

अल्लाह ने आपको बहुत माल दिया है उसमें दूसरों का भी हक़ है

मेरे दोस्तो! बाज़ औक़ात अल्लाह तआला ने इंसान को रिज़्क़ की फ़रावानी इसलिए भी ज़्यादा दी होती है कि वह रिज़्क़ उसका अपना नहीं होता बल्कि वह तलबा, ग़ुरबा और अल्लाह के दूसरे मुस्तहिक़ बन्दों का होता है। अल्लाह तआला ने उसको इसलिए दिया होता है ताकि वह उन तक यह पहुंचा दे। मगर जब वह अल्लाह के रास्ते पर ख़र्च नहीं करता और डाक नहीं पहुंचाता तो अल्लाह तआला उस डाकिये को माज़ूल कर देते हैं और उसकी जगह किसी और को ज़रिया बना देते हैं।

इसलिए जब अल्लाह तआला ज़रूरत से ज़्यादा रिज़्क़ दे तो समझिए कि उसमें सिर्फ़ मेरा ही हक़ नहीं बल्कि 'वल्लज़ी-न फ़ी अमवालिहिम हक़्कुम मालूम० लिस्सा-इ-लि वल महरूम०' (अल-मआरिज : 24-25) के मिस्दाक़ उसमें अल्लाह के बन्दों का भी हक़ है। यह भी अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नेमतों का शुक्र है। रब्बे करीम हमें अपनी नेमतों की क़द्रदानी की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें और हमें महरूमियों से महफ़ूज़ फ़रमा दें। कुफ़्फ़ार के सामने ज़लील व रुसवा होने से महफ़ूज़ फ़रमा लें और जिस तरह परवरदिगार ने हमारे सर को ग़ैर के सामने झुकने से बचा लिया वह परवरदिगार हमारे हाथों को भी ग़ैर के सामने फैलने से महफ़ूज़ फ़रमा ले। (आमीन सुम-म आमीन!)

बन्दों से अल्लाह की एक शिकायत

अता इब्ने अबी रिबाह रह० अल्लाह के एक बुज़ुर्ग सालेह बन्दे गुज़रे हैं। वह फ़रमाया करते थे कि "एक मर्तबा अल्लाह तआला ने मेरे दिल में यह बात इल्क़ा फ़रमाई कि ऐ अता! उन लोगों से कह दो कि अगर उनको रिज़्क़ की थोड़ी-सी तंगी पहुंचे तो यह फ़ौरन महफ़िल में बैठकर मेरे शिकवे करना शुरू कर देते हैं जबकि उनके नाम-ए-आमाल गुनाहों से भरे हुए मेरे पास आते हैं, मगर मैं फ़रिश्तों की महफ़िल में उनकी शिकायतें बयान नहीं करता।

राबिआ बसरिया रह० की नसीहत अजीब अंदाज़ में

राबिआ बसरिया रह० एक मर्तबा कहीं ठहरी थीं। उनके क़रीब से एक नौजवान गुज़रा। उसने अपने सर में पट्टी बांधी हुई थी। उन्होंने पूछा, बेटा क्या हुआ? उसने का, अम्मा! मेरे सर में दर्द है जिसकी वजह से पट्टी बांधी हुई है। पहले तो कभी दर्द नहीं हुआ। उन्होंने पूछा, बेटा आप की उम्र कितनी है? वह कहने लगा, जी मेरी उम्र तीस साल है। यह सुनकर वह फ़रमाने लगीं, बेटा! तेरे सर में तीस साल तक दर्द नहीं हुआ, तूने शुक्र की पट्टी तो कभी न बांधी, तुझे पहली दफ़ा दर्द हुआ है तो तूने शिकवे की, शिकायत की पट्टी फ़ौरन बांध ली है। हमारा हाल भी यही है कि हम साल्हा साल उसकी नेमतें और सुकून की ज़िंदगी गुज़ारते हैं, हम उसका तो शुक्र अदा नहीं करते और जब ज़रा-सी तकलीफ़ पहुंचती है तो फ़ौरन शिकवे कना शुरू कर देते हैं।

नेमतों की बक़ा का आसान नुस्ख़ा

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त फ़रमाते हैं– *'लइन श-करतुम ल-अइज़ीदन्नकुम'* (इबराहीम : 7) अगर तुम शुक्र अदा करोगे तो हम अपनी नेमतें ज़रूर बिल ज़रूर और ज़्यादा अता करेंगे। गोया शुक्र एक ऐसा अमल है कि जिसकी वजह से नेमतें बाक़ी रहती भी हैं और बढ़ती भी चली जाती हैं।

टूटे रिश्ते वह जोड़ देता है
बात रब पर जो छोड़ देता है
उसके लुत्फ़ व करम का क्या कहना
लाख मांगो करोड़ देता है

यही वजह है कि हमेशा मांगने वालों को अपने मांगने में कमी का शिकवा रहा जबकि देने वाले के ख़ज़ाने बहुत ज़्यादा हैं और मांगने वालों के दामन छोटे हैं जो जल्दी भर जाते हैं।

अल्लाह तआला की नेमतों का शुक्र अदा कीजिए

एक मर्तबा सुलेमान बिन हरब रह० तशरीफ़ फ़रमा थे। वक़्त का

बादशाह हारून रशीद उस वक़्त उनके दरबार में मौजूद था। हारून रशीद को प्यास लगी। उसने अपने ख़ादिम से कहा कि मुझे पानी पिलाओ। ख़ादिम एक ग्लास में ठंडा पानी लेकर आया। जब बादशाह ने ग्लास हाथ में पकड़ लिया तो सुलैमान बिन हरब रह० ने उनसे कहा कि बादशाह सलामत! ज़रा रुक जाइए। वह रुक गए। उन्होंने कहा कि मुझे एक बात बताइए कि जैसे आपको अभी प्यास लगी है ऐसे ही आपको प्यास लगे और पूरी दुनिया में उस पानी के सिवा कहीं और पानी न हो तो आप यह बताएं कि आप इस प्याले को कितनी क़ीमत में ख़रीदने पर तैयार हो जाएंगे? हारून रशीद ने कहा, मैं तो आधी सल्तनत दे दूंगा। फिर सुलैमान बिन हरब रह० ने फ़रमाया कि अगर आप यह पानी पी लें और यह आपके पेट में चला जाए, लेकिन अंदर जाकर आपका पेशाब बन्द हो जाए और फिर वह निकल न पाए और पूरी दुनिया में सिर्फ़ एक डॉक्टर या हकीम हो जो इसे निकाल सकता हो तो बताइए कि इसको निकालने की फ़ीस कितनी देंगे? सोच कर हारून रशीद ने कहा, बक़िया आधी सल्तनत भी उसको दे दूंगा। वह कहने लगे, बादशाह सलामत! ज़रा ग़ौर करना कि आपकी पूरी सल्तनत पानी का एक प्याला पीने और पेशाब बनकर निकलने के बराबर है।

अगर हम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की नेमतों पर ग़ौर करें तो फिर दिल से यह आवाज़ निकलेगी कि हमें अपने रब का बहुत ज़्यादा शुक्र अदा करना चाहिए। हम पर तो उसकी बड़ी नेमतें हैं। हम तो वाक़ई उनका शुक्र अदा ही नहीं कर सकते।

माद्दी एतिबार से अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की जितनी नेमतें आज हैं उतनी इससे पहले नहीं थीं। आज का आम बन्दा भी पहले वक़्त के बादशाहों से कई मामलात में बेहतर ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। पहले वक़्त के बादशाहों के घरों में घी के चराग़ जलते थे जबकि आज के ग़रीब आदमी के घर में भी बिजली का क़ुमक़ुा जलता है। ऐसी रौशनी पहले वक़्त के बादशाहों को भी नसीब नहीं थी। बादशाहों के ख़ादिम उनको हाथ से पंखा किया करते थे जबकि आज के ग़रीब आदमी के घर में भी बिजली का पंखा मौजूद है। जो ठंडा पानी आज एक आदमी को हासिल है वह पहले वक़्त के बादशाहों को भी हासिल नहीं था। उस पर क़यास करते जाइए कि पहले वक़्त के बादशाह

अगर सफ़र करते थे तो उनको घोड़ों पर सफ़र करना पड़ता था और उन्हें एक एक महीने सफ़र में लग जाता था। आप घोड़े पर सवार होकर दिल्ली से मुम्बई जाना चाहे तो यह एक दिन सवार होगा और दूसरे दिन सूरज डूबने से पहले मुम्बई पहुंच चुका होगा। पहले वक़्त के बादशाहों को सिर्फ़ मौसम के फल मिलते थे जबकि आज एक आम ग़रीब आदमी को भी बेमौसम के फल नसीब हैं। पहले इलाक़ाई फल मिला करते थे जबकि आज आदमी को दूसरे मुल्कों के फल भी हासिल हो जाते हैं और वह मज़े से खा रहा होता है। अल्लाह तआला ने अपने बन्दों की कमज़ोरी को देखते हुए ये नेमतें आम कर दी।

गोया माद्दी एतिबार से नेमतों की जितनी बारिश आज है उतनी पहले कभी नहीं थी लेकिन उसके बावजूद अल्लाह तआला की जितनी नाशुक्री आज है, उससे पहले कभी नहीं थी। जिसकी ज़बान से सुनो, उसकी ज़बान पर नाशुक्री है, हर बन्दा कहेगा कि कारोबार अच्छा नहीं, घर में मुश्किलात हैं और सेहत ख़राब है। हज़ारों में से कोई एक बन्दा होगा जिससे बात करें तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करेगा। आख़िर वजह क्या है? खाने पीने की बहुतायत का यह आलम है कि आज का फ़क़ीर और भिखारी भी रोटी नहीं मांगता बल्कि सिगरेट पीने के लिए दो रुपये मांगता है। इसलिए कि उसे नशा करना है, और मज़ीद बात यह है कि वही भिखारी मोबाइल फ़ोन उठाए फिरता हुआ मिलेगा। नागपाड़ा पर एक फ़क़ीर को 2 रुपये दिए, उसने जेब में से 5 रुपये निकाल कर मुझे दिए कि बच्चों को चाय पिला देना, अब 2 रुपये का ज़माना नहीं है।

एक अहम नसीहत

कुछ चीज़ें वज़न में इतनी हल्की होती हैं कि वह पानी के साथ बह जाती हैं, मसलन काग़ज़, लकड़ी और घास फूस वग़ैरह। लेकिन कुछ चट्टानें होती हैं जो पानी के साथ बहती नहीं बल्कि वह पानी का रुख़ मोड़ देती हैं। हम मोमिन हैं इसलिए हम घास फूस और तिनके न बनें बल्कि हम चट्टान बन जाएं और बहते हुए पानी का रुख़ फेर दें।

दरख़्त ने सिर्री सक़ती को नसीहत की

एक मर्तबा हज़रत सिर्री सक़ती रह० जा रहे थे, दोपहर का वक़्त था। उन्हें नींद आई। वह क़ैलुला की नीयत से एक दरख़्त के नीचे सो गए। कुछ देर लेटने के बाद जब उनकी आंख खुली तो उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। उन्होंने ग़ौर किया तो पता चला कि उस दरख़्त में से आवाज़ आ रही थी जिसके नीचे वह लेटे हुए थे। जी हां, जब अल्लाह तआला चाहते हैं तो ऐसे वाक़ियात रूनुमा कर देते हैं। दरख़्त उनसे कह रहा था, 'या सिर-रि कुन मिसली' ऐ सिर्री तू मेरे जैसा हो जा। वह यह आवाज़ सुनकर बड़े हैरान हुए। जब पता चला कि यह आवाज़ दरख़्त से आ रही है तो आपने उस दरख़्त से पूछा, 'कै-फ़ अकूनु मिस-ल-क' कि ऐ दरख़्त मैं तेरे जैसा कैसे बन सकता हूं? दरख़्त ने जवाब दिया, *'इन्नल्लज़ी-न यरमूननी बिल अहजाबरि फ़-अरमीहिम बिल असमारि'* ऐ सिर्री! जो लोग मुझ पर पत्थर फेंकते हैं मैं उन लोगों की तरफ़ अपने फल लौटाता हूं। इसलिए तू भी मेरे जैसा बन जा। वह उसकी बात सुनकर और भी ज़्यादा हैरान हुए। मगर अल्लाह वालों को फ़िरासत मिली होती है लिहाज़ा उनके ज़ेहन में फ़ौरन ख़्याल आया कि अगर यह दरख़्त इतना ही अच्छा है कि जो उसे पत्थर मारे, यह उसे फल देता है तो फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने दरख़्त की लकड़ी को आग की ग़िज़ा क्यों बनाया? उन्होंने पूछा कि ऐ दरख़्त! अगर तू इतना ही अच्छा है तो 'फ़ कै-फ़ मसीरु-क इलन्नार?' यह बता कि अल्लाह तआला ने तुझे आग की ग़िज़ा क्यों बना दिया? इस पर दरख़्त ने जवाब दिया, ऐ सिर्री! मेरे अंदर ख़ूबी भी बहुत बड़ी है मगर उसके साथ ही एक ख़ामी भी बहुत बड़ी है। उस ख़ामी ने मेरी इतनी बड़ी ख़ूबी पर पानी फेर दिया है। अल्लाह तआला को मेरी ख़ामी इतनी नापसन्द है कि अल्लाह तआला ने मुझे आग की ग़िज़ा बना दिया है। मेरी ख़ामी यह है कि 'फ़अमलै-तु बिल-हवा हाकज़ा हाकज़ा', जिधर की हवा चलती है मैं उधर को ही डोल जाता हूँ, यानी मेरे अंदर इस्तिक़ामत नहीं है।

तकब्बुर की सज़ा दुनिया में जल्दी मिलती है अल्लाह हिफ़ाज़त फ़रमाए

एक बड़ा ज़मींदार आदमी था। अंग्रेज़ों की हुकूमत ने उसे इतनी ज़मीनें दीं कि रेलगाड़ी चलती तो अगला स्टेशन उसकी ज़मीन से आता था, फिर

रेलगाड़ी चलती तो दूसरा स्टेशन भी उसकी ज़मीन ही में आता था, फिर रेलगाड़ी चलती तो तीसरा स्टेशन भी उसकी ज़मीन से आता था। गोया रेलगाड़ी के तीन स्टेशन उसकी ज़मीनों में आते थे। वह अरबोंपती आदमी था। उसका आलिशान घर था। ख़ूबसूरत बीवी थी और एक ही बेटा था। उसकी ज़िन्दगी ठाट की गुज़र रही थी। वह एक मर्तबा अपने दोस्तों के साथ शहर के एक चौक में खड़ा आईसक्रीम खा रहा था। उसी दौरान उसके दोस्तों ने कहा कि आजकल कारोबार अच्छा नहीं है, कुछ परेशानी है और हम मस्रूफ़ रहते हैं। यह सुनकर उसके अंदर "मैं" आई और वह कहने लगा, यार! तुम भी क्या हो, हर वक़्त परेशान फिरते हो कि आएगा कहां से? लेकिन मैं तो परेशान फिरता हूं कि लगाऊंगा कहां पर। मेरी तो इक्कीस नस्लों को भी कमाने की परवाह नहीं है। जब उसने तकब्बुर की यह बात की तो अल्लाह तआला को सख़्त नापसन्द आई। नतीजा यह निकला कि वह छः महीनों के अंदर इस दुनिया से रुख़्सत हो गया।

ज़मान-ए-जाहिलियत में औरत का क्या मक़ाम था

इज़्दवाजी ज़िन्दगी के उनवान पर बात करते हुए इस पसमंज़र को ज़ेहन में रखना ज़रूरी होगा कि इस्लाम से पहले दुनिया की मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों और मुख़्तलिफ़ मुआशिरों में औरत को क्या मक़ाम हासिल था? तारीख़े आलम का मुताला किया जाए तो यह बात रोज़े रौशन की तरह अयां होती है कि इस्लाम से पहले दुनिया के मुख़्तलिफ़ मुमालिक में औरत अपने बुनियादी हुक़ूक़ से बिल्कुल महरूम थी।

1. फ़्रांस में औत के बारे में यह तसव्वुर था कि यह आधा इंसान है इसलिए मुआशिरे की तमाम ख़राबियों का ज़रिया बनती है।
2. चीन में औरत के बारे में यह तसव्वुर था कि इसमें शैतानी रूह होती है लिहाज़ा यह बुराइयों की तरफ़ इंसान को दावत देती है।
3. जापान में औरत के बारे में य तसव्वुर था कि यह नापाक पैदा की गई है, इसलिए इबादतगाहों से इसको दूर रखा जाता था।
4. हिन्दुइज़्म में जिस औरत का ख़ाविन्द मर जाता था उसको मुआशिरे में ज़िन्दा रहने के क़ाबिल नहीं समझा जाता था। इसलिए ज़रूरी था कि

वह अपने ख़ाविन्द की नाश के साथ ज़िन्दा जलकर अपने आपको ख़त्म कर ले, अगर वह इस तरह न करती तो उसको मुआशिरे में इज़्ज़त की निगाह से नहीं देखा जाता था।

5. ईसाई दुनिया में औरत को मारिफ़ते इलाही के रास्ते में रुकावट समझा जाता था। औरतों को तालीम दी जाती थी कि कुंवारी रहकर ज़िन्दगी गुज़ारें। जबकि मर्द राहिब बनकर रहना एज़ाज़ समझते थे।

6. जज़ीर-ए-अरब में बेटी का पैदा होना बेइज़्ज़ती समझा जाता था। लिहाज़ा मां-बाप ख़ुद अपने हाथों से बेटी को ज़िंदा दरगोर कर दिया करते थे। औरत के हुक़ूक़ इस क़द्र पामाल किए जा चुके थे कि अगर कोई आदमी मर जाता तो जिस तरह विरासत की चीज़ें उसकी औलाद में तक़्सीम होती थीं उसी तरह बीवी भी उसकी औलाद के निकाह में आ जाती थी।

7. अगर किसी औरत का ख़ाविन्द फ़ौत हो जाता तो मक्का मुकर्रमा से बाहर एक काली कोठरी में उस औरत को दो साल के लिए रखा जाता था। तहारत के लिए पानी और दूसरी ज़रूरियाते ज़िंदगी भी पूरी न दी जाती थीं। अगर दो साल यह जतन काटकर भी औरत ज़िंदा रहती तो उसका मुंह काला करके मक्का मुकर्रमा में फिराया जाता। उसके बाद उसे घर में रहने की इजाज़त दी जाती थी।

अब सोचिए तो सही कि ख़ाविन्द तो मरा अपनी क़ज़ा से, भला इसमें बीवी का क्या क़ुसूर? मगर यह मज़्लूमा इतनी बेबस थी कि अपने हक़ में कोई आवाज़ नहीं उठा सकती थी। ऐसे माहौल में जबकि चारों तरफ़ औरत के हुक़ूक़ को पामाल किया जा रहा था तो अल्लाह तआला ने अपने प्यारे नबी सल्ल० को इस्लाम की नेमत देकर भेजा। आप सल्ल० दुनिया में तशरीफ़ लाए और आप सल्ल० ने आकर औरत के मक़ाम को निखारा। बताया कि ऐ लोगो! अगर यह बेटी है तो तुम्हारी इज़्ज़त है, अगर बहन है तो तुम्हारा नामूस है, अगर बीवी है तो ज़िंदगी की साथी है, अगर मां है तो उसके क़दमों में तुम्हारी जन्नत है।

अच्छी औरत की क्या सिफ़ात होनी चाहिएं?

अहलुल्लाह ने लिखा है कि बीवी में चार सिफ़ात ज़रूर होनी चाहिएं :

1. पहली सिफ़त यह है कि उसके चेहरे पर हया हो। यह बात बुनियादी हैसियत रखती है कि जिस औरत के चेहरे पर हया होगी उसका दिल भी हया से लबरेज़ होगा। मसल मशहूर है कि चेहरा इंसान के दिल का आइना होता है। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० का क़ौल है कि मर्दों में भी हया बेहतर है, मगर औरत में बेहतरीन है।

2. दूसरी सिफ़्त यह है कि उसकी ज़बान में शीरीनी हो यानी जो बोले तो कानों में रस घोले। यह न हो कि हर वक़्त ख़ाविन्द को जली-कटी सुनाती रहे या बच्चों को बात-बात पर झिड़कती रहे।

3. तीसरी सिफ़त यह है कि उसके दिल में नेकी हो।

4. चौथी सिफ़त यह कि उसके हाथ काम-काज में मसरूफ़ रहें।

ये ख़ूबियां जिस औरत में हों, यक़ीनन वह बेहतरीन बीवी क़ी हैसियत से ज़िंदगी गुज़ार सकती है।

बेदीन औरत की ज़बान वह तलवार है जो कभी ज़ंग आलूद नहीं होती

बद-ज़बान बीवी अपने शौहर को क़ब्र तक पहुंचाने के लिए घोड़े की डाक का काम करती है। जिसकी बीवी बद-ज़बान हो उसको सारी ज़िंदगी सुकून नहीं मिल सकता। औरत को कहा गया है कि वह अपनी ज़बान के अंदर नर्मी और मिठास पैदा करे और अच्छे अंदाज़ से बात करे। वैसे यह पक्की बात है कि मीठी-से-मीठी औरत क्यों न हो फिर भी उसके अंदर थोड़ी बहुत तल्ख़ी ज़रूर होती है, क्योंकि ताल्लुक़ ही ऐसा नाज़ व अंदाज़ का होता है। ताहम औरत की ज़बान में नर्मी होनी चाहिए। शरीअत ने औरत से कहा कि अपने ख़ाविन्द से नर्म अंदाज़ में बात करे, जहां किसी ग़ैर मर्द से बात करने का वक़्त हो तो सख़्ती से बात करे, ताकि उसे दूसरी बात पूछने की जुर्रत न हो। आजकल की फ़ैशनेबल औरतों का मामला उल्टा है। ख़ाविन्द से बात करनी हो तो सारी दुनिया की कड़वाहट सिमट आती है और किसी ग़ैर से करनी हो तो सारी दुनिया की शीरीनी सिमट आती है। बहरहाल यह मुसल्लमा हक़ीक़त है कि जिन रिश्तों को तलवार नहीं काट सकती उसको ज़बान काट के रख देती है। यह भी याद रखिए कि औरत की ज़बान वह

तलवार है जो कभी ज़ंग आलूद नहीं होती। बाज़ औरतें तो इतनी बद ज़बान होती हैं कि अगर औरतें न होतीं तो नाक़ाबिले बरदाश्त होतीं। कई औरतें तो बद-ज़बानी और बद-गुमानी ही की वजह से घर बबाद कर लेती हैं। शरह शरीफ़ ने हुक्म दिया कि महरम मर्द से बात करो तो नर्मी से, ग़ैर महरम से बात करनी पड़ जाए तो सख़्ती से करो, किसी का क़ौल है कि अगर औरत सारे दिन में एक मर्तबा अपने ख़ाविन्द से नर्मी से बात करे जिस नर्मी से वह पड़ोसी मर्द से बात करती है तो घर आबाद रहे। इस तरह अगर मर्द पूरे दिन में एक मर्तबा बीवी को उस मुहब्बत की निगाह से देखे जिस नज़र से वह पड़ोसी औरत को देखता है तो भी घर आबाद रहे।

नोट : ग़ैर महरम औरत को देखना या ग़ैर महरम मर्द को देखना शरअन नाजाइज़ है।

सल्फ़-सालिहीन का मामूल अपनी कुंवारी बेटियों के बारे में

अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक की एक पूरी सूरत जिसे 'सूरह निसा' कहते हैं, उसमें मर्द और औरत की इज़्दिवाजी ज़िंदगी के अहकाम बतलाए हैं। सल्फ़-सालिहीन का यह मामूल था कि वह अपनी बेटियों को निकाह से पहले सूरह निसा और सूरह नूर तर्जुमा के साथ पढ़ा दिया करते थे। हमें भी चाहिए कि जिनके यहां बेटी हो वह उसको अगर पूरा क़ुरआन पाक तर्जुमे के साथ नहीं पढ़ा सकते तो कम-से-कम सूरह निसा और सूरह नूर को तर्जुमे के साथ पढ़ा दिया करें, ताकि लड़की अच्छी इज़्दिवाजी ज़िंदगी गुज़ार सके। बाज़ सल्फ़-सालिहीन का तो अजीब मामूल था कि जब बच्ची पढ़-लिख जाती और अभी शादी का कोई इंतिज़ाम नहीं होता था (उस वक़्त प्रिंटिंग प्रेस नहीं होते थे) तो यह बेटी के ज़िम्मे लगा देते कि बेटी अपने लिए एक क़ुरआन पाक लिख लो, तो यह बच्ची रोज़ाना बावुज़ू होकर ख़ुश-नवेसी से क़ुरआन पाक लिखती थी और जब क़ुरआन पाक मुकम्मल हो जाता तो सुनहरी जिल्द बांधकर बाप अपनी बेटी को जहेज़ में दिया करता था। यह पहले वक़्तों का जहेज़ हुआ करता था। गोया उसके ख़ाविन्द को पैग़ाम मिल रहा होता था कि मेरी बीवी ने अपने बाप के घर में जो ज़िंदगी गुज़ारी है उसका फ़ारिग वक़्त इस क़ुरआन पाक को लिखने में गुज़रा है।

मकान तो हाथों से बन जाया करते हैं
मगर घर हमेशा दिलों से बना करते हैं

कहने वाले ने कहा है कि मकान तो हाथों से बन जाया करते हैं मगर घर हमेशा दिलों से बना करते हैं। ईंटें जुड़ती हैं मकान बन जाते हैं, मगर जब दिल जुड़ते हैं तो घर आबाद हो जाया करते हैं। मेरे दोस्तो! हम उन बातों को तवज्जोह के साथ सुनें और अच्छी इरज़दिवाजी ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश करें। हम दियारे ग़ैर में बैठे हैं, हमारी छोटी-छोटी बातों पर होने वाले झगड़े जब मक़ामी इंतिज़ामिया को पहुंचते हैं तो वह इस्लाम पर हंसते हैं। वह नबी करीम सल्ल० की तालीमात पर उंगलियां उठाते हैं। कितनी बदबख़्ती है अगर हमने अपनी कम-ज़रफ़ी की वजह से किसी को इस्लाम पर उंगली उठाने का मौक़ा दिया! छोटी-छोटी बातें अपने घर में समेट लिया करें। ऐसा झगड़ा न बनाएं जो कम्यूनिटी में टाक ऑफ़ दी टाउन बना करे, हम अपनी ज़ात के ख़ोल से बाहर निकलें। हम मुसलमानों की बदनामी के बजाए मुसलमानों की नेक नामी का ज़रिया बनें। आज ऐसी सोच रखनेवाले बहुत थोड़े हैं। चिराग़ रुख़ ज़ेबा लेकर ढूंढने की ज़रूरत है।

एक हुजूम औलादे आदम का जिधर भी देखिए
ढूंढ़िए तो हर तरफ़ अल्लाह के बन्दों का काल

आम तौर पर देखा गया है कि जब मियां-बीवी क़रीब होते हैं तो एक दूसरे से लड़ाइयां होती हैं। अगर इसी हालत में ख़ाविन्द फ़ौत हो जाए तो यही बीवी सारी ज़िंदगी ख़ाविन्द को याद करके रोती रहेगी कि जी इतना अच्छा था, मेरे लिए तो बहुत ही अच्छा था। अगर बीवी फ़ौत हो जाए तो यही ख़ाविन्द सारी ज़िंदगी याद करके रोता रहेगा कि बीवी इतनी अच्छी थी, मेरा कितना ख़्याल रखती थी। हम बन्दे की क़द्र उसके क़रीब रहते हुए कर लिया करें। कई मर्तबा यह देखा गया है कि मियां-बीवी झगड़े में एक-दूसरे को तलाक़ दे देते हैं। जब होश आता है तो ख़ाविन्द अपनी जगह पागल बना फिरता है और बीवी अपनी जगह पागल बनी फिरती है। फिर हमारे पास आते हैं कि मौलवी साहब कोई ऐसी सूरत नहीं हो सकती कि हम फिर से मियां-बीवी बनकर रह सकें। ऐसी सूरते हाल हरगिज़ नहीं आने देनी चाहिए। अफ़्फ़ू व दरगुज़र और इफ़्हाम व तफ़्हीम से काम लेना चाहिए, बल्कि एक रूठे

तो दूसरे को मना लेना चाहिए। किसी शायर ने क्या अच्छी बात कही है :

इतने अच्छे मौसम में
रूठना नहीं अच्छा
हार-जीत की बातें
कल पर हम उठा रखें
आज दोस्ती कर लें

इसी मज़्मून को एक दूसरे शायर ने नए रंग से बांधा है :

ज़िंदगी यूं ही बहुत कम है मुहब्बत के लिए
रूठ कर वक़्त गंवाने की ज़रूरत क्या है

एक मर्दे सालेह का अजीब क़िस्सा—
हमेशा बावुज़ू रहिए रोज़ी में बरकत होगी

हज़रत फ़ज़्ल अली क़ुरैशी रह० की ज़मीन थी। उसमें ख़ुद हल चलाते थे। ख़ुद पानी देते थे, ख़ुद काटते, ख़ुद बीज निकालते, फिर वह गंदुम घर आती थी। फिर रात को इशा के बाद मियां-बीवी उसे पीसा करते और उस आटे से बनी हुई रोटी ख़ानक़ाह में मुरीदों को खिलाई जाती थी। आप अंदाज़ा कीजिए कि हज़रत रह० यह सब कुछ ख़ुद करते थे। हज़रत की आदत थी कि हमेशा बावुज़ू रहते थे, घरवालों की भी यही आदत थी। एक दिन हज़रत ने खाना पकवाया और ख़ानक़ाह में ले आए। अल्लाह-अल्लाह सीखनेवाले सालिकीन आए हुए थे, वह खाना हज़रत ने उनके सामने रखा। जब वे खाने लगे तो आपने उनसे कहा कि "फ़क़ीरो! (हज़रत क़ुरैशी मुरीदों को फ़क़ीर कहते थे) तुम्हारे सामने जो रोटी पड़ी है उसके लिए हल चलाया गया तो वुज़ू के साथ, फिर बीज डाल गया तो वुज़ू के साथ, फिर उसको पानी दिया तो वुज़ू के साथ, फिर उसको काटा गया तो वुज़ू के साथ, फिर गंदुम भूसे से अलग किया गया तो वुज़ू के साथ, फिर गंदुम को पीसा गया तो वुज़ू के साथ, फिर आटा गूंदा गया तो वुज़ू के साथ, फिर रोटी पकाई गई तो वुज़ू के साथ, फिर आपके सामने खाना लाकर रखा गया तो वुज़ू के साथ। काश कि तुम वुज़ू के साथ इसे खा लेते!" हदीस शरीफ़ में है—हमेशा बावुज़ू रहिए, रोज़ी

में बरकत होगी।

(लम्बी हदीस है देखिए बिखरे मोती, जिल्द 3, पेज 89)

नेमत की मौजूदगी में नेमत की क़द्र करना सीखिए

बुख़ारी व मुस्लिम शरीफ़ में यह हदीस है कि :

बनी इसराईल के तीन आदमी थे। उनमें एक आदमी बर्स का मरीज़ था। उसके पास एक आदमी ने आकर कहा कि भाई! क्या आपको कोई परेशानी है? उसने कहा, मैं कौन-सी परेशानी आपको बताऊं? एक तो मैं बर्स का मरीज़ हूं, जिसकी वजह से लोग मेरी शक्ल देखना भी पसन्द नहीं करते और दूसरा रिज़्क़ की बड़ी तंगी है। उस आदमी ने कहा, अच्छा अल्लाह तआला आपकी बीमारी भी दूर कर दे और आपको रिज़्क़ में बरकत भी अता फ़रमा दे। नतीजा यह निकला कि अल्लाह तआला ने उसकी बीमारी दूर कर दी और उसे एक ऊंटनी भी अता फ़रमाई। उस ऊंटनी की नस्ल इतनी बढ़ी कि वह हज़ारों ऊंटों और ऊंटनियों के रेवड़ का मालिक बन गया, जिसकी वजह से वह बड़ा अमीर आदमी बन गया और रिहाइश के लिए महलात बना लिए।

दूसरा आदमी गंजा था, वह आदमी उस गंजे के पास आया और पूछा कि क्या तुम्हारी कोई परेशानी है? उसने कहा, जनाब मेरे सर पर तो बाल ही नहीं हैं, जिसके पास बैठूं वही मज़ाक़ करता है। जो कारोबार करता हूं ठीक नहीं चलता। उसने कहा अच्छा, तुझे सर पर ख़ूबसूरत बाल भी अता फ़रमाए और तुझे रिज़्क़ भी दे दे। चुनांचे अल्लाह तआला ने उसे एक गाय अता की, उस गाय की नस्ल इतनी बढ़ी कि वह हज़ारों गायों के रेवड़ का मालिक बन गया। वह भी आलीशान महल में बड़े ठाठ की ज़िंदगी गुज़ारने लग गया।

तीसरा आदमी अंधा था। वह आदमी उस अंधे के पास गया और उससे पूछा, भाई आपको कोई परेशानी तो नहीं? उसने कहा, जी मैं तो दर-बदर की ठोकरें खाता हूँ, लोगों के घरों से जाकर मांगता हूँ, हाथ फैलाता हूँ। मेरी भी कोई ज़िंदगी है, टुकड़े मांग-मांगकर खाता फिरता हूं। मैं न अपनी मां को देख सकता हूं और न बाप को। इसके अलावा रिज़्क़ की तंगी भी है। उस आदमी ने उसकी बीनाई के लिए और रिज़्क़ की फ़राख़ी के लिए दुआ कर दी।

अल्लाह तआला ने उसे बीनाई भी दे दी और उसको एक बकरी दी। उस बकरी का रेवड़ इतना बढ़ा कि वह हज़ारों बकरियों का मालिक बन गया। इस तरह वह भी आलीशान महल में इज़्ज़त की ज़िंदगी गुज़ारने लग गया। कई सालों के बाद वे तीनों अपने वक़्त के सेठ कहलाने लगे।

काफ़ी अर्सा गुज़रने के बाद वही आदमी पहले आदमी के पास आया और उसने उससे कहा, मैं एक मुहताज हूँ, अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आया हूँ, उसी अल्लाह ने आपको सब कुछ दिया, आपके पास तो कुछ भी नहीं था, आज इतना कुछ आपके पास है, आप उसमें से उसी अल्लाह के नाम पर मुझे भी कुछ दे दें। जब उसने सुना कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था तो उसका पारा चढ़ गया और कहने लगा, ज़लील कहीं का! ख़बरदार! आइंदा ऐसी बात न करना, मैं अमीर, मेरा बाप अमीर और मेरा परदादा अमीर था। हम तो जद्दी पुश्ती अमीर हैं। तुम कौन हो बात करने वाले कि तुम्हारे पास कुछ भी नहीं था। चलो जाओ यहां से वरना मैं जूते लगवाऊंगा। चुनांचे उसने कहा, अच्छा मिया! नाराज़ न होना, तुम जैसे थे अल्लाह तुम्हें वैसा ही कर दे। जब यह कहकर चला गया तो उसके जानवरों में एक बीमारी पड़ गई और उसके सब ऊंट वग़ैरह मर गए और बर्स की बीमारी भी दोबारा लग गई, गोया वह जिस पोज़ीशन में था उसी पोज़ीशन में दोबारा लौट आया।

उसके बाद वह शख़्स दूसरे आदमी के पास गया और उससे कहा कि मैं मोहताज हूँ, मैं उसी अल्लाह के नाम पर मांगने आया हूँ, जिसने आपको सब कुछ दिया है, आपके पास तो कुछ भी नहीं था, आज इतना कुछ है। जब उसने यह बात की तो वह गुस्से में आ गया और कहने लगा, "तुम तो मुफ़्तख़ोर हो, हमने कमाकर इतना कुछ बनाया है। मैंने फ़लां सौदा किया तो इतनी बचत हुई और फ़लां सौदा किया तो इतने कमाए। लोग मुझे बड़ा बिज़निस माइंडेड कहते हैं। मेरी तो यह ख़ून-पसीने की कमाई है, ऐसे ही दरख़्तों से तोड़कर नहीं लाए और न यह चोरी का माल है। अब चला जा यहां से वरना दो थप्पड़ लगाऊंगा।" जब उस अमीर आदमी ने ख़ूब डांट-डपट की तो उसने कहा, भाई! नाराज़ न होना, तुम जैसे पहले थे अल्लाह तुम्हें दोबारा वैसा ही कर दे। चुनांचे उसके सर के बाल भी ग़ायब हो गए और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उसकी गायों में एक ऐसी बीमारी पैदा कर दी जिससे सब

गाएँ मर गईं, इस तरह वह जैसा पहले था वैसा ही बन गया।

उसके बाद वह शख़्स तीसरे आदमी के पास गया और उससे कहा, भाई मैं अल्लाह के नाम पर मांगने आया हूँ, मुहताज हूँ, आपके पास कुछ भी नहीं था, अल्लाह ने आपको सब कुछ दिया, अब उसी अल्लाह के नाम पर मुझे भी दे दो। जब उसने यह बात सुनी तो उसकी आंखों में आंसू आ गए। वह कहने लगा, भाई! तुमने बिल्कुल सच कहा है, मैं तो अंधा था। लोगों के लिए सिर्फ़ रात का अंधेरा होता है, मेरे लिए तो दिन में भी अंधेरा हुआ करता था, मैं तो दर-दर की ठोकरें खाता था, लोगों से मांग-मांग कर ज़िंदगी गुज़ारता था। मेरी भी कोई हालत थी। कोई ख़ुदा का बन्दा आया, उसने मुझे दुआ दी, अल्लाह ने मुझे बीनाई दे दी, इतना रिज़्क़ भी दे दिया। आज आप उस अल्लाह के नाम पर मांगने के लिए आए हैं तो मिया! इन दो पहाड़ों के दर्मियान हज़ारों बकरियां फिर रही हैं, जितनी चाहो तुम अल्लाह के नाम पर ले जाओ। जब उस अमीर आदमी ने यह बात की तो मुख़ातिब कहने लगा, मुबारक हो, मैं तो अल्लाह तआला का फ़रिश्ता हूँ। अल्लाह तआला ने मुझे तीन बन्दों की तरफ़ आज़माइश बनाकर भेजा था, दो तो अपनी बुनियाद को भूल गए हैं मगर तुमने अपनी बुनियाद को याद रखा है। अल्लाह तआला तुम्हारे माल में और ज़्यादा बरकत अता फ़रमाए। चुनांचे कहते हैं कि वह आदमी बनी इसराईल का सबसे बड़ा अमीर कबीर आदमी था। साबित हुआ कि बन्दा अगर अपनी औक़ात और बुनियाद को याद रखे तो अल्लाह तआला बरकत दे देते हैं। अल्फ़ाज़ बन्दे के हैं, हदीस का मज़्मून बुख़ारी व मुस्लिम में है।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

कल बिन देखे सौदा था इसलिए सस्ता था

हारून रशीद के ज़माने में बहलूल रह० नामी एक बुज़ुर्ग गुज़रे हैं। वह मजज़ूब और साहिबे हाल थे। हारून रशीद उनका बड़ा एहतिराम करता था। हारून रशीद की बीवी ज़ुबैदा ख़ातून भी एक नेक और पारसा औरत थी। उसने अपने महल में एक हज़ार ऐसी ख़ादिमाएं रखी हुई थीं जो क़ुरआन की हाफ़िज़ा और क़ारिया थीं। उन सबकी ड्यूटियां मुख़्तलिफ़ शिफ़्टों में लगी हुई थीं। चुनांचे उसके महल से चौबीस घंटे उन बच्चियों के क़ुरआन पढ़ने की

आवाज़ आ रही होती थी। उसका महल क़ुरआन का गुलशन महसूस होता था।

एक दिन हारून रशीद अपनी बीवी के साथ दरिया के किनारे टहल रहा था कि एक जगह बहलूल दाना रह० को बैठे हुए देखा। उसने कहा, अस्सलामु अलैकुम। बहलूल दाना रह० ने जवाब में कहा, 'व अलैकुमुस्सलम।' हारून रशीद ने कहा, बहलूल! क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा कि मैं रेत के घर बना रहा हूं। पूछा, किसके लिए बना रहे हो? बहलूल ने जवाब दिया कि जो आदमी इसको ख़रीदेगा मैं उसके लिए दुआ करूंगा कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उसके बदले उसको जन्नत में घर अता फ़रमा दे। बादशाह ने पूछा, बहलूल इस घर की क़ीमत क्या है? उन्होंने कहा कि एक दीनार। हारून रशीद ने समझा कि यह एक दीवाने की बड़ है, लिहाज़ा वह आगे चला गया।

उसके पीछे ज़ुबैदा ख़ातून आई। उसने बहलूल रह० को सलाम किया, फिर पूछा बहलूल! क्या कर रहे हो? उन्होंने कहा कि मैं रेत के घर बना रहा हूं। उसने पूछा, किस लिए घर बना रहे हो? बहलूल रह० ने कहा कि जो आदमी इस घर को ख़रीदेगा मैं उसके लिए दुआ करूंगा कि या अल्लाह! इसके बदले उसको जन्नत में घर अता फ़रमा दे। उसने पूछा, बहलोल इस घर की क़ीमत क्या है? बहलूल ने कहा, एक दीनार। ज़ुबैदा ख़ातून ने एक दीनार निकाल कर उसको दे दिया और कहा कि मेरे लिए दुआ कर देना। वह दुआ करवा कर चली गई।

रात को जब हारून रशीद सोया तो उसने ख़्वाब में जन्नत के मनाज़िर देखे। आबशारें, मुर्ग़ज़ारें और फल-फूल वग़ैरह देखने के उलावा बड़े ऊंचे-ऊंचे ख़ूबसूरत महलात भी देखे। एक सुर्ख़ याक़ूत के बने हुए महल पर उसने ज़ुबैदा का नाम लिखा हुआ देखा। हारून रशीद ने सोचा कि देखूं तो सही क्यों कि यह मेरी बीवी का घर है। वह महल में दाख़िल होने के लिए जैसे ही दरवाज़े पर पहुंचा तो एक दरबान ने उसे रोक लिया। हारून रशीद कहने लगा, इस पर तो मेरी बीवी का नाम लिखा हुआ है, इसलिए मुझे अंदर जाना है। उसने कहा, नहीं, यहां का दस्तूर अलग है, जिसका नाम होता है उसी को अंदर जाने की इजाज़त होती है, किसी और को इजाज़त नहीं होती, लिहाज़ा आपको दाख़िल होने की इजाज़त नहीं है।" जब दरबान ने हारून रशीद को

पीछे हटाया तो उसकी आंख खुल गई। उसे बेदार होने पर फ़ौरन ख़्याल आया कि मुझे तो लगता है कि बहलूल की दुआ ज़ुबैदा के हक़ में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के यहां क़बूल हो गई। फिर उसे अपने आप पर अफ़सोस हुआ कि मैं भी अपने लिए एक घर ख़रीद लेता तो कितना अच्छा होता। वह सारी रात इसी अफ़सोस में करवटें बदलता रहा। सुबह हुई तो उसने दिल में सोचा कि आज फिर मैं ज़रूर दरिया के किनारे जाऊंगा। अगर आज मुझे बहलूल मिले तो मैं एक मकान ज़रूर ख़रीदूंगा।

चुनांचे वह शाम को फिर बीवी को लेकर चल पड़ा। वह बहलूल को तलाश करते हुए इधर-उधर देख रहा था। उसने देखा कि एक जगह बहलूल बैठा उसी तरह का मकान बना रहा था। उसने कहा, अस्सलामु अलैकुम! बहलोल ने जवाब में व अलैकुमुस्सलाम कहा। हारून रशीद ने पूछा, क्या कर रहे हो? बहलोल ने कहा, मैं घर बना रहा हूं। उसने पूछा किस लिए? बहलूल ने कहा, जो आदमी यह घर ख़रीदेगा मैं उसके लिए दुआ करूंगा कि अल्लाह तआला उसे उसके बदले जन्नत में घर अता कर दे। हारून रशीद ने पूछा, बहलूल इसकी क़ीमत क्या है? बहलोल ने कहा, इसकी क़ीमत पूरी दुनिया की बादशाही है। हारून रशीद ने कहा, इतनी क़ीमत तो मैं दे नहीं सकता, कल तो एक दीनार के बदले दे रहे थे और आज पूरी दुनिया की बादशाही मांगते हो। बहलोल ने कहा, बादशाह सलामत! कल बिन देखे मामला था और आज देखा हुआ मामला है। कल बिन देखे सौदा था इसलिए सस्ता मिल रहा था और आज चूंकि देख के आए हो इसलिए अब उसकी क़ीमत ज़्यादा देनी पड़ेगी।

हमारी मिसाल ऐसे ही है कि आज हमने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्ल० को बिन देखे माना था इसलिए जन्नत बड़ी सस्ती है। लेकिन जब मौत के वक़्त आख़िरत की निशानियां देख लेंगे तो उसके बाद फिर उसकी क़ीमत अदा नहीं कर सकेंगे। इरशाद बारी तआला है :

> "रोज़े महशर मुज्रिम यह तमन्ना करेगा कि काश मैं अपनी सज़ा के बदले में अपना बेटा दे देता, बीवी दे देता, अपना भाई दे देता, वह ख़ानदान वाले दे देता जो उसे ठिकाना देते यहां तक कि जो कुछ दुनिया में है वह सब दे देता और मैं

जहन्नम से बच जाता! फ़रमाया हरगिज़ नहीं, हरगिज़ नहीं।
(कुरआन, 70:11-14)

ग़मों से नजात का क़ुरआनी और नबवी नुस्ख़ा

ला इला-ह इल्ला अन-त सुब्हा-न-क इन्नी कुन-तु मिनज़्ज़ालिमीन।

तर्जुमा : तेरे सिवा कोई माबूद नहीं, तू पाक है, बेशक मैं ज़ालिमों में हो गया। (कुरआन, 21:87)

फ़ज़ीलत

1. हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने फ़रमाया कि आपको इसकी ख़बर देता हूं कि रसूलुल्लाह सल्ल० ने हमारे सामने अव्वल दुआ का ज़िक्र किया ही था कि अचानक एक आराबी आ गया और आप सल्ल० को अपनी बातों में मश्ग़ूल कर लिया। बहुत वक़्त गुज़र गया। अब हुज़ूर सल्ल० वहां से उठे और मकान की तरफ़ तशरीफ़ ले चले। मैं भी आप सल्ल० के पीछे हो लिया। जब आप सल्ल० घर के क़रीब पहुंच गए, मुझे डर हुआ कि कहीं आप (सल्ल०) अंदर न चले जाएं और मैं रह जाऊं तो मैंने ज़ोर-ज़ोर से ज़मीन पर पांव मारकर चलना शुरू किया, मेरी जूतियों की आहट सुनकर आप सल्ल० ने मेरी तरफ़ देखा और फ़रमाया, कौन, अबू इसहाक़? मैंने कहा, जी हां या रसूलल्लाह सल्ल०, मैं हूं। आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है? मैंने कहा, हुज़ूर सल्ल०! आप ने अव्वल दुआ का ज़िक्र किया फिर वह आराबी आ गया और आप को मश्ग़ूल कर लिया। आप सल्ल० ने फ़रमाया, हां-हां, वह दुआ हज़रत ज़ुन्नून अलैहि० की है जो उन्होंने मछली के पेट में की थी, यानी 'ला इला-ह इल्ला अन-त सुब्हान-क इन्नी कुन-तु मिनज़्ज़ालिमीन'। सुनो जो भी मुसलमान किसी मामले में जब कभी अपने रब से यह दुआ करे अल्लाह तआला ज़रूर उसे क़बूल फ़रमाता है।

2. इब्ने अबी हातिम में है, जो भी हज़रत यूनुस अलैहि० की इस दुआ के साथ दुआ करे उसकी दुआ ज़रूर क़बूल की जाएगी।

3. अबू सईद रह० फ़रमाते हैं कि इसी आयत में उसके बाद ही फ़रमान है, "हम इसी तरह मोमिनों को नजात देते हैं।"

4. इब्ने जरीर में है कि हुज़ूर सल्ल० फ़रमाते हैं कि ख़ुदा का वह नाम जिससे वह पुकारा जाए तो क़बूल फ़रमा ले और जो मांगा जाए वह अता फ़रमाए वह हज़रत यूनुस अलैहि० की दुआ में है।

5. हज़रत असद बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० फ़रमाते हैं, मैंने कहा, "या रसूलल्लाह सल्ल०, वह दुआ हज़रत यूनुस अलैहि० के लिए ही ख़ास थी या तमाम मुसलमानों के लिए आम, जो भी यह दुआ करे।"? आप सल्ल० ने फ़रमाया, "तो क्या तूने क़ुरआन में नहीं पढ़ा कि हमने उसकी दुआ क़ुबूल फ़रमाई, उसे ग़म से छुड़ाया और इसी तरह हम मोमिनों को छुड़ाते हैं। पस जो भी इस दुआ को करे उससे अल्लाह का क़बूलियत का वादा हो चुका है।

6. इब्ने अबी हातिम में है कि कसीर बिन सईद फ़रमाते हैं, मैंने इमाम हसन बसरी रह० से पूछा कि अबू सईद! ख़ुदा का वह इस्मे आज़म कि जब उसके साथ उससे दुआ की जाए अल्लाह तआला क़बूल फ़रमा ले और जब उसके साथ उससे सवाल किया जाए तो अता फ़रमाए क्या है? आपने जवाब दिया कि बिरादरज़ादे! क्या तुमने क़ुरआन करीम में ख़ुदा का यह फ़रमान नहीं पढ़ा! फिर आपने यही दो आयतें तिलावत फ़रमाईं और फ़रमाया, भतीजे! यही ख़ुदा का वह इस्मे आज़म है कि जब इसके साथ दुआ की जाए क़बूल फ़रमाता है और जब इसके साथ उससे मांगा जाए तो वह अता फ़रमाता है।

(तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 3, पेज 395-396)

7. हदीस शरीफ़ में आया है कि जिस मुसलमान ने अपनी बीमारी की हालत में चालीस मर्तबा मज़्कूरा आयते करीमा पढ़ ली तो अगर वह उस बीमारी में वफ़ात पा गया तो चालीस शहीदों का अज्र पाएगा और अगर तंदुरुस्त हो गया तो उसके तमाम गुनाह बख़्श दिए जाएंगे।

(हिस्ने हसीन, पेज 241)

वालिदैन का हक़ अदा करने की दुआ

अल्लमदु-लिल्लाहि रब्बिल आलमी-न रब्बिस्समावाति व रब्बिल अरज़ि रब्बिल आलमी-न व लहुल किबरियाउ फ़िस्समावाति वल अरज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीमु लिल्लाहिल हम्दु

रब्बिस्समावाति व रब्बिल अरज़ि रब्बिल आलमी-न व लहुल अज़्मतु फ़िस्समावाति वल अरज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीमु व हुवल मलिकु रब्बुस्समावाति व रब्बुल अरज़ि व रब्बुल आलमी-न व लहून नूरु फ़िस्समावाति वल अरज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम।

अल्लामा ऐनी रह० ने शरह बुख़ारी में एक हदीस नक़ल की है कि जो शख़्स एक मर्तबा मज़्कूरा बाला दुआ पढ़े और उसके बाद यह दुआ करे कि या अल्लाह इसका सवाब मेरे वालिदैन को पहुंचा दे, उसने वालिदैन का हक़ अदा कर दिया और तीन मर्तबा "क़ुलहु वल्लाहु", तीन मर्तबा 'अलहम्दु शरीफ़' और तीन मर्तबा 'दुरूद शरीफ़' भी शामिल कर लें तो वालिदैन का फ़रमांबरदार शुमार होगा। हदीस में है कि आदमी अगर कोई नफ़्ल सदक़ा करे तो उसमें क्या हर्ज है कि उसका सवाब वालिदैन को बख़्श दिया करे, बशर्ते कि वे मुसलमान हों इस सूरत में उनको सवाब पहुंच जाएगा और सदक़ा करने वाले के सवाब में कोई कमी न होगी। (कंज़)

नोट : औज़ाई रह० कहते हैं कि मुझे यह बात पहुंची है कि जो शख़्स अपने वालिदैन की ज़िंदगी में नाफ़रमान हो फिर उनके इंतिक़ाल के बाद उनके लिए इस्तग़फ़ार करे। अगर उनके ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो उसको अदा करे और उनको बुरा न कहे तो वह फ़रमांबरदारों में शुमार हो जाता है। और जो शख़्स वालिदैन की ज़िंदगी में फ़रमांबरदार था लेकिन उनके मरने के बाद उनको बुरा भला कहता है, उनका क़र्ज़ भी अदा नहीं करता, उनके लिए इस्तग़फ़ार भी नहीं करता, वह नाफ़रमान शुमार हो जाता है। (दुर्रे मंसूर)

हिक्मत भरा कलाम

हज़रत लुक़मान अलैहि० ने अपने साहबज़ादे को नसीहत करते हुए कहा :

1. ऐ बेटे! तुम हिफ़ाज़त करो नमाज़ में अपने दिल की।
2. लोगों की महफ़िल में अपनी ज़बान की।
3. दूसरों के घरों में अपनी निगाहों की।
4. दस्तरख़ान पर अपने मेदे की।

और दो चीज़ों को फ़रामोश कर दिया करो

1. तुम्हारे साथ औरों का बुरा रवैया।
2. तुम्हारा औरों के साथ हुस्ने सुलूक।

और दो चीज़ों को हमेशा याद रखो :

1. अल्लाह की याद
2. मौत की तैयारी

इरशादे रब्बानी

1. मैंने अपनी रिज़ा को मुख़ालिफ़ते नफ़्स में रख दिया है।
   लोग उसे मुवाफ़िक़ते नफ़्स में तलाश करते हैं।

   —भला वे कैसे पाएंगे?

2. मैंने आराम को जन्नत में रख दिया है
   लोग उसे दुनिया में तलाश करते हैं।

   —भला वे कैसे पाएंगे?

3. मैंने इल्म व हिक्मत को भूख में रख दिया है
   लोग उसे सीरी में तलाश करते हैं।

   —भला वे कैसे पाएंगे?

4. मैंने तवंगरी को क़नाअत में रख दिया है
   लोग उसे माल में तलाश करते हैं।

   —भला वे कैसे पाएंगे?

5. मैंने इज़्ज़त को अपनी इताअत में रख दिया है
   लोग उसे बादशाहों के दरवाज़ों पर तलाश करते हैं।

   —भला वे कैसे पाएंगे?

अल्लाह तआला अपने बन्दों से फ़रमाता है

1. मेरी तरफ़ आकर तो देख
मुतवज्जह न हूं तो कहना।
2. मेरी राह में चलकर तो देख
राहें न खोल दूं तो कहना।
3. मेरे लिए बेक़द्र होकर तो देख
क़द्र की हद न कर दूं तो कहना।
4. मेरे लिए मलामत सहकर तो देख
इकराम की इंतिहा न कर दूं तो कहना।
5. मेरे लिए लुटकर तो देख
रहमत के ख़ज़ाने न लुटा दूं तो कहना।
6. मेरे कूचे में बिककर तो देख
तुझे अनमोल न कर दूं तो कहना।
7. मुझे अपना रब मान कर तो देख
सबसे बेनियाज़ न कर दूं तो कहना।
8. मेरे ख़ौफ़ से आंसू बहाकर तो देख
मग़फ़िरत के दरिया न बहा दूं तो कहना।
9. वफ़ा की लाज निभाकर तो देख
अता की हद न कर दूं तो कहना।
10. मेरे नाम की ताज़ीम करके तो देख
तकरीम की इंतिहा न कर दूं तो कहना।
11. मेरी राह में निकल कर तो देख

असरार अयां न कर दूं तो कहना।

12. मुझे हय्युल क़य्यूम मान कर तो देख
अबदी हयात का अमीन न बना दूं तो कहना।

13. अपनी हस्ती को फ़ना करके दो देख
जामे वफ़ा से सरफ़राज़ न कर दूं तो कहना।

14. बिल आख़िर मेरा होकर कर तो देख
हर किसी को तेरा न बना दूं तो कहना।

जब बालिग़ हुए तो क्या देखा

1. दौलत की नुमाइश करनेवालों को
मुफ़्लिसी की आग़ोश में देखा।

2. इल्म की नुमाइश करनेवालों को
जाहिलों की मज्लिस सजाते देखा।

3. ताक़त की नुमाइश करनेवालों को
कमज़ोरों की ग़ुलामी करते देखा।

4. इबादत की नुमाइश करनेवालों को
दीन से मुंह मोड़ते देखा।

5. सख़ावत की नुमाइश करनेवालों को
सदक़ात की रोटी पर पलते देखा।

6. लोगों के रहम पर पलने वालों को
हमेशा मुफ़्लिस और मोहताजी में देखा।

7. दीन से दुनिया कमाने वालों को
चेहरे से रौनक़ उड़ते देखा।

8. सब्र व शुक्र करने वालों को
दुनिया में बावक़ार देखा।

9. हसद व कीना में जलनेवालों को
रोज़ी की तंगदस्ती में देखा।
10. झूठ बोलनेवालों को
ईमान से दूर होते देखा।
11. गुस्से में रहने-वालों को
अक़्ल की महरूमी में देखा।
12. लोगों से उम्मीदें रखनेवालों को
नाउम्मीद और परेशान देखा।
13. लोगों से सवाल करनेवालों को
बेइज़्ज़ती के आलम में देखा।
14. सच्ची तौबा करनेवालों को
इबादत में लज़्ज़त लेते देखा।
15. गुनाहों में जीनेवालों को
परेशानी के दलदल में धंसते देखा।
16. बन्दों के हुक़ूक़ झुठलानेवालों को
अपने हक़ पर रोते देखा।
17. नाजाइज़ कमाई पर पलनेवालों को
मुसीबतों के जाल में फंसते देखा।
18. वालिदैन के फ़रमांबरदारों को
तरक़्क़ी की मंज़िल छूते देखा।
19. मां-बाप के नाफ़रमानों को
औलाद के ज़ुल्म व सितम सहते देखा।
20. ज़ुल्म व सितम करने वालों को
मज़्लूम की ख़ुशामद करते देखा।

21. अल्लाह के हुक़ूक़ अदा करनेवालों को
अपने ही साये से डरते देखा।

22. बन्दों के हुक़ूक़ अदा करनेवालों को
दुनिया में शोहरत पाते देखा।

23. उस्ताद की ख़िदमत करनेवालों को
ख़िदमत-गुज़ारों के साए में देखा।

24. बेहोशी में जीनेवालों ने
जब होश में आए तो क्या-क्या देखा।

ख़्वातीने इस्लाम से इस्लाम के मुतालबे

1. अपनी ज़ेब व ज़ीनत की चीज़ों का मर्दों पर इज़्हार न होंने दें।

2. अपने ज़ेवरात की आवाज़ ग़ैर-मेहरमों के कान तक न जाने दें।

3. ख़ुश्बू, इत्र वग़ैरह लगाकर घर से बाहर न निकलें।

4. मर्दों से गुफ़्तुगू करते वक़्त लब व लहज़े और आवाज़ में नज़ाकत पैदा न करें।

5. राह चलते या मर्द से बातें करते वक़्त अपनी नज़रें नीची रखें।

6. ऐसे रास्ते से न गुज़रें जहां मर्दों की रेल-पेल हो बल्कि किनारे-किनारे होकर गुज़रें।

7. घर से बाहर निकलने के बाद अपनी चाल-ढाल में हया को मुक़द्दम रखें।

8. किसी ग़ैर-औरत की सिफ़्त अपने ख़ाविन्द से बयान न करें।

9. किसी ग़ैर-महरम के साथ सफ़र न करें, चाहे सफ़रे हज ही क्यों न हो।

10. अपनी अस्मत की हिफ़ाज़त करें।

ख़ुद की हक़ीक़त

अगर सारी दुनिया हमारी तारीफ़ करे तो उस तारीफ़ से हमारा कुछ भला

न होगा, जब तक कि अल्लाह तआला क़ियामत के दिन यह न फ़रमा दें कि मैं तुमसे राज़ी हो गया। अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी रह० फ़रमाते हैं कि दुनिया में अगर बहुत-से लोग तुम्हारी तारीफ़ करें तो तुम अपनी क़ीमत न लगा लेना क्योंकि ग़ुलामों के क़ीमत लगाने से ग़ुलामों की क़ीमत नहीं बढ़ती, ग़ुलामों की क़ीमत मालिक की रज़ा से बढ़ती है। लिहाज़ा सय्यद सुलैमान नदवी रह० का एक शेर है :

हम ऐसे रहे या कि वैसे रहे
वहां देखना है कि कैसे रहे

यहां हमारी ख़ूब तारीफ़ें हो रही हैं लेकिन वहां हमारी क़ीमत क्या होगी यह क़ियामत के दिन मालूम होगा। उनका दूसरा शेर है :

हयाते दो रोज़ा का क्या ऐश व ग़म
मुसाफ़िर रहे जैसे-तैसे रहे

क्योंकि आरज़ी हयात से बाज़ वक़्त आदमी को धोखा लग जाता है।

जिसे दुनिया का ऐश हासिल हो ज़रूरत नहीं कि उसके क़ल्ब में भी ऐश हो। मौलाना जलालुद्दीन रूमी रह० फ़रमाते हैं :

"अगर किसी काफ़िर बादशाह की क़ब्र पर संगेमरमर लगा दिया जाए और दुनिया भर के सलातीन अगर वहां फूलों की चादरें चढ़ा दें और बैंड-बाजे बज जाएं और फ़ौज की सलामी हो, लेकिन क़ब्र के अंदर जो अल्लाह तआला का अज़ाब हो रहा है उसकी तलाफ़ी क़ब्र के ऊपर संगे मरमर नहीं कर सकते और ऊपर की रौशनियां और बिजलियां और दुनियावालों के सलूट और सलामती कुछ मुफ़ीद नहीं हैं।" इसलिए अगर अल्लाह तआला को राज़ी नहीं किया, चाहे एयरकंडीशन में बैठे हों, बीवी-बच्चे भी हों और ख़ूब ख़ज़ाना हो, हर वक़्त रियालों की गिनती हो रही हो और बैंक में भी काफ़ी पैसा जमा हो तो यह ज़ाहिर का आराम है।

यह जिस्म एक क़ब्र है, जिस्म के ऊपर का ठाठ-बाट दिल के ठाठ-बाट के लिए ज़रूरी नहीं है। एयरकंडीशन हमारी खालों को तो ठंडा कर सकते हैं, मगर दिल की आग को नहीं बुझा सकते। अगर अल्लाह तआला नाराज़ हैं तो जिस्म लाख आराम में हो लेकिन दिल अज़ाब में मुब्तला रहेगा और चैन नहीं

पा सकता। एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं :

दिल गुलिस्तां था तो हर शै से टपकती थी बहार

दिल बयाबां हो गया आलम बयाबां हो गया

और एक बुज़ुर्ग का अरबी शेर है जिसके मानी

"है हर शै जिससे तुम जुदा होगे उसका बदल मिल सकता है मगर अल्लाह तआला से तुमको जुदाई हो गई तो हक़ सुब्हानहू व तआला का कोई हमसर और बदल नहीं।"

खाने का मज़ा जुदा-जुदा है इसी तरहआमाल का मज़ा भी जुदा जुदा है

मेरे दोस्तो! जिस तरह हर खाने का मज़ा जुदा है, अल्लाह की क़सम हर नेक अमल की लज़्ज़त भी जुदा है। मसलन—

आम खाइए उसका मज़ा कुछ और है।

अनार खाइए उसका मज़ा कुछ और है।

पपीता खाइए उसका मज़ा कुछ और है।

शरबत पीजिए उसका मज़ा कुछ अलग है।

ठंडा पानी पीजिए उसका मज़ा कुछ अलग है।

मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मशरूबात कि जिनका मज़ा अलग-अलग है।

तो जिस तरह खाने-पीने की मुख़्तलिफ़ चीज़ों का मुख़्तलिफ़ और अलग-अलग मज़ा है उसी तरह दीन के मुख़्तलिफ़ शोबों के मुख़्तलिफ़ आमाल का मज़ा भी जुदा-जुदा है।

- पुरखुलूस नमाज़ पढ़िए, मज़ा कुछ और है।
- रोज़ा रखिए, मज़ा कुछ और है।
- ईमान में पुख़्तगी-ए-यक़ीन का मज़ा कुछ और है।
- ज़िकरुल्लाह का मज़ा कुछ और है।
- चिल्ला देने का मज़ा कुछ और है।
- गश्त करने का मज़ा कुछ और है।

- मामलात में झूठ, धोखा वग़ैरह से बचने का मज़ा कुछ और है।
- मां-बाप के साथ हुस्ने सुलूक का मज़ा कुछ और है।
- औलाद के माबैन बराबरी करने का मज़ा कुछ और है।
- अच्छी-बुरी तक़दीर पर रज़ामंदी का मज़ा कुछ और है।
- इनामात पर शुक्र का मज़ा कुछ और है।
- नफ़्स में सब्र व ज़ब्त का मज़ा कुछ और है।
- फ़राइज़ व सुनन की पाबन्दी का मज़ा कुछ और है।
- मुसलमान से ख़ंदा-पेशानी से मिलने का मज़ा कुछ और है।
- बुराई का बदला भलाई से देने का मज़ा कुछ और है।
- ज़ालिम का बदला अफ़्व व दरगुज़र से देने का मज़ा कुछ और है।
- यतीमों के सर पर शफ़क़त का हाथ फेरने का मज़ा कुछ और है।
- बेवा औरतों की फ़रियादरसी का मज़ा कुछ और है।
- ग़ैर-मेहरम से आंख बन्द करने का मज़ा कुछ और है।
- सच बोलने का मज़ा कुछ और है।
- मस्जिदवार जमाअत में बैठने का मज़ा कुछ और है।
- दूसरे की ख़ातिर क़ुरबानी देने का मज़ा कुछ और है।
- किसी मुसलमान की हाजत के लिए चलने का मज़ा कुछ और है।

यही वजह है कि अल्लाहवाले तिलावते क़ुरआन के दौरान एक-एक आयत पढ़ने पर मज़ा महसूस करते हैं जैसे आईसक्रीम खानेवाला हर चमचे पर मज़ा महसूस करता है।

तीन चिल्ले पैदल जमाअत में जाने का मज़ा कुछ और है।

इरशादे बारी तआला है :

जब उसकी आयत पढ़ी जाती हैं तो उनका ईमान और ज़्यादा हो जाता है। (सूरह अनफ़ाल, आयत 2)

हमें तिलावते कुरआन का लुत्फ़ क्यों नहीं आता?

जब अल्लाह का क़ुरआन पढ़ा जाता है, अल्लाहवालों को लुत्फ़ आता है. हमें लुत्फ़ क्यों नहीं आता? इसलिए कि हमने अपने अंदर की माया पर मेहनत नहीं की है। आज नमाज़ पढ़ रहे होते हैं और ख़यालों में बाज़ार में फिर रहे होते हैं, तिलावत कर रहे होते हैं दिल व दिमाग़ किसी और के ख़यालात में लगे हुए होते हैं, ऐसे वक़्त में इबादात की लज़्ज़त कैसे नसीब हो सकती है!

अजीब इबादतें

आज हमारी इबादात की हालत अजीब है। ऐसे भी मौक़े आए कि इमाम को नमाज़ की रकअतों में सहव हुआ, बाद में मुक़्तदियों से पूछा, कितनी रकआत पढ़ीं। भरी मस्जिद में कोई बताने वाला नहीं, कितनी रकअत पढ़ीं...सब ग़ैर-हाज़िर। अल्लाहु अकबर। यह नमाज़ों की हालत है, यह इबादात की कैफ़ियत है। किसी आरिफ़ ने क्या प्यारी बात कही है। जिसका तर्जुमा इस तरह है। फ़रमाते हैं :

> जब मैंने ज़मीन पर सज्दा किया तो ज़मीन से निदा आई, ऐ रिया के सज्दा करनेवाले! तूने मुझे भी ख़राब कर दिया।
>
> मैं जो सर ब सजदा हुआ कभी तो ज़मीन से आने लगी सदा
> तेरा दिल तो है सनम आशना तुझे क्या मिलेगा नमाज़ में

जब दिल सनमख़ाना बन चुका हो, बुतख़ाना बन चुका हो तो फिर सज्दे की लज़्ज़त नहीं आया करती।

> वह सज्दा रूह ज़मीन जिससे काँप जाती थी
> उसी को आज तरसते हैं मिंबररो मेहराब

जिन पर सज्दे मचलते थे वह पेशानियां कहाँ गईं। जो अल्लाह के डर से कांपते थे वह दिल कहाँ गए? आज ज़िंदगी मुख़ालिफ़ हो गई।

> तेरी महफ़िल भी गई चाहनेवाले भी गए
> शब की आहें भी गईं सुबह के नाले भी गए

आए उश्शाक़ गए वादा-ए-फ़रदा लेकर
अब उन्हें ढूंढ चिराग़ रुख़े ज़ेबा लेकर

न तल्क़ीने ग़ज़ाली नज़र आती है, न पेच व ताबे राज़ी नज़र आता है। क्या वजह है? मेहनत का रुख़ जुदा हो गया। असली माया पर मेहनत करने के बजाए आज हमने नक़्ली माया पर मेहनत करना शुरू कर दिया है। असली माया को भुला बैठे, जब हमने असली माया को भुला दिया तो हम दुनिया के अंदर ज़िल्लत की ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं।

जिस दौर पर नाज़ां थी दुनिया हम अब वह ज़माना भूल गए
ग़ैरों की कहानी याद रही हम अपना फ़साना भूल गए
मुंह देख लिया आईने में पर दाग़ न देखे सीने में
जी ऐसा लगाया जीने में मरने को मुसलमां भूल गए
तकबीर तो अब भी होती है मस्जिद की फ़िज़ा में ऐ अनवर
जिस ज़र्ब से दिल दहल जाते हैं वह ज़र्ब जगाना भूल गए

कहां गए वह नौजवान जो रात के आख़िरी पहर में उठकर ला इला-ह इल्लाह की ज़र्बें लगाया करते थे। उनके सीनों में दिल कांपते थे, जिनके मासूम हाथ उठते थे तो दुनिया में ऐसे इंक़लाब आ जाते थे जो ऐटम बमों से भी नहीं बरपा होते। रात को उठकर रोने की लज़्ज़त से आज हम नाआशना हैं। तहज्जुद का वक़्त तो क़बूलियते दुआ का वक़्त होता है।

मुनाजात

या इलाही रोज़ो शब तौफ़ीक़े एहसां दे मुझे
ख़ौफ़ अपना ज़ाहिरो बातिन में यकसां दे मुझे
हुब्बे सुन्नत या इलाही इश्क़ क़ुरआं दे मुझे
नेमत दारैन यानी नूरे ईमां दे मुझे
मैं नहीं कहता कि तू तख़्ते सुलैमां दे मुझे
अपनी उल्फ़त दे मुझे बस अज़्म व ईक़ां दे मुझे

तादमे आख़िर रहूं इस्लाम पर साबित क़दम
इस्तक़ामत पुख़्तगी हर लम्हे हर आं दे मुझे
अज़्म दे ऐसा पहाड़ों से भी जा टकराऊं में
क़ुव्वते हैदर दे मुझको जज़्बे सुलैमां दे मुझे
मशअले राहे हिदायत उसव-ए-फ़ारूक़ रज़ि० हो
इश्क़ नबी जज़्बए सिद्‌दीक़ व उसमान दे मुझे
राहे ख़िदमत में ही मर मिटने की है बस आरज़ू
ऐ मेरे अल्लाह! तू असबाब व सामां दे मुझे
तुझको पाकर ऐ ख़ुदा! पाऊं हयाते जाविदां
जो ख़िज़ां नाआशना हो वह गुलिस्तां दे मुझे
बहरे ज़ुल्मत में बने मेरे लिए जो ख़िज़्रे राह
ग़ैब से ऐसा कोई मर्दे मुसलमां दे मुझे
क़ल्ब दे ऐसा जो तेरी याद में पिघल जाए
ख़ौफ़ से अपने इलाही चश्म गिरियां दे मुझे
कर मुझे या रब ग़िनाए ज़ाहिर व बातिन अता
तंदुरुस्ती ऐ तबीबे दर्दमंदा दे मुझे
अहले बिदअत और बदकारों की सोहबत से बचा
या इलाही उल्फ़ते परहेज़गारां दे मुझे
काम मेरा ज़िंदगी भर ख़िदमते क़ुरआन हो
फ़हमे क़ुरआं दे ख़ुदाया नूरे इरफ़ां दे मुझे
राज़ व अहक़र को अता कर ऐ ख़ुदा अपनी रिज़ा
इस्तक़ामत तादमे आख़िर ऐ रहमां दे मुझे

अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
वह हाज़िरो नाज़िर क़ादिरे मुतलक़ वारद महशर क़ाहिर व[illegible]

आलम की ज़िया वह नूरे फ़लक
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
सबका मालिक सबका ख़ालिक़
सबसे लायक़ सबसे फ़ाइक़
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
हाथ पसारें किसके आगे
लेना-देना उसके क़ब्ज़े
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
उसको मनाएं सब मन जाएं
फिर क्यों न उसी को अपनाएं
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी

सबसे निराला सबसे ग़नी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
सबका हाकिम सबका राज़िक़
दुनिया उसके कुन से बनी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
सब ग़ौस व क़ुतुब मोहताज उसके
उसने ही बनाई जिसकी बनी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
उससे छटें सब छट जाएं
सुनता है जो हर दम बात अपनी
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी

जब हुक्मे क़ज़ा आ जाएगा
सब ठाठ पड़ा रह जाएगा

अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
वही मारे, वही जिलाए
वही जगाए, वही सुलाए
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
कोई भी नहीं उसका हमसर
सब शाह व गदा उसके चाकर
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
जिसको चाहे इज़्ज़त दे दे
सूरत दे दे सीरत दे दे
अल्लाहु ग़नी — अल्लाहु ग़नी
नूह का बेड़ा पार लगाया

अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
वही खिलाए, वही पिलाए
है उससे बड़ा फिर कौन धनी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
हो पीर व वली या पैग़म्बर
फिर क्यों न हो उससे हुस्ने ज़नी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
जिसको चाहे ज़िल्लत दे दे
कोई नहीं है उससे मुस्तग़नी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
आग को भी गुलज़ार बनाया

फ़ख्र जहां सरदार बनाया तक़्दीर शिकस्ता अपनी बनी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी

अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी
अल्लाहु ग़नी—अल्लाहु ग़नी

दो-चार दिनों का डेरा है यह दुनिया एक बखेड़ा है
इंसान को तमा ने घेरा है यह तेरा है, वह मेरा है
यह ज़िंदगी आनी-जानी है यह दुनिया दारे फ़ानी है
बेकार की आना-कानी है यह तेरा है, वह मेरा है
इस दुनिया में जो आएगा कुछ रोज़ ठहर के जाएगा
यह झगड़ा काम न आएगा यह तेरा है, वह मेरा है
क़ारून गया दौलत न गई दारा भी गया हश्मत न गई
इंसान की मगर ख़स्लत न गई यह तेरा है, वह मेरा है
ज़र ज़ोर ज़मीं, ज़न ज़ेवर सब हैं बाइसे क़त्ले जंगो ग़ज़ब
दुनिया के हर एक झगड़े का सबब यह तेरा है, वह मेरा है
जब रूह जुदा हो गई तन से वापस नहीं आ सकती धन से
फिर क्यों यह तपस्या है मन में यह तेरा है, वह मेरा है
दौलत का शौक़ है हिर्स आ गई महर नेक नहीं तो बद भी नहीं
इतना न मगर बढ़ जाए कहीं यह तेरा है, वह मेरा है
अदम से बशर आएगा एक दिन ज़माना कहेगा उसे नेक दिन
लड़कपन के दिन होंगे शाही के दिन मुहब्बत के दिन बेगुनाही के दिन

ख़ुशी उन दिनों नूर बरसाएगी
मगर यह घड़ी भी गुज़र जाएगी

फिर आएगा मदहोश करने शबाब रहेगा ख़्याले शराब व कबाब
कभी जोशे मस्ती कभी नोशे ख़्वाब न फ़िक्रे सवाब व न ख़ौफ़े अज़ाब

घटा दिल पर पिंदार की छाएगी

मगर यह घड़ी भी गुज़र जाएगी

सिपाही जवां मर्द कहलाएगा लड़ाई में ज़ख़्म गिरां खाएगा
ग़श आएगा सेरों लहू जाएगा कराहेगा तड़पेगा चिल्लाएगा
फ़िज़ा बूंद पानी को तरसाएगी
मगर यह घड़ी भी गुज़र जाएगी

बशर होगा आलम में ज़ी एहतिशाम बढ़ेगी लियाक़त से शोहरत तमाम
रहेगी न शोहरत भी उसकी मदाम कि शोहरत को भी यहां नहीं है क़याम
यह शोहरत नया रंग चमकाएगी
मगर यह घड़ी भी गुज़र जाएगी

ज़माना करेगा जवां को अधेड़ तवानाई का होगा पज़ मुर्दा पेड़
लगाएगा अस्पे जवानी को ऐड़ निक़ाहत करेगी क़व्वाओं से छेड़
तबीयत इस आफ़त से घबराएगी
मगर यह घड़ी भी गुज़र जाएगी

बुढ़ापे से होगा बड़ा इंक़लाब न होगी दिलेरी न होगा शबाब
ज़ईफ़ी करेगी कुल आज़ा ख़राब यहां तक कि जीना भी होगा अज़ाब
अजल चील सी सर पर मंडलाएगी
मगर यह घड़ी भी गुज़र जाएगी

मर्ज़ मौत का जब उठाएगा सर दवा करके हारेंगे कुलचारा गर
बिगड़ जाएगा खेल सब सर-ब-सर बन आएगी बीमार की जान पर
बड़ी सख़्तियां नरग़ दिखाएगी
मगर यह घड़ी भी गुज़र जाएगी

सेहत का फ़ार्मूला

जहां तक काम चलता हो ग़िज़ा से
वहां तक चाहिए बचना दवा से

अगर तुझको लगे जाड़े में सर्दी तो इस्तेमाल कर अंडे की ज़र्दी
जो हो महसूस मेदे में गिरानी तो पी ले सौंफ़ या अदरक का पानी
बने गर ख़ून कम, बलग़म ज़्यादा तो खा गाजर, चने, शलग़म ज़्यादा
जिगर के बल पर है इंसान जीता अगर ज़ोफ़े जिगर है तो खा पपीता
जिगर में हो अगर गर्मी दही खा अगर आंतों में ख़ुश्की हो तो घी खा
थकन से हों अगर अज़्लात ढीले तो फ़ौरन दूध गर्मा-गरम पी ले
ज़्यादा गर दिमाग़ी है तेरा काम तो खा ले शहद के हमराह बादाम
अगर हो क़ल्ब पर गर्मी का एहसास मुरब्बा आमला खा और अनन्नास
जो दुखता हो गला नज़ले के मारे तो कर नमकीन पानी के ग़रारे
अगर है दर्द से दांतों के बेकल तो उंगली से मसूढ़ों पर नमक मल

जो बदहज़मी में चाहे तू इफ़ाक़ा
तो दो-एक वक़्त का कर ले तू फ़ाक़ा

हम्द बारी तआला

तेरी ज़ात पाक है ऐ ख़ुदा तेरी शान जल्ले जलालहू
नहीं कोई तुझ-सा भी दूसरा तेरी शान जल्ले जलालहू
तू ख़ुदा ग़रीब व अमीर का तू सहारा शाह व फ़क़ीर का
तू है सारी दुनिया का आसरा तेरी शान जल्ले जलालहू
जिसे चाहे तू वह जलील हो जिसे चाहे तू वह ज़लील हो
करे कौन तुझसे मुक़ाबला तेरी शान जल्ले जलालहू
करे कौन ज़ाहिर जो बयां तू सभी की भरता है झोलियां
है मुझे भी तेरा ही आसरा तेरी शान जल्ले जलालहू
जिसे चाहे ज़िंदा उठाए तू जिसे चाहे मुर्दा उठाए तू

तेरे हाथ में है फ़ना-बक़ा
तेरी शान जल्ले जलालहू

मुनाजात

ऐ ख़ालिक़े अर्ज़ो समा ऐ मालिके रोज़े जज़ा
तू इब्तिदा, तू इंतिहा कोई नहीं तेरे सिवा
सबका तू ही हाजत रवा मुश्किल में तू मुश्किल कुशा
करते हैं तुझसे इल्तिजा सुन ले हमारी भी दुआ
जो राह सीधी हो दिखा रस्ते सही हम को चला
कर इल्म की दौलत अता इज़्ज़त अता, शोहरत अता
रख हर बुराई से परे जब है भलाई में भला
ले काम भी हम से वही जिसमें हो बस तेरी रज़ा
कर सुर्ख़रू दुनिया में भी उक़बा के भी क़ाबिल बना

हर इक का बेड़ा पार कर
सब को ठिकाने से लगा

हर क़िस्म की बीमारी, मुसीबत, तिजारती क़र्ज़, दुश्मनों से हिफ़ाज़त का नुस्ख़ा

हर क़िस्म की बीमारी, मुसीबत, तिजारती क़र्ज़, दुश्मनों से बचाओ और हिफ़ाज़त के लिए यह दुआ सुबह पढ़ी जाए तो कभी-कभी तो शाम तक नतीजा सामने आ जाता है और कभी अल्लाह के चाहने से थोड़ा इंतिज़ार करना पड़ सकता है। लेकिन तासीर अलहम्दुलिल्लाह अपने वक़्त पर असर दिखाकर रहती है।

दुआ के वक़्त सिर्फ़ अरबी मतन ही पढ़ें। तर्जुमा इसलिए लिखा गया है कि पढ़ने वाला यह समझ सके कि क्या कुछ पढ़ रहा है।

सोलह (16) आयात हिफ़ाज़त

अऊज़ुबिल्लाहिमिनश्शैतानिर्रजीम

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

1. वला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा, व हुवल अलिय्युल अज़ीम।

और उन सबकी हिफ़ाज़त करने में वह कभी थकता नहीं, वह बहुत आलीशान और अज़ीमुश्शान है। (सूरह बक़रा, आयत 255)

2. फ़ल्लाहु ख़ैरुन हाफ़िज़ँव व हु-व अरहमुर्राहिमीन।

बेहतर हिफ़ाज़त करनेवाला तो बस अल्लाह ही है और वही सब मेहरबानों से ज़्यादा मेहरबान है। (सूरह यूसुफ़, आयत 64)

3. व हिफ़्ज़म-मिन-कुल्लि शैतानिम-मारिद।

और आसमान को हमने हर मर्दूद शैतान के शर से महफ़ूज़ कर दिया। (सूरह साफ़्फ़ात, आयत 7)

4. व हिफ़्ज़न ज़ालि-क तक़दीरुल अज़ीज़िल अलीम।

और मुकम्मल हिफ़ाज़त है। यह अंदाज़ा बांधा हुआ है ग़ालिब इल्म वाले का। (सूरह हा-मीम-सज्दा, आयत 12)

5. व हफ़िज़नाहा मिन कुल्लि शैतानिर्रजीम।

और आसमान की हिफ़ाज़त के लिए हमने हर शैतान मर्दूद पर अंगारों का पथरावो जारी कर दिया। (सूरह हिज्र, आयत 17)

6. इन कुल्लु नफ़सिल-लम्मा अलैहा हाफ़िज़।

ऐसी कोई भी जान नहीं है कि उस पर मुहाफ़िज़ मुक़र्रर न हो। (सूरह तारिक़, आयत 4)

7. वल हु-व क़ुरआनुम-मजीद। फ़ी लौहिम-महफ़ूज़।

बल्कि यह तो वह क़ुरआन है जो बड़ी शानवाला है, जैसा लोहे महफ़ूज़ में था वैसा ही यहां आया है। (सूरह बुरूज, आयत 21-22)

8. व मुरसिलु अलैकुम ह-फ़-ज़ह।

और अल्लाह तुम पर हिफ़ाज़त करनेवाले पहरेदार भेजता है।

(सूरह अनआम, आयत 61)

9. इन-न रब्बि अला कुल्लि शैइन हफ़ीज़।

बेशक, मेरा रब हर चीज़ पर ख़ुद ही निगहबान और हिफ़ाज़त फ़रमाने वाला है। (सूरह हूद, आयत 57)

10. लहू मुअक्क़िबातुम मिम बैनि यदैहि व मिन ख़ल्फ़िही यह-फ़-ज़ूनहू मिन अमरिल्लाह।

अल्लाह ने हर शख़्स के आगे-पीछे लगे हुए चौकीदार मुक़र्रर कर दिए हैं जो अल्लाह के हुक्म से आदमी की हिफ़ाज़त करते हैं।

(सूरह रअ्द, आयत 11)

11. इन्ना नहनु नज़्ज़ल-नज़-ज़िक-र व इन्ना लहू ल-हाफ़िज़ून।

बेशक इस नसीहतनामे को हमने नाज़िल फ़रमाया है और यक़ीनन हम इसकी हिफ़ाज़त करेंगे। (सूरह हुजुरात, आयत 9)

12. व कुन्ना लहुम हाफ़िज़ून।

और उन सबके लिए हिफ़ाज़त करनेवाले हम थे।

(सूरह अंबिया, आयत 82)

13. व रब्बु-क अला कुल्लि शैइन हफ़ीज़।

जबकि आपका रब तो हर चीज़ की ख़ुद ही हिफ़ाज़त करनेवाला है।

(सूरह सबा, आयत 21)

14. अल्लाहु हफ़ीज़ुन अलैहिम व मा अन-त अलैहिम बिवकील।

उनकी हिफ़ाज़त सिर्फ़ अल्लाह करता है। उनकी निगरानी करना आपकी ज़िम्मेदारी नहीं। (सूरह शूरा, आयत 6)

15. व इन्दना किताबुन हफ़ीज़।

हमारे पास हिफ़ाज़त का दस्तूर लिखा हुआ मौजूद है।

(सूरह क़ाफ़, आयत 4)

16. व इन-न अलैकुम लहाफ़िज़ून।

और बेशक, तुम पर हिफ़ाज़त करनेवाले फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं।

(सूरह इंफ़ितार, आयत 10)

मर्ज़ से शिफ़ायाबी की दुआ

ऐसा मर्ज़ जिससे तबीब भी आजिज़ आ चुके हों तो उसके लिए बड़ी आसान तर्कीब है। अव्वल व आख़िर 17-17 मर्तबा दुरूद शरीफ़, 17 मर्तबा सूरह फ़ातिहा बिस्मिल्लाह के वस्ल के साथ, 17 मर्तबा सूरह इख़्लास, 17 मर्तबा आयतुल कुर्सी (कुल 85 मर्तबा) पानी पर दम करके मरीज़ या मरीज़ा को पिलाएं। इंशाअल्लाह बहुक्मे रब्बी जल्द या देर इफ़ाक़ा होगा।

घरवालों में इत्तिफ़ाक़ पैदा करने का नुस्ख़ा

अगर आपस में घरवालों में नाइत्तिफ़ाक़ी हो तो 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' सात मर्तबा पढ़कर खाने पर दम करके सब खा लिया करें तो इंशाअल्लाह आपस में मुहब्बत पैदा हो जाएगी।

मुमकिन नहीं

1. जैसी सोहबत में बैठे वैसा न बने।
2. हर काम में जल्दी करे और नुक़सान न उठाए।
3. हिम्मत और इस्तक़लाल को शिआर बनाए और मुराद को न पहुंचे।
4. औरतों की सोहबत में बैठे और रुसवा न हो।
5. दूसरों के झगड़ों में पड़ता फिरे और आफ़त में न फंसे।
6. दुनिया से दिल लगाए और पशेमान न हो।
7. ज़्यादा बातें करे और कोफ़्त न उठाए।

भरोसा नहीं

1. अब्र के साए का।
2. ग़ैर औरत की मुहब्बत का।

3. ख़ुशामदी की तारीफ़ का।
4. ग़र्ज़मंद की दोस्ती का।
5. जुआरी की मालदारी का।
6. खाने-पीने के यारों का।
7. तंदुरुस्ती और ज़िंदगी का।

मत खा

1. ज़्यादा।
2. हर किसी के सामने।
3. बाज़ार में खड़े होकर।
4. बग़ैर ख़ूब भूख के।
5. बात-बात पर क़सम।
6. बख़ील के यहां दावत।
7. हराम माल।

आती है

1. मुहब्बत व दियानत और किफ़ालत-शिआरी से दौलत।
2. बेअदबी करने से बदनसीबी।
3. फ़ुज़ूलख़र्ची से मुफ़्लिसी।
4. बड़ों की सोहबत में बैठने से अक़्ल।
5. ग़ीबत करने और सुनने से बीमारी।
6. मुसीबत व तकलीफ़ में सब्र करने और शिकवा न करने से राहत।
7. यतीम, बेवा और वक़्फ़ का माल नाहक़ खाने से बर्बादी।

शिकस्त खा ले

1. इल्म व हुनर के इज़्हार में उस्ताद से।

2. ज़बान चलाने में औरत से।
3. ऊंची आवाज़ से बोलने में गधे से।
4. बहस करने में जाहिल से।
5. खाने-पीने में साथी से।
6. माल ख़र्च करने में शेख़ी-ख़ोर से।
7. लड़ाई में बीवी से।

क़बूल कर ले

1. भाई का उज़्र चाहे दिल न माने।
2. नसीहत की बात चाहे कड़वी हो।
3. दोस्त का हदिया चाहे हक़ीर हो।
4. अपनी ग़लती चाहे ज़िल्लत हो।
5. ग़रीब की दावत चाहे तकलीफ़ हो।
6. मां-बाप का हुक्म चाहे नागवार हो।
7. बीवी की मुहब्बत चाहे बदसूरत हो।

नेकी और शराफ़त

1. अहल व अयाल वाले मुफ़्लिस की ख़ुफ़िया मदद करना।
2. मख़्फ़ी क़र्ज़ और हक़ को अदा कर देना।
3. बुराई पाने के बावजूद रिश्तेदारों के साथ एहसान व सुलूक करते रहना।
4. जहां कोई न कह सके और ज़रूरत हो वहां हक़ बात कह देना।
5. कमज़ोर और मज़्लूम की हिमायत करना।
6. क़ाबू पाकर माफ़ कर देना।

शिकायत मत कर

1. अपनी क़िस्मत की और ज़माने की।

2. अपने ज़ाती मकान की तंगी की।
3. औलाद के सामने अपने बड़ों की।
4. कभी भूलकर भी मां, बाप और उस्ताद की।
5. ग़ैर के सामने अपने दोस्त की।
6. बीवी के सामने उसके मैकेवालों की।
7. रुख़सत करने के बाद अपने मेहमान की।

मुंतज़िर रहे

1. ज़्यादा खानेवाला बीमारी का।
2. औबाश यारोंवाला बर्बादी का।
3. चुग़लख़ोरी करनेवाला ज़िल्लत व ख़्वारी का।
4. ससुर व सास से बुरा बर्ताव करनेवाला अपने दामाद का।
5. मां-बाप का नाफ़रमान अपनी औलाद की नाफ़रमानी और मुफ़्लिसी का।
6. ज़ुल्म करनेवाला अपनी हलाकत का।
7. पड़ोसी को तकलीफ़ पहुंचानेवाला ख़ुदा के क़हर व अज़ाब का।

बेहतर है

1. बदकार और बुरे आदमी की सोहबत से सांप की सोहबत।
2. झगड़ा मोल लेने से ग़म खाना।
3. बेग़ैरती की ज़िंदगी से इज़्ज़त की मौत।
4. बेमौक़े बोलने की आदत से गूंगा हो जाना।
5. छिछोरे आदमी की मदद और हदिये से फ़ाक़ा।
6. हराम माल की मालदारी से मुफ़्लिसी।
7. ख़ौफ़ व ज़िल्लत के हलवे से आज़ादी की ख़ुश्क रोटी।

दूर भाग

1. तोहमत की जगह से।
2. झगड़े और मुक़द्दमेबाज़ी से।
3. सम्धियाने के पड़ोस से।
4. ग़ीबत के करने और सुनने से।
5. फ़हश नॉविलों और रिसालों से।
6. नशाबाज़ों से।
7. बुरी सोहबत से।

आज़माया जाता है

1. बहादुर, मुक़ाबले के वक़्त।
2. मुस्तक़बिल मिज़ाज, मुसीबत के वक़्त।
3. अमानतदार, मुफ़्लिसी के वक़्त।
4. औरत की मुहब्बत, फ़ाक़े के वक़्त।
5. दोस्त, ज़रूरत के वक़्त।
6. शरीफ़, मामला टूटने के वक़्त।
7. बुर्दबार, ग़ुस्से के वक़्त।

ज़ाहिर मत कर

1. किसी का ऐब।
2. दिल का भेद।
3. सफ़र करने की सिम्त।
4. अपनी तिजारत का फ़ायदा और नुक़सान।
5. अमानत की बात।
6. पूरी ताक़त।
7. ज़्यादा ज़रूरत।

आठ आदमियों पर ताज्जुब है!

1. ताज्जुब है उस शख़्स पर जो मौत को जानता हो और फिर भी हंसे।

2. ताज्जुब है उस शख़्स पर जो यह जानता हो कि यह दुनिया आख़िर एक दिन ख़त्म होने वाली है फिर भी उसमें रग़बत करे।

3. ताज्जुब है उस शख़्स पर जो यह जानता हो कि हर चीज़ मुक़द्दर से है फिर भी किसी चीज़ के जाते रहने पर अफ़सोस करे।

4. ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको आख़िरत में हिसाब का यक़ीन हो फिर भी माल जमा करे।

5. ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको जहन्नम की आग का इल्म हो फिर भी गुनाह करे।

6. ताज्जुब है उस शख़्स पर जो अल्लाह को जानता हो फिर भी किसी और का ज़िक्र करे।

7. ताज्जुब है उस शख़्स पर जिसको जन्नत की ख़बर हो फिर भी किसी चीज़ में राहत पाए।

8. ताज्जुब है उस शख़्स पर जो शैतान को दुश्मन समझे फिर भी उसकी इताअत करे।

खाने की कुछ सुन्नतें

1. दस्तरख़ान बिछाना।

2. दोनों हाथ गट्टों तक धोना।

3. कुल्ली करना जरूरी नहीं लेकिन अगर कोई मुंह की सफ़ाई के लिए करना चाहे तो मना नहीं है। अलबत्ता हालते जनाबत में कुल्ली के बग़ैर खाना मकरूह है।

4. बुलन्द आवाज़ से बिस्मिल्लाह पढ़ना।

5. दाहिने हाथ से खाना।

6. खाने की मज्लिस में जो शख़्स सबसे ज़्यादा बुज़ुर्ग और बड़ा हो उससे खाना शुरू कराना।

7. खाना एक क़िस्म का हो तो अपने सामने से खाना।

8. अगर कोई लुक़्मा गिर जाए तो उठाकर साफ़ करके खाना।

9. टेक लगाकर न खाना।

10. खाने में कोई ऐब न निकालना।

11. जूता उतारकर खाना।

12. खाने के वक़्त उकडूं बैठना कि दोनों घुटने खड़े हों और सुरीन ज़मीन पर हो। या एक घुटना खड़ा हो और दूसरे घुटने को बिछाकर उस पर बैठे या दोनों घुटने ज़मीन पर बिछाकर क़ायदे की तरह आगे की तरफ़ ज़रा झुककर बैठे।

13. खाने के बाद बर्तन प्याला व प्लेट को अच्छी तरह उंगली से साफ़ कर लेना, क्योंकि बर्तन भी उसके लिए दुआए मग़फ़िरत करता है। (मिश्कात)

14. खाने के बाद की दुआए पढ़ना :

अल-हमदुलिल्ला-हिल्लज़ी अत-अ-म-ना व सक़ाना व ज-अलना मिनल मुस्लिमीन।

तर्जुमा : तमात तारीफ़ें अल्लाह के लिए हैं जिसने हमें खिलाया और पिलाया और मुसलमान बनाया।

15. पहले दस्तरख़ान उठवाना फिर ख़ुद उठना।

16. दोनों हाथ धोना।

17. कुल्ली करना।

18. अगर शुरू में बिस्मिल्लाह पढ़ना भूल जाए तो यूँ पढ़े :

बिसमिल्लाहि अव्वलहू व आख़िरहू।

19. जब किसी के यहां दावत खाए तो मेज़बान को यह दुआ दे :

अल्लहुम-म अत्इम मन अत-अ-म-नी वसक़ि मन सक़ानी।

तर्जुमा : ऐ अल्लाह! जिसने मुझे खिलाया तू उसे खिला और जिसने मुझे पिलाया उसे पिला।

अफ़कारे आलिया–अल्लाह का ज़िक्र हर हाल में

जब कोई भी काम शुरू करे तो कहे	बिस्मिल्लाह
जब किसी काम के करने का वादा करे तो कहे	इंशाअल्लाह
जब किसी चीज़ में मौजूद ख़ूबी की तारीफ़ करे तो कहे	सुब्हानल्लाह
जब कोई दुख तकलीफ़ पेश आए तो कहे	या अल्लाह
जब किसी चीज़ को पसन्दीदगी की निगाह से देखे तो कहे	माशाअल्लाह
जब किसी का शुक्रिया अदा करे तो कहे	जज़ाकल्लाह
जब नींद से बेदार हो तो कहे	ला इला-ह इल्लल्लाह
जब छींक आए तो कहे	अलहम्दुलिल्लाह
जब किसी दूसरे को छींकता हुआ देखे तो कहे	यर-हमुकल्लाह
जाने-अनजाने में कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो कहे	अस्तग़फ़िरुल्लाह
जब किसी को कुछ ख़ैरात करे तो कहे	फ़ी सबीलिल्लाह
जब किसी को रुख़्सत करे तो कहे	फ़ी अमानिल्लाह
जब कोई मुसीबत या मुश्किल दरपेश हो तो कहे	तवक्कलतु अलल्लाह
जब कोई नापसन्दीदा, नाज़ेबा कलिमात सुने या कहे हों तो कहे	नऊज़ुबिल्लाह
जब कोई दिल-पसन्द बात कहे या सुने तो कहे	फ़-त-बारकल्लाह
जब दुआ में शरीक हो तो कहे	आमीन
जब किसी की मौत की ख़बर मिले तो कहे	इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन

उम्मते मुस्लिमा से क़ुरआन की शिकायत है कि

1. आपने क़ुरआन का हक़ अदा नहीं किया, उससे ग़फ़लत बरती।

2. आपके घर से फ़हश गानों की आवाज़ तो आती है, मगर क़ुरआन की तिलावत की नहीं।

3. आपने उसे जुज़दानों और ताक़ों में सजाया मगर ज़िंदगियों में नहीं उतारा।

4. आपके पास कैबल टी॰वी॰ और फ़िल्में देखने, रेडियो सुनने, टेप रिकार्ड सुनने, म्यूज़िक सुनने, नॉविल, गंदे फ़िल्मी रिसालों के पढ़ने के लिए वक़्त है लेकिन क़ुरआन की तिलावत और दीनी मालूमात पर मब्नी किताबों के मुताले के लिए वक़्त नहीं।

अजीब क़िस्सा

बादशाह की बीवी ने बादशाह से कहा, 'तू जहन्नमी है।' बादशाह ने कहा, अगर मैं जहन्नमी हूं तो तुझे तीन तलाक़, अब यह बीवी हलाल है या हराम?

इमाम शाफ़ई रह० या किसी और फ़क़ीह के दौर का वाक़िया है कि उस वक़्त का बादशाह अपनी बीवी के साथ तख़्लिया में था। उसकी बीवी किसी वजह से उससे नाराज़ थी, बादशाह चाहता कि मुहब्बत व प्यार में वक़्त गुज़ारें लेकिन बीवी जली बैठी थी और चाहती थी कि उसकी शक्ल एक आंख भी न देखूं। इधर से इसरार उधर से इंकार। जब बहुत देर गुज़र गई तो बादशाह ने मुहब्बत में कुछ और बात कर दी। जब बादशाह ने बात कर दी तो बीवी ने कहा, जहन्नमी दफ़ा हो यहां से। जब बीवी ने इतनी बड़ी बात कह दी तो बादशाह को भी ग़ुस्सा आ गया। चुनांचे कहने लगा, 'अच्छा अगर मैं जहन्नमी हू तो तुझे भी तीन तलाक़।' अब बादशाह ने बात तो कह दी, मगर वह दोनों पूरी रात मुतफ़क्किर रहे कि आया तलाक़ हुई भी है या नहीं।

ख़ैर सुबह उठे तो उनके दिमाग़ ठंडे हो चुके थे। चुनांचे फ़तवा लेने के लिए मुतफ़क्किर हो गए। किसी मक़ामी आलिम के पास पहुंचे और उनको पूरी सूरते हाल बताई और कहा कि बताएं कि तलाक़ वाक़ेअ भी हुई या नहीं, क्योंकि मशरूत थी। उन्होंने कहा, मैं इसका फ़तवा नहीं दे सकता क्योंकि मैं नहीं जानता कि तुम जहन्नमी हो या नहीं। कई और उलमा से भी पूछा गया मगर उन सबने कहा कि हम इसका फ़तवा नहीं दे सकते क्योंकि बात मशरूत है।

बादशाह चाहता था कि इस क़द्र ख़ूबसूरत और अच्छी बीवी मुझसे जुदा

न हो। मगर मसला का पता नहीं चल रहा था कि अब हलाल भी है या नहीं। चुनांचे बड़ा मसला बना। बल्कि बादशाह का मसला तो और ज़्यादा फैलता है। बिल आख़िर एक फ़क़ीह को बुलाया गया और उनसे अर्ज़ किया गया कि आप बताएं। उन्होंने फ़रमाया कि मैं जवाब तो दूंगा मगर उसके लिए मुझे बादशाह से तंहाई में कुछ पूछना पड़ेगा। उसने कहा ठीक है, पूछें। चुनांचे उन्होंने बादशाह से अलेहदगी में पूछा कि क्या आपकी ज़िंदगी में कभी कोई ऐसा मौक़ा आया है कि आप उस वक़्त गुनाह करने पर क़ादिर हों, मगर आपने अल्लाह के ख़ौफ़ से वह कबीरा गुनाह छोड़ दिया हो।

बादशाह सोचने लगा। कुछ देर के बाद उसने कहा, "हां! एक मर्तबा ऐसा वाक़िया पेश आया था।" पूछा, "वह कैसे?" वह कहने लगा, "एक मर्तबा जब मैं आराम के लिए दोपहर के वक़्त अपने कमरे में गया तो मैंने देखा कि महल में काम करनेवाली लड़कियों में से एक बहुत ही ख़ूबसूरत लड़की मेरे कमरे में कुछ चीज़ें संवार रही थी। जब मैं कमरे में दाख़िल हुआ तो मैंने उस लड़की को कमरे में अकेले पाया। उसके हुस्न व जमाल को देखकर मेरा ख़्याल बुराई की तरफ़ चला गया। चुनांचे मैंने दरवाज़े की कुंडी लगा दी और उसकी तरफ़ आगे बढ़ा। वह लड़की एक नेक अफ़ीफ़ा और पाकदामन थी। उसने जैसे ही देखा कि बादशाह ने कुंडी लगा ली है और मेरी तरफ़ ख़ास नज़र के साथ क़दम उठा रहा है तो वह फ़ौरन घबरा गई। जब मैं उसके क़रीब पहुंचा तो वह कहले लगी 'या मालिकु! इत्तक़ल्लाह'। ऐ बादशाह! अल्लाह से डर। जब उसने यह अल्फ़ाज़ कहे तो अल्लाह का नाम सुनकर मेरे रोंगटे खड़े हो गए और अल्लाह का जलाल मेरे ऊपर ग़ालिब आ गया। चुनांचे मैंने उस लड़की से कहा, अच्छा, चली जा। मैंने दरवाज़ा खोला और उसे कमरे से भेज दिया। अगर मैं गुनाह करना चाहता तो उस वक़्त उस लड़की से गुनाह कर सकता था। मुझसे कोई पूछने वाला नहीं था मगर अल्लाह के जलाल, अज़्मत और ख़ौफ़ की वजह से मैंने उस लड़की को भेज दिया और गुनाह से बाज़ आया।"

उस फ़क़ीह ने फ़रमाया कि अगर तेरे साथ यह वाक़िया पेश आया था तो मैं फ़तवा देता हूँ कि तू जन्नती है और तेरी तलाक़ वाक़ेअ नहीं हुई है।

अब दूसरे उलमा ने कहा, "जनाब! आप कैसे फ़तवा दे सकते हैं?"

उन्होंने फ़रमाया, जनाब! मैंने अपनी तरफ़ से फ़तवा नहीं दिया बल्कि यह फ़तवा तो क़ुरआन दे रहा है। वह हैरान हो गए कि क़ुरआन ने फ़तवा कहां दिया। उन्होंने जवाब में क़ुरआन की आयत पढ़ी :

कि जो अपने रब के सामने खड़े होने से डर गया और उसने अपने नफ़्स को ख़्वाहिशात में पड़ने से बचा लिया तो ऐसे बन्दे का ठिकाना जन्नत होगी।

फिर उन्होंने बादशाह को मुख़ातिब करके फ़रमाया, चूंकि तुमने अल्लाह के ख़ौफ़ की वजह से गुनाह को छोड़ा था इसलिए मैं लिखकर देता हूं कि अल्लाह तआला तुम्हें जन्नत अता फ़रमा देंगे।

अल्लाह तआला हमें मईयत का यह इस्तहज़ार नसीब फ़रमा दें, हमें गुनाहों की लज़्ज़त से महफ़ूज़ फ़रमा दें और बक़िया ज़िंदगी गुनाहों से पाक होकर गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दें। (आमीन, सुम-म आमीन)

इश्क़ की चोट तो पड़ती है सभी पर यकसां
ज़र्फ़ के फ़र्क़ से आवाज़ बदल जाती है

आसमानी किताबों में सिर्फ़ क़ुरआन अपनी असली सूरत पर बाक़ी है

एक दीनी आलिम को बैरूने मुल्क में ऐसी जगहों पर बैठने का मौक़ा मिला जहां ईसाइयों का पादरी भी बैठा हुआ था। यहूदियों का रिबाई भी होता था और हिन्दुओं का पंडित भी होता था। गोया मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब के आलिम होते थे और हर एक को अपने-अपने मज़हब के बारे में बात करनी होती थी।

एक मर्तबा एक ईसाई ने पूछा कि आइंदा जब हमारी महफ़िल होगी तो हमें उस वक़्त क्या करना चाहिए? उन आलिम साहब ने कहा कि हर-हर मज़हब वाले के पास जो "अल्लाह का कलाम है" उसकी तिलावत करनी चाहिए और पढ़कर समझना भी चाहिए कि उसका ख़ुलासा क्या है। इस बात पर सब आमादा हो गए।

चुनांचे जब अगली दफ़ा पहुंचे तो उन्होंने सबसे पहले उन आलिम साहब से कहा कि आप ही इब्तिदा करें। उस मौलाना ने सूरह फ़ातिहा पढ़ी और उसका ख़ुलासा भी उन्हें समझाया; क्योंकि यह फ़ातिहतुल किताब है। मौलाना के बाद ईसाई की बारी थी। उसने बाइबल पढ़नी शुरू की। जब उसने बाइबल पढ़ी तो मौलाना ने उससे कहा कि मुझे एक बात की वज़ाहत मत्लूब है। वह कहने लगा, क्या वज़ाहत मत्लूब है? मौलाना ने कहा, आप बाइबल किस ज़बान में पढ़ रहे हैं? कहने लगा, अंग्रेज़ी ज़बान में। मौलाना ने कहा, आप अल्लाह का कलाम पढ़ें, अल्लाह का कलाम अंग्रेज़ी ज़बान में तो नाज़िल नहीं हुआ था, चूंकि यह बात तय हुई थी कि हर मज़हब वाले के पास जो अल्लाह का कलाम है वह पढ़ेंगे इसलिए आप अल्लाह का कलाम पढ़ें। वह कहने लगा, जी वह तो हमारे पास नहीं है, हमारे पास तो फ़क़त उसका इंग्लिश तर्जुमा है जो कि इंसानों के अल्फ़ाज़ हैं। आगे यहूदी बैठा था वह कहने लगा कि फिर तो हमारे पास भी अल्लाह का कलाम नहीं है। मौलाना ने पूछा, क्यों? वह कहने लगा कि जिस ज़बान में हमारी यह किताब नाज़िल हुई आज वह ज़बान भी दुनिया में कहीं मौजूद नहीं है, उस ज़बान को पढ़ने और समझने वाले ही मौजूद नहीं तो वह किताब कैसे पढ़ें?

बिल आख़िर सबने इस बात पर इत्तिफ़ाक़ किया कि पूरी दुनिया के अदयान में से सिर्फ़ दीने इस्लाम वाले लोग ऐसे हैं जिनके पास अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का कलाम असल शक्ल में आज तक मौजूद है। जब मौलाना ने उन्हें बताया कि इस किताब के हमारे यहां हाफ़िज़ भी मौजूद हैं तो वे बड़े हैरान हुए। मौलाना ने कहा कि आपकी किताब के किसी एक सफ़े का कोई हाफ़िज़ हो तो मुझे दिखाएं। अव्वल तो किताब ही महफ़ूज़ नहीं और जो कुछ मौजूद है उसके एक सफ़े का भी कोई हाफ़िज़ नहीं। यह शर्फ़ अल्लाह तआला ने दीने इस्लाम ही को बख़्शा है।

हालात के क़दमों में क़लन्दर नहीं गिरता
टूटे जो सितारा तो ज़मीन पर नहीं गिरता
गिरते हैं समुन्द्र में बड़े शौक़ से दरिया
लेकिन किसी दरिया में समुन्द्र नहीं गिरता

नाजाइज़ इश्क़ से दुनिया व आख़िरत तबाह हो जाती है—ताआत का नूर सल्ब हो जाता है

बदनिगाही के मुज़िरात इस क़द्र हैं कि बसा औक़ात उनसे दुनिया व दीन दोनों तबाह व बर्बाद हो जाते हैं, आजकल इस मर्ज़े रूहानी में मुब्तला होने के असबाब बहुत ज़्यादा फैलते जा रहे हैं, इसलिए मुनासिब मालूम हुआ कि इसके बाज़ मुज़िरात और उनसे बचने का इलाज मुख़्तसर तौर पर तहरीर कर दिया जाए, ताकि उसके मुज़िरात से हिफ़ाज़त की जा सके, चुनांचे हस्बे ज़ैल उमूर का एहतिमाम करने से नज़र की हिफ़ाज़त बसहूलत हो सकेगी—

1. जिस वक़्त मस्तूरात का गुज़र हो, एहतिमाम से निगाह नीची रखना, चाहे कितना ही नफ़्स का तक़ाज़ा देखने का हो।

जैसा कि इस पर आरिफ़ हिन्दी हज़रत ख़्वाजा अज़ीज़ुल हसन साहब मजज़ूब ने इस तौर पर तंबीह फ़रमाई है :

दीन का देख है ख़तर, उठने न पाए हां नज़र
कूए बुतां में तू अगर जाए तो सर झुकाए जा

2. अगर निगाह उठ जाए, किसी पर पड़ जाए तो फ़ौरन निगाह नीची कर लेना, चाहे कितनी ही गरानी हो, चाहे दम निकल जाने का अंदेशा हो।

3. यह सोचना कि निगाह की हिफ़ाज़त न करने से दुनिया में ज़िल्लत का अंदेशा है, ताआत का नूर सल्ब हो जाता है, आख़िरत की तबाही यक़ीनी है।

4. बदनिगाही पर कम-से-कम चार रकअत नफ़्ल पढ़ने का एहतिमाम और कुछ-न-कुछ हस्बे गुंजाइश ख़ैरात और कसरत से इस्तिग़फ़ार करने का मामूल बना लेना चाहिए।

5. यह सोचना कि बदनिगाही की ज़ुल्मत से क़ल्ब का सत्यानास हो जाता है और यह ज़ुल्मत बहुत देर में दूर होती है, यहां तक कि जब तक बार-बार निगाह की हिफ़ाज़त न की जाए, बावजूद तक़ाज़े के, उस वक़्त तक क़ल्ब साफ़ नहीं होता।

6. यह सोचना कि बदनिगाही से मीलान, मीलान से मुहब्बत और

मुहब्बत से इश्क़ पैदा हो जाता है और नाजाइज़ इश्क़ से दुनिया व आख़िरत तबाह हो जाती है।

7. यह सोचना कि बदनिगाही से ताआत, ज़िक्र, शग़ल से रफ़्ता-रफ़्ता रग़बत कम हो जाती है। यहां तक कि तर्क की नौबत आती है फिर नफ़रत पैदा होने लगती है।

मेरा दिल साफ़ है, मेरी नज़र पाक है यह जुमला कहना आम तौर से शैतान का धोखा होता है

"कुनतुम ख़ै-र उम्मतिन.........यानी" यह बेहतरीन उम्मत थी जो तमाम कायनात के लिए भलाई फैलाने और बुराई से रोकने के लिए पैदा की गई थी, लेकिन वही उम्मत आज ख़ुद ही जराइम की आदी हो रही है।

तू नहीं है इस जहां में मुंह छिपाने के लिए
तू नमूना बन के आया है ज़माने के लिए
तू नहीं है वक़्त ग़फ़लत में गँवाने के लिए
तू है दुनिया भर के सोतों को जगाने के लिए

इरशाद फ़रमाया कि बेपर्दगी के मफ़ासिद को अहले फ़तावा से पूछिए। एक औरत ने ख़त लिखा कि मेरी बहन बेपर्दा आती-जाती थी। मेरे शौहर का दिल उस पर आया, मुझे भंगन की तरह ज़लील रखता है, कोई तावीज़ दीजिए। बाज़ लोग दिल साफ़ और नज़र पाक या नज़र साफ़ और दिल पाक का बहाना करते हैं। उनसे पूछता हूं कि हज़रत अली रज़ि० के दिल और उनकी नज़र के बारे में क्या ख़्याल है। कहने लगे, अरे साहब क्या कहना उनका! दिल तो पाक और नज़र भी पाक थी। मैंने कहा कि फिर हुज़ूर सल्ल० ने उनको क्यों हुक्म दिया कि ऐ अली रज़ि०! पहली अचानक नज़र माफ़ है, मगर ख़बरदार दूसरी नज़र मत डालना। फिर मैंने पूछा कि क्या आप लोगों की नज़र और आप लोगों का दिल हज़रत अली रज़ि० से ज़्यादा साफ़ और पाक है।

देखिए अगर बिजली का तार नंगा हो और पावर हाउस से उस वक़्त बिजली न आ रही हो तो भी उसको अक़्लमंद नहीं छूते और कहते हैं कि अरे भाई पावर हाउस से बिजली आने में देर थोड़ी ही लगती है। बस यही हाल

नज़र का है। अभी पाक है मगर इसी नामेहरम से जिससे नज़र अभी पाक है ज़रा तनहाई हुई तो नापाक होने में एक सेकेंड की भी देर नहीं लगती। जिन्होंने अपने नफ़्स पर भरोसा किया उम्र भर का तक़्वा और दीन ज़रा-सी देर में ग़ारत हो गया।

अंगूठी पर तावीज़ लिखना जाइज़ है या नहीं

मुकर्रम व मुहतरम

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू

बाद सलाम अर्ज़ है कि मुझे अंगूठी के बारे में कुछ सवालात करने हैं, बराए करम तस्सलीबख़्श जवाब मरहमत फ़रमाएँ।

सवाल : अंगूठी पर बाज़ मर्तबा ज़िकरुल्लाह या हिक्मत का कलाम या नाम या दीगर तावीज़ात मसलन मुक़त्तआत क़ुरआनिया और दीगर कलिमात या दुआएं वग़ैरह लिखना और पहनना दुरुस्त है?

जवाब : हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि आप सल्ल० ने एक अंगूठी चांदी की बनवाई और उस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह नक़्श करवाया।

(बुख़ारी, पेज 873)

अबुल शैख़ की एक रिवायत बवास्ता अनस रज़ि० है कि आपकी अंगूठी पर ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह गुंदा था।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 10, पेज 329)

इससे मालूम हुआ कि अंगूठी के नगीने पर ज़िकरुल्लाह वग़ैरह कुंदा कराना दुरुस्त है। चुनांचे हज़रात सहाबा रज़ि० व ताबईन रह० से भी अंगूठियों पर कुंदा कराना मंक़ूल है। देखिए :

1. हज़रत हुज़ैफ़ा व हज़रत अबू उबैदा रज़ि० की अंगूठी पर 'अलहम्दुलिल्लाह'

2. हज़रत मसरूक़ रज़ि० की अंगूठी पर 'बिस्मिल्लाह'

3. हज़रत जाफ़र रज़ि० की अंगूठी पर 'अल-इज़्ज़तु लिल्लाह'

4. इब्राहीम नख़ई रह० की अंगूठी पर 'बिल्लाह' लिखा हुआ था।

(फ़तहुलबारी, जिल्द 10, पेज 328)

5. हज़रत सिद्दीक़े अकबर रज़ि० की अंगूठी पर 'निअ़मल क़ादिरुल्लाह' लिखा था। (तहावी, पेज 351)

6. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर व क़ासिम बिन मुहम्मद रह० की अंगूठी पर 'निअ़मल क़ादिरुल्लाह' कुंदा था।

7. इब्ने सीरीन ने कहा कि अंगूठियों पर 'हसबियल्लाहु' का नक़्श होने में कोई हर्ज नहीं।[1] (जमा वसाइल, पेज 184)

8. हुज़ूर सल्ल० की अंगूठी पर 'मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' लिखा था।

9. हज़रत उमर रज़ि० की अंगूठी पर 'कफ़ा बिल मौति वाइज़।'

10. हज़रत उसमान रज़ि० की अंगूठी पर 'लतस्बिरन्न अव लतंदमन्न'

11. हज़रत अली रज़ि० की अंगूठी पर 'अलमुल्कु लिल्लाह'

12. हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा रह० की अंगूठी पर 'क़ुलिल ख़ै-र व इल्ला फ़स्कुत'

13. हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रह० की अंगूठी पर 'मन अमि-ल बिरअ्यिहि फ़क़द नदिम'

14. हज़रत इमाम मुहम्मद रह० की अंगूठी पर 'मन स-ब-र ज़-फ़र'

15. हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह० की अंगूठी पर 'अज़ गिरोह औलिया अशरफ़ अली' (इशारा हज़रत अली रज़ि० की तरफ़)

मुल्ला अली क़ारी ने लिखा है कि अंगूठी पर अल्लाह के नामों में से कोई नाम कुंदा कराना और पहनना जाइज़ है। अल्लामा नववी ने भी जमहूर का क़ौल जवाज़ का लिखा है। हाफ़िज़ ने फ़तहुलबारी में लिखा है कि कराहत

1. अलबत्ता इब्ने सीरीन का एक क़ौल नक़्श की कराहत का भी है।

(उम्दा क़ारी, जिल्द 22, सफ़ा 34)

इस्तंजा वग़ैरह की सूरत में बे-एहतियाती से हो सकती है। वरना कोई कराहत नहीं। (जिल्द 10, सफ़हा 338) वैसे इस क़िस्म की अंगूठियां को पाख़ाना-पेशाब से पहले उतार लेना चाहिए जैसा कि हदीस पाक में आप सल्ल० से मंक़ूल है।

इससे मालूम हुआ कि बाज़ अंगूठियों पर जो तावीज़ात लिखे होते हैं जैसा कि सवाल मज़्कूरा में आपने बताया (मुक़त्तआत क़ुरआनिया या और दीगर कलिमात या दुआएं) तो उनका पहनना दुरुस्त है। उनको मम्नूअ क़रार देना मुत्लिक़न दुरुस्त नहीं। न उसमें कोई क़बाहत है, अलबत्ता बेअदबी से बचाना लाज़िम है। (शुमाइल कुबरा, जिल्द 2, पेज 152-153)

सवाल : पीतल, स्टील और लोहे की अंगूठी पहन सकते हैं या नहीं?

जवाब : मज़्कूरा आलात की अंगूठियां पहनना मम्नूअ हैं :

हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुरैदा रज़ि० अपने वालिद से नक़ल करते हैं कि एक आदमी आप (सल्ल०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उसके हाथ में पीतल की अंगूठी थी। आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है, मैं तुममें बुत की बू पाता हूँ। चुनांचे उसने उसे फेंक दिया। फिर आया और उसके पास लोहे की अंगूठी थी। आप सल्ल० ने फ़रमाया, क्या बात है मैं तुम पर जहन्नमियों का ज़ेवर पाता हूं। चुनांचे उसने उसे भी फेंक दिया और पूछा कि या रसूलल्लाह सल्ल० मैं किस चीज़ की अंगूठी बनवाऊं। आप सल्ल० ने फ़रमाया, चांदी की बनवाओ, सोना न शामिल करना। (अबू दाऊद, पेज 580)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि० सोने की अंगूठी पहनते थे। आप सल्ल० ने देखा तो कराहत महसूस की, उन्होंने उतार दी। फिर उन्होंने लोहे की अंगूठी पहनी। आप सल्ल० ने फ़रमाया, यह तो और ज़्यादा ख़बीस है। चुनांचे उन्होंने उसे भी उतार दिया और चांदी की अंगूठी पहनी तो आप सल्ल० ख़ामोश रहे। (उम्दतुल क़ारी, जिल्द 22, पेज 33)

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि० की रिवायत है कि आप सल्ल० ने किसी आदमी के हाथ में सोने की अंगूठी देखी तो आप सल्ल० ने फ़रमाया, इसे निकाल डालो। उसने लोहे की अंगूठी पहनी तो आप सल्ल० ने फ़रमाया यह तो इससे ज़्यादा बुरा है। चुनांचे उसने चांदी की पहनी तो आप सल्ल० ख़ामोश रहे। (उम्दतुल क़ारी, जिल्द 22, पेज 33)

फ़ायदा : क़ाज़ी ख़ां ने लिखा है कि चांदी के अलावा कोई अंगूठी पहनना मकरूह है। स्टील और लोहे की अंगूठी भी मकरूह है कि ये दोज़ख़ियों का पहनावा है। (जमअ़, पेज 148)

बाज़ लोग स्टील की ख़ुश्नुमा अंगूठी पहनते हैं। दुरुस्त नहीं। चांदी के अलावा की अंगूठी मुत्लिक़न नाजाइज़ है। अल्लामा ऐ़नी (रह०) ने लिखा है कि पीतल, लोहा और सास (सीसा धात) सब मुत्लिक़न हराम है।

(जिल्द 22, पेज 37, शुमाइल कुबरा, जिल्द 2, पेज 151-152)

सवाल : अक़ीक़, याक़ूत वग़ैरह पत्थरों की अंगूठियां बनाकर पहन सकते हैं क्या?

जवाब : अक़ीक़, याक़ूत वग़ैरह पत्थर अंगूठी में इस्तेमाल हो सकते हैं। मुनासिब यह है कि हल्क़ा तो चांदी का हो और नगीना पत्थर का।

हज़रत फ़ातिमा रज़ि० रसूल पाक सल्ल० से नक़ल करती हैं कि आप सल्ल० ने फ़रमाया कि जो अक़ीक़ की अंगूठी बनाएगा वह हमेशा भलाई पाएगा। (मज्मउज़्ज़वाइद, जिल्द 5, पेज 157, तबरानी)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि ख़ानदाने जाफ़र से कोई आप सल्ल० के पास आया और कहा कि आप पर मेरे मां-बाप फ़िदा हों, ऐ अल्लाह के रसूल! आप मेरे साथ किसी को भेज दीजिए जो चप्पल या जूता और अंगूठी ख़रीद दे। आप सल्ल० ने हज़रत बिलाल को बुलाया और फ़रमाया, बाज़ार चले जाओ, चप्पल ख़रीद लो मगर काली न हो। अंगूठी ख़रीद लो जिसका नगीना अक़ीक़ का हो। (मुजम्मा, पेज 158)

फ़ायदा : मुल्ला अली क़ारी ने लिखा है कि हुफ़्फ़ाज़ ने हदीस मज़्कूर को ग़ैर साबित माना है। जमउल वसाइल में है कि एक ज़ईफ़ रिवायत में है कि ज़र्द याक़ूत का नगीना ताऊन से रोकता है। (पेज 139)

मुल्ला अली क़ारी ने लिखा है कि आप सल्ल० से अक़ीक़ की अंगूठी पहनना साबित है। (पेज 139)

शरअतुल इस्लाम के हवाले से है कि चांदी और अक़ीक़ का नगीना मस्नून है। एक रिवायत में है कि अक़ीक़ की अंगूठी पहनो, यह मुबारक पत्थर है, इस जैसा कोई पत्थर नहीं। मुनासिब यह है कि हल्क़ा तो चांदी का हो और

नगीना पत्थर का। (जमउल वसाइल, पेज 110)

अल्लामा ऐनी ने लिखा है कि हज़रत अली करमुल्लाहु वज्हु के पास एक अंगूठी याकूत पत्थर की थी। क़ुव्वते क़ल्ब के लिए, जिस पर 'ला इला-ह इल्लल्लाहु अल-मलिकुल हक़्क़ुल मुबीन' लिखा था। (जिल्द 22, पेज 34)

पाख़ाना जाते वक़्त तावीज़ वाली अंगूठी निकाल ले

हज़रत अनस रज़ि० से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ल० जब बैतुलख़ला तशरीफ़ ले जाते थे तो अंगूठी उतार देते थे।

(नसई, जिल्द 2, पेज 289, इब्ने हिब्बान)

फ़ायदा : अगर अंगूठी में कुछ लिखा हो तो बैतुलख़ला से क़ब्ल उसे उतार दे। आप सल्ल० की अंगूठी में चूंकि कलिमा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह लिखा हुआ था इस एहतिराम की वजह से आप सल्ल० उतार देते थे।

(हाशिया नसई, पेज 289)

चौदह (14) उयूब आम तौर पर माँओं-बहनों में पाए जाते हैं जिनसे बचना बहुत ज़रूरी है

1. एक ऐब यह है कि बात का माक़ूल जवाब नहीं देतीं, जिससे पूछने वाले को तसल्ली हो जाए। बहुत-सी फ़ुज़ूल बातें इधर-उधर की उसमें मिला देती हैं और असल बात फिर भी मालूम नहीं होती। हमेशा याद रखो कि जो शख़्स जो कुछ पूछे उसका मतलब ख़ूब ग़ौर से समझ लो फिर उसका जवाब ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दे दो।

2. एक ऐब यह है कि चाहे किसी चीज़ की ज़रूरत हो या न हो लेकिन पसन्द आने की देर है। ज़रा पसन्द आई और ले ली, चाहे क़र्ज़ ही हो जाए, लेकिन कुछ परवाह नहीं और अगर क़र्ज़ भी न हुआ तब भी अपने पैसे को इस तरह बेकार खोना कौन-सी अक़्ल की बात है। फ़ुज़ूलख़र्ची गुनाह भी है। जहां ख़र्च करना हो अव्वल ख़ूब सोच लो कि यहां ख़र्च करने में कोई दीन का फ़ायदा या दुनिया की ज़रूरत भी है। अगर ख़ूब सोचने से ज़रूरत और फ़ायदा मालूम हो तो ख़र्च करो नहीं तो पैसा मत खोओ और क़र्ज़ तो जहां

तक हो सके हरगिज़ मत लो चाहे थोड़ी-सी तकलीफ़ ही हो जाए।

3. एक ऐब यह है कि जब कहीं जाती हैं, चाहे शहर में या सफ़र में, टालते-टालते बहुत देर कर देती हैं कि वक़्त तंग हो जाता है, अगर सफ़र में जाना है तो मंज़िल पर देर में पहुंचेंगी। अगर रास्ते में देर हो गई तो जान व माल का अंदेशा है, अगर गर्मी के दिन हुए तो धूप में ख़ुद भी तपेंगी और बच्चों को भी तकलीफ़ होगी, अगर बरसात है अव्वल तो बरसने का डर, दूसरे गारे कीचड़ में गाड़ी का चलना मुश्किल और देर में देर हो जाती है। अगर सवेरे से चलें, हर तरह की गुंजाइश रहे और बस्ती ही में जाना हुआ जब भी रिक्शा को खड़े-खड़े परेशानी, फिर देर में सवार होने से देर में लौटना होगा। अपने कामों में हर्ज होगा, खाने के इंतिज़ाम में देर होगी, कहीं जल्दी में खाना बिगड़ गया, कहीं मियां तक़ाज़ा कर रहे हैं, कहीं बच्चे रो रहे हैं। अगर जल्दी सवार हो जाएं तो यह मुसीबतें क्यों होतीं।

बाज़ औरतों को आवाज़ के पर्दे का बिल्कुल एहतिमाम नहीं होता हालांकि आवाज़ का पर्दा भी वाजिब है जैसा, सूरत का पर्दा ज़रूरी है लिहाज़ा गुनाहगार होती हैं, हर क़िस्म के पर्दे का निहायत सख़्त एहतिमाम करना चाहिए।

4. एक ऐब यह है कि आपस में दो औरतें जो बातें करती हैं अक्सर यह होता है कि एक की बात ख़त्म होने नहीं पाती कि दूसरी शुरू कर देती है, बल्कि बहुत दफ़ा ऐसा होता है कि दोनों इकदम से बोलती हैं कि वह अपनी कह रही है और यह अपनी हांक रही है न वह उसकी सुने, न यह उसकी, भला ऐसी बात करने ही से क्या फ़ायदा! हमेशा याद रखो कि जब एक की बात ख़त्म हो जाए, उस वक़्त दूसरी को बोलना चाहिए।

5. एक ऐब यह है कि ज़ेवर और कभी रुपया-पैसा भी बेएहतियाती से कभी तकिये के नीचे रख दिया, कभी किसी ताक़ में खुला रख दिया, कभी ग़ुस्लख़ाने में रख दिया। ताला होते हुए सुस्ती के मारे उसमें हिफ़ाज़त से नहीं रखतीं, फिर कोई चीज़ जाती रही तो सबका नाम लगाती फिरती हैं।

6. एक ऐब यह है कि उनको एक काम के वास्ते भेजो, जाकर दूसरे काम में लग जाती हैं। जब दोनों से फ़राग़त हो जाए तब लौटती हैं। इसमें

भेजने वाले को सख़्त तकलीफ़ और उलझन होती है क्योंकि उसने तो एक काम का हिसाब लगा रखा है कि यह इतनी देर का है। जब इतनी देर गुज़र जाती है फिर उसको परेशानी शुरू होती है, और अक़्लमंद यह कहती हैं कि आए तो हैं ही लाओ दूसरा काम भी लगे हाथ करते चलें। ऐसा मत करो, अव्वल पहला काम करके उसकी फ़रमाइश पूरी कर दो फिर अपने तौर पर इत्मीनान से दूसरा काम कर लो।

7. एक ऐब सुस्ती का है कि एक वक़्त के काम को दूसरे वक़्त पर उठा रखती हैं। इससे अक्सर हर्ज और नुक़सान हो जाता है।

8. एक ऐब यह है कि कोई चीज़ खो जाए तो बेतहक़ीक़ किसी पर तोहमत लगा देती हैं यानी जिसने कभी कोई चीज़ चुराई थी, बेधड़क कह दिया कि बस जी उसी का काम है। हालांकि यह क्या ज़रूरी है कि सारे ऐब एक ही आदमी ने किए हों। इसी तरह और बुरी बातों में ज़रा-से शुब्हा में ऐसा पक्का यक़ीन करके अच्छा ख़ासा घड़-मढ़ देती हैं।

9. एक ऐब यह है कि अपनी ख़ता या ग़लती का कभी इक़रार न करेंगी जहां तक हो सके बात को बनाएंगी चाहे बन सके या न बन सके।

10. एक ऐब यह है कि कहीं से थोड़ी चीज़ उनके हिस्से में आए या अदना दर्जे की चीज़ आए तो उस पर नाम मारेंगी, ताना देंगी कि घर गई ऐसी चीज़ भेजने की क्या ज़रूरत थी, भेजते हुए शर्म न आई। यह बुरी बात है कि इसकी इतनी ही हिम्मत थी, तुम्हारा तो उसने कुछ नहीं बिगाड़ा और ख़ाविन्द के साथ भी उनकी यही आदत है कि ख़ुश होकर चीज़ कम लेती हैं उसको रद्द करके ऐब निकाल कर तब क़बूल करती हैं।

11. एक ऐब यह है कि उनसे किसी काम को कहो उसमें झक-झककर लेंगी फिर उस काम को करेंगी, भला जब वह काम करना है फिर उस वाहियात से क्या फ़ायदा निकला। नाहक़ दूसरे का भी जी बुरा किया।

12. एक ऐब यह है कि आने के वक़्त और चलने के वक़्त मिलकर ज़रूर रोती हैं चाहे रोना आए या न भी आए; मगर इस डर से रोती हैं कि कोई यूं न कहे कि उसको मुहब्बत नहीं।

13. एक ऐब यह है कि अक्सर तकिये में या वैसे ही सूई रखकर उठ जाती हैं और कोई बेख़बरी में आ बैठता है, उसके सूई चुभ जाती है।

14. एक ऐब यह है कि बच्चों को गर्मी-सर्दी से नहीं बचातीं, उससे अक्सर बच्चे बीमार हो जाते हैं। फिर तावीज़-गंडे कराती-फिरती हैं। दवा, इलाज या आइंदा को एहतियात फिर भी नहीं करतीं।

वुज़ू का बचा हुआ पानी अपने बच्चों के चेहरे पर फेरिए और दुआ कीजिए

हज़रत अबू मूसा रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्ल० ने यह दुआ फ़रमाई। कि इस छोटे से बन्दे अबू आमिर को दर्जे में क़यामत के दिन अक्सर लोगों से ऊपर कर देना।

हज़रत हस्सान बिन शद्दाद रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरी वालिदा ने हुज़ूर सल्ल० की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ किया- या रसूलल्लाह सल्ल०! मैं आपकी ख़िदमत में इसलिए हाज़िर हुई हूँ ताकि आप मेरे इस बेटे के लिए दुआ कर दें और इसे बड़ा और अच्छा बना दें। आप सल्ल० ने वुज़ू किया और वुज़ू के बचे हुए पानी को मेरे चेहरे पर फेरा और यह दुआ मांगी। "ऐ अल्लाह! इस औरत के लिए इसके बेटे में बरकत अता फ़रमा और इसे बड़ा और उम्दा बना।"

(हयातुस्सहाबा, जिल्द 3, पेज 383)

शादी घर बसाने के लिए की जाती है घरेलू ज़िंदगी ज़ौजेन के इत्तिहाद से ही पुरसुकून बनती है

शादी घर बसाने के लिए की जाती है। अगर मियां-बीवी एक-दूसरे से ज़्यादा तवक़्क़ुआत वाबस्ता करने और ज़िद पर अड़ जाने के बजाए दरगुज़र और ईसार का रवैया अपनाएं तो घर ख़ुशियों का गहवारा बन सकता है।

इंसान की बक़ा के लिए क़ानूने फ़ितरत मुसलसल मसरूफ़े अमल है। इसकी बुनियाद 'मुहब्बत' जैसे पाकीज़ा जज़्बे पर रखी गई है कि किसी भी घर को बुराइयों से पाक रखने के लिए मुहब्बत जैसे पुरख़ुलूस जज़्बे की ज़रूरत हमेशा रहेगी। दीने इस्लाम में दिलों को आपस में जोड़ने और बाहमी हमआहंगी पैदा करने के लिए शादी जैसा मुक़द्दस बंधन मौजूद है। शादी एक

ऐसा मज़हबी फ़रीज़ा है जिसके सबब एक सही मुकम्मल ख़ानदान, घर और मुआशिरा, तशकील पाता है।

यूं भी ज़िंदगी एक सफ़र के मानिन्द है और मियां-बीवी इस सफ़र के ऐसे साथी हैं जिसका रास्ता भी एक है और मंज़िल भी एक। अगर उनके दर्मियान मुकम्मल ज़ेहनी हमआहंगी और जज़्ब-ए-मुहब्बत मौजूद हो तो यह सफ़र निहायत आराम और सुकून से कट सकता है। वैसे जब दो रूहें निकाह जैसे पाक बंधन में बंधती हैं तो फिर उनकी यकजाई ख़ानदान की इकाई को जन्म देती है। यही इकाई आगे जाकर बेहतर घर और सालेह मुआशिरे की सूरत में ढलती है। गोया बेहतरीन घर और सालेह मुआशिरे की तामीर के लिए ख़ानदान की इकाई की मज़बूती और ख़ूबसूरती निहायत ज़रूरी है। यूँकि समझिए कि पुरसुकून घर और मुआशिरा पुरसुकून इज़दवाजी ज़िंदगी से मशरूत है। बज़ाहिर तो कोई भी लड़की नए घर की बुनियाद इसलिए नहीं रखती कि उसे आबाद न किया जाए, घर का माहौल ख़ुशगवार न हो, मगर बाज़ औक़ात हालात मुवाफ़िक़त नहीं रखते। बहुत कुछ तवक़्क़ोआत के ख़िलाफ़ हो जाता है तो ज़िंदगी का सुकून दरहम-बरहम हो जाता है। ऐसा होना दुरुस्त नहीं, यह तय है कि मर्दों की बनिस्बत ख़्वातीन को ज़्यादा क़ुरबानियां और ख़िदमात पेश करनी पड़ती हैं। लेकिन औरत की क़ुरबानी और ईसार से एक ख़ूबसूरत घर और मुआशिरा तख़्लीक़ पाता है तो उससे बढ़कर एज़ाज़ क्या होगा। आगे घर और बेहतरीन मुआशिरे की तशकील के लिए चन्द बातें दर्ज की गई हैं जो आम-सी होने के बावजूद बेहद अहम और ख़ुशगवार इज़दवाजी ज़िंदगी की कुंजी हैं—

1. दिन भर का थका-हारा शौहर जब घर में दाख़िल हो तो उसका इस्तक़बाल एक भरपूर मुस्कुराहट और सलाम से करें, इस तरह वह सारी थकन भूल कर अपने आपको इकदम तरो-ताज़ा महसूस करेगा। कोशिश करें कि शौहर की आमद से क़ब्ल घर की सफ़ाई और लिबास साफ़-सुथरा पहन कर हल्का-फुल्का तैयार हों और बच्चों को भी साफ़-सुथरा रखें। इस तरह घर के माहौल में ख़ुशगवारी रची-बसी रहेगी।

2. हर हाल में अल्लाह का शुक्र अदा करें। अगर शौहर की आमदनी कम हो तो इस बात का ताना कभी न दें, बल्कि ऐसे मरहले में उनका साथ

दें। ऐसे हालात में किफ़ायत-शुआरी से काम लें, नाशुक्री न करें। हुज़ूर सल्ल० ने एक मर्तबा औरतों से मुख़ातिब होते हुए फ़रमाया था कि मैंने दोज़ख़ में सबसे ज़्यादा औरतों को देखा है। वजह पूछने पर बताया, शौहरों की नाफ़रमानी और नाशुक्री की वजह से।

3. अपने ग़ुस्से को क़ाबू में रखें, क्योंकि ज़्यादा तर इख़्तिलाफ़ ग़ुस्से की वजह से होते हैं। अगर शौहर ग़ुस्से में हो तो ख़ामोश रहें। कुछ वक़्त गुज़र जाने के बाद उन्हें अपनी बात निहायत ही शीरीं लहजे में समझाएं ताकि वह आपके मौक़िफ़ को अच्छी तरह समझ सके, इस तरह बात कभी नहीं बढ़ेगी। अलबत्ता शौहर के दिल में आपकी अहमियत और इज़्ज़त मज़ीद बढ़ जाएगी।

4. आप ससुराली रिश्तेदारों के मुताल्लिक़ कोई बात अपने मैके में न करें। क्योंकि इस तरह दोनों ख़ानदानों के दर्मियान इख़्तिलाफ़ात पैदा होने का ख़दशा होता है। अपने सुसर, सास, ननद, जेठ और देवर की इज़्ज़त दिल से करें। उन्हें इस तरह समझें जैसे मैके में वालिदेन और बहन-भाइयों को समझती थीं, मामूली बातों को दिल पर न लें बल्कि यह सोचकर ख़ुद को ज़ेहनी तौर पर मुत्मईन करें कि जब शादी से पहले भी कभी वालिदैन किसी बात पर डॉट देते थे या बहन-भाइयों से किसी बात पर इख़्तिलाफ़ हो जाता था तो हम एक दूसरे को जल्दी से मना लिया करते थे। मैके की तरह अगर ससुराल में भी यही सोच और रवैया रखेंगी तो यक़ीनन ज़ेहनी तौर पर मुत्मइन रहेंगी, जिससे आपकी तबीयत और मिज़ाज पर भी बहुत असर पड़ेगा।

5. कोशिश कीजिए कि शौहर की इजाज़त के बग़ैर कहीं बाहर न निकलें। क्योंकि इस तरह ताल्लुक़ात में भी एतिमाद की फ़िज़ा क़ायम हो जाती है। बेहतर है कि एक-दूसरे को हर बात से आगाह रखा जाए ताकि रिश्ते में मज़बूती और एतिमाद पैदा हो।

जिस तरह बीवियों के लिए कुछ बातें अहम हैं इसी तरह शौहरों को भी चन्द बातों का ख़याल रखना चाहिए :

1. मां, बहन और बीवी का एहतिराम करें, किसी एक फ़रीक़ की बात सुनकर दूसरे को बेइज़्ज़त कभी न करें, बल्कि पूरी बात जान कर इंसाफ़ करें और हर हाल में एहतियात का दामन थामे रहें।

2. बीवी की ख़िदमात को सराहें, उसके कामों की तारीफ़ करें, हर वक़्त नुक़्स न निकालें, बल्कि ग़लती हो जाने पर उसे इत्मीनान से समझाएं कि प्यार से तो संगदिल भी राम किया जा सकता है।

3. अपने लहजे को शीरीं बनाएं, आपका शीरीं लहजा बीवी के दिल में आपके लिए मुहब्बत पैदा करने का ज़रिया होता है।

4. बीवी पर बिला वजह तंक़ीद न करें। हर मामले में ख़ुद को उससे बेहतर तसव्वुर न करें। हो सकता है कि कुछ बातों की समझ उसमें आपसे बेहतर हो। इससे हर बात शेयर करें, क्योंकि बीवी आपकी शरीके हयात ही नहीं, अच्छी दोस्त भी होती है। आपके हर सुख-दुख की साथी होती है। इसलिए अपनी बीवी की क़द्र कीजिए और उसे हमेशा इज़्ज़त की निगाह से देखिए। एक-दूसरे से बहुत ज़्यादा तवक़्क़ोआत वाबस्ता कर ली जाएं तो उम्र गुज़र जाती है, तवक़्क़ोआत पूरी नहीं होतीं। इसलिए ज़्यादा नहीं चन्द एक छोटी-छोटी बातों ही का ख़्याल रख लिया जाए तो छोटा-सा घर हंसती-मुस्कुराती, जीती-जागती जन्नत का नमूना बन सकता है।

ख़त की इब्तिदा 786 से मत कीजिए

1. ख़त की इब्तिदा हमेशा "बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम" से कीजिए, इख़्तिसार करना चाहें तो बिस्मिही तआला लिखिए। नबी करीम सल्ल० ने फ़रमाया कि जिस काम के शुरू में बिस्मिल्लाह नहीं की जाती वह अधूरा और बेबरकत रहता है। बाज़ लोग अल्फ़ाज़ के बजाए 786 लिखते हैं, उससे परहेज़ कीजिए। इसलिए कि अल्लाह तआला के तलक़ीन किए हुए अल्फ़ाज़ में भी बरकत है।

2. अपना पता हर ख़त में ज़रूर लिखिए। यह सोचकर पता लिखने में हरगिज़ सुस्ती न कीजिए कि आप मक्तूब अलैह को अपना पता उससे पहले लिख चुके हैं या उसको याद होगा। यह ज़रूरी नहीं कि आपका पता मक्तूब अलैह के पास महफ़ूज़ हो और यह भी ज़रूरी नहीं कि मक्तूब अलैह को आपका पता याद ही हो।

3. अपना पता दाएं जानिब ज़रा-सा हाशिया छोड़कर लिखिए। पता हमेशा साफ़ और ख़ुशख़त लिखिए और पते की सेहत और इमला की तरफ़

से ज़रूर इत्मीनान कर लीजिए।

4. अपने पते के नीचे या बाएं जानिब सरे नविश्त पर तारीख़ ज़रूर लिख दिया कीजिए।

5. तारीख़ लिखने के बाद मुख़्तसर अल्क़ाब व आदाब के ज़रिए मक्तूब अलैह को मुख़ातिब कीजिए। अल्क़ाब व आदाब हमेशा मुख़्तसर और सादा लिखिए, जिससे ख़ुलूस व क़ुरबत महसूस हो, ऐसे अल्क़ाब से परहेज़ कीजिए जिनसे तसन्ना और बनावट महसूस हो। अल्क़ाब व आदाब के साथ ही या अल्क़ाब के नीचे दूसरी सतर में सलाम मसनून या अस्सलामु अलैकुम लिखिए, आदाब, तस्लीमात, वग़ैरह अल्फ़ाज़ न लिखिए।

6. ग़ैर मुस्लिम को ख़त लिख रहे हों तो अस्सलामु अलैकुम या सलाम मसनून लिखने के बजाए आदाब व तस्लीमात वग़ैरह जैसे अल्फ़ाज़ लिखिए।

7. अल्क़ाब व आदाब के बाद अपना वह असल मतलब व मुद्दा लिखिए जिस ग़र्ज़ से आप ख़त लिखना चाहते हैं। मतलब और मुद्दा के बाद मक्तूब अलैह से अपना ताल्लुक़ ज़ाहिर करने वाले अल्फ़ाज़ के साथ अपना नाम लिखकर ख़त को ख़त्म कीजिए। मसलन आपका ख़ादिम, दुआ का तालिब, ख़ैर अंदेश, दुआ गो, अल्लाह की रज़ा का तालिब वग़ैरह-वग़ैरह।

8. ख़त निहायत साफ़, सादा और ख़ुशख़त लिखिए कि आसानी से पढ़ा और समझा जा सके और मक्तूब अलैह के दिल में उसकी वक़्अत हो।

9. ख़त में निहायत शुस्ता, आसान और सुलझी हुई ज़बान इस्तेमाल कीजिए।

10. ख़त मुख़्तसर लिखिए और हर बात खोलकर वज़ाहत से लिखिए। महज़ इशारों से काम न लीजिए।

11. पूरे ख़त में अल्क़ाब व आदाब से लेकर ख़ात्मा तक मक्तूब अलैह के मर्तबे का लिहाज़ रखिए।

12. नया पैराग्राफ़ शुरू करते वक़्त लफ़्ज़ की जगह छोड़ दीजिए।

13. ख़त में हमेशा संजीदा अंदाज़ रखिए, ग़ैर संजीदा बातों से परहेज़ कीजिए।

14. ख़त कभी ग़ुस्से में न लिखिए और न कोई सख़्त, सुस्त बात लिखिए। ख़त हमेशा नर्म लहजे में लिखिए।

15. आम ख़त में कोई राज़ की बात न लिखिए।

16. जुमले के आख़िर में डैश (पूर्ण विराम) ज़रूर लगाइए।

17. किसी का मक्तूब बग़ैर इजाज़त हरगिज़ न पढ़िए। वह ज़बरदस्त अख़्लाक़ी ख़ियानत है, अलबत्ता घर के बुज़ुर्गों और सरपरस्तों की ज़िम्मेदारी है कि वह छोटों के ख़ुतूत पढ़कर उनकी तर्बियत फ़रमाएं, और उन्हें मुनासिब मशविरा दें। लड़कियों के ख़ुतूत पर ख़ुसूसी नज़र रखनी चाहिए।

18. रिश्तेदारों और दोस्तों को ख़ैर व आफ़ियत के ख़ुतूत बराबर लिखते रहिए।

19. कोई बीमार हो जाए, ख़ुदा न करे कोई हादसा हो जाए या किसी और मुसीबत में कोई फंस जाए तो उसको हमदर्दी का ख़त ज़रूर लिखिए।

20. किसी के यहां कोई तक़रीब हो, कोई अज़ीज़ आया हो, या ख़ुशी का कोई और मौक़ा हो तो मुबारकबाद का ख़त ज़रूर लिखिए।

21. ख़ुतूत हमेशा नीली या सियाह रौशनाई से लिखें, पेंसिल या सुर्ख़ रौशनाई से हरगिज़ न लिखिए।

22. कोई शख़्स डाक में डालने के लिए ख़त दे तो निहायत ज़िम्मेदारी के साथ बरवक़्त ज़रूर डाल दिया कीजिए। लापरवाही और ताख़ीर हरगिज़ न कीजिए।

23. ग़ैर मुताल्लिक़ लोगों को जवाब-तलब बातों के लिए जवाबी कार्ड या टिकट भेज दिया कीजिए।

24. लिखकर काटना चाहें तो हल्के हाथ से उस पर ख़त खींच दिया कीजिए।

25. ख़त में सिर्फ़ अपनी दिलचस्पी और अपने ही मतलब की बातें न लिखिए, बल्कि मुख़ातिब के जज़्बात व एहसासात और दिलचस्पियों का भी ख़याल रखिए। सिर्फ़ अपने ही मुताल्लिक़ीन की ख़ैर व आफ़ियत न बताइए बल्कि मुख़ातिब के मुताल्लिक़ीन की ख़ैर व आफ़ियत भी मालूम कीजिए और

याद रखिए, ख़ुतूत में भी किसी से ज़्यादा मुताल्बे न कीजिए, ज़्यादा मुताल्बे करने से आदमी की वक़अत नहीं रहती। आजकल मोबाइल और फ़ोन की सहूलतों की वजह से ख़त व किताबत में काफ़ी कमी आई है, ऐसा न कीजिए बल्कि ख़त व किताबत की आदत रखिए।

मजनूँ को मजनूँ क्यों कहा गया?

इंसान में शहवानी मुहब्बत जुनून की हद तक पैदा हो जाती है, यहां तक कि वह उस मुहब्बत में पागल हो जाता है। अरब में क़ैस नामी एक आदमी था। उसको किसी ख़ातून से ताल्लुक़ हो गया। अगरचे वह ख़ातून रात की तरह काली थी और उसके मां-बाप ने भी उसका नाम लैला रख दिया था, लेकिन क़ैस उसकी मुहब्बत में दीवाना हो गया। सय्यदना हज़रत हसन रज़ि० की ख़िलाफ़त का ज़माना था। सय्यदना हसन रज़ि० और सय्यदना अमीर मुआविया रज़ि० की आपस में सुलह हुई। सय्यदना हसन रज़ि० ने सय्यदना अमीर मुआविया रज़ि० के हक़ में ख़िलाफ़त से दस्तबरदारी का एलान किया। अगले दिन सय्यदना हसन रज़ि० जा रहे थे कि रास्ते में उनको क़ैस मिल गया। उसको सलाम किया, फिर सय्यदना हसन रज़ि० ने फ़रमाया, क़ैस! यह मैंने अच्छा किया है ना कि मैंने हुकूमत उन्हीं के सुपुर्द कर दी है जो उसके ज़्यादा अहल थे। क़ैस ख़ामोश रहा। उन्होंने फिर पूछा, क़ैस! तुम जवाब क्यों नहीं देते? क़ैस कहने लगा, जी सच्ची बात तो यह है कि हुकूमत लैला को सजती है। यह सुनकर सय्यदना हसन रज़ि० ने फ़रमाया, अन-त मजनून (तू पागल है)। उस वक़्त से उसका नाम मजनूं पड़ गया। उसका यह नाम इतना मशहूर हुआ कि उसके असल नाम से बहुत लोग नावाक़िफ़ हैं। मजनूं के वालिद ने एक मर्तबा उसे कहा कि तेरी वजह से मेरी बड़ी बदनामी होती है। चल तुझे बैतुल्लाह शरीफ़ ले जाता हूं और वहां जाकर उस ताल्लुक़ से तौबा कराता हूं। चुनांचे वह अपने वालिद के साथ मक़ामे इबराहीम पर पहुंच गया। वहां खड़े होकर उसके वालिद ने उससे कहा कि अब दुआ करो कि ऐ अल्लाह! मैं लैला की मुहब्बत से तौबा करता हूं। उसने वालिद के कहने पर हाथ तो उठा लिए, मगर दुआ करते हुए कहने लगा :

"ऐ अल्लाह! मैं सब गुनाहों से तौबा करता हूं, लेकिन लैला

की मुहब्बत से तौबा नहीं करता।"

एक आदमी ने सोचा कि लैला का बड़ा नाम सुना है, ज़रा देखूं तो सही कि वह हूर-परी कौन-सी है जिसकी मजनूं के साथ इतनी बातें मशहूर हैं। उसने देखा तो वह आम औरतों से भी गई-गुज़री थी। लिहाज़ा उसने देखते ही उससे कहा : "ऐ ख़ातून! क्या बात है, तू दूसरी हसीन औरतों से बढ़ी हुई तो नहीं है।"

वह कहने लगी : "तू चुप हो जा क्योंकि तू मजनूं नहीं है"

यानी अगर तू मुझे मजनूं की नज़र से देखेगा तो सारी दुनिया की हसीन औरतों से ज़्यादा मैं तुझे हसीन नज़र आऊंगी। ऐसी मुहब्बत को मुहब्बत नहीं कहते बल्कि पागलपन कहते हैं। एक दफ़ा मजनूं कुत्ते को बैठा चूम रहा था, किसी ने कहा, अरे मजनूं! तू कुत्ते को चूम रहा है। कहने लगा, हां मैं इसे इसलिए चूम रहा हूं कि यह उस दियार से होकर आया है, जहां लैला रहती है।

शैतान के छः हथियार

शैतान मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से फ़ितने में डालता है :—

(1) उलमा ने लिखा है कि यह सबसे पहले इंसान को ताआत से रोकता है। यानी इंसान के दिल से ताआत की अहमियत निकाल देता है जिसकी वजह से बन्दा कहता है कि अच्छा, मैं नमाज़ पढ़ लूंगा, हालांकि दिल में पढ़ने की नीयत नहीं होती।

(2) अगर इंसान शैतान के कहने से भी नेकी से न रुके और वह नीयत कर ले कि मुझे यह नेकी करनी है तो फिर वह दूसरा हथियार इस्तेमाल करता है कि वह उस नेक काम को टालने की कोशिश करता है। मसलन किसी के दिल में यह बात आई कि मैं तौबा कर लेता हूं तो वह उसके दिल में डालता है कि अच्छा, फिर कल से तौबा कर लेना किसी के दिल में यह बात आई कि मैं नमाज़ पढूंगा तो कहता है कि कल से नमाज़ शुरू कर देना। यूं शैतान उसे नेकी के काम से टालने की कोशिश करता है, और याद रखें कि जो काम टाल दिया जाता है वह काम टल जाया करता है।

(3) अगर कोई बन्दा शैतान के उकसाने पर भी नेक काम करने से न टले और वह कहे कि मुझे यह काम करना है तो फिर वह दिल में डालता है कि जल्दी कर लो। मसलन किसी जगह पर खाना भी खाना हो और नमाज़ भी पढ़नी हो तो दिल में डालता है कि जल्दी से नमाज़ पढ़ ले फिर खाना खाना। नहीं भाई नहीं, बल्कि यूं कहना चाहिए कि भाई! जल्दी-जल्दी खाना खा लो, फिर तसल्ली से नमाज़ पढ़ लेंगे।

(4) अगर कोई आदमी जल्दी में कोई नेक काम कर लेता है तो फिर वह उसमें रिया करवाता है और यूं वह रिया के ज़रिए उसके किए हुए अमल को बर्बाद करवाता है। वह दिल में सोचने लगता है कि ज़रा दूसरे भी देख लें कि मैं कैसा नेक अमल कर रहा हूं।

(5) अगर उसमें काम करते वक़्त रिया पैदा न हो तो वह उसके दिल में उज्ब डालता है और वह सोचता है कि मैं दूसरों से बेहतर हूं। मसलन यह कहता है कि मैं तो फिर भी नमाज़ पढ़ लेता हूं लेकिन फ़लां तो नमाज़ ही नहीं पढ़ता। वह समझता है कि मैं तो आख़िर पढ़ा लिखा हूँ, हाफ़िज़ हूँ, क़ारी हूँ, आलिम हूँ, और मैंने इतने हज किए हैं। जब इस तरह उसमें तकब्बुर आ जाता है तो यही उज्बउसकी बर्बादी का सबब बन जाता है।

(6) अगर उसके दिल में उज्ब भी पैदा न हो तो वह आख़िरी हर्बा यह इस्तेमाल करता है कि वह उसके दिल में शोहरत की तमन्ना पैदा कर देता है। वह ज़बान से शोहरत पसन्दी की बातें नहीं करेगा बल्कि उसके दिल में यह बात होगी कि लोग मेरी तारीफ़ें करें और जब उसकी तारीफ़ करेंगे तो वह ख़ुश होगा। शैतान इन छः हथकंडों से इंसान के नेक आमाल बर्बाद कर देता है।

पांच चीज़ों में जल्दबाज़ी जाइज़ है

(1) जब लड़की जवान हो जाए तो जितनी जल्दी उसका रिश्ता मिल सके उतना अच्छा है। जब रिश्ता मिल जाए तो फिर उसकी शादी में जल्दी करनी चाहिए। (2) अगर किसी के ज़िम्मे क़र्ज़ हो तो उस क़र्ज़ को अदा करने में जल्दी करनी चाहिए। (3) जब कोई बन्दा फ़ौत हो जाए तो उस मरहूम को दफ़न करने में जल्दी करनी चाहिए। (4) जब कोई मेहमान आ जाए तो उसकी

मेहमान-नवाज़ी में जल्दी करनी चाहिए। हमने वस्त एशिया की रियासतों में देखा है कि जैसे ही मेहमान घर में आता है तो वह फ़ौरन कम-से-कम पानी तो ज़रूर ही मेहमान के सामने रख देते हैं। उसके बाद मशरूबात और खाने-पीने के इंतिज़ाम किए जाते हैं। याद रखें कि पानी पिलाना भी मेहमान नवाज़ी में शामिल है, लिहाज़ा जिसने मेहमान के सामने पानी का कटोरा भरकर रख दिया उसने गोया मेहमान-नवाज़ी कर ली। (5) जब कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो उससे तौबा करने में जल्दी करनी चाहिए।

तहज्जुद के लिए तौफ़ीक़ की दुआ

जब यह उम्मत रातों को रोया करती थी तो दिन को हंसा करती थी।

एक नुक्ता ज़ेहन में रख लीजिए कि अगर आप थके हुए हैं, नींद ग़ालिब है और उठ नहीं सकते, तो कई मर्तबा इंसान की रात में आंख खुलती है। किसी तक़ाज़े की वजह से करवट लेते हुए आंख ज़रूर खुलती है। जिन हज़रात को तहज्जुद की तौफ़ीक़ नहीं मिलती वे जब करवट लेने के लिए बेदार हों तो उस एक लम्हे में अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से तहज्जुद की तौफ़ीक़ की दुआ ज़रूर मांग लिया करें। यह एक छोटी-सी बात है लेकिन इसका आपको यह फ़ायदा होगा कि उस लम्हे की मांगी हुई दुआ भी आपको अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का मक़बूल बना देगी। हमारे मशाइख़ तो यहां तक फ़रमाते हैं कि जो औरतें फ़ज्र की अज़ान से पहले उठकर घरों को साफ़ करती हैं या चाय बना लेती हैं वे भी अल्लाह की रहमत से फ़ायदा पा लेती हैं।

लफ़्ज़ 'जनाब' किसी ज़माने में गाली होती थी

उर्दू ज़बान के कुछ अल्फ़ाज़ ऐसे हैं कि उनका हर-हर हर्फ़ बड़ा बामानी होता है। मिसाल के तौर पर एक जगह पर कुछ अंग्रेज़ी-ख़्वां लोग थे। वे दीनी तलबा को बहुत तंग करते थे। वे अरबी मदारिस के तलबा को कभी क़ुरबानी का मेंढा कहते, कभी कुछ कहते, कभी कुछ कहते। एक दिन वे सब तलबा मिल-बैठे और कहने लगे कि अंग्रेज़ी-ख़्वां लोगों के लिए कोई ऐसा लफ़्ज़ बनाएं जिसमें उनकी सारी सिफ़ात आ जाएं। उन्होंने एक-दूसरे से कहा कि उनमें होता क्या है। एक ने कहा कि इनमें बड़ी जिहालत होती है। दूसरे ने

कहा कि ये लोग बड़े नालायक़ होते हैं। तीसरे ने कहा कि ये बड़े अहमक़ होते हैं। चौथे ने कहा कि ये तो बड़े बेवक़ूफ़ होते हैं। इसके बाद उन्होंने कहा कि ये सब बातें ठीक हैं, हम इन चारों अल्फ़ाज़ के पहले हर्फ़ को लेकर एक लफ़्ज़ बनाते हैं। चुनांचे उन्होंने एक लफ़्ज़ बनाया 'जनाब'। जीम से जाहिल, नून से नालायक़, अलिफ़ से अहमक़, बे से बेवक़ूफ़। उसके बाद उन्होंने हर अंग्रेज़ी-ख़्वां को जनाब कहना शुरू कर दिया। यह लफ़्ज़ ऐसा मशहूर हुआ कि आज किसी को पता ही नहीं कि यह बना कैसे था। सब एक-दूसरे को जनाब कहते फिरते हैं। आज उर्फ़े आम में जनाब बमानी बारगाह है जैसा कि हज़रत बमानी बारगाह है। जनाब और हज़रत ये दोनों अल्फ़ाज़ एज़ाज़ी बन गए हैं। अल्लाह का शुक्र है कि आजकल अंग्रेज़ी पढ़े-लिखे भी ख़ूब दीनदारी में आगे बढ़ रहे हैं। (ख़ुतबात फ़क़ीर, जिल्द 9, पेज 19)

एक औरत का दिल टूटा रोई, सोई आप सल्ल० की ज़ियारत हो गई

किताबों में एक अजीब वाक़िया लिखा है कि एक ख़ातून निहायत ही पाक दामन और नेक थी। वह चाहती थी कि मुझे नबी करीम सल्ल० की ज़ियारत नसीब हो। वह दुरूद शरीफ़ भी बहुत पढ़ती थी, लेकिन ज़ियारत नहीं होती थी। उनके ख़ाविन्द बड़े अल्लाह वाले थे। एक दिन उन्होंने अपने ख़ाविन्द से अपनी यही तमन्ना ज़ाहिर की कि मेरा दिल तो चाहता है कि मुझे नबी करीम सल्ल० की ज़ियारत नसीब हो, लेकिन कभी यह शर्फ़ नसीब नहीं हुआ, इसलिए आप मुझे कोई अमल ही बता दें जिसके करने से मैं ख़्वाब में नबी करीम सल्ल० की ज़ियारत की सआदत हासिल कर लूँ। उन्होंने कहा कि मैं आपको अमल तो बताऊंगा लेकिन आपको मेरी बात माननी पड़ेगी। वह कहने लगी कि आप मुझे जो बात कहेंगे वह मैं मानूंगी। वह कहने लगे कि अच्छा तुम बन-संवर कर दुल्हन की तरह तैयार हो जाओ। उसने कहा, बहुत अच्छा। चुनांचे उसने ग़ुस्ल किया, दुल्हन वाले कपड़े पहने, ज़ेवर पहने और दुल्हन की तरह बन-संवर कर बैठ गई। जब वह दुल्हन की तरह बन-संवर कर बैठ गई तो वह साहब उनके भाई के घर चले गए और जाकर उससे कहा कि देखो, मेरी कितनी उम्र हो चुकी है और अपने बहन को देखो कि वह क्या

बनकर बैठी हुई है। जब भाई घर आया, और उसने अपनी बहन को दुल्हन के कपड़ों में देखा तो उसने उसे डांटना शुरू किया कि तुमको शर्म नहीं आती, क्या यह उम्र दुल्हन बनने की है, तुम्हारे बाल सफ़ेद हो चुके हैं, तुम्हारी कमर सीधी नहीं होती, और बीस साल की लड़की बनकर बैठी हुई हो। अब जब भाई ने डांट पिलाई तो उसका दिल टूटा और उसने रोना शुरू कर दिया। यहां तक कि वह रोते-रोते सो गई, अल्लाह की शान देखिए कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने उसे इसी नींद में अपने महबूब सल्ल० की ज़ियारत करवा दी। वह ज़ियारत करने के बाद बड़ी ख़ुश हुई, लेकिन ख़ाविन्द से पूछने लगी कि आपने वह अमल बताया ही नहीं जो आपने कहा था और मुझे ज़ियारत तो वैसे ही हो गई है। वे कहने लगे, अल्लाह की बन्दी! यही अमल था। क्योंकि मैंने तेरी ज़िंदगी पर ग़ौर किया, मुझे तेरे अंदर हर नेकी नज़र आई। तेरी ज़िंदगी शरीअत व सुन्नत के मुताबिक़ नज़र आई, अलबत्ता मैंने यह महसूस किया है कि मैं चूंकि आपसे प्यार मुहब्बत की ज़िंदगी गुज़ारता हूं इसलिए आपका दिल कभी नहीं टूटा, इस वजह से मैंने सोचा कि जब आपका दिल टूटेगा तो अल्लाह तआला की रहमत उतरेगी और आपकी तमन्ना को पूरा कर दिया जाएगा। इसी लिए तो मैंने एक तरफ़ आपको दुल्हन की तरह बन-संवर कर बैठने को कहा और दूसरी तरफ़ आपके भाई को बुलाकर ले आया। उसने आकर आपको डांट पिलाई जिसकी वजह से आपका दिल टूटा और अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की ऐसी रहमत उतरी कि उसने आपको अपने महबूब सल्ल० की ज़ियारत करवा दी। अल्लाहु अकबर!

मुंतख़ब अशआर

दिल की मेहराबों पर लिखी हैं वफ़ा की आयतें
देखते तो हैं बज़ाहिर उनको पढ़ता कौन है

मुहब्बत के मुसाफ़िर की महक सदियों नहीं जाती
यहां से कौन गुज़रा है यह रस्ता बोल देता है

कशां-कशां वह मेरे दिल पर छाए जाते हैं
भुला रहा हूं मगर याद आए जाते हैं

चराग़ों को लहू देना पड़ेगा
अंधेरों की हुकूमत हो रही है

मुझमें बुराइयां तू बराबर तलाश कर
लेकिन कमी कुछ अपने भी अंदर तलाश कर

उन्हें क्या ख़ौफ़ तूफ़ानों का होगा
जो तूफ़ानों में पाले जा रहे हैं

अबूज़र रज़ि का ईमान अफ़रोज़ वाक़िया

मेरा कफ़न वह दे जिसने हुकूमते उसमानी में नौकरी न की हो

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ि० जंगल में रहते थे। मौत का वक़्त आ गया। उन दिनों वहां कोई नहीं था। सिर्फ़ हज के दिनों में इराक़ के हाजी वहां से जाते थे। उस वक़्त हज का मौसम था। उनकी सिर्फ़ एक बीवी और एक बेटी थी। अब उनका कफ़न-दफ़न कौन करेगा, ग़ुस्ल कौन देगा, जनाज़ा कौन पढ़ेगा, क़ब्र कौन खोदेगा? बीवी कहने लगी कि अब क्या बनेगा हमारा, तुम्हारा मसला यह हो गया, हम क्या करें? कहने लगे *'मा कज़बतु मा कुज़िबतु'*। न तुमसे झूठ कहूंगा, न मुझसे झूठ कहा गया। मैं एक महफ़िल में बैठा था, मेरे आक़ा ने फ़रमाया कि तुममें से एक आदमी ऐसा है, अकेला मरेगा, अकेला उठेगा, जनाज़ा मुसलमानों की एक जमाअत पढ़ेगी, जितने आदमी उस महफ़िल में थे, वे सारे मर गए, शहरों में, मैं अकेला बच गया हूं जंगल में। मालूम नहीं कौन आएगा, कहां से आएगा, और ख़बर सच्ची है, लिहाज़ा ग़म न करो, मेरा जनाज़ा पढ़ने कोई आएगा। यह तक़्वा की ऐसी

निशानी है कि अल्लाह और उसके रसूल का इल्म उनके दिलों में उतरा हुआ था। देखो, मुम्बई के बाज़ार वालों से पूछो कि अल्लाह का दीन क्या कहता है? उस तिजारत में तुम्हें पता है। किस तरीक़े से यह कारोबार चलाया जाएगा कि अल्लाह और उसका हबीब नाराज़ न हो जाए? कोई नहीं बता सकता, इसी तरह ज़मींदारों से पूछ लो, तो भाई! किस तरह ज़मींदारी करनी है कि अल्लाह और उसका रसूल राज़ी हो जाए और नाराज़ न हो? जो सारे ताजिर कर रहे हैं वह यह भी कर रहा है, यह झूठ बोल रहा है। और वह भी झूठ बोल रहे हैं, वह सूद पर चल रहा है, यह भी सूद पर चल रहे हैं, लेकिन अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० पर एक दिन गुज़र गया, दूसरा दिन गुज़र गया, तीसरे दिन उन पर मौत के आसार आ गए, बेटी को बुलाया कि बेटी, आज मेहमान ज़रूर आएंगे मेरे जनाज़े में! रोटी पकाओ ताकि मेहमानों की ख़िदमत में कमी न आए, मैं ज़रूर मर जाऊंगा। उनको खाना पकाने में लगा दिया और बीवी से कहा कि तू जा रास्ते में बैठ, कोई न कोई ज़रूर आएगा। वह जाकर बैठ गईं रास्ते में। अल्लाहु अकबर! काफ़ी अर्सा गुज़र गया, उम्मीद नाउम्मीदी में बदल गई कि अचानक इराक़ की सड़क से ग़ुबार उठता हुआ नज़र आया। जब ग़ुबार का पर्दा फटा तो बीस (20) ऊंटनियों के सवार नमूदार हुए। उनकी बीवी ने सामने से खड़े होकर इशारा किया। जब उन्होंने औरत को जंगल और तन्हाई में देखा तो अपनी सवारियां मोड़ लीं, तो उस औरत ने कहा कि एक अल्लाह का बन्दा मर रहा है, उसका जनाज़ा पढ़ लो तो तुम्हें अज्र मिलेगा। उन्होंने कहा कि वह कौन है? कहा कि अल्लाह के हबीब का साथी अबूज़र ग़िफ़ारी है। सारे यक दम रोने लगे और कहा कि हमारे मां-बाप अबूज़र रज़ि० पर क़ुरबान। यह अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० थे और उनके 19 साथी। ग़ैबी निज़ाम कैसे चला कि हज़रत उसमान रज़ि० हज पर पहुंचे हुए हैं, हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से मशविरा तलब कोई चीज़ थी, तो उनसे कहलवा भेजा कि बैठे हो तो खड़े हो जाओ और खड़े हो तो चल पड़ो, हर हाल में मक्का आकर मुझसे मिलो, तुमसे मशविरा करना है, हज मिले या न मिले इसकी फ़िक्र न करो, लेकिन फ़ौरन मक्का पहुंच जाओ। ज़ाहिरी सबब तो यह बना लेकिन अंदर का सबब अबूज़र ग़िफ़ारी रज़ि० का जनाज़ा बना कि उनका जनाज़ा कौन आकर पढ़ेगा? इन हज़रात ने उमरे का एहराम

बांधा हुआ था, तो ये हज़रात सवारियों से उतरे और दौड़ते हुए आए। अबूज़र रज़ि० इसी इत्मीनान में हैं। पहले ही पता था कि कोई आएगा, लेकिन अबूज़र रज़ि० तक़वा के इतने बड़े मक़ाम पर पहुंचे हुए हैं कि फ़रमाते हैं, जिसने उसमान रज़ि० की हुकूमत की नौकरी की हो वह मुझे कफ़न न दे। उन 19 में से हर एक ने हुकूमत में मुलाज़िमत की थी, अलबत्ता उनमें से एक नौजवान खड़े हुए कि मैंने आज तक हुकूमत की नौकरी नहीं की है और यह एहराम भी मैंने अपने हाथ से बनाया है। कहा, बस ठीक है तू मेरा सारा इंतिज़ाम करेगा। फिर उनका इंतिक़ाल हो गया। यह सारे उनको दफ़न करके चलने लगे। बेटी ने कहा अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० से कि ऐ चचा खाना तैयार है। कहा, यह खाना पहले से कैसे तैयार हो गया। कहा मेरे बाबा ने कहा था कि आज मेरे मेहमान आएंगे मेरा जनाज़ा पढ़ने के लिए, उनकी ख़िदमत में ग़फ़लत न हो, इसलिए पहले से खाना तैयार करके रखना। अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० ने फ़रमाया, वाह रे वाह! अबूज़र रज़ि० ज़िंदा भी सख़ी और मरकर भी सख़ी।

नोट : यह क़िस्सा अबूज़र रज़ि० का मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ से अक्सर तारीख़ी किताबों में मौजूद है। (देखिए, सीरतुस्सहाबा, असदुल ग़ाबा, हयातुस्सहाबा)

एक औरत का हुस्ने इंतिख़ाब

हज्जाज के दरबार में केस आया? तीन आदमी थे, उनके क़त्ल का हुक्म दिया, एक ख़ातून भी साथ थी, उसने कहो छोड़ दे, तेरी बड़ी मेहरबानी होगी।

हज्जाज कहने लगा, तीनों में एक चुन ले (उस एक को छोड़ दूंगा, बाक़ी दो को क़त्ल करूंगा) एक बेटा था, एक ख़ाविन्द था, एक भाई था। औरत ने कहा, ख़ाविन्द दूसरा भी मिल जाएगा, बच्चे और भी पैदा हो जाएंगे, मेरे मां-बाप मर गए। भाई अब कोई नहीं मिलेगा, मेरा भाई छोड़ दे, बाक़ी सबको क़त्ल कर दे।

हज्जाज ने कहा, मैं तेरे हुस्ने इंतिख़ाब पर तीनों को छोड़ता हूं।

(इस्लाही वाक़ियात, पेज 134)

दो औरतों का अजीब वाक़िया

एक बुज़ुर्ग हैं, उनका नाम है हाशिम रह०। वह कहते हैं। मैं सफ़र में था तो मैं एक ख़ेमे में उतरा। मुझे भूख लगी हुई थी। उस ख़ेमे में एक औरत बैठी हुई थी। मैंने कहा कि बहन भूख लगी है, खाना मिल जाएगा? कहने लगी कि मैं मुसाफ़िरों के लिए खाना पकाने बैठी हूं? जा अपना रास्ता ले। कहने लगे कि भूख ऐसी थी कि मैं उठ न सका। मैंने सोचा कि यहीं सुस्ताकर चला जाऊंगा। इतने में उसका ख़ाविन्द आ गया। उसने मुझे देखा और कहा:

मरहबा! कौन हैं?

कहा, मैं मुसाफ़िर हूं।

खाना खाया?

नहीं खाया।

क्यों?

मांगा था, लेकिन मिला नहीं?

उसने अपनी बीवी से कहा, ज़ालिम तूने इसे खाना ही न खिलाया। उसने कहा कि मैं कोई मुसाफ़िरों के लिए बैठी हूं। मुसाफ़िरों को खिला-खिलाकर अपना घर ख़ाली कर लूं।

ऐसी बदअख़्लाक़ी में ख़ाविन्द ने बीवी से कोई बदतमीज़ी नहीं की। कहा कि अल्लाह तुझे हिदायत दे।

आप सल्ल० ने फ़रमाया कि बेहतरीन मर्द वह है जो बीवी के साथ अच्छा सुलूक करे। उन्होंने कहा, अच्छा तू अपना घर भर ले, फिर उसने बकरी ज़िबह की, उसको काटा और गोश्त बनाया, पकाया, खिलाया, और साथ ही माज़रत भी की और उनको रवाना किया। चलते-चलते आगे एक जगह पहुंचे, अगली मंज़िल पर भी एक ख़ेमा आया, वहां पड़ाव डाला तो एक ख़ातून बैठी थी। कहा, बहन मुसाफ़िर हूं, खाना मिल जाएगा। उसने कहा, मरहबा! अल्लाह की रहमत आ गई, अल्लाह की बरकत आ गई। अब मैं आपको सच बताऊं। किसी ज़माने में बूढ़ियां, दादियां, कोई मेहमान आता तो वह ख़ुश होकर कहतीं, अल्लाह की बरकत आ गई, नौकरों को हटाकर ख़ुद काम करना

शुरू कर देतीं। और अब जब सारी सहूलतें हैं इस वक़्त यह कहती हैं कि यह बेवक़्त आ गया, इनको वक़्त का एहसास नहीं होता और आ जाते हैं। तो उस ख़ातून ने कहा, माशाअल्लाह, मेहमान आ गया। बरकत आ गई। जल्दी से बकरी ज़िबह की, पकाई और पकाकर उसके सामने रखी तो उस पर उसका ख़ाविन्द आ गया।

उसने कहा कौन है तू?

कहा, जी मैं मेहमान हूं।

यह अंगूठी कहां से ली?

जी आपकी बेगम ने दी।

तो उसने अपनी बेगम पर चढ़ाई कर दी। तुझे शर्म नहीं आती, मेहमानों को खिलाकर मेरा घर ख़ाली कर देगी। तो मेहमान को हंसी आ गई, ज़ोर से क़हक़हा लगाया तो वह कहने लगा क्यों हंसते हो? कहने लगे कि पीछे इसका उलटा देखा था, कहने लगा कि जानते भी हो यह कौन है। कहा कि वह मेरी बहन है, यह उसकी बहन है। यानी एक भाई-बहन बख़ील, एक भाई बहन सख़ी। (इस्लाही वाक़िअयात, पेज 135)

एक औरत ने दीवार के साथ जवानी गुज़ार दी

फ़र्रूख़ (रह०) ताबईन में से हैं। बीवी हामिला थी। कहने लगे अल्लाह के रास्ते में जाने की आवाज़ लग रही है, चला न जाऊं? बीवी कहने लगी, मैं तो हामिला हूं, मेरा क्या बनेगा? कहा कि तू और तेरा हमल अल्लाह के हवाले। उनको तीस हज़ार दिरहम देकर गए कि यह तू ख़र्चा रख और मैं अल्लाह के रास्ते में जाता हूं। कितनी ख़िज़ाएं और बहारें आईं और कितने दिन सुबह से शाम में बदले, शाम ढल कर सुबह में बदली, पर फ़र्रूख़ न आया। दो, तीन, चार, पांच, दस, बीस, पच्चीस, सत्ताइस, उन्तीस, तीस साल गुज़र गए, एक औरत ने दीवार के साथ जवानी गुज़ार दी। फ़र्रूख़ लौट के न आया। तीस साल गुज़र गए, एक दिन एक बड़े मियां मदीने की गलियों में दाख़िल हुए। परागंदा शिकस्ता हाल, बुढ़ापे के आसार और अपने घोड़े पर चले आ रहे हैं, तीस साल में तो एक नस्ल ख़त्म हो जाती है, अब यह परेशान

हूं कोई मुझे पहचानेगा कि नहीं पहचानेगा? वह मर गई या ज़िंदा है? क्या हुआ? क्या बना? घर वही है कि बदल गया? इन्हीं परेशानियों में घिरे घर के दरवाज़े पर पहुंचे। पहचाना कि वही है। अंदर जो दाख़िल हुए तो घोड़े की आवाज़, अपनी आवाज़, हथियारों की आवाज़, बेटा बेदार हो गया, देखा तो एक बड़े मियां चांद की चांदनी में खड़े हुए हैं। तो एक दम झपटे और उस पर लपके और गिरेबान से पकड़ा, जान के दुश्मन, तुझे शर्म नहीं आई? बुढ़ापे में मुसलमान के घर में बिना इजाज़त दाख़िल हुए हो? एक दम झटका दिया, झिंझोड़ा, वह डर से घबरा गए। वह समझे कि शायद मैं ग़लत घर में आ गया हूं। मेरा घर बिक गया। कोई और इसमें आ गया। कहने लगे बेटा! माफ़ करना, ग़लती हो गई, मैं समझा मेरा ही घर है, तो उनको और ग़ुस्सा चढ़ आया। कहने लगे अच्छा, एक ग़लती की, और अब घर अपना होने का दावा भी। चलो, मैं अभी तुझे क़ाज़ी के पास ले चलता हूं, तेरे लिए वह सज़ा तज्वीज़ करेगा। अब वह चढ़ रहे हैं और यह दब रहे हैं। इधर बुढ़ापा, उधर जवानी, उधर सफ़रों ने मार दिया, हड्डियां खोखली हो गईं, और फिर शक भी है कि पता नहीं मेरा घर है या किसी और का? इसी कशमकश में ऊपर से मां की आंख खुली, उसने खिड़की से देखा तो फ़र्रूख़ का चेहरा बीवी की तरफ़ और बेटे की पुश्त बीवी की तरफ़, तो तीस साल के दरीचे खुल गए, और बुढ़ापे की झड़ियों में से फ़र्रूख़ का चमकता चेहरा नज़र आने लगा और उसकी एक चीख़ निकली। ऐ रबीआ! और रबीआ के तो पांव तले से ज़मीन निकल गई, यह मेरी मां को क्या हुआ? देखा तो ऊपर खड़ी हुई, ऐ रबीआ!

क्या हुआ मां?

कौन है?

पता नहीं।

ऐ ज़ालिम! बाप से लड़ पड़ा। तेरा बाप है, जिसके लिए तेरी मां की जवानी गुज़र गई, और उसकी रात दिन में ढल गई, बाल जिसके चांदी बन गए यह वह है, तेरा बाप! जिसके लिए मैंने सारी ज़िंदगी काट दी। रबीआ रो दिए, माफ़ी नामे हो रहे हैं, रात कारगुज़ारी में गुज़र गई। फ़ज्र की अज़ान पर उठे, कहने लगे रबीआ कहां है? कहा, वह तो अज़ान से पहले चला जाता है, ये गए तो नमाज़ हो चुकी थी। अपनी नमाज़ पढ़ी, रौज़-ए-अतहर मस्जिद

से बाहर होता था, आके सलात व सलाम पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते जो मस्जिद की तरफ़ नज़र पड़ी तो यूँ मज्मा भरा पड़ा और एक नौजवान हदीस पढ़ा रहे हैं, दूर से देखा, नज़र कमज़ोर थी। पता न चला कौन है? उधर ही पीछे बैठ गए और सुनना शुरू कर दिया। हदीस पाक का दर्स हो रहा है, जब फ़ारिग हुए तो बराबर वाले से कहने लगा : बेटा! यह कौन था, जो दर्स दे रहा था?

उसने कहा, आप जानते नहीं, आप मदीने के नहीं हैं?

कहने लगे, बेटा मैं मदीना का हूं, आया बड़ी देर से हूं।

कहा, यह रबीआ हैं, मालिक के उस्ताद, सुफ़ियान सौरी के उस्ताद, अबू हनीफ़ा के उस्ताद, वह अपने जोश में था, वो सुनते-सुनते कहने लगे, बेटा! तूने यह तो नहीं बताया, बेटा किसका है? कहा, उसके बाप का नाम फ़र्रूख़ था, अल्लाह के रास्ते में चला गया।

इन मशक़्क़त की वादियों में इस्लाम ने सफ़र किया है।

(तारीख़े बग़दाद, जिल्द 8, पेज 420)

मुंतख़ब अशआर

कहने को एक ज़र्रा नाचीज़ हैं मगर
तामीरे कायनात के काम आ रहे हैं हम

इस लिए आरज़ू है जीने की
देख लूं फिर ज़मीन मदीने की

सितारे डूबना, शबनम का रोना, शमा का बुझना
हज़ारों मरहले हैं सुबह के हंगाम से पहले

उज्र क्या? शान रहमत ढांप ले मेरी गुनाहों को
ख़ता की है, मगर तेरी अता को देख कर की है

बिछड़ा कुछ इस अदा से कि रात ही बदल गई
इक शख़्स सारे शहर को वीरान कर गया

शुक्रिया ऐ क़ब्र तक पहुंचाने वालो, शुक्रिया
अब अकेले ही चले जाएंगे इस मंज़िल से हम

ऐ शमा! तुझ पर रात यह भारी है जिस तरह
हम ने तमाम उम्र गुज़ारी है इस तरह

छुप गया आफ़ताब, शाम हुई
इक मुसाफ़िर की रह तमाम हुई

राक़िमुल हुरूफ़ को नीचे लिखे शेर निहायत पसन्द हैं। बक़ौल शाएर :

करूंगा नाज़ क़यामत तलक मैं क़िस्मत पर
बक़ीअ में जो मुकम्मल क़याम हो जाए

अल्लाह तआला फ़रमाएंगे मेरा बन्दा सच्चा है—तेरा क़र्ज़ा मैं अदा करूंगा

हज़रत मुहम्मद सल्ल० फ़रमाते हैं कि एक क़र्ज़दार को अल्लाह तआला क़ियामत के दिन बुलाकर अपने सामने खड़ा करके पूछेगा कि तूने क़र्ज़ क्यों लिया और क्यों रक़म ज़ाया कर दी जिससे लोगों के हुक़ूक़ बर्बाद हुए? वह जवाब देगा कि ख़ुदाया! तुझे ख़ूब इल्म है कि मैंने न यह रक़म खाई, न पी और न उड़ाई, बल्कि मेरे यहां से मसलन चोरी हो गई या आग लग गई या कोई और आफ़त आ गई। अल्लाह तआला फ़रमाएगा, मेरा बन्दा सच्चा है। आज तेरे क़र्ज़ के अदा करने का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ मैं हूं। फिर अल्लाह तआला कोई चीज़ मंगवाकर उसकी नेकियों के पलड़े में रख देगा, जिससे नेकियां बुराइयों से बढ़ जाएंगी और अल्लाह तआला उसे अपने फ़ज़्ल व रहमत से जन्नत में ले जाएगा।

(मुस्नद अहमद, तफ़्सीर इब्ने कसीर, जिल्द 2, पेज 372)

ख़ुशी का दिन सबसे ज़्यादा बुरा दिन साबित हुआ

यज़ीद मलिक उमवी ख़लीफ़ा गुज़रे हैं। यह नए ख़लीफ़ा थे। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के बाद आए थे। एक दिन वह कहने लगे कि कौन कहता है कि बादशाहों को ख़ुशियां नसीब नहीं होतीं? मैं आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ार कर देखाऊंगा। अब मैं देखता हूं कि कौन मुझे रोकता है? कहा, आजकल बग़ावत हो रही है, यह हो रहा है, वह हो रहा है, तो मुसीबत बनेगी। कहने लगा, आज मुझे कोई मुल्की ख़बर न सुनाई जाए, चाहे बड़ी से बड़ी बग़ावत हो जाए। मैं कोई ख़बर सुनना नहीं चाहता, आज का दिन ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता हूं। उसकी बड़ी ख़ूबसूरत लौंडी थी, उसके हुस्न व जमाल का कोई मिस्ल न था। उसका नाम हुबाबा था। बीवियों से ज़्यादा उसे प्यार करता था। उसको लेकर महल में दाख़िल हो गया। फल आ गए, चीज़ें आ गईं, मशरूबात आ गए। आज का दिन अमीरुल मोमिनीन ख़ुशी से गुज़ारना चाहते हैं, आधे से भी कम दिन गुज़रा है। हुबाबा को गोद में लिए हुए है, उसके साथ हंसी-मज़ाक़ कर रहा है, और अंगूर अपने हाथ से तोड़ तोड़कर उसको खिला रहा है। एक अंगूर का दाना लिया और उसके मुंह में डाल दिया, वह किसी बात पर हंस पड़ी तो वह अंगूर का दाना सीधा उसकी सांस की नाली में जाकर अटका और एक झटके के साथ उसकी जान निकल गई। जिस दिन को वह सबसे ज़्यादा ख़ुशी के साथ गुज़ारना चाहता था, उसकी ज़िंदगी का ऐसा बदतरीन दिन बना कि दीवाना हो गया। पागल हो गया, तीन दिन तक उसको दफ़न करने नहीं दिया, उसका जिस्म गल गया, सड़ गया, ज़बरदस्ती बनू उमैया के सरदारों ने उसकी मय्यत को छीना और दफ़न किया, और दो हफ़्ते के बाद वह दीवानगी में मर गया। (हयातुल हैवान)

एक क़ीमती बात

हाकिमे वक़्त एक दरिया की मानिन्द है और रिआया छोटी नदियां। अगर दरिया का पानी मीठा होगा तो नदियां भी मीठा पानी देंगी, और अगर दरिया का पानी तल्ख़ होगा तो लाज़िमन नदियों का पानी भी तल्ख़ होगा।

अल्लाह ने एक मोती को हिदायत दी

सय्यद अहमद शहीद रह० ने जब सिखों के ख़िलाफ़ जिहाद किया था तो दिल्ली के कोठे पर एक बहुत मशहूर रक़्क़ासा थी, मोती उसका नाम था। शाह इसमाईल शहीद रह० इशा की नमाज़ पढ़कर निकले और बाज़ारे हुस्न में पहुंचे और मोती के घर पर दस्तक दी। वहां से उनको ख़ैरात दी जाने लगी? तो उन्होंने कहा, फ़क़ीर पहले सदा लगाता है, फिर ख़ैरात लेता है, तुम मेरी सदा सुन लो। सब लोग जमा हो गए तो क़ुरआन की आयात तिलावत कीं : *वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि....* आख़िर तक "क़सम है तीन (इंजीर) की और ज़ैतून की और तूरे सीनीन की और पाक शहर की। सबसे बेहतरीन हमने इंसान को बनाया, फिर उसी को हमने सबसे ज़लील बनाकर पीछे भी लौटाया।" सबसे बेहतरीन और सबसे ज़लील की तशरीह बयान करनी शुरू की तो मोती की आंखों से आंसू निकलने लगे और उन आंसुओं से उसकी पिछली ज़िंदगी के सब दाग़ अल्लाह ने धो दिए और उसने तौबा की और कहा, अब मैं साथ जाऊंगी। उसका निकाह एक शख़्स के साथ कराया और फिर वह मुजाहिदीन के लिए आटा पीसती थी, और मुजाहिदीन की ख़िदमत करते हुए शहीद हो गई। उस मोती का कोठा किसने छुड़ाया? अल्लाह ने। वह कौन-सी हलावत थी, लज़्ज़त थी? वह क़ुरआन की हलावत थी। काश! हम इस मिठास से बाख़बर हो जाएं। अल्लाह ही का नूर है कायनात में। अल्लाह की क़सम, अल्लाह कहता है कि जो आंखों के पर्दे हराम से गिरा लेता है, अल्लाह उसे चप्पे-चप्पे पर अपना नूर दिखाता है। कायनात का एक-एक ज़र्रा अल्लाह की तस्बीह पढ़ रहा है। और अल्लाह की क़सम, अल्लाह सुनाता है और जो अपने कानों को गाने-बजाने से महफ़ूज़ कर लेता है! अल्लाह उसे सुनाता है जिसकी आंखों ने हराम देखना छोड़ा, जिसके कानों ने हराम सुनना छोड़ा, अल्लाह उसको दुनिया ही में दिखा देता है। अल्लाह पर ईमान लाओ, सब कुछ अल्लाह ही के हाथ में है। अल्लाह कह रहा है कि मेरे हुक्मों पर तिजारत करो, मैं तुम्हारी तिजारत के मुनाफ़े की गारंटी देता हूं। कोई शय अपनी ज़ात में कुछ नहीं, जो है मेरे अल्लाह का अम्र है। (इस्लाही वाक़ियात, पेज 526)

नीचे लिखी आयाते सकीना दिल व दिमाग़ के सुकून के लिए पढ़कर दम करें

(١) وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسٰى وَآلُ هَارُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَآيَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُم مُّؤْمِنِيْنَ (البقرا۔٢٤٨)

1. *व क़ा-ल ल-हुम नबिय्युहुम इन-न आय-त मुलकिही अय्यअ्तियकुमुत-ताबूतु, फ़ीहि सकीनतुम मिर्रब्बिकुम व बक़िय्यतुम मिम्मा त-र-क आलु मूसा व आलू हारू-न तहमिलुहुल मलाइकः इन-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयतल्लकुम इन-कुनतुम मुअ्मिनीन।*
(क़ुरआन, 2 : 248)

(٢) ثُمَّ أَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَأَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَذٰلِكَ جَزَاءُ الْكَافِرِيْنَ (التوبه۔٢٦)

2. *सुम-म अन-ज़लल्लाहु सकीनतहू अला रसूलिही व अलल मुअ्मिनी-न व अन-ज़-ल जुनूदल-लम तरौहा, व अज़्ज़बल लज़ी-न क-फ़रू। व ज़ालि-क जज़ाउल काफ़िरीन।*
(क़ुरआन, 9 : 26)

(٣) فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (الفتح۔٤٠)

3. *फ़-अन ज़लल्लाहु सकी-न-तहू अलैहि व अय्य-दहू बिजुनूदिल लम तरौहा व ज-अ-ल कलिम-तल-लज़ी-न क-फ़रुस्सुफ़ला। व कलिमतुल्लाहि हियल-उलया। वल्लाहु अज़ीज़ुल हकीम।*
(क़ुरआन, 9 : 40)

(٤) هُوَالَّذِىْ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (الفتح-٤)

4. *हुवल-लज़ी अन-ज़लस्सकी-न-त फ़ी क़ुलूबिल मुअ्मिनी-न लियज़दादू ईमानम म-अ-ईमानिहिम। व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल-अर्ज़। व कानल्लाहु अलीमन हकीमा।* (क़ुरआन, 48 : 18)

(٥) لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذْيُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا (الفتح-١٨)

5. *लक़द रज़ियल्लाहु अनिल मुअ्मिनी-न इज़युबा यिऊ-न-क तहतश-श-ज-राति फ़-अलिमा माफ़ी क़ुलूबिहिम फ़ अन-ज़लस्सकी-न-त अलैहिम व असाबहुम फ़तहन क़रीबा।* (क़ुरआन, 48 : 18)

(٦) اِذْجَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمًاع (الفتح-٢٦)

6. *इज़ ज-अ-लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी क़ुलूबिहिमुल-हमिय्य-त हमिय्यतल जाहिलिय्यति फ़-अनज़लल्लाहु सकीन-तहू अला रसूलिही व अलल मुअ्मिनी-न व अल-ज़-महुम कलिम-तत्तक़वा व कानू अ-हक़ क़ बिहा व अह-लहा। व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन अलीमा।*

(क़ुरआन, 48 : 26)

अलहम्दुलिल्लाह यह किताब बिखरे मोती जिल्द 5 मक्कतुल-मुकर्रमा हरम शरीफ़ में रात के वक़्त पौने एक बजे (12 : 45) पूरी हुई। अल्लाह अपने फ़ज़्ल व करम से क़बूल फ़रमाए।

(20 जून, 2006 ई०, बमुताबिक़ 23 जमादीउल-ऊला 1427 हि०, दिन मंगल)